Table of Contents

सादेक हेदयात: उनका जीवन और कार्य
ग्रन्थसूची
अंधा उल्लू
1
2
3
4
5
हाजी मोराद
खून की तीन बूँदें
द लीगलाइज़र
व्हर्लपूल
अग्नि उपासक
अब्जी खानोम
आवारा कुत्ता
टूटा हुआ दर्पण
दावूद कुबड़ा
मेडेलीन
दश अकोल
वह व्यक्ति जिसने अपनी भावनाओं का वध किया
जिंदा दफन
स्वीकृतियाँ
नोट्स

सादिक हेदायत

THE अंधा उल्लू और अन्य

कहानियाँ

कालडर

Table of Contents

सादेक हेदयात: उनका जीवन और कार्य
ग्रन्थसूची
अंधा उल्लू
1
2
3
4
5
हाजी मोराद
खून की तीन बूँदें
द लीगलाइज़र
व्हर्लपूल
अग्नि उपासक
अब्जी खानोम
आवारा कुत्ता
टूटा हुआ दर्पण

दावूद कुबड़ा
मेडेलीन
दश अकोल
वह व्यक्ति जिसने अपनी भावनाओं का वध किया
जिंदा दफन
स्वीकृतियाँ
नोट्स

अंधा उल्लू

और अन्य कहानियाँ

सादेक हेदयाट

डी.पी. कोस्टेलो और डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित

CALDER

कैल्डर पब्लिकेशन्स
का एक इंप्रिंट

अल्मा बुक्स लिमिटेड, 3 कैसल यार्ड, रिचमंड, सरे, TW10 6TF, यूनाइटेड किंगडम www.almaclassics.com

द ब्लाइंड आउल (Buf-e Kur) का प्रथम प्रकाशन 1937 में हुआ था। इसका अनुवाद डी.पी. कोस्टेलो ने किया था। इसका प्रथम प्रकाशन जॉन काल्डर (पब्लिशर्स) लिमिटेड द्वारा 1957 में किया गया था। अनुवाद © जॉन काल्डर (पब्लिशर्स) लिमिटेड, 1957। इसका प्रथम प्रकाशन अल्मा क्लासिक्स द्वारा 2008 में किया गया था। पुनर्मुद्रण 2010 और 2012 में हुआ।

इस खंड में शामिल अन्य कहानियाँ प्रथम बार 'बर्ड अलाइव' (1930), 'थ्री ड्रॉप्स ऑफ ब्लड' (1932) और 'द स्ट्रे डॉग' (1942) में प्रकाशित हुईं। इनका अनुवाद देबोरा मिलर मोस्ताघेल ने किया है और संपादन नुशिन अरबाबज़ादा ने किया है। इन कहानियों का अनुवाद प्रथम बार अल्मा क्लासिक्स द्वारा 'थ्री ड्रॉप्स ऑफ ब्लड' नामक खंड में 2008 में प्रकाशित हुआ था। इसे 2010, 2012 और 2017 में पुनः प्रकाशित किया गया।

द ब्लाइंड आउल एंड अदर स्टोरीज का यह नया संस्करण पहली बार 2017 में काल्डर पब्लिकेशन्स द्वारा प्रकाशित किया गया था।

ग्रेट ब्रिटेन में CPI ग्रुप (यूके) लिमिटेड, क्रॉयडन CR0 4YY द्वारा मुद्रित।

ISBN: 978-0-7145-4458-8

सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, संग्रहित, पुनर्प्राप्ति प्रणाली में डाला या प्रसारित नहीं किया जा सकता है, न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग आदि)। यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की स्पष्ट पूर्व सहमति के बिना इसे पुनर्विक्रय, उधार देना, किराए पर देना या किसी अन्य माध्यम से प्रसारित नहीं किया जाएगा।

अंतर्वस्तु

सादेक हेदयात: उनका जीवन और कार्य
ग्रन्थसूची

अंधा उल्लू
1
2
3
4
5
हाजी मोराद
खून की तीन बूँदें
द लीगलाइज़र
व्हर्लपूल
अग्नि उपासक
अब्जी खानोम
आवारा कुत्ता
टूटा हुआ दर्पण
दावूद कुबड़ा
मेडेलीन
दश अकोल
वह व्यक्ति जिसने अपनी भावनाओं का वध किया
जिंदा दफन

स्वीकृतियाँ
नोट्स

सादेक हेदयात: उनका जीवन और कार्य

सादेक हेदयात का जन्म 17 फरवरी 1903 को हुआ था और उनका निधन 9 अप्रैल 1951 को हुआ। वे रेज़ाकौली खान हेदयात के वंशज थे, जो उन्नीसवीं सदी के एक प्रख्यात कवि, फ़ारसी साहित्य के इतिहासकार और मजमा अल-फोसाहा, रियाज़ अल-अरेफ़िन और रौज़ा अल-सफ़ा-ए नासेरी जैसी रचनाओं के लेखक थे। उनके विस्तारित परिवार के कई सदस्य उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में महत्वपूर्ण राजकीय अधिकारी, राजनीतिक नेता और सेनापति रहे।

हेदयात 'द ब्लाइंड आउल' के लेखक हैं, जो ईरान, यूरोप और अमेरिका में सबसे प्रसिद्ध फ़ारसी उपन्यास है। उनकी कई लघु कथाएँ आलोचनात्मक यथार्थवादी शैली में लिखी गई हैं और बीसवीं सदी के ईरान में लिखी गई सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में गिनी जाती हैं। लेकिन उनका सबसे मौलिक योगदान फ़ारसी साहित्य में आधुनिकतावादी, और अक्सर अतियथार्थवादी, तकनीकों का प्रयोग था। इस प्रकार, वे न केवल एक महान लेखक थे, बल्कि फ़ारसी साहित्य में आधुनिकतावाद के संस्थापक भी थे।

तेहरान के प्रतिष्ठित सेंट लुइस फ्रेंच मिशनरी स्कूल में अध्ययन करने के बाद, हेदयाट राज्य अनुदान से यूरोप गए, जहाँ उन्होंने 1926-27 में एक वर्ष बेल्जियम में, 1928-29 में डेढ़ वर्ष पेरिस में, 1929 में दो सत्र रीम्स में और 1929-30 में एक वर्ष बेसांकोन में बिताया। अपनी पढ़ाई पूरी न कर पाने के कारण, उन्होंने छात्रवृत्ति छोड़ दी और 1930 की गर्मियों में घर लौट आए। इससे उनके व्यक्तित्व और विशेष रूप से उनके पूर्णतावादी दृष्टिकोण का पता चलता है, जिसके कारण कभी-कभी उन्हें तंत्रिका पक्षाघात हो जाता था।

तेहरान लौटने पर, हेदायत रबेह या चार सदस्यीय समूह के प्रमुख व्यक्ति बन गए, जिसमें मोजतबा मिनोवी, बोज़ोर्ग अलावी और मसूद फरज़ाद शामिल थे, लेकिन इसके अलावा मोहम्मद मोक़द्दाम, ज़बीह बेहरूज़ और शिन पार्टाव जैसे सहयोगी भी थे। ये सभी आधुनिक सोच वाले थे और साहित्यिक जगत की सामाजिक रूढ़िवादिता और बौद्धिक क्लासिकवाद दोनों की आलोचना करते थे। वे साहित्यिक जगत के अपने प्रति तिरस्कारपूर्ण रवैये और अकादमिक पदों और प्रकाशनों पर उसके एकाधिकार से भी नाराज़ थे।

1930 के दशक के आरंभ में, हेदयात ने कई तरह की लिपिकीय नौकरियाँ कीं। 1936 में वे शीन पार्टाव के निमंत्रण पर बंबई गए, जो उस समय वहाँ ईरानी राजनयिक थे। स्वाभाविक रूप से, वे आधिकारिक सेंसरों के शिकंजे में आ गए और 1935 में उनसे यह शपथ ली गई कि वे फिर कभी कुछ प्रकाशित नहीं करेंगे। यही कारण था कि जब उन्होंने बाद में बंबई में 'द ब्लाइंड आउल' का पहला सीमित संस्करण प्रकाशित किया, तो उन्होंने शीर्षक पृष्ठ पर लिखा कि यह ईरान में प्रकाशन के लिए नहीं है, क्योंकि उन्हें आशंका थी कि इसकी एक प्रति ईरान पहुँच सकती है और सेंसरों के हाथ लग सकती है।

बंबई में बिताए एक वर्ष के दौरान, उन्होंने पारसी ज़ोरोस्ट्रियन समुदाय के बीच प्राचीन ईरानी भाषा पहलवी सीखी, कई लघु कथाएँ लिखीं और 'द ब्लाइंड आउल' की पचास प्रतियाँ प्रकाशित कीं, जिनमें से अधिकांश उन्होंने ईरान के बाहर अपने दोस्तों में वितरित कीं।

सितंबर 1937 में वे तेहरान लौट आए, हालाँकि वे बड़ी अनिच्छा से लौटे थे और इसका सीधा कारण यह था कि वे बॉम्बे में अपने मित्र के आतिथ्य पर निर्भर रहना उचित नहीं समझते थे। 1939 में, उन्होंने नवस्थापित संगीत कार्यालय में पत्रिका 'मजल्लेह-ए संगीती' (संगीत पत्रिका) के संपादक के रूप में कार्यभार संभाला। यह अपेक्षाकृत युवा और आधुनिक बुद्धिजीवियों के एक छोटे समूह के बीच साहित्यिक कार्य था, जिसमें आधुनिक फ़ारसी कविता के संस्थापक नीमा युशिज भी शामिल थे। संभवतः उन्होंने इसे अपने जीवन का सबसे संतोषजनक पद माना होगा।

यह दौर ज़्यादा समय तक नहीं चला। 1941 में ईरान पर मित्र देशों के आक्रमण और रज़ा शाह के पदत्याग के बाद, संगीत कार्यालय और उसकी पत्रिका बंद कर दी गई, और हेदायत ललित कला महाविद्यालय में अनुवादक बन गए, जहाँ वे अपने जीवन के अंत तक रहे। वे परवेज़ खानलारी की आधुनिक साहित्यिक पत्रिका सोखन के संपादकीय मंडल के सदस्य भी बने, जो एक अवैतनिक लेकिन प्रतिष्ठित पद था। यद्यपि देश पर विदेशी शक्तियों का कब्ज़ा था, निरंकुश और मनमानी सरकार के पतन के बाद लोकतंत्र और स्वतंत्रता के लिए अपार आशा और उत्साह था। रज़ा शाह के पदत्याग से मिली नई स्वतंत्रता – वास्तव में, एक तरह की खुली छूट – ने गहन राजनीतिक, सामाजिक और साहित्यिक गतिविधियों को जन्म दिया। आधुनिक शिक्षित अभिजात वर्ग नवगठित तुदेह पार्टी पर केंद्रित था, जो उस समय मार्क्सवादी बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में एक व्यापक लोकतांत्रिक मोर्चा था, हालाँकि 40 के दशक के अंत तक यह एक रूढ़िवादी कम्युनिस्ट पार्टी में बदल गया था। हेदायत ने शुरुआत में भी पार्टी में शामिल नहीं हुए, लेकिन इसके प्रति सहानुभूति रखते थे और तुदेह पार्टी के बुद्धिजीवियों में उनके कई मित्र थे।

लेकिन 1946 में सोवियत संघ से प्रेरित अज़रबैजान विद्रोह के लिए पार्टी के समर्थन ने, जिसके कारण पार्टी के भीतर तीव्र संघर्ष हुए, और एक साल बाद विद्रोह के अचानक विफल होने से हेदायत बेहद आहत हुए और आंदोलन से अलग-थलग पड़ गए। वे हमेशा से स्थापित ईरानी राजनीति और सांस्कृतिक परंपराओं के मुखर आलोचक रहे थे, और कट्टरपंथी बुद्धिजीवियों से अलग होने के कारण वे अपने ही देश में एक तरह से परदेसी बन गए। यह उनके द्वारा 1940 के दशक के उत्तरार्ध में झेले गए अवसाद का एक महत्वपूर्ण कारण था, जिसके परिणामस्वरूप अंततः 1951 में पेरिस में उन्होंने आत्महत्या कर ली।

कुछ समय से उनके घनिष्ठ मित्र हसन शाहिद-नुराई, जो फ्रांस में राजनयिक के रूप में कार्यरत थे, उन्हें पेरिस जाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। संकेत मिल रहे थे कि उनका अवसाद दिन-प्रतिदिन गहराता जा रहा था। वे तेहरान में अपने जीवन से बेहद असंतुष्ट थे, विशेष रूप से बुद्धिजीवियों के बीच, जिनमें से कई उन्हें नियमित रूप से "निम्न-बुर्जुआ मनोबल गिराने वाला" और उनके काम को "काला साहित्य" बताते थे।

मित्रों को लिखे उनके पत्रों के माध्यम से, सतह के ठीक नीचे, उनका क्रोध और निराशा, उनकी तीव्र संवेदनशीलता, उनका अथाह दुख, अपने देश और यहाँ के लोगों के प्रति उनका लगातार बिगड़ता दृष्टिकोण और जीवन के प्रति उनकी निंदा देखी जा सकती है। शायद उनकी कहानियों से भी अधिक, इन्हीं पत्रों के माध्यम से उनकी दुर्दशा के तीन पहलू देखे जा सकते हैं: व्यक्तिगत त्रासदी, सामाजिक अलगाव और सार्वभौमिक पराक्रम।

अपनी अंतिम यात्रा से चार साल पहले पेरिस में रहने वाले एक मित्र को फ्रेंच भाषा में लिखे पत्र में उन्होंने कहा था:

> बात ये नहीं कि मुझे अपना जीवन फिर से संवारना है। जब कोई लगातार पीछा किए जाने वाले जानवरों जैसा जीवन जी चुका हो, तो फिर संवारने के लिए क्या बचता है? मैंने अपना फैसला कर लिया है। इस गंदगी के सैलाब में तब तक संघर्ष करना होगा जब तक जीने से घृणा हमें घुटकर मार न दे। 'पैराडाइज़ लॉस्ट' में, रेवरेंड फादर गेब्रियल आदम से कहते हैं, "निराश हो जाओ और मर जाओ", या कुछ इसी तरह के शब्द। मैं हर चीज़ से इतना तंग आ चुका हूँ कि कोई प्रयास करने की हिम्मत ही नहीं; अंत तक इसी गंदगी में रहना होगा।

अंततः, जिसे उन्होंने "गंदगी का झरना" कहा था, वह उनके लिए इतना असहनीय साबित हुआ कि वे उसमें नहीं रह सके।

1930 और 1946 के बीच लिखे गए उपन्यास, लघु कथाएँ, नाटक और व्यंग्य सहित हेदायत के उपन्यासों में परवीन दोख्तर-ए सासन (परवीन द सासैनियन गर्ल), अफसानेह-ये अफरीनेश (द लीजेंड ऑफ क्रिएशन), अल-बिथा (टी) अल-इस्लामिया इल'एल-बिलाद अल-अफ्रांजिया (यूरोपीय शहरों के लिए इस्लामी मिशन), ज़ेंडेह बेह गुर, (दफन) शामिल हैं। जिंदा), अनिरन (गैर-ईरानी), माज़ियार, सेह कतरेह खुन (खून की तीन बूंदें), अलावियेह खानोम (मालकिन अलावियेह), सईह रोशन (चियारोस्कोरो), वाघ-वाघ साहब (मिस्टर बो-वॉव), बुफ-ए कुर (द ब्लाइंड उल्लू), 'सैम्पिंगे' और 'लुनाटिक' (दोनों फ्रेंच में), साग-ए वेलगार्ड (आवारा कुत्ता), हाजी आका, वेलेन्गारी (मकिंग अबाउट) और तुप-ए मोरवारी (मोरवारी तोप)।

मैंने हेदयाट के उपन्यासों को विश्लेषणात्मक रूप से चार अलग-अलग श्रेणियों में वर्गीकृत किया है, हालांकि उनमें कुछ अपरिहार्य अतिशयोक्ति है: रोमांटिक राष्ट्रवादी उपन्यास, आलोचनात्मक यथार्थवादी कहानियां, व्यंग्य और मनो-कथा।

सर्वप्रथम, रोमांटिक राष्ट्रवादी कथा साहित्य। ऐतिहासिक नाटक – परवीन और मज़ियार, तथा लघु कथाएँ ‘मंगोल की छाया’ (‘सायेह-ए मोगोल’) और ‘अंतिम मुस्कान’ (‘अखारिन लबखंड’) – भावों में सरल और शैली में अपरिष्कृत हैं। ये प्रथम विश्व युद्ध के बाद ईरानी आधुनिकतावादी अभिजात वर्ग पर छाए सर्व-फ़ारसीवादी विचारधारा और पंथ से उत्पन्न भावनाओं को प्रतिबिंबित करती हैं। ‘अंतिम मुस्कान’ इस प्रकार की सबसे परिपक्व रचना है। हेदायत का प्रत्यक्ष नाटक अत्यधिक विकसित नहीं है, और उन्होंने राष्ट्रवादी कथा साहित्य के साथ-साथ इस शैली को भी शीघ्र ही त्याग दिया। लेकिन उनकी कई आलोचनात्मक यथार्थवादी लघु कथाओं को मंच के लिए आसानी से रूपांतरित किया जा सकता है और उनका प्रभाव प्रभावी होगा।

हेदयाट की दूसरी श्रेणी, यानी उनके आलोचनात्मक यथार्थवादी उपन्यासों की संख्या बहुत अधिक है और वे अक्सर उत्कृष्ट होते हैं। इनमें से सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं 'अलाविये खानोम' ('मालकिन अलाविये'), जो शास्त्रीय अर्थों में एक हास्य रचना है, 'तलाब-ए अमोरज़ेश' ('क्षमा की तलाश'), 'मोहल्लेल' ('कानूनी सलाहकार') और 'मोरदेह-खोर-हा' ('भूत')। इन कहानियों में व्यंग्य

और विडंबना दोनों का प्रयोग अलग-अलग स्तर पर किया गया है, हालांकि इनमें से कुछ को ही सटीक रूप से व्यंग्यात्मक उपन्यास कहा जा सकता है।

ये रचनाएँ समकालीन शहरी निम्न-मध्यम वर्ग के जीवन और पारंपरिक मान्यताओं के पहलुओं को सहजता और सटीकता से दर्शाती हैं। लेकिन लंबे समय से चली आ रही धारणाओं के विपरीत, ये न तो "गरीबों या दबे-कुचलों" के बारे में हैं, और न ही उनके चरित्रों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करती हैं। दुख और अंधविश्वास, उदासी, खुशी, पाखंड और कभी-कभी आपराधिक व्यवहार के साथ मिश्रित होते हैं। यह परंपरा जमालज़ादेह द्वारा स्थापित की गई थी (हालाँकि उनके पात्रों के प्रति उनकी सहानुभूति अधिक थी), जिसे हेदायत ने आगे बढ़ाया और चुबक और अल-ए अहमद ने अपनी प्रारंभिक रचनाओं में इसे आगे बढ़ाया।

तीसरी श्रेणी की बात करें तो, हेदायत की व्यंग्यात्मक रचनाएँ समृद्ध और अक्सर बेहद प्रभावशाली होती हैं। वे हास्य-व्यंग्य के उस्ताद थे और उन्होंने शाब्दिक और नाटकीय दोनों प्रकार के व्यंग्य लिखे। ये लघु कथाओं और उपन्यासों के साथ-साथ छोटे और लंबे किस्सों के रूप में भी मिलते हैं। उनकी रचनाएँ अपने विषयों पर तीखा प्रहार करती हैं, आमतौर पर प्रभावी सूक्ष्मता के साथ, हालांकि कभी-कभी प्रत्यक्ष उपहास, निंदा और कटु आलोचना लेखक की काल्पनिक व्यंग्य में उनकी व्यक्तिगत भागीदारी की गहराई को प्रकट करती हैं।

हेदायत की राजनीतिक व्यवस्था पर की गई व्यंग्य रचनाओं में हाजी आगा सबसे लंबी और सबसे स्पष्ट है। सतही तौर पर देखने पर भले ही यह आलोचनात्मक प्रचार लगे, लेकिन यह बाज़ार के लोगों के तौर-तरीकों पर व्यंग्य कम और प्रमुख रूढ़िवादी राजनेताओं पर एक निर्मम हमला ज़्यादा है। दरअसल, शीर्षक में वर्णित हाजी के वास्तविक जीवन के आदर्श दो महत्वपूर्ण पुराने विचारों वाले (और संयोगवश, किसी भी तरह से सबसे बुरे नहीं) राजनेता हैं।

मैंने अब तक जिन बातों का उल्लेख किया है, उनके कारण हेदयात फारसी साहित्य के इतिहास में पहले से ही एक स्थायी और प्रमुख स्थान प्राप्त कर चुके होते। हालाँकि, उन्हें जो विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है, वह उनके मनो-कथा लेखन के कारण है, जिसका सबसे उत्तम और शुद्ध उदाहरण 'अंधा उल्लू' है। यह रचना और लघु कहानी 'खून की तीन बूँदें' शैली में आधुनिकतावादी हैं, जिनमें साहित्य में फ्रांसीसी प्रतीकवाद और अतियथार्थवाद, आधुनिक यूरोपीय कला में अतियथार्थवाद और समकालीन यूरोपीय फिल्मों में अभिव्यक्तिवाद की तकनीकों का उपयोग किया गया है, जिसमें समय और स्थान का जानबूझकर भ्रम भी शामिल है। लेकिन अधिकांश अन्य मनो-कथात्मक कहानियाँ - उदाहरण के लिए... 'ज़ेंदेह बेह गुर' ('ज़िंदा दफ़न'), 'अरुसक-ए पोश्त-ए परदेह' ('पर्दे के पीछे की कठपुतली'), 'बोन-बस्त' ('डेड एंड'), 'तारिक-खानेह' ('अंधेरा कमरा'), 'दावुद-ए गुज़पोश्त' ('कुबड़ा दाऊद') और 'साग-ए वेलगार्ड' ('आवारा कुत्ता') – ये सभी मनो-काल्पनिक कहानियों को प्रस्तुत करने में यथार्थवादी तकनीकों का उपयोग करते हैं।

हेदयाट के साहित्य में इस विशेष शैली का वर्णन करने के लिए 1970 के दशक के मध्य में मेरे द्वारा गढ़ा गया नाम "मनो-काल्पनिक" वह अर्थ नहीं देता जो आमतौर पर प्रचलित अवधारणा और श्रेणी "मनोवैज्ञानिक उपन्यास" द्वारा व्यक्त किया जाता है। बल्कि, यह कहानियों की मूलतः व्यक्तिपरक प्रकृति को दर्शाता है, जो मनोवैज्ञानिक, तात्विक और आध्यात्मिक तत्वों को एक

अविभाज्य रूप में समाहित करती है।

हेदयाट की मनो-कथात्मक कहानियाँ, जैसे 'खून की तीन बूँदें' और 'जिंदा दफ़न', भयावह हैं और इनके अंत में मनुष्यों और जानवरों दोनों की मृत्यु दिखाई देती है। अधिकांश मनुष्य आम लोगों से कमतर हैं, और जो कुछ थोड़े बहुत बेहतर हैं, वे भी पूर्णता या मोक्ष प्राप्त करने में बुरी तरह असफल हो जाते हैं। यहाँ तक कि लघु कथा 'अहंकार को मारने वाला व्यक्ति' में, जो व्यक्ति अपने अहंकार को "मारने" की कोशिश करता है - अपने शरीर को कष्ट देने या अपने अहंकार को नष्ट करने की - वह भी अंततः स्वयं को ही मार डालता है; यानी मुक्ति पाने के बजाय अपनी आत्मा का नाश कर लेता है। स्त्रियाँ या तो वेश्याएँ होती हैं, या फिर फरिश्ते, यानी देवदूतों जैसी आकृतियाँ जो प्रकट होते ही मुरझाकर बिखर जाती हैं, हालाँकि यह बात केवल मनो-कथाओं में वर्णित स्त्रियों पर ही लागू होती है, उन स्त्रियों पर जिनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि लेखक के समान है, न कि उनकी आलोचनात्मक यथार्थवादी कहानियों में वर्णित निम्न वर्गों की स्त्रियों पर।

सामाजिक और बौद्धिक रूप से प्रतिष्ठित एक बड़े परिवार में जन्मे, आधुनिक और साथ ही आधुनिकतावादी बुद्धिजीवी, उन्नत फ़ारसी और यूरोपीय संस्कृति में पारंगत एक प्रतिभाशाली लेखक, और नैतिक और बौद्धिक उत्कृष्टता के उच्चतम मानकों की मांग करने वाले मन के साथ, हेदायत पर एक ऐसा भारी बोझ था जिसे बहुत कम लोग शांति से सहन कर सकते थे, विशेषकर इसलिए कि उन्होंने पुराने और नए, तथा फ़ारसी और यूरोपीय के टकराव के प्रभावों को झेला, जैसा कि कुछ ही ईरानियों ने अनुभव किया है। उन्होंने एक दुखी जीवन जिया और एक दुखद मृत्यु को प्राप्त हुए। शायद यह उस साहित्य की अपरिहार्य कीमत थी जो उन्होंने मानवता को विरासत में दिया।

होमा कातौज़ियन
सेंट एंटनी कॉलेज और ओरिएंटल इंस्टीट्यूट
ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय

ग्रन्थसूची

माइकल बियर्ड, द ब्लाइंड आउल एज़ अ वेस्टर्न नॉवेल (प्रिंसटन, एनजे: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1990)
नासिर पाकदामन, एड., सादिक हेदायत, हशताद-ओ-दाव नामेह बेह हसन शाहिद-नुराई (सादेक हेदायत, हसन शाहिद-नुराई को बयासी पत्र) (पेरिस: चेशमंदाज, 2000)
एहसान यार्शतर, एड., सादिक हेडायत: एन एंथोलॉजी (बोल्डर, सीओ: वेस्टव्यू, 1979)

होमा कातौजियन द्वारा:
सादेक हेदयाट, उनका काम और उनकी अद्भुत दुनिया, संपादित, (लंदन और न्यूयॉर्क: रूटलेज, 2008)
सादेक हेदयाट: एक ईरानी लेखक का जीवन और किंवदंती, पेपरबैक संस्करण, (लंदन और न्यूयॉर्क: आई.बी. टॉरिस, 2002)
दरबारेह-ये बुफ-ए कुर-ए हेदायत (हेदायत का द ब्लाइंड आउल, एक क्रिटिकल मोनोग्राफ) (तेहरान: नश्र-ए मरकज़, 5वीं छाप, 2008)
सादिक हेडायत वा मार्ग-ए नेविसंदे (सादिक हेडायत और लेखक की मृत्यु) (तेहरान: नश्र-ए मरकज़, चौथी छाप, 2005)
तन्ज़ वा तन्ज़ीनेह-ये हेदायत, (हेदायत में व्यंग्य और विडंबना) (स्टॉकहोम: अराश, 2003)

अंधा उल्लू

(डी.पी. कोस्टेलो द्वारा अनुवादित)

1

कुछ ऐसे घाव होते हैं जो एकांत में धीरे-धीरे मन को खोखला कर देते हैं, एक प्रकार के नासूर की तरह।

इस बीमारी से होने वाली पीड़ा का सही-सही वर्णन करना असंभव है। आम तौर पर लोग इस तरह के असहनीय कष्टों को अविश्वसनीय मान लेते हैं। बातचीत या लेखन में इनका ज़िक्र करते ही लोग मौजूदा मान्यताओं, विशेष रूप से व्यक्ति की निजी मान्यताओं के आधार पर ही इस पर विचार करते हैं और अविश्वास और उपहास भरी मुस्कान के साथ इसे स्वीकार करते हैं। इस अविश्वास का कारण यह है कि मानव जाति ने अभी तक इस बीमारी का कोई इलाज नहीं खोजा है। इससे राहत केवल शराब से होने वाली बेहोशी और अफीम तथा इसी तरह के मादक पदार्थों से उत्पन्न कृत्रिम नींद में ही मिल सकती है। अफसोस की बात है कि इन दवाओं का असर केवल अस्थायी होता है। एक निश्चित सीमा के बाद, ये दर्द को कम करने के बजाय उसे और बढ़ा देती हैं।

क्या कोई कभी इस बीमारी के रहस्य को समझ पाएगा जो सामान्य अनुभव से परे है, मन की छाया की यह प्रतिध्वनि, जो मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच की उस अवस्था जैसी कोमा की स्थिति में प्रकट होती है, जब व्यक्ति न तो सो रहा होता है और न ही जाग रहा होता है?

मैं इस बीमारी के केवल एक मामले पर चर्चा करना चाहता हूँ। यह मामला मुझसे व्यक्तिगत रूप से जुड़ा था और इसने मेरे पूरे अस्तित्व को इस कदर झकझोर दिया कि मैं इसे कभी अपने मन से निकाल नहीं पाऊँगा। इसने जो बुरा प्रभाव छोड़ा है, वह मानवीय समझ से परे हद तक मेरे जीवन को हमेशा के लिए दूषित कर चुका है। मैंने "दूषित" कहा: मुझे कहना चाहिए था कि मैं तब से उस दाग का निशान अपने साथ लिए बैठा हूँ, और हमेशा के लिए लिए बैठा रहूँगा।

मैं जो कुछ याद रख सकता हूँ, घटनाओं के क्रम में जो कुछ मेरे मन में रह गया है, उसे लिखने की कोशिश करूँगा। शायद मैं इससे कोई सामान्य निष्कर्ष निकाल सकूँ – लेकिन नहीं, यह बहुत अधिक उम्मीद है। मैं शायद दूसरों द्वारा विश्वास किए जाने की आशा करूँ या कम से कम खुद को आश्वस्त कर लूँ; क्योंकि अंततः, मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि दूसरे मुझ पर विश्वास करते हैं या नहीं। मेरा एक ही डर है कि कल मैं खुद को जाने बिना ही मर जाऊँ। अपने जीवन के दौरान मैंने पाया है कि मेरे और अन्य लोगों के बीच एक भयानक खाई है और मैंने महसूस किया है कि मेरे लिए सबसे अच्छा यही है कि मैं चुप रहूँ और अपने विचारों को यथासंभव लंबे समय तक अपने तक ही सीमित रखूँ। अगर मैंने अब लिखने का मन बनाया है तो यह केवल अपने भीतर की परछाई को खुद को प्रकट करने के लिए है, वह परछाई जो इस समय दीवार पर इस मुद्रा में फैली हुई है जैसे वह मेरी लिखी हर बात को अतृप्त भूख से निगल रही हो। उसी के लिए मैं यह प्रयास करना चाहता हूँ। कौन जानता है? शायद हम एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जान पाएँ। जब से मैंने मानवता के शेष भाग से अपने अंतिम बंधन तोड़ दिए हैं, तब से मेरी एकमात्र इच्छा स्वयं को बेहतर ढंग से जानने की रही है।

व्यर्थ के विचार! शायद। फिर भी वे मुझे किसी भी वास्तविकता से कहीं अधिक पीड़ा देते हैं। क्या मेरे जैसे दिखने वाले, मेरे जैसी ही ज़रूरतों और भावनाओं वाले बाकी इंसान सिर्फ मुझे

धोखा देने के लिए ही मौजूद नहीं हैं? क्या वे मुट्ठी भर परछाइयाँ मात्र नहीं हैं जो सिर्फ मेरा मज़ाक उड़ाने और मुझे धोखा देने के लिए अस्तित्व में आई हैं? क्या जो कुछ मैं महसूस करता हूँ, देखता हूँ और सोचता हूँ, वह पूरी तरह से काल्पनिक नहीं है, वास्तविकता से बिलकुल अलग नहीं है?

मैं केवल अपनी परछाई के लिए लिख रहा हूँ, जो अब दीपक की रोशनी में दीवार पर फैली हुई है। मुझे उसे अपना परिचय देना ही होगा।

2

इस दुख और पीड़ा से भरी दुनिया में मुझे लगा मानो पहली बार मेरे जीवन में सूरज की एक किरण चमकी हो। अफसोस, वह सूरज की रोशनी नहीं, बल्कि एक क्षणिक चमक थी, एक टूटता तारा, जो मुझ पर एक स्त्री या देवदूत के रूप में प्रकट हुआ। उसकी रोशनी में, एक पल में, एक क्षण के लिए, मैंने अपने जीवन की सारी पीड़ा देखी और उस तारे की महिमा और वैभव को महसूस किया। उसके बाद, वह चमक फिर से अंधकार के भंवर में गायब हो गई, जिसमें उसका गायब होना तय था। मैं उस क्षणिक चमक को थाम नहीं सका।

तीन महीने हो गए हैं – नहीं, दो महीने और चार दिन हो गए हैं – जब से मैंने उसे अपनी आँखों से ओझल होते देखा है, लेकिन उन जादुई आँखों की, उन आँखों की जानलेवा चमक की याद हमेशा मेरे साथ बनी रही है। मैं उसे कैसे भूल सकता हूँ, जो मेरे जीवन से इतनी गहराई से जुड़ी हुई है?

नहीं, मैं उसका नाम कभी नहीं लूंगा। क्योंकि अब, उसकी कोमल, अलौकिक, धुंधली आकृति, उसकी विशाल, चमकती, विस्मयकारी आँखें, जिनकी गहराई में मेरा जीवन धीरे-धीरे और पीड़ादायक रूप से जलकर गल गया है, वह अब इस नीच, क्रूर संसार से संबंधित नहीं है। नहीं, मुझे सांसारिक वस्तुओं के संपर्क से उसके नाम को अपवित्र नहीं करना चाहिए।

उसके जाने के बाद मैंने पुरुषों की संगति से, मूर्खों और सफल लोगों की संगति से खुद को अलग कर लिया और भुलाने के लिए शराब और अफीम का सहारा लिया। मेरा जीवन मेरे कमरे की चार दीवारों के भीतर ही बीता है, और अभी भी बीत रहा है। मेरा पूरा जीवन चार दीवारों के भीतर ही बीता है।

मैं दिनभर कलम के कवर सजाने का काम करता था। या यूँ कहूँ कि मैं कलम के कवर सजाने के अपने इस काम में वो समय बिताता था जो शराब और अफीम में नहीं लगता था। मैंने कलम के कवर सजाने का ये बेतुका काम सिर्फ खुद को मदहोश करने के लिए, किसी न किसी तरह समय गुजारने के लिए चुना था।

मैं खुशकिस्मत हूँ कि मेरा घर शहर के बाहरी इलाके में, शोर-शराबे से दूर एक शांत जगह पर स्थित है। यह पूरी तरह से एकांत में है और इसके चारों ओर खंडहर ही खंडहर हैं। घाटी के उस पार ही मिट्टी की ईंटों से बने कुछ छोटे-छोटे मकान दिखाई देते हैं, जो शहर की अंतिम सीमा को दर्शाते हैं। पता नहीं कितने समय पहले किसी मूर्ख या पागल ने इन्हें बनाया होगा। जब मैं अपनी आँखें बंद करता हूँ, तो न केवल मुझे इनकी बनावट की हर बारीकी दिखाई देती है, बल्कि ऐसा लगता है जैसे इनका भार मेरे कंधों पर पड़ा हो। ये उस तरह के मकान हैं जिनकी तस्वीरें पुराने कलमों के कवर पर ही मिलती थीं।

मुझे अपनी कहानी के विभिन्न पहलुओं को सुलझाने के लिए यह सब कागज पर लिखना अनिवार्य है। मुझे दीवार पर बनी अपनी परछाई के हित में यह सब समझाना अनिवार्य है।

हाँ, अतीत में मेरे लिए केवल एक ही सांत्वना थी, और वह भी मामूली सी। अपने कमरे की चार दीवारों के भीतर मैं कलम रखने वाले डिब्बों पर चित्र बनाता था और इस तरह, अपने इस बेतुके काम की बदौलत, किसी तरह दिन गुजार लेता था। लेकिन जब मैंने एक बार उन दो आँखों को

देख लिया, एक बार जब मैंने उसे देख लिया, तो मेरे लिए किसी भी प्रकार की गतिविधि का कोई अर्थ, कोई सार, कोई मूल्य नहीं रह गया।

मैं एक अजीब, एक अविश्वसनीय बात बताना चाहूँगा। पता नहीं क्यों, मेरी सभी पेंटिंग्स का विषय शुरू से ही एक ही रहा। उसमें हमेशा एक सरू का पेड़ होता था, जिसके नीचे एक बूढ़ा आदमी भारतीय फकीर की तरह झुका बैठा होता था। उसने एक लंबा लबादा ओढ़ा होता था और सिर पर पगड़ी पहनी होती थी। उसके बाएं हाथ की तर्जनी उंगली उसके होठों पर आश्चर्य के भाव से दबी होती थी। उसके सामने एक लड़की लंबी काली पोशाक पहने खड़ी होती थी, जो उसकी ओर झुककर उसे मॉर्निंग ग्लोरी का फूल भेंट करती थी। उनके बीच एक छोटी सी धारा बहती थी। क्या मैंने इस चित्र का विषय पहले कभी देखा था या यह मुझे सपने में दिखाई दिया था? मुझे नहीं पता। लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि जब भी मैं पेंटिंग बनाने बैठता था, मैं उसी डिज़ाइन, उसी विषय को बनाता था। मेरा हाथ, मेरी इच्छा के बिना, हमेशा उसी दृश्य को चित्रित करता था। सबसे अजीब बात यह थी कि मुझे अपनी इन पेंटिंग्स के लिए ग्राहक मिल जाते थे। मैंने अपने कुछ पेन-केस कवर अपने पैतृक चाचा के माध्यम से भारत भी भेजे थे, जो उन्हें बेचते थे और मुझे पैसे भेजते थे।

पता नहीं क्यों, मुझे यह विषय हमेशा से ही दूर का और साथ ही साथ अजीब तरह से जाना-पहचाना सा लगता था। मुझे ठीक से याद नहीं... मुझे याद आता है कि मैंने एक बार खुद से कहा था कि मुझे इस सब के बारे में जो कुछ भी याद है, उसे लिख लेना चाहिए – लेकिन यह बहुत बाद में हुआ और इसका मेरी पेंटिंग के विषय से कोई लेना-देना नहीं है। इसके अलावा, इस अनुभव का एक परिणाम यह हुआ कि मैंने पेंटिंग करना पूरी तरह से छोड़ दिया। यह दो महीने पहले की बात है, या यूँ कहें कि ठीक दो महीने और चार दिन पहले की।

नौरूज़ का तेरहवाँ दिन था।* सभी लोग गाँव गए हुए थे। मैंने अपने कमरे की खिड़की बंद कर ली थी ताकि मैं अपनी पेंटिंग पर ध्यान केंद्रित कर सकूँ। सूर्यास्त होने में कुछ ही समय बचा था और मैं काम में मग्न था कि अचानक दरवाजा खुला और मेरे चाचा कमरे में आए। उन्होंने कहा कि वे मेरे चाचा हैं। मैंने अपने चाचा को जीवन भर नहीं देखा था, क्योंकि वे अपनी युवावस्था से ही विदेश में रहे थे। मुझे याद है कि वे एक समुद्री कप्तान थे। मैंने सोचा कि शायद उन्हें मुझसे किसी व्यापारिक मामले पर बात करनी हो, क्योंकि मुझे पता था कि उन्हें व्यापार में भी रुचि थी। खैर, मेरे चाचा एक झुके हुए बूढ़े व्यक्ति थे जिनके सिर पर भारतीय पगड़ी और पीठ पर फटा हुआ पीला लबादा था; उनका चेहरा गले में लिपटे दुपट्टे से आंशिक रूप से ढका हुआ था; उनकी कमीज खुली हुई थी जिससे उनकी घनी छाती दिखाई दे रही थी। गले को ढके दुपट्टे के नीचे से झाँकती उनकी विरल दाढ़ी के बालों को गिनना संभव था। उनकी पलकें लाल और सूजी हुई थीं और उनके होंठ कटे हुए थे। वह दूर से ही, एक अजीब से अंदाज़ में, मुझसे मिलता-जुलता था, जैसे किसी टेढ़े-मेढ़े शीशे में परछाई दिख रही हो। मैंने हमेशा अपने पिता की ऐसी ही छवि बनाई थी। कमरे में आते ही वह सीधे सामने वाली दीवार के पास गए और ज़मीन पर बैठ गए। मुझे लगा कि उनके आने की खुशी में उन्हें कुछ जलपान कराना चाहिए। मैंने दीपक जलाया और अपने कमरे से जुड़े छोटे से अंधेरे कमरे में गया। मैंने हर कोने में कुछ ढूंढने की कोशिश की, ताकि उन्हें

कुछ दे सकूँ, हालाँकि मुझे पता था कि घर में ऐसा कुछ नहीं था – मेरे पास न तो अफ़ीम बची थी और न ही शराब। अचानक मेरी नज़र दीवार पर लगी सबसे ऊपर वाली अलमारी पर पड़ी। ऐसा लगा जैसे मुझे कोई विचार आया हो। अलमारी पर शराब की एक पुरानी बोतल रखी थी, जो मेरे माता-पिता ने मुझे दी थी। मुझे याद है कि मैंने सुना था कि यह मेरे जन्म के अवसर पर रखी गई थी। वह सबसे ऊपर वाली अलमारी पर थी। मैंने कभी इस बारे में सोचा तक नहीं था और मैं तो बिल्कुल भूल ही गया था कि घर में ऐसी कोई चीज़ भी है। अलमारी तक पहुँचने के लिए मैं वहाँ रखे एक स्टूल पर चढ़ गया। जैसे ही मैंने बोतल की ओर हाथ बढ़ाया, संयोगवश मेरी नज़र शेल्फ के ऊपर बने वेंटिलेशन छेद से बाहर की ओर पड़ी। मेरे कमरे के बाहर खुले मैदान में मैंने एक झुके हुए बूढ़े व्यक्ति को सरू के पेड़ के नीचे बैठे देखा, जिसके सामने एक युवती खड़ी थी - नहीं, मानो स्वर्ग से आई कोई परी हो। वह आगे की ओर झुकी हुई थी और अपने दाहिने हाथ से उसे मॉर्निंग ग्लोरी का नीला फूल भेंट कर रही थी। बूढ़ा व्यक्ति अपने बाएं हाथ की तर्जनी उंगली का नाखून चबा रहा था।

वह लड़की मेरे ठीक सामने थी, लेकिन मानो उसे अपने आस-पास की किसी बात का एहसास ही न हो। वह सीधे आगे देख रही थी, किसी खास चीज़ पर ध्यान नहीं दे रही थी। उसके होठों पर एक हल्की, अनायास मुस्कान थी, मानो वह किसी अनुपस्थित व्यक्ति के बारे में सोच रही हो। तभी मेरी नज़र पहली बार उसकी उन डरावनी, जादुई आँखों पर पड़ी, वे आँखें जो मानवता को कड़वी फटकार लगाती हुई प्रतीत हो रही थीं, जिनमें चिंता और आश्चर्य, खतरा और आशा का भाव था – और मेरे अस्तित्व की धारा उन चमकती आँखों की ओर खिंची चली गई, जो अनेक अर्थों से भरी थीं, और मैं उनकी गहराई में डूब गया। उस चुंबकीय दर्पण ने अकल्पनीय बल से मेरे पूरे अस्तित्व को अपनी ओर खींच लिया। वे तिरछी, तुर्कमान आँखें थीं, जिनमें अलौकिक, मदहोश कर देने वाली चमक थी, जो एक साथ डराती और आकर्षित करती थी, मानो उन्होंने किसी भयानक, अलौकिक चीज़ को देखा हो, जिसे देखने का सौभाग्य केवल उसे ही प्राप्त था। उसकी गाल की हड्डियाँ उभरी हुई थीं और माथा ऊँचा था। उसकी भौहें पतली थीं और बीच में मिलती थीं। उसके होंठ भरे हुए और आधे खुले थे, मानो कुछ ही पल पहले किसी लंबे, भावुक चुंबन से अलग हुए हों और अभी संतुष्ट न हुए हों। उसका चेहरा, चाँद की तरह पीला, उसके काले, बिखरे बालों से घिरा हुआ था और एक लट उसकी कनपटी पर टिकी हुई थी। उसके अंगों की कोमलता और उसकी चाल की अलौकिक सहजता यह दर्शाती थी कि वह इस दुनिया में लंबे समय तक जीने के लिए नहीं बनी थी। केवल एक हिंदू मंदिर की नर्तकी ही उसकी जैसी सुरीली चाल का आनंद ले सकती थी।

उसके मिश्रित उल्लास और उदासी के भाव ने उसे आम लोगों से अलग कर दिया था। उसकी सुंदरता असाधारण थी। वह मुझे अफीम के नशे में देखे गए किसी सपने की याद दिलाती थी। उसने मेरे भीतर वैसी ही तीव्र वासना जगा दी जैसी मैंड्रेक की जड़ से उत्पन्न होती है। मुझे ऐसा लगा मानो उसकी लंबी, सुडौल काया, जिसमें कंधे, बांह, स्तन, कमर, नितंब और टांगों की सुडौल रेखाएं थीं, उसे देखकर ऐसा लगा जैसे उसे उसके पति के आलिंगन से छीन लिया गया हो, जैसे वह मादा मैंड्रेक हो जिसे उसके साथी की बाहों से तोड़ लिया गया हो।

उसने काले रंग की प्लीटेड ड्रेस पहनी हुई थी जो उसके शरीर से चिपकी हुई थी। उसे निहारते हुए मुझे यकीन हो गया कि वह उस नाले को पार करना चाहती थी जो उसे उस बूढ़े आदमी से अलग कर रहा था, लेकिन वह ऐसा करने में असमर्थ थी। अचानक बूढ़ा आदमी ज़ोर से हंस पड़ा। उसकी हंसी खोखली और कर्कश थी, ऐसी हंसी जिससे रोंगटे खड़े हो जाएं; एक कठोर, भयावह और उपहास भरी हंसी। फिर भी उसके चेहरे के भाव नहीं बदले। ऐसा लग रहा था मानो हंसी उसके शरीर के भीतर कहीं से गूंज रही हो।

डर के मारे मैं बोतल हाथ में लिए स्टूल से नीचे कूद पड़ा। मैं कांप रहा था, डर और खुशी के मिले-जुले भाव में, जैसे किसी भयानक सपने में होता है। मैंने शराब की बोतल ज़मीन पर रख दी और अपना सिर हाथों में थाम लिया। कितने मिनट, कितने घंटे मैं इसी हालत में रहा, मुझे याद नहीं। जब मुझे होश आया तो मैंने बोतल उठाई और अपने कमरे में वापस चला गया। मेरे चाचा जा चुके थे और कमरे का दरवाज़ा किसी मरे हुए आदमी के मुंह की तरह खुला छोड़ गए थे। उस बूढ़े आदमी की खोखली हंसी की आवाज़ अभी भी मेरे कानों में गूंज रही थी।

अंधेरा छा रहा था। दीपक से धुआँ निकल रहा था। उस भयानक, लेकिन सुखद कंपकंपी के दौर का असर अब भी मुझ पर महसूस हो रहा था। उसी क्षण से मेरे जीवन की दिशा बदल गई थी। स्वर्ग की उस परी, उस अलौकिक कन्या ने एक ही नज़र से मुझ पर अपनी छाप छोड़ दी थी, जो मनुष्य की कल्पना से परे गहरी थी।

उस पल मैं एक सम्मोहन की अवस्था में था। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उसका नाम बहुत पहले से जानता हूँ। उसकी आँखों की चमक, उसका रंग-रूप, उसकी खुशबू, उसकी चाल-ढाल, सब कुछ मुझे जाना-पहचाना सा लगा, मानो किसी पिछले जन्म में, सपनों की दुनिया में, मेरी आत्मा उसके साथ रही हो, एक ही जड़ और एक ही वंश से निकली हो और यह तय था कि हम फिर से एक साथ आएँगे। इस जीवन में उसका करीब होना तय था। मुझे उसे छूने की कभी इच्छा नहीं हुई। हमारे शरीरों से निकलने वाली अदृश्य किरणें जो आपस में मिल गईं, वही काफी संपर्क था। जहाँ तक इस अजीब बात का सवाल है कि पहली नज़र में ही वह मुझे जानी-पहचानी सी लगी, क्या प्रेमियों को हमेशा ऐसा महसूस नहीं होता कि वे एक-दूसरे को पहले देख चुके हैं और उनके बीच एक रहस्यमय बंधन लंबे समय से मौजूद है? इस तुच्छ संसार में मेरी एकमात्र इच्छा उसका प्यार थी; अगर वह मुझे न मिले तो मुझे किसी का प्यार नहीं चाहिए। क्या यह संभव था कि उसके अलावा कोई और मेरे दिल पर कोई छाप छोड़ सके? लेकिन उस बूढ़े आदमी की खोखली, कर्कश हंसी, उसकी भयावह हंसी ने हमारे बीच के बंधन को तोड़ दिया था।

पूरी रात मैं इन्हीं बातों के बारे में सोचता रहा। बार-बार मेरा मन करता कि दीवार में बने छेद से झाँक लूँ, लेकिन उस बूढ़े आदमी की हँसी के डर से मैं रुक जाता था। अगले दिन भी मुझे कुछ और सूझा ही नहीं। क्या मैं उसे देखने जाने से पूरी तरह खुद को रोक पाऊँगा? आखिरकार, तीसरे दिन, अपने अंदर के डर के बावजूद, मैंने शराब की बोतल वापस उसकी जगह पर रखने का फैसला किया। लेकिन जब मैंने पर्दा हटाया और कोठरी में देखा, तो मेरे सामने एक ऐसी दीवार थी जो उतनी ही खाली और काली थी जितनी कि मेरे जीवन को घेरे हुए अंधेरा। वहाँ न तो कोई छेद था और न ही कोई खिड़की। आयताकार छेद को भर दिया गया था, वह दीवार में समा गया

था, मानो वह कभी था ही नहीं। मैं स्टूल पर खड़ा रहा, लेकिन मुट्ठियों से दीवार पर प्रहार करने के बावजूद, ध्यान से सुनने के बावजूद, लैंप से उसे ध्यान से देखने के बावजूद, वहाँ किसी छेद का जरा सा भी निशान नहीं था। मेरे प्रहारों का दीवार की ठोस, भारी संरचना पर उतना ही असर हुआ, मानो वह सीसे की एक ही पटिया हो।

क्या मैं उसे फिर से देखने की उम्मीद छोड़ सकता था? ऐसा करना मेरे बस में नहीं था। अब से मैं एक व्यथित आत्मा की तरह जी रहा था। मेरा सारा इंतज़ार, इंतज़ार और खोज व्यर्थ थी। मैंने अपने घर के आस-पास की हर जगह को छान मारा। मैं उस हत्यारे की तरह था जो अपने अपराध स्थल पर लौटता है। एक दिन नहीं, दो दिन नहीं, बल्कि चौबीस दिनों तक हर दिन, मैं शाम को अपने घर के चारों ओर एक कटे हुए सिर वाले मुर्गे की तरह चक्कर लगाता रहा। मैं आस-पास के हर पत्थर और हर कंकड़ को पहचान गया, लेकिन मुझे सरू के पेड़ का, उस छोटी सी धारा का, या उन दो लोगों का कोई निशान नहीं मिला जिन्हें मैंने वहाँ देखा था। उतनी ही रातें मैं चांदनी में ज़मीन पर घुटने टेककर बैठा रहा, मैंने पेड़ों, पत्थरों और चाँद से विनती की - क्योंकि हो सकता है कि वह उस पल चाँद को निहार रही हो - मैंने हर प्राणी से मदद माँगी, लेकिन मुझे उसका कोई सुराग नहीं मिला। अंत में मुझे समझ आया कि मेरे सारे प्रयास व्यर्थ थे, क्योंकि उसका इस संसार की वस्तुओं से किसी भी प्रकार का संबंध होना संभव नहीं था: जिस जल से वह अपने बाल धोती थी, वह किसी अनोखे, अज्ञात स्रोत से आता था; उसकी पोशाक साधारण कपड़े से नहीं बुनी गई थी और न ही उसे किसी मनुष्य के हाथों से बनाया गया था। वह एक विलक्षण प्राणी थी। मुझे अहसास हुआ कि वे मॉर्निंग ग्लोरी के फूल साधारण फूल नहीं थे। मुझे यकीन था कि यदि उसका चेहरा साधारण पानी के संपर्क में आता तो वह मुरझा जाता; और यदि वह अपनी लंबी, कोमल उंगलियों से मॉर्निंग ग्लोरी का कोई साधारण फूल तोड़ती तो वह फूल की पंखुड़ियों की तरह सूख जाता।

मैं यह सब समझ गया। यह लड़की, यह परी, मेरे लिए आश्चर्य और अवर्णनीय रहस्योद्घाटन का स्रोत थी। उसका अस्तित्व सूक्ष्म और अगोचर था। उसने मेरे मन में श्रद्धा का भाव जगाया। मुझे पूरा विश्वास था कि किसी अजनबी, किसी साधारण व्यक्ति की निगाह में वह मुरझाकर चूर-चूर हो जाती।

जब से मैंने उसे खोया था, जब से वह द्वार बंद हो गया था और एक भारी दीवार, सीसे की दीवार जैसी भारी, नमी से भरी बाधा ने मुझे उससे अलग कर दिया था, तब से मुझे लगा कि मेरा अस्तित्व व्यर्थ हो गया है, कि मैं हमेशा के लिए अपना रास्ता भटक गया हूँ। हालाँकि उसकी निगाहों का स्पर्श और उसे देखकर मुझे जो गहरा आनंद मिला था, वह क्षणिक था और उसमें कोई प्रतिफल नहीं था – क्योंकि उसने मुझे देखा ही नहीं था – फिर भी मुझे उन आँखों की ज़रूरत महसूस होती थी। उसकी एक नज़र ही दर्शनशास्त्र की सारी समस्याओं और धर्मशास्त्र की पहेलियों को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त होती। उसकी एक नज़र से ही मेरे लिए रहस्य और गुप्त बातें खत्म हो जातीं।

इस समय से मैंने शराब और अफीम की खुराक बढ़ा दी, लेकिन अफसोस, निराशा के ये उपाय मेरे दिमाग को सुन्न और पंगु बनाने में नाकाम रहे। मैं भूल नहीं पा रहा था। इसके विपरीत, दिन-

ब-दिन, घंटे-दर-घंटे, मिनट-दर-मिनट, उसकी याद, उसके शरीर की, उसके चेहरे की, मेरे मन में पहले से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से उभरने लगी।

मैं उसे कैसे भूल सकता था? चाहे मेरी आँखें खुली हों या बंद, चाहे मैं सो रहा होता या जाग रहा होता, वह हमेशा मेरे सामने होती थी। कोठरी की दीवार में बने छेद से, जैसे अँधेरी रात मनुष्य के मन और बुद्धि को ढक लेती है, उस आयताकार छिद्र से जो बाहरी दुनिया की ओर खुलता था, वह हमेशा मेरी आँखों के सामने रहती थी।

मुझे बिल्कुल भी आराम नहीं मिला। मुझे आराम कैसे मिल सकता था?

सूर्यास्त से ठीक पहले हर दिन टहलने जाना मेरी आदत बन गई थी। पता नहीं क्यों, मैं उस छोटी सी धारा, सरू के पेड़ और मॉर्निंग ग्लोरी की बेल को ढूंढने के लिए बेताब था। मुझे इन सैरों की ऐसी लत लग गई थी जैसे अफीम की। ऐसा लगता था मानो कोई बाहरी ताकत मुझे ये सैर करने के लिए मजबूर कर रही हो। सैर के दौरान मैं उसके ख्यालों में डूबा रहता, उसकी पहली झलक की यादों में खोया रहता, और मैं उस जगह को ढूंढना चाहता था जहाँ मैंने उसे नौरूज़ के तेरहवें दिन देखा था: अगर मुझे वह जगह मिल जाए, अगर मुझे उस सरू के पेड़ के नीचे बैठने का मौका मिल जाए, तो यकीनन मुझे शांति मिल जाएगी। लेकिन अफसोस, वहाँ झाड़ू से इकट्ठा किया हुआ कचरा, जलती हुई रेत, घोड़े की हड्डियाँ और कूड़े के ढेर के सिवा कुछ नहीं था, जिनके आसपास कुत्ते सूंघ रहे थे। क्या मैं कभी सच में उससे मिला था? कभी नहीं। बस इतना हुआ था कि मैंने अपनी अलमारी की दीवार में एक छेद से, एक मनहूस छेद से, छुप-छुप कर उसे देखा था। मैं एक भूखे कुत्ते की तरह था जो कूड़े के ढेर में सूंघता और खाना ढूंढता फिरता है: जब लोग कूड़े के ढेर पर कचरा फेंकने आते हैं तो वह भागकर छिप जाता है, और फिर स्वादिष्ट खाने की तलाश में लौट आता है। मेरी यही हालत थी। लेकिन दीवार में बना छेद बंद था। मेरे लिए वह लड़की ताजे फूलों के गुच्छे की तरह थी जिसे कूड़े के ढेर पर फेंक दिया गया हो।

पिछली शाम जब मैं अपनी रोज़ाना की सैर पर निकला, तो आसमान बादलों से घिरा था और हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। आसपास के इलाके में घना कोहरा छाया हुआ था। हल्की बारिश में, जिसने रंगों की चमक को कम कर दिया और आकृतियों की स्पष्टता बढ़ा दी, मुझे मुक्ति और शांति का अहसास हुआ। ऐसा लगा जैसे बारिश मेरे काले विचारों को धो रही हो। उस रात जो नहीं होना चाहिए था, वही हुआ।

मैं अपने परिवेश से बेखबर भटकता रहा। एकांत के उन घंटों के दौरान, उन मिनटों के दौरान जो न जाने कितने लंबे चले, उसका विस्मयकारी चेहरा, मानो बादल या धुंध से होकर देखा गया हो, गति या भावहीन, कलम के कवर पर दिखने वाली तस्वीरों की तरह, मेरी आँखों के सामने पहले से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से उभर आया।

जब मैं घर लौटा, तब तक रात का काफी हिस्सा बीत चुका था। कोहरा इतना घना हो गया था कि मुझे अपने पैरों के ठीक सामने की ज़मीन भी दिखाई नहीं दे रही थी। फिर भी, आदत और अपनी विकसित हुई किसी खास समझ की बदौलत, मैं घर वापस पहुँच गया। जैसे ही मैं प्रवेश द्वार पर पहुँचा, मैंने देखा कि काले वस्त्र पहने एक महिला दरवाजे के बाहर पत्थर की बेंच पर बैठी है।

मैंने चाबी का छेद ढूंढने के लिए माचिस जलाई और किसी कारणवश अनजाने में काले वस्त्र पहने उस आकृति पर मेरी नज़र पड़ी। मैंने दो तिरछी आँखें पहचानीं, चाँदनी से पीली पड़ चुकी पतली सी शक्ल में दो बड़ी काली आँखें, दो आँखें जो मेरे चेहरे को बिना देखे घूर रही थीं। अगर मैंने उसे पहले कभी न देखा होता तो भी मैं उसे पहचान लेता। नहीं, यह कोई भ्रम नहीं था। काले वस्त्र पहने यह आकृति वही थी। मैं स्तब्ध खड़ा रहा, जैसे कोई सपने में हो, जिसे पता हो कि वह सपना देख रहा है और जागना चाहता हो लेकिन जाग नहीं पा रहा हो। मैं हिल भी नहीं पा रहा था। माचिस जलकर सुलग गई और मेरी उंगलियाँ झुलस गईं। अचानक मुझे होश आया और मैंने ताले में चाबी घुमाई। दरवाजा खुला और मैं एक तरफ हट गया। वह बेंच से उठी और अंधेरे गलियारे में ऐसे चली गई जैसे उसे रास्ता पता हो। उसने मेरा दरवाजा खोला और मैं उसके पीछे कमरे में चला गया। मैंने जल्दी से दीपक जलाया और देखा कि वह मेरे बिस्तर पर लेट गई थी। उसका चेहरा छाया में था। मुझे नहीं पता था कि वह मुझे देख पा रही थी या नहीं, मेरी आवाज़ सुन पा रही थी या नहीं। वह न तो डरी हुई लग रही थी और न ही विरोध करने की इच्छुक। ऐसा लग रहा था मानो वह अपनी मर्जी के बिना ही मेरे कमरे में आई हो।

क्या वह बीमार थी? क्या वह रास्ता भटक गई थी? वह नींद में चलने वाले की तरह, अपनी इच्छा के बिना ही आ गई थी। उस पल मैंने जो अनुभूति की, उसकी कल्पना भी कोई नहीं कर सकता। मुझे एक अजीब सा, अवर्णनीय दर्द महसूस हुआ। नहीं, यह कोई भ्रम नहीं था। बिना किसी आश्चर्य और बिना एक शब्द कहे मेरे कमरे में आई यह वही स्त्री, वही लड़की थी। मैंने हमेशा यही कल्पना की थी कि हमारी पहली मुलाकात ऐसी ही होगी। मेरी मनःस्थिति एक ऐसे व्यक्ति की थी जो अनंत गहरी नींद में सो रहा हो। ऐसा स्वप्न देखने के लिए किसी को गहरी नींद में डूबा होना चाहिए। मेरे लिए उस मौन में शाश्वत जीवन का सामर्थ्य था; क्योंकि अनंत काल के उस धरातल पर जहाँ न आदि है, वहाँ वाणी जैसी कोई वस्तु नहीं है।

मेरे लिए वह एक स्त्री थी और साथ ही उसके भीतर कुछ ऐसा था जो मानवता से परे था। जब मैंने उसका चेहरा देखा तो मुझे एक अजीब सा चक्कर आया, जिससे मैं बाकी सभी लोगों के चेहरे भूल गया। उसे निहारते हुए मैं कांपने लगा और मेरे घुटने कमजोर पड़ गए। उसकी विशाल आँखों की गहराई में मैंने एक पल में अपने जीवन के सारे दुख देख लिए। उसकी आँखें नम थीं और आँसुओं से भीगे दो विशाल काले हीरों की तरह चमक रही थीं। उसकी आँखों में, उसकी काली आँखों में, मुझे वह अनंत, अभेद्य अंधकार मिला जिसकी मुझे तलाश थी और मैं उस भयानक, जादुई अंधेरे में डूब गया। ऐसा लग रहा था मानो वह मेरे भीतर से कोई शक्ति खींच रही हो। मेरे पैरों तले ज़मीन हिल गई और अगर मैं गिर जाता तो मुझे एक अवर्णनीय आनंद का अनुभव होता।

मेरा दिल थम सा गया। मैंने अपनी सांस रोक ली। मुझे डर था कि अगर मैंने सांस ली तो वह बादल या धुएं की तरह गायब हो जाएगी। उसकी खामोशी किसी अलौकिक चीज़ जैसी लग रही थी। मानो मेरे और उसके बीच क्रिस्टल की एक दीवार खड़ी हो गई हो, और वह पल, वह घंटा या वह अनंत काल मुझे घुटन दे रहा हो। उसकी आंखें, शायद किसी अलौकिक दृश्य को देखते-देखते थक गई थीं, जिसे देखना दूसरों को नसीब नहीं होता, शायद मृत्यु को ही देखते-देखते, धीरे-धीरे

बंद हो गईं। उसकी पलकें बंद हो गईं और मैं, एक डूबते हुए आदमी की तरह, जो अथक संघर्ष और कोशिश के बाद पानी की सतह पर पहुंचा हो, महसूस किया कि मुझे बुखार है और मैं कांप रहा हूं, और अपनी आस्तीन के किनारे से माथे से बहते पसीने को पोंछा।

उसके चेहरे पर वही शांत भाव और स्थिरता बनी रही, लेकिन वह पहले से दुबली और कमजोर लग रही थी। जब वह मेरे बिस्तर पर लेटी थी, तो वह अपने बाएं हाथ की तर्जनी उंगली का नाखून चबा रही थी। उसका रंग चांद की तरह पीला था और उसकी पतली, चिपकी हुई काली पोशाक से उसके पैर, बांहें, स्तन – उसका पूरा शरीर – स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

उसे और स्पष्ट रूप से देखने के लिए मैं उसके ऊपर झुक गया। उसकी आँखें बंद थीं। चाहे मैं उसके चेहरे को कितनी भी देर तक निहारूँ, वह मुझसे असीम रूप से दूर प्रतीत होती थी। अचानक मुझे एहसास हुआ कि मैं उसके दिल के रहस्यों से अनभिज्ञ हूँ और हमारे बीच कोई बंधन नहीं है।

मैं कुछ कहना चाहता था, लेकिन मुझे डर था कि मेरी आवाज़ उसके कानों को ठेस पहुंचाएगी, उसके संवेदनशील कान जो निश्चित रूप से दूर के, दिव्य, कोमल संगीत के आदी थे।

मुझे लगा कि शायद उसे भूख या प्यास लगी हो। मैं उसे कुछ देने के लिए अलमारी में गई, हालाँकि मुझे पता था कि घर में कुछ नहीं है। तभी अचानक मुझे एक विचार आया। मुझे याद आया कि ऊपर की शेल्फ पर मेरे पिता द्वारा छोड़ी गई पुरानी शराब की एक बोतल रखी थी। मैं एक स्टूल पर चढ़ी और उसे नीचे उतारा। मैं दबे पांव बिस्तर तक गई। वह एक थके हुए बच्चे की तरह सो रही थी। वह गहरी नींद में थी और उसकी लंबी, मखमली पलकें बंद थीं। मैंने बोतल खोली और धीरे-धीरे सावधानी से एक गिलास शराब उसके मुँह में, उसके दो बंद दाँतों के बीच डाली।

अचानक, मेरे जीवन में पहली बार, मुझे शांति का अहसास हुआ। जब मैंने उन बंद आँखों को देखा, तो ऐसा लगा मानो वह राक्षस जो मुझे सता रहा था, वह विपत्ति जो अपने लोहे के पंजे से मेरे दिल को जकड़े हुए थी, कुछ देर के लिए सो गई हो। मैंने अपनी कुर्सी बिस्तर के किनारे खींच ली और उसकी ओर टकटकी लगाकर देखने लगा। कितना मासूम चेहरा था! कितना अलौकिक भाव था उसका! क्या यह संभव था कि यह स्त्री, यह लड़की या नरक की यह परी (क्योंकि मुझे नहीं पता था कि उसे क्या नाम दूं), क्या यह संभव था कि उसमें यह दोहरा स्वभाव हो? वह कितनी शांत, कितनी मुक्त थी!

अब मैं उसके शरीर की गर्माहट महसूस कर सकता था और उसके काले, घने बालों से उठती नमी की गंध सूंघ सकता था। किसी अज्ञात कारण से मैंने अपना कांपता हुआ हाथ उठाया - मेरा हाथ मेरे वश में नहीं था - और उसे उसके बालों की एक लट पर रख दिया, वह लट जो हमेशा उसकी कनपटी से चिपकी रहती थी। फिर मैंने अपनी उंगलियाँ उसके बालों में डालीं। वे ठंडे और नम थे। ठंडे, एकदम ठंडे। ऐसा लग रहा था जैसे वह कई दिनों से मरी हुई हो। मैं गलत नहीं था। वह मर चुकी थी। मैंने अपना हाथ उसकी पोशाक के सामने से अंदर डाला और उसे उसके सीने पर, हृदय के ऊपर रख दिया। वहाँ हल्की सी भी धड़कन नहीं थी। मैंने एक दर्पण लिया और उसे उसकी नाक के सामने रखा, लेकिन उसमें जीवन का कोई निशान नहीं बचा था।

मैंने सोचा कि शायद मैं उसे अपने शरीर की गर्मी से गर्म कर सकूँ, उसे अपनी गर्माहट दे सकूँ और बदले में मृत्यु की ठंडक पा सकूँ; शायद इस तरह मैं अपनी आत्मा उसके मृत शरीर में डाल सकूँ। मैंने कपड़े उतारे और उसके बगल में बिस्तर पर लेट गया। हम नर और मादा मैंड्रेक की तरह एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। उसका शरीर एक मादा मैंड्रेक जैसा था जो अपने साथी से अलग हो गई हो और उसने मैंड्रेक जैसी ही तीव्र वासना जगाई। उसका मुँह तीखा और कड़वा था और खीरे के ठूंठ जैसा स्वाद था। उसका पूरा शरीर ओलों की तरह ठंडा था। मुझे लगा जैसे मेरी नसों में खून जम गया हो और यह ठंड मेरे दिल की गहराई तक पहुँच गई हो। मेरे सारे प्रयास व्यर्थ थे। मैं बिस्तर से उठा और अपने कपड़े पहन लिए। नहीं, यह कोई भ्रम नहीं था। वह यहाँ आई थी, मेरे कमरे में, मेरे बिस्तर पर और उसने अपना शरीर मुझे सौंप दिया था। उसने मुझे अपना शरीर और अपनी आत्मा दे दी थी।

जब तक वह जीवित रही, जब तक उसकी आँखों में जीवन की चमक थी, उसकी आँखों की मात्र स्मृति ही मुझे व्याकुल करती रही। अब, निर्जीव और स्थिर, ठंडी, आँखें बंद किए, उसने स्वयं को मेरे समक्ष समर्पित कर दिया था – आँखें बंद किए।

यही वह थी जिसने मेरी पूरी जिंदगी को उस पल से ही जहर से भर दिया था जब मैंने उसे पहली बार देखा था – शायद मेरी प्रकृति ही ऐसी थी कि शुरू से ही जहर से भरा होना तय था और मेरे लिए जीने का कोई और तरीका असंभव था। अब, यहाँ, मेरे कमरे में, उसने मुझे अपना शरीर और अपनी परछाई सौंप दी थी। उसकी नाजुक, क्षणभंगुर आत्मा, जिसका सांसारिक प्राणियों से कोई संबंध नहीं था, चुपचाप उस काले, प्लीटेड वस्त्र के नीचे से, उस शरीर से जिसने उसे सताया था, निकल गई थी और परछाइयों की दुनिया में भटकने चली गई थी और मुझे ऐसा लगा जैसे वह मेरी आत्मा को भी अपने साथ ले गई हो। लेकिन उसका शरीर वहाँ पड़ा था, निर्जीव और स्थिर। उसकी कोमल, शिथिल मांसपेशियां, उसकी नसें, स्नायु और हड्डियां दफन होने की प्रतीक्षा कर रही थीं, कब्र के कीड़ों और चूहों के लिए एक स्वादिष्ट भोजन। इस जर्जर, दयनीय, उदास कमरे में, जो स्वयं एक मकबरे जैसा था, उस अंतहीन रात के अंधेरे में, जिसने मुझे घेर लिया था और जो दीवारों के भीतर तक समा गया था, मेरे सामने एक लाश के साथ एक लंबी, अंधेरी, ठंडी, अंतहीन रात थी, उसकी लाश के साथ। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि जब से दुनिया बनी है, जब तक मैं जीवित रहा हूँ, एक लाश, ठंडी, निर्जीव और स्थिर, एक अंधेरे कमरे में मेरे साथ रही है।

उस क्षण मेरे विचार सुन्न पड़ गए। मेरे भीतर मैंने जीवन का एक नया और अनूठा रूप अनुभव किया। मेरा अस्तित्व किसी न किसी तरह मेरे आस-पास विद्यमान सभी प्राणियों से, मेरे चारों ओर थरथराती सभी परछाइयों से जुड़ा हुआ था। मैं बाहरी दुनिया और सभी सृजित वस्तुओं के साथ घनिष्ठ, अटूट संबंध में था, और अदृश्य संवाहकों की एक जटिल प्रणाली मेरे और प्रकृति के सभी तत्वों के बीच आवेगों का एक अविचल प्रवाह प्रसारित कर रही थी। कोई भी धारणा, कोई भी विचार मुझे पराया नहीं लगा। मैं अतीत के चित्रकारों के रहस्यों, गूढ़ दर्शनों के रहस्यों, विचारों और प्रजातियों की प्राचीन मूर्खता को सहजता से समझने में सक्षम था। उस क्षण मैंने पृथ्वी और आकाश की परिक्रमाओं में, पौधों के अंकुरण में और जानवरों की सहज गतिविधियों में भाग

लिया। अतीत और भविष्य, दूर और निकट मेरे मन के जीवन में एक साथ जुड़ गए और विलीन हो गए। ऐसे समय में हर इंसान किसी दृढ़ आदत, अपनी विशेष आसक्ति में शरण लेता है। लेखक लिखते हैं कि शराबी शराब पीकर खुद को मदहोश कर लेता है, मूर्तिकार पत्थर पर प्रहार करता है। हर कोई अपने मन के बोझ को कम करने के लिए अपने-अपने नशे का सहारा लेता है और ऐसे ही समय में सच्चा कलाकार एक उत्कृष्ट कृति का निर्माण कर पाता है। लेकिन मैं, जो उदास और असहाय था, मैं, कलम के कवर सजाने वाला, क्या कर सकता था? मेरे पास उत्कृष्ट कृति बनाने का क्या साधन था, जब मैं केवल अपनी बेजान, चमकीली छोटी-छोटी तस्वीरें ही बना सकता था, जिनमें से हर एक दूसरी से बिल्कुल मिलती-जुलती थी? फिर भी मेरे भीतर एक उमंग उमड़ रही थी, और प्रेरणा की एक अवर्णनीय गर्माहट थी। मैं उन आँखों को कागज़ पर उतारना चाहता था जो हमेशा के लिए बंद हो गई थीं; मैं उस तस्वीर को हमेशा अपने पास रखूंगा। इस इच्छा की प्रबलता ने मुझे इसे कर्म में बदलने के लिए विवश कर दिया। मैं इस आवेग का विरोध नहीं कर सका। मैं इसका विरोध कैसे कर सकता था, मैं, एक कलाकार जो एक मृत शरीर के साथ एक कमरे में बंद था? इस विचार ने मेरे भीतर आनंद की एक अनोखी अनुभूति जगा दी।

मैंने धुएँ वाले दीपक को बुझाया, दो मोमबत्तियाँ लाकर जलाईं और उनके सिर के ऊपर रख दीं। टिमटिमाती मोमबत्ती की रोशनी में उनका चेहरा पहले से भी अधिक शांत था; कमरे के अर्ध-अंधेरे में उनके चेहरे पर रहस्य और निराकारता का भाव था। मैंने कागज़ और अपने काम के लिए ज़रूरी अन्य चीज़ें लीं और उनके बिस्तर के पास बैठ गया – क्योंकि अब से बिस्तर उनका था। मेरा इरादा था कि मैं आराम से उस आकृति का चित्र बनाऊँ जो धीरे-धीरे विघटन और विखंडन की ओर बढ़ रही थी और जो अब स्थिर पड़ी थी, उसके चेहरे पर एक भावहीनता थी। मुझे लगा कि मुझे कागज़ पर उसकी मुख्य रेखाओं को उतारना चाहिए। मैं उन रेखाओं को चुनूँगा जिनकी शक्ति का मैंने स्वयं अनुभव किया था। एक चित्र, चाहे वह संक्षिप्त और सरल ही क्यों न हो, फिर भी भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न करना चाहिए और उसमें एक प्रकार का जीवन होना चाहिए। हालाँकि, मैं तो केवल कलम के डिब्बों के कवर पर एक ही पैटर्न पर चित्र बनाने का आदी था। अब मुझे अपने मन का इस्तेमाल करना था, अपने मन में बसी उस छवि को मूर्त रूप देना था, जो उसके चेहरे से निकलकर मेरे सारे विचारों पर गहरी छाप छोड़ गई थी। मैं एक पल के लिए उसके चेहरे को देखता और अपनी आँखें बंद कर लेता। फिर मैं अपने उद्देश्य के लिए चुनी हुई रेखाओं को कागज़ पर उतारता। इस तरह मैं अपने मन की शक्ति से एक ऐसी औषधि सृजित करने की आशा करता जो मेरी व्याकुल आत्मा को शांति प्रदान करे। अंततः मैं रेखाओं और आकृतियों के गतिहीन जीवन में शरण ले रहा था।

मैंने जिस विषय को चुना था, एक मृत महिला, उसका मेरी मृत शैली की चित्रकारी से एक विचित्र संबंध था। मैं हमेशा से मृत शरीरों का चित्रकार ही रहा था। और अब मेरे सामने यह प्रश्न था: क्या मेरे लिए उसकी आँखों को फिर से देखना आवश्यक था, उन आँखों को जो अब बंद हो चुकी थीं? या वे पहले से ही मेरी स्मृति में पर्याप्त स्पष्टता के साथ अंकित थीं?

मुझे नहीं पता कि उस रात मैंने कितनी बार उसका चित्र बनाया और फिर से बनाया, लेकिन मेरी कोई भी तस्वीर मुझे संतुष्ट नहीं कर पाई और मैंने उन्हें जितनी जल्दी बनाया उतनी ही जल्दी

फाड़ भी दिया। काम से मुझे थकान नहीं हुई और मुझे समय का पता भी नहीं चला।

अंधेरा छंट रहा था और खिड़कियों से हल्की धुंधली रोशनी मेरे कमरे में आ रही थी। मैं एक तस्वीर पर काम कर रहा था जो मुझे बाकी सभी तस्वीरों से बेहतर लग रही थी। लेकिन आँखें? वे आँखें, जिनमें निंदा का भाव था, मानो उन्होंने मुझे कोई अक्षम्य पाप करते हुए देख लिया हो – मैं उन्हें कागज़ पर चित्रित करने में असमर्थ था। उन आँखों की छवि अचानक मेरी स्मृति से मिट गई थी। मेरे सारे प्रयास व्यर्थ थे। मैं चाहे कितनी भी कोशिश कर लूँ, मैं उनके भावों को याद नहीं कर पा रहा था।

जैसे ही मैंने उसकी ओर देखा, अचानक उसके गालों पर लाली छा गई। धीरे-धीरे वे गहरे लाल रंग से भर गए, ठीक वैसे ही जैसे कसाई की दुकानों के सामने लटका हुआ मांस होता है। वह फिर से जीवंत हो उठी। उसकी बुखार से भरी, निंदा भरी आँखें, तीव्र चमक के साथ, धीरे-धीरे खुलीं और मेरी ओर टकटकी लगाकर देखने लगीं। यह पहली बार था जब उसे मेरी उपस्थिति का एहसास हुआ था, पहली बार उसने मुझे देखा था। फिर आँखें बंद हो गईं।

यह घटना शायद एक पल से ज़्यादा नहीं चली, लेकिन मेरे लिए उसकी आँखों के भाव को याद रखने और उसे कागज़ पर उतारने के लिए इतना ही काफ़ी था। मैंने अपनी ब्रश की नोक से उस भाव को अंकित कर लिया और इस बार मैंने अपनी तस्वीर को फाड़ा नहीं।

फिर मैं उठा और धीरे से उसके पलंग के पास गया। मुझे लगा कि वह जीवित है, जैसे उसे नया जीवन मिल गया हो, जैसे मेरे प्रेम ने उसके मृत शरीर में जीवन डाल दिया हो। लेकिन पास से मुझे शव की गंध आई, एक सड़ते हुए शव की गंध। उसके शरीर पर छोटे-छोटे कीड़े रेंग रहे थे और मोमबत्तियों की रोशनी में दो मक्खियाँ चक्कर लगा रही थीं। वह पूरी तरह मर चुकी थी। लेकिन क्यों, कैसे, उसकी आँखें खुल गईं? क्या यह कोई भ्रम था या सचमुच ऐसा हुआ था?

मुझे यह सवाल पूछे जाने से बचना ही बेहतर लगता है। लेकिन सबसे ज़रूरी था उसका चेहरा, या यूँ कहें कि उसकी आँखें – और अब वे मेरे अधिकार में थीं। मैंने उन आँखों में बसी आत्मा को कागज़ पर उतार लिया था और अब मुझे शरीर की कोई ज़रूरत नहीं थी, उस शरीर की जो लुप्त होने के लिए अभिशप्त था, कब्र के कीड़े-मकोड़ों और चूहों का शिकार बनने के लिए। अब से वह मेरे वश में थी और मैं अब उसका प्राणी नहीं था। जब भी मेरा मन करता, मैं उसकी आँखें देख सकता था। मैंने अपनी तस्वीर को जितना हो सके सावधानी से उठाया, उसे एक टिन के डिब्बे में रखा जो मेरे लिए तिजोरी का काम करता था और उस डिब्बे को अपने कमरे के पीछे वाली अलमारी में रख दिया।

रात दबे पांव विदा हो रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उसने अपनी थकान काफी हद तक उतार दी हो और अब वह अपने रास्ते पर चल सकती है। कानों में दूर से आती हल्की-हल्की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, जैसे उगती घास की सरसराहट या उड़ते हुए किसी प्रवासी पक्षी की चहचहाहट। धुंधले तारे बादलों के पीछे छिप रहे थे। सुबह की कोमल हवा मेरे चेहरे पर महसूस हो रही थी और उसी क्षण दूर कहीं से एक मुर्गे की बांग सुनाई दी।

मैं उस शरीर का क्या करता, जो सड़ना शुरू हो चुका था? पहले तो मैंने उसे अपने कमरे में दफनाने का सोचा, फिर उसे कहीं ले जाकर नीले रंग के फूलों से घिरे किसी कुएँ में फेंकने का।

लेकिन इन सब कामों को बिना किसी का ध्यान खींचे करने के लिए कितनी सोच-विचार, कितनी मेहनत और कुशलता की ज़रूरत होती! और फिर, मैं नहीं चाहता था कि किसी अजनबी की नज़र उस पर पड़े। मुझे सब कुछ अकेले और बिना किसी मदद के करना था। वैसे भी, मेरी कोई अहमियत नहीं थी। अब जब वह चली गई थी, तो मेरे जीने का क्या मतलब था? लेकिन वह – कभी भी, कभी भी कोई आम इंसान, मेरे सिवा कोई भी, उसके मृत शरीर को न देखे। वह मेरे कमरे में आई थी और उसने अपना ठंडा शरीर और अपनी परछाई मुझे सौंप दी थी ताकि कोई और उसे न देखे, ताकि किसी अजनबी की नज़र से वह अपवित्र न हो। आखिरकार मुझे एक विचार आया। मैं उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा, उसे अपने पुराने सूटकेस में पैक करूँगा, उसे अपने साथ किसी दूर जगह ले जाऊँगा, लोगों की नज़रों से बहुत दूर, और वहाँ दफना दूँगा।

इस बार मैंने ज़रा भी संकोच नहीं किया। मैंने अपने कमरे के बगल वाली अलमारी में रखी हड्डी के हैंडल वाली छुरी उठाई और बड़ी सावधानी से उसके शरीर पर मकड़ी के जाले की तरह लिपटे हुए काले कपड़े को काटना शुरू किया। यही एक कपड़ा था जो उसने अपने शरीर पर पहना था। वह थोड़ी लंबी लग रही थी: उसका शरीर पहले से ज़्यादा लंबा दिख रहा था। फिर मैंने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। उसकी गर्दन से ठंडे जमे हुए खून की बूँदें टपक रही थीं। इसके बाद मैंने उसके हाथ-पैर काट दिए। मैंने धड़ को सिर और अंगों के साथ सूटकेस में करीने से रखा और पूरे सूटकेस को उसी काले कपड़े से ढक दिया। मैंने सूटकेस को ताला लगा दिया और चाबी अपनी जेब में रख ली। जब काम खत्म हो गया, तो मैंने राहत की गहरी साँस ली और सूटकेस का वज़न महसूस किया। वह बहुत भारी था। मैंने पहले कभी इतनी थकान महसूस नहीं की थी। नहीं, मैं अब कभी भी अकेले सूटकेस नहीं उठा पाऊँगा।

मौसम फिर से धुंध और हल्की बारिश में बदल गया था। मैं इस उम्मीद में बाहर निकला कि शायद कोई मेरी मदद कर सके। लेकिन वहाँ कोई नज़र नहीं आया। मैं धुंध में झाँकते हुए थोड़ा आगे बढ़ा। अचानक मेरी नज़र एक झुके हुए बूढ़े आदमी पर पड़ी जो सरू के पेड़ के नीचे बैठा था। उसके गले में लिपटे चौड़े दुपट्टे के कारण उसका चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था। मैं धीरे-धीरे उसके पास गया। मैंने अभी एक शब्द भी नहीं बोला था कि बूढ़ा आदमी एक खोखली, कर्कश, डरावनी हंसी हंस पड़ा जिससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए और बोला:

“अगर आपको कुली चाहिए, तो मैं हाज़िर हूँ। जी हाँ। मेरे पास शव वाहन भी है। मैं रोज़ाना शवों को शाह अब्दोलअज़ीम* ले जाता हूँ और वहाँ दफ़नाता हूँ। जी हाँ। मैं ताबूत भी बनाता हूँ। मेरे पास हर आकार के ताबूत हैं, हर किसी के लिए एकदम सही। मैं आपकी सेवा में हाज़िर हूँ। अभी।”

वह इतनी जोर से हँसा कि उसके कंधे हिलने लगे। मैंने अपने घर की दिशा में इशारा किया, लेकिन मेरे कुछ कहने से पहले ही उसने कहा:

कोई बात नहीं। मुझे पता है तुम कहाँ रहते हो। मैं अभी आता हूँ।

वह उठ खड़ा हुआ और मैं वापस अपने घर चली गई। मैं अपने कमरे में गई और बड़ी मुश्किल से शव से भरा सूटकेस दरवाजे तक ले गई। मैंने देखा कि दरवाजे के बाहर सड़क पर एक जर्जर पुरानी शव गाड़ी खड़ी थी, जिसमें दो काले, कंकाल जैसे पतले घोड़े बंधे हुए थे। झुका हुआ बूढ़ा

व्यक्ति शव गाड़ी के आगे वाले हिस्से में ड्राइवर की सीट पर बैठा था, उसके हाथ में एक लंबा चाबुक था। उसने मेरी तरफ मुड़कर नहीं देखा। बड़ी मुश्किल से मैंने सूटकेस को शव गाड़ी में धकेला, जहाँ ताबूत रखने के लिए एक गड्ढा बना हुआ था। उसके बाद मैं खुद भी गाड़ी में चढ़ गई और ताबूत रखने की जगह पर लेट गई, अपना सिर किनारे पर टिका लिया ताकि गाड़ी चलते समय बाहर देख सकूँ। मैंने सूटकेस को अपनी छाती पर सरका लिया और दोनों हाथों से उसे कसकर पकड़ लिया।

चाबुक की सीटी हवा में गूंजी; घोड़े हांफते हुए दौड़ पड़े। हल्की बारिश में भीगते हुए उनके नथुनों से भाप उठती हुई दिखाई दे रही थी, मानो धुएं की धारा हो। वे ऊंचे, सहज कदमों से चल रहे थे। उनकी पतली टांगें, जो मुझे किसी चोर की भुजाओं की याद दिलाती थीं, जिसकी उंगलियां कानून के अनुसार काट दी गई हों और ठूंठों को उबलते तेल में डुबो दिया गया हो, धीरे-धीरे उठती-गिरती थीं और जमीन को छूते समय कोई आवाज नहीं करती थीं। उनके गले में बंधी घंटियां नम हवा में एक अजीब धुन बजा रही थीं। एक गहरी शांति की अनुभूति, जिसका कारण मैं नहीं बता सकता, मेरे सिर से पैर तक फैल गई और शव वाहन की गति का मेरे शरीर पर जरा भी असर नहीं हुआ। मैं केवल अपने सीने पर सूटकेस का भार महसूस कर पा रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था मानो उसके मृत शरीर और जिस ताबूत में वह रखा था, उसका भार हमेशा से मेरे सीने पर पड़ा हो।

सड़क के दोनों ओर का इलाका घने कोहरे से ढका हुआ था। असाधारण गति और सहजता से शव वाहन पहाड़ियों, समतल भूमि और धाराओं के पास से गुजरा, और मेरे सामने एक नया और अनूठा परिदृश्य खुल गया, ऐसा परिदृश्य जो मैंने सोते या जागते हुए कभी नहीं देखा था। सड़क के दोनों ओर पहाड़ियों की एक श्रृंखला थी जो एक दूसरे से बिल्कुल अलग खड़ी थीं। पहाड़ियों की तलहटी में असंख्य विचित्र, झुके हुए, शापित पेड़ थे, जिनके बीच राख जैसे भूरे रंग के घर दिखाई देते थे, जो पिरामिड, घन और प्रिज्म के आकार के थे, जिनमें बिना शीशे वाली नीची, काली खिड़कियाँ थीं। खिड़कियाँ किसी प्रलाप की अवस्था में पड़े व्यक्ति की जंगली आँखों जैसी थीं। घरों की दीवारें राहगीर के दिल में तीव्र ठंडक पैदा करने का गुण रखती थीं। ऐसा लगता था मानो कोई जीवित प्राणी कभी उन घरों में नहीं रहा होगा। शायद उन्हें अलौकिक प्राणियों की आत्माओं को रखने के लिए बनाया गया था।

ऐसा प्रतीत होता था कि शव वाहन का चालक मुझे किसी संकरी सड़क या अपने किसी विशेष मार्ग से ले जा रहा था। कुछ जगहों पर सड़क के दोनों ओर केवल ठूंठ और टेढ़े-मेढ़े पेड़ ही दिखाई देते थे, जिनके आगे घर थे - कुछ छोटे, कुछ ऊंचे, ज्यामितीय आकृतियों वाले - पूर्ण शंकु, कटे हुए शंकु - जिनमें संकरी, टेढ़ी-मेढ़ी खिड़कियां थीं, जिनसे मॉर्निंग ग्लोरी के नीले फूल बाहर निकले हुए थे और दरवाजों और दीवारों पर लिपटे हुए थे। फिर यह परिदृश्य घने कोहरे में अचानक गायब हो गया।

पहाड़ियों की चोटियों को ढके हुए घने, भरे बादल भारीपन से लटक रहे थे। हवा हल्की बारिश को दिशाहीन, उड़ती धूल की तरह उड़ा रही थी। हम काफी देर से यात्रा कर रहे थे कि शव वाहन एक पथरीली, बंजर पहाड़ी की तलहटी में रुका, जहाँ हरियाली का कोई नामोनिशान नहीं था।

मैंने सूटकेस सीने से उतारा और बाहर निकल गया।

पहाड़ी के दूसरी ओर एक एकांत, शांत और हरा-भरा इलाका था। यह एक ऐसी जगह थी जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था, फिर भी यह मुझे जानी-पहचानी सी लगी, मानो यह हमेशा से मेरे मन के किसी कोने में मौजूद रही हो। ज़मीन नीले रंग की, गंधहीन मॉर्निंग ग्लोरी की लताओं से ढकी हुई थी। मुझे लगा कि उस पल तक कोई भी उस जगह पर नहीं आया था। मैंने सूटकेस बाहर निकाला और उसे ज़मीन पर रख दिया। बूढ़ा ड्राइवर मुड़ा और बोला:

"हम शाह अब्दोलज़िम से ज़्यादा दूर नहीं हैं। आपको अपनी ज़रूरतों के लिए इससे बेहतर जगह नहीं मिलेगी। यहाँ से कभी कोई पक्षी नहीं उड़ता। जी नहीं।"

मैंने ड्राइवर को किराया देने के इरादे से अपना हाथ जेब में डाला। मेरे पास केवल दो क्रान और एक अब्बासी* थे। ड्राइवर एक खोखली, कर्कश हंसी हंसा और बोला:

कोई बात नहीं। चिंता मत करो। मैं तुमसे बाद में ले लूंगा। मुझे पता है तुम कहाँ रहते हो। मेरे लिए तुम्हारे पास कोई और काम तो नहीं है ना? मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि मुझे कब्र खोदने का थोड़ा-बहुत ज्ञान है। हाँ। इसमें शर्म की कोई बात नहीं। चलें? यहाँ पास में एक सरू के पेड़ के पास एक छोटी नदी है। मैं तुम्हारे सूटकेस के लिए ठीक आकार का एक गड्ढा खोद दूँगा और फिर हम चलेंगे।

बूढ़ा आदमी इतनी फुर्ती से अपनी सीट से उठा कि मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वह ऐसा कर सकता है। मैंने उसका सामान उठाया और हम साथ-साथ चलते रहे जब तक कि हम एक सूखे नदी के किनारे खड़े एक सूखे पेड़ के पास नहीं पहुँच गए। मेरे साथी ने कहा:

"यह एक अच्छी जगह है।"

जवाब का इंतज़ार किए बिना, वह तुरंत अपने साथ लाए छोटे फावड़े और कुल्हाड़ी से खोदने लगा। मैंने सूटकेस नीचे रख दिया और उसके बगल में सुस्ती से खड़ा रहा। बूढ़ा आदमी, कमर झुकाए, उस काम में माहिर की तरह कुशलता से लगा हुआ था। खोदते-खोदते उसे एक ऐसी वस्तु मिली जो किसी चमकदार जार जैसी लग रही थी। उसने उसे एक गंदे रुमाल में लपेटा, खड़ा हुआ और बोला:

"ये रहा तुम्हारा छेद। जी हाँ। सूटकेस के लिए एकदम सही आकार। बिल्कुल फिट बैठता है। जी हाँ।"

मैंने उसे उसके काम के लिए पैसे देने के लिए अपनी जेब में हाथ डाला। मेरे पास केवल दो क्रान और एक अब्बासी थे। बूढ़ा आदमी एक खोखली हंसी हंसा जिससे मेरे पूरे शरीर पर रोंगटे खड़े हो गए और बोला:

"उसकी चिंता मत करो। कोई बात नहीं। मुझे पता है तुम कहाँ रहते हो। हाँ। वैसे भी, मुझे एक जार मिल गया है जो मुझे पैसे के बदले काम चला देगा। यह रेय के प्राचीन शहर से आया हुआ रैजेस का फूलदान है। हाँ।"

फिर, झुके-तुड़े खड़े-खड़े ही वह फिर से हंसने लगा, जिससे उसके कंधे कांपने लगे। उसने गंदे रुमाल में लिपटा घड़ा अपनी बगल में दबाया और शव वाहन की ओर चल पड़ा। आश्चर्यजनक फुर्ती से वह उछलकर ड्राइवर की सीट पर बैठ गया। चाबुक हवा में सीटी बजाता हुआ निकला,

घोड़े हांफते हुए दौड़ पड़े। उनके गले में बंधी घंटियों की आवाज़ नम हवा में एक अजीब धुन बजा रही थी। धीरे-धीरे वे घने कोहरे में गायब हो गए।

जैसे ही मैं अकेला हुआ, मैंने राहत की गहरी साँस ली। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे सीने से कोई भारी बोझ उतर गया हो, और शांति की एक अद्भुत अनुभूति मेरे पूरे अस्तित्व में समा गई। मैंने चारों ओर देखा। मैं जिस जगह खड़ा था, वह एक छोटा सा घेरा था जो चारों ओर से नीली पहाड़ियों और टीलों से घिरा हुआ था। एक पहाड़ी पर विशाल ईंटों से बनी प्राचीन इमारतों के खंडहर फैले हुए थे। पास ही एक सूखा नदी तल था। यह मनुष्यों के शोर और हलचल से दूर एक शांत, एकांत स्थान था। मैं अत्यंत प्रसन्न महसूस कर रहा था और सोच रहा था कि जब वे महान आँखें पृथ्वी की नींद से जागेंगी, तो वे एक ऐसे स्थान को देखेंगी जो उनके अपने स्वभाव और स्वरूप के अनुरूप होगा। और साथ ही यह उचित भी था कि जिस प्रकार वह जीवित रहते हुए अन्य लोगों के जीवन से दूर रही, उसी प्रकार वह शेष मानव जाति से, अन्य मृतकों से दूर रहे। मैंने सूटकेस को बड़ी सावधानी से उठाया और उसे खाई में रख दिया, जो बिल्कुल सही आकार की थी, एकदम फिट बैठती थी। हालाँकि, मुझे लगा कि मुझे एक बार फिर सूटकेस में देखना चाहिए। मैंने चारों ओर देखा। वहाँ कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैंने अपनी जेब से चाबी निकाली और ढक्कन खोला। मैंने उसके काले वस्त्र का एक कोना हटाया और देखा कि जमे हुए खून और कीड़ों के ढेर के बीच, दो बड़ी-बड़ी काली आँखें बिना किसी भाव के मुझे घूर रही थीं। मुझे लगा जैसे मेरा पूरा अस्तित्व उन आँखों की गहराई में समा गया हो। मैंने जल्दी से ताबूत का ढक्कन बंद कर दिया और उसके ऊपर ढीली मिट्टी डाल दी। जब गड्ढा भर गया, तो मैंने मिट्टी को अच्छी तरह दबा दिया, नीले रंग की, गंधहीन मॉर्निंग ग्लोरी की कुछ लताएँ लाकर उसकी कब्र के ऊपर ज़मीन में लगा दीं। फिर मैंने रेत और कंकड़ इकट्ठा किए और उन्हें चारों ओर बिखेर दिया ताकि दफ़नाने के निशान पूरी तरह मिट जाएँ और कोई भी यह न बता सके कि ऐसा कभी हुआ था। मैंने यह काम इतनी कुशलता से किया कि मैं खुद उसकी कब्र को आसपास की ज़मीन से अलग नहीं कर पा रहा था।

जब मेरा काम खत्म हो गया, तो मैंने नीचे देखा और पाया कि मेरे कपड़े फटे हुए थे और उन पर मिट्टी और काला, जमा हुआ खून लगा हुआ था। दो मक्खियाँ मेरे चारों ओर मंडरा रही थीं और कई छोटे-छोटे कीड़े मेरे कपड़ों से चिपके हुए रेंग रहे थे। अपने कोट के निचले हिस्से से खून के धब्बे हटाने की कोशिश में, मैंने अपनी आस्तीन के किनारे को लार से गीला किया और धब्बों पर रगड़ा; लेकिन खून के धब्बे कपड़े में और भी समा गए, जिससे वे मेरे शरीर तक पहुँच गए और मुझे अपनी त्वचा पर खून की चिपचिपाहट महसूस हुई।

सूर्यास्त होने में कुछ ही समय बचा था और हल्की बारिश हो रही थी। मैं चलने लगा और अनजाने में ही शव वाहन के पहियों के निशानों का पीछा करने लगा। रात होते-होते निशान मिट गए, लेकिन मैं घोर अंधेरे में धीरे-धीरे और बिना किसी उद्देश्य के चलता रहा, मानो कोई स्वप्न में हो। मुझे पता नहीं था कि मैं किस दिशा में जा रहा हूँ। जब से वह गई थी, जब से मैंने जमे हुए खून के ढेर के बीच उसकी बड़ी-बड़ी आँखें देखी थीं, मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं एक ऐसे गहरे अंधेरे में चल रहा हूँ जिसने मेरे जीवन को पूरी तरह से घेर लिया है। वे आँखें जो मेरे मार्ग को

रोशन करने वाली लालटेन थीं, हमेशा के लिए बुझ चुकी थीं और अब मुझे इस बात की परवाह नहीं थी कि मैं कभी किसी जगह पहुँच पाऊँगा या नहीं।

चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। मुझे ऐसा लगा मानो समस्त मानवजाति ने मुझे त्याग दिया हो और मैंने निर्जीव वस्तुओं में शरण ली हो। मुझे प्रकृति की स्पंदन से, मेरे और मेरे मन पर छाए गहरे अंधकार से एक संबंध का अहसास हुआ। यह सन्नाटा एक ऐसी भाषा है जिसे हम नहीं समझते। मेरा सिर चकराने लगा, मानो किसी नशे में चूर हो गया हो। मुझे मतली होने लगी और मेरे पैर कमजोर पड़ गए। मुझे असीम थकान का अनुभव हुआ। मैं सड़क के किनारे एक कब्रिस्तान में गया और एक समाधि पर बैठ गया। मैंने अपने हाथों से अपना सिर थाम लिया और अपनी स्थिति को समझने का प्रयास किया।

अचानक एक खोखली, कर्कश हंसी की आवाज़ से मैं होश में आया। मैंने मुड़कर देखा तो एक आकृति थी जिसका चेहरा गले में लिपटे दुपट्टे से ढका हुआ था। वह मेरे बगल में बैठी थी और उसने अपनी बगल में रूमाल में लिपटी कोई चीज़ पकड़ रखी थी। उसने मेरी ओर मुड़कर कहा:

"मुझे लगता है आप शहर जाना चाहते हैं? रास्ता भटक गए हैं, है ना? शायद आप सोच रहे हैं कि मैं रात के इस समय कब्रिस्तान में क्या कर रहा हूँ? घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। लाशें खोदना मेरा रोज़ का काम है। कब्र खोदना मेरा पेशा है। बुरा पेशा नहीं है, है ना? मैं इस जगह के हर कोने से वाकिफ हूँ। उदाहरण के लिए, आज मैं एक कब्र खोदने गया था। मुझे ज़मीन में यह घड़ा मिला। जानते हैं यह क्या है? यह रागेस का फूलदान है, जो प्राचीन शहर रे से आया है। जी हाँ। कोई बात नहीं, आप इसे रख सकते हैं। इसे मेरी याद के तौर पर संभाल कर रखें।"

मैंने अपनी जेब में हाथ डाला और दो क्रान्स और एक अब्बासी निकाले। बूढ़े आदमी ने खोखली हंसी हंसते हुए कहा, जिससे मेरे पूरे शरीर में रोंगटे खड़े हो गए:

"नहीं, नहीं। कोई बात नहीं। मैं आपको जानता हूँ। आपका पता भी जानता हूँ। यहीं पास में एक शव वाहन खड़ा है। आइए, मैं आपको घर छोड़ देता हूँ। जी हाँ। घर बस दो कदम दूर है।"

उसने घड़ा मेरी गोद में रख दिया और खड़ा हो गया। वह इतनी ज़ोर से हंस रहा था कि उसके कंधे हिल रहे थे। मैंने घड़ा उठाया और उस झुके हुए व्यक्ति के पीछे चल पड़ा। सड़क के मोड़ पर एक जर्जर शव वाहन खड़ा था, जिसमें दो दुबले-पतले काले घोड़े जुते हुए थे। बूढ़ा आदमी आश्चर्यजनक फुर्ती से उठा और ड्राइवर की सीट पर बैठ गया। मैं गाड़ी में चढ़ गया और ताबूत रखने वाली जगह पर लेट गया, अपना सिर ऊंचे चबूतरे पर टिका दिया ताकि गाड़ी चलते समय मैं बाहर देख सकूं। मैंने घड़ा अपनी छाती पर रख लिया और उसे हाथ से थामे रखा।

चाबुक की सीटी हवा में गूंजी; घोड़े हांफते हुए दौड़ पड़े। वे ऊंचे, सहज कदमों से आगे बढ़ रहे थे। उनके खुर ज़मीन को धीरे और चुपचाप छू रहे थे। उनके गले में बंधी घंटियाँ नम हवा में एक अजीब धुन बजा रही थीं। बादलों के बीच से तारे धरती को ऐसे निहार रहे थे मानो जमे हुए खून के ढेर से चमकती आंखें निकल रही हों। एक अद्भुत शांति मेरे पूरे अस्तित्व में छा गई। मैं बस इतना महसूस कर पा रहा था कि मेरे सीने पर एक मृत शरीर के भार जैसा भारीपन महसूस हो रहा है। टेढ़ी-मेढ़ी शाखाओं वाले आपस में गुंथे हुए पेड़ अंधेरे में मानो एक-दूसरे का हाथ थामे खड़े हों, इस डर से कि कहीं वे फिसलकर ज़मीन पर न गिर जाएं। सड़क के किनारे अजीबोगरीब

ज्यामितीय आकृतियों वाले घर बने हुए थे, जिनकी खिड़कियां सुनसान और काली थीं। घरों की दीवारें जुगनुओं की तरह धुंधली, फीकी रोशनी बिखेर रही थीं। पेड़ झुंडों और कतारों में खतरनाक ढंग से गुज़रते हुए हमसे दूर भाग रहे थे। लेकिन मुझे ऐसा लगा कि उनके पैर मॉर्निंग ग्लोरी की लताओं में उलझ गए और वे ज़मीन पर गिर पड़े। मृत्यु की गंध, सड़ते हुए मांस की गंध, मेरे शरीर और आत्मा में व्याप्त हो गई। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हमेशा से मृत्यु की गंध से सराबोर रहा हूँ और जीवन भर एक काले ताबूत में सोता रहा हूँ, जबकि एक झुका हुआ बूढ़ा आदमी, जिसका चेहरा मैं देख नहीं सका, मुझे धुंध और गुज़रती परछाइयों के बीच से ले जा रहा है।

शव वाहन रुका। मैंने घड़ा उठाया और ज़मीन पर कूद पड़ा। मैं अपने ही घर के दरवाज़े के बाहर था। मैं जल्दी से अंदर गया और अपने कमरे में दाखिल हुआ। मैंने घड़ा मेज़ पर रखा, सीधे अलमारी में गया और तिजोरी का काम करने वाला टिन का डिब्बा वहाँ से निकाला। मैं दरवाज़े पर गया, बूढ़े शव वाहन चालक को भुगतान के बदले घड़ा देने के इरादे से, लेकिन वह गायब हो चुका था; उसका या उसके शव वाहन का कोई निशान नहीं था। निराश होकर मैं वापस अपने कमरे में चला गया। मैंने दीपक जलाया, घड़े को उस रूमाल से निकाला जिसमें वह लिपटा हुआ था और अपनी आस्तीन से उस पर लगी मिट्टी को साफ किया। यह एक प्राचीन फूलदान था जिस पर पारदर्शी बैंगनी रंग की परत चढ़ी हुई थी जो कुचली हुई मक्खी के रंग की हो गई थी। फूलदान के एक तरफ बादाम के आकार का एक पैनल था जो मॉर्निंग ग्लोरी के नीले फूलों से सजा हुआ था, और उस पैनल में...

बादाम के आकार के पैनल में उसका चित्र था... एक स्त्री का चेहरा जिसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें थीं, ऐसी आँखें जो दूसरों की आँखों से कहीं बड़ी थीं। उनमें निंदा का भाव था, मानो उन्होंने मुझे कोई ऐसा असाध्य पाप करते देख लिया हो जिसका मुझे ज्ञान ही न हो। वे डरावनी, जादुई आँखें थीं जिनमें चिंता और आश्चर्य, खतरे और आशा का भाव था। वे मुझे भयभीत भी करती थीं और आकर्षित भी करती थीं, और उनकी गहराई से एक मादक, अलौकिक चमक निकलती थी। उसकी गाल की हड्डियाँ उभरी हुई थीं और माथा ऊँचा था। उसकी भौहें पतली थीं और बीच में मिलती थीं। उसके होंठ भरे हुए और आधे खुले थे। उसके बाल बिखरे हुए थे, और एक लट उसकी कनपटी से चिपकी हुई थी।

मैंने टिन के डिब्बे से वह चित्र निकाला जो मैंने पिछली रात बनाया था और दोनों की तुलना की। मेरे चित्र और जार पर बने चित्र में रत्ती भर भी अंतर नहीं था। ऐसा लग रहा था मानो एक चित्र दर्पण में दूसरे का प्रतिबिंब हो। दोनों चित्र बिल्कुल एक जैसे थे और स्पष्ट रूप से एक ही व्यक्ति, एक दुर्भाग्यशाली कलमकार की रचना थे। शायद चित्र बनाते समय उस फूलदान चित्रकार की आत्मा मुझमें समा गई थी और मेरे हाथ ने उसके निर्देशों का पालन किया था। दोनों में अंतर करना असंभव था, सिवाय इसके कि मेरा चित्र कागज पर था जबकि फूलदान पर बना चित्र एक प्राचीन पारदर्शी परत से ढका हुआ था जिसने उसे एक रहस्यमय, एक अजीब, अलौकिक आभा दी थी। आँखों की गहराई में बुराई की आत्मा की एक चिंगारी सुलग रही थी। नहीं, यह बात अविश्वसनीय थी: दोनों चित्रों में एक ही बड़ी आँखें दिखाई दे रही थीं, जिनमें कोई विचार नहीं था, चेहरे पर एक ही संयमित लेकिन सहज भाव था। मेरे भीतर जो भावनाएँ उठीं, उनकी कल्पना

करना असंभव है। काश मैं खुद से भाग पाता। क्या ऐसा संयोग संभव था? मेरे जीवन की सारी पीड़ा मेरे सामने फिर से आ उठी। क्या इतना काफी नहीं था कि जीवन में मुझे सिर्फ एक ही व्यक्ति ऐसी आँखों वाला मिला? और अब दो लोग उन्हीं आँखों से मुझे घूर रहे थे, उसकी आँखों से। यह असहनीय था। जिन आँखों को मैंने वहाँ, पहाड़ी के किनारे, सूखे सरू के पेड़ की तलहटी में, सूखी नदी के किनारे, सुबह के नीले फूलों के नीचे, गाढ़े खून के बीच, कीड़ों और घिनौने जीवों के बीच दफनाया था, जो उसके चारों ओर उत्सव मना रहे थे, जबकि पौधों की जड़ें उसकी पुतलियों में घुसकर उनका रस चूसने के लिए नीचे जा रही थीं – वही आँखें, जीवन से भरपूर, उस क्षण मुझे घूर रही थीं।

मुझे पता ही नहीं था कि मैं इतना अभागा और शापित हूँ। फिर भी, उसी समय मेरे मन में मंडरा रहे अपराधबोध ने एक अजीब, अकथनीय सुकून का भाव पैदा कर दिया। मुझे एहसास हुआ कि दुख में मेरा एक प्राचीन साथी है। क्या वह प्राचीन चित्रकार, जिसने सैकड़ों, शायद हजारों साल पहले, इस घड़े की सतह को सजाया था, दुख में मेरा साथी नहीं था? क्या उसने भी मेरे जैसे ही आध्यात्मिक अनुभव नहीं किए थे? अब तक मैं खुद को सबसे अभागा प्राणी मानता था। अब मुझे कुछ पल के लिए समझ आया कि उन पहाड़ियों पर, ईंटों से बने उस खंडहर शहर के घरों में, कभी ऐसे लोग रहते थे जिनकी हड्डियाँ बहुत पहले सड़ चुकी थीं और जिनके शरीर के परमाणु शायद अब मॉर्निंग ग्लोरी के नीले फूलों में दूसरा जीवन जी रहे हों; और उन लोगों में एक ऐसा भी था, एक अभागा चित्रकार, एक शापित चित्रकार, शायद कलम के कवर सजाने में असफल, जो बिल्कुल मेरे जैसा था। और अब मुझे समझ आया (मैं बस इतना ही समझ पाया था) कि उसका जीवन भी मेरी तरह ही दो विशाल, काली आँखों की गहराई में जलकर गल गया था। इस विचार से मुझे सांत्वना मिली।

मैंने अपनी पेंटिंग को जार पर रखी दूसरी पेंटिंग के बगल में रख दिया और जाकर अपने अफीम के अंगीठी में कोयला जलाया। जब वह अच्छी तरह जलने लगा तो मैंने अंगीठी को दोनों पेंटिंग के सामने रख दिया। मैंने अफीम के पाइप से कुछ कश लिए और जैसे ही नशा अपना असर दिखाने लगा, मैंने चित्रों को टकटकी लगाकर देखा। मुझे लगा कि मुझे अपने विचारों को एकाग्र करना होगा, और ऐसा करने और मन की शांति प्राप्त करने में मेरी मदद करने वाली एकमात्र चीज अफीम का सूक्ष्म धुआं था।

मैंने अपनी सारी अफीम पी ली, इस उम्मीद में कि यह चमत्कारिक औषधि मेरी समस्याओं का समाधान कर देगी, मेरे मन पर पड़े परदे को हटा देगी और मेरी धुंधली यादों के ढेर को मिटा देगी। मुझे वह आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त हुई जिसका मैं इंतजार कर रहा था, और वह भी मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक। मेरे विचारों में वह सूक्ष्मता और भव्यता आ गई जो केवल अफीम ही दे सकती है, और मैं नींद और बेहोशी के बीच की अवस्था में चला गया।

फिर मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे सीने से कोई भारी बोझ हट गया हो, जैसे मेरे लिए गुरुत्वाकर्षण का नियम ही खत्म हो गया हो और मैं अपने विचारों की उड़ान में स्वतंत्र रूप से उड़ने लगा, जो अब विशाल, अद्भुत और असीम रूप से सटीक हो चुके थे। एक गहरा और अवर्णनीय आनंद मुझ पर छा गया। मैं अपने शरीर के बोझ से मुक्त हो गया था। मेरा पूरा अस्तित्व वनस्पति जैसी

सुस्ती में डूब रहा था। जिस दुनिया में मैं था, वह शांत थी, लेकिन जादुई, सुंदर आकृतियों और रंगों से भरी हुई थी। फिर मेरे विचारों का धागा टूट गया और रंगों और आकृतियों के बीच विलीन हो गया। मैं एक ऐसे सागर में डूब गया जिसकी लहरें मुझे अलौकिक स्पर्श दे रही थीं। मैं अपने दिल की धड़कन सुन सकता था, अपनी धमनियों की धड़कन महसूस कर सकता था। यह अस्तित्व की एक ऐसी अवस्था थी जो अर्थपूर्ण और आनंद से भरी हुई थी।

मेरे दिल की गहराइयों से मेरी यही इच्छा थी कि मैं विस्मृति की नींद में डूब जाऊं। काश, विस्मृति मुमकिन होती, काश वो हमेशा के लिए बनी रहती, काश मेरी आंखें बंद होते ही धीरे से नींद से ऊपर उठकर अस्तित्वहीनता में विलीन हो जातीं और मैं हमेशा के लिए अपने अस्तित्व की चेतना खो देता, काश मेरा अस्तित्व स्याही की एक बूंद में, संगीत की एक धुन में, रंगीन प्रकाश की एक किरण में विलीन हो जाता, और फिर ये तरंगें और आकृतियां अनंत आकार तक बढ़ती जातीं कि अंत में लुप्त हो जातीं – तब मेरी यही इच्छा पूरी हो जाती।

धीरे-धीरे मुझ पर सुन्नपन छा गया। यह एक सुखद थकावट जैसा था। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर से सूक्ष्म तरंगों की एक निरंतर धारा निकल रही हो। फिर मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे जीवन की दिशा उलट गई हो। एक-एक करके, बीते अनुभव, मन की पुरानी अवस्थाएँ और बचपन की धुंधली, खोई हुई यादें मेरे सामने आ गईं। मैंने न केवल इन चीजों को देखा, बल्कि बीते समय की गतिविधियों की हलचल में हिस्सा लिया, पूरी तरह से उनमें डूब गया। हर गुजरते पल के साथ मैं छोटा और बच्चे जैसा होता गया। फिर अचानक मेरा दिमाग खाली और अंधकारमय हो गया और मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक अंधेरे कुएँ के शाफ्ट में एक पतले हुक से लटका हुआ हूँ। फिर मैं हुक से मुक्त हो गया और अंतरिक्ष में गिर गया। मेरे गिरने में कोई बाधा नहीं थी। मैं एक अनंत खाई में, एक अंतहीन रात में गिर रहा था। उसके बाद, भूले हुए दृश्यों की एक लंबी श्रृंखला एक के बाद एक मेरी आँखों के सामने कौंध गई। मैंने पूर्ण विस्मृति का अनुभव किया। जब मुझे होश आया, तो मैंने खुद को एक छोटे से कमरे में और एक अजीबोगरीब मुद्रा में पाया, जो मुझे विचित्र और साथ ही साथ स्वाभाविक भी लगी।

3

जब मैं एक नई दुनिया में जागा, तो वहाँ सब कुछ मुझे पूरी तरह से परिचित और अपने करीब लगा, इतना कि मुझे अपने पिछले परिवेश और जीवनशैली से कहीं अधिक अपनापन महसूस हुआ, जो मुझे ऐसा लगा मानो मेरे वास्तविक जीवन का मात्र प्रतिबिंब था। यह एक अलग दुनिया थी, लेकिन मेरे साथ इतनी पूर्ण सामंजस्य में थी कि मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अपने प्राकृतिक परिवेश में लौट आया हूँ। मेरा पुनर्जन्म एक ऐसी दुनिया में हुआ था जो प्राचीन थी, लेकिन साथ ही साथ मेरे लिए दूसरी दुनिया की तुलना में अधिक निकट और स्वाभाविक थी।

अभी भी हल्की रोशनी थी। एक शेल्फ पर तेल का दीपक जल रहा था। कमरे के कोने में एक पलंग बिछा हुआ था, लेकिन मैं जाग रहा था। मेरा शरीर बहुत गर्म महसूस हो रहा था। मेरे लबादे और दुपट्टे पर खून के धब्बे थे और मेरे हाथ खून से सने हुए थे। लेकिन बुखार और चक्कर आने के बावजूद, मुझमें एक अजीब सी उत्तेजना और बेचैनी थी, जो खून के निशान मिटाने के किसी भी विचार से कहीं अधिक प्रबल थी, पुलिस के आने और मुझे गिरफ्तार करने के विचार से भी कहीं अधिक शक्तिशाली थी। वैसे भी, मैं कुछ समय से गिरफ्तार होने की उम्मीद कर रहा था और मैंने ठान लिया था कि अगर वे आए, तो मैं ऊपर की शेल्फ पर रखी जहरीली शराब का एक गिलास गटक लूँगा। मेरी उत्तेजना का स्रोत लिखने की आवश्यकता थी, जिसे मैं अपने ऊपर थोपा गया एक दायित्व मानता था। मुझे उम्मीद थी कि इस माध्यम से मैं उस राक्षस को बाहर निकाल पाऊँगा जो लंबे समय से मेरे भीतरी हिस्से को चीर रहा था, अपने मन के भय को कागज पर उतार पाऊँगा। अंततः, कुछ झिझक के बाद, मैंने तेल का दीपक अपनी ओर खींचा और इस प्रकार लिखना शुरू किया:

4

मेरा हमेशा से यही मानना रहा है कि जीवन में सबसे अच्छा रास्ता चुप रहना है; किसी सुनसान झील के किनारे पंख फैलाए बैठे बगुले की तरह एकांत में चले जाने से बेहतर कुछ नहीं हो सकता। लेकिन अब, जो नहीं होना चाहिए था वो हो चुका है, मैं कुछ नहीं कर सकता। कौन जाने? शायद अगले कुछ पलों में, शायद एक घंटे में, नशे में धुत पुलिसवालों का एक गिरोह मुझे गिरफ्तार करने आ जाए। मुझे अपनी जान बचाने की ज़रा भी इच्छा नहीं है, और वैसे भी मेरे लिए अपराध से इनकार करना नामुमकिन होगा, भले ही मैं खून के धब्बे मिटा सकूँ। लेकिन उनके हाथों में पड़ने से पहले मैं अपनी खानदानी शराब की बोतल से एक गिलास पी लूँगा, जिसे मैं सबसे ऊपर वाले शेल्फ पर रखता हूँ।

अब मैं अपने जीवन से रस की हर बूंद निचोड़ लेना चाहता हूँ, जैसे अंगूर के गुच्छे से रस निचोड़ा जाता है, और उस रस को – बल्कि शराब को – कर्बला के जल की तरह बूंद-बूंद करके अपनी परछाई के सूखे गले में डालना चाहता हूँ। मरने से पहले मैं बस इतना ही कर सकता हूँ कि उन कष्टों को कागज़ पर लिख लूँ जिन्होंने मुझे धीरे-धीरे गैंग्रीन या कैंसर की तरह मेरे इस छोटे से कमरे में खोखला कर दिया है। यही मेरे विचारों में व्यवस्था और नियमितता लाने का सबसे अच्छा तरीका है। क्या मेरा इरादा कोई वसीयत लिखने का है? बिलकुल नहीं। मेरे पास ऐसी कोई संपत्ति नहीं है जिसे सरकार हड़प ले, न ही मेरे पास ऐसा कोई विश्वास है जिसे शैतान छीन ले। इसके अलावा, इस धरती पर ऐसी क्या चीज है जिसका मेरे लिए जरा सा भी मूल्य हो? जो भी जीवन मेरे पास था, मैंने उसे यूं ही जाने दिया – मैंने उसे जाने दिया, बल्कि मैं चाहता भी था कि वह चला जाए – और मेरे जाने के बाद मुझे क्या फर्क पड़ता है कि क्या होता है? मेरे लिए यह एक समान है कि कोई मेरे छोड़े हुए कागज़ के टुकड़ों को पढ़े या वे हमेशा के लिए अनपढ़ ही रह जाएँ। मुझे लिखने के लिए प्रेरित करने वाली एकमात्र चीज़ है ज़रूरत, एक प्रबल ज़रूरत, जो इस समय पहले से कहीं अधिक तीव्र है, अपने विचारों और अपने सारहीन स्व, अपनी परछाई, उस भयावह परछाई के बीच एक सेतु बनाने की, जो इस समय तेल के दीपक की रोशनी में दीवार पर फैली हुई है, मानो ध्यान से पढ़ रही हो और मेरे लिखे हर शब्द को निगल रही हो। यह परछाई निश्चित रूप से मुझसे बेहतर समझती है। केवल उसी से मैं ठीक से बात कर सकता हूँ। वही मुझे बोलने के लिए विवश करता है। केवल वही मुझे जान सकता है। वह निश्चित रूप से समझता है... मेरी इच्छा है, जब मैं अपने जीवन का रस - बल्कि, कड़वी शराब - अपनी परछाई के सूखे गले में उतार दूँ, तो उससे कहूँ, "यही मेरा जीवन है।"

कल जिसने भी मुझे देखा होगा, उसे एक दुबला-पतला, बीमार नौजवान नज़र आया होगा। आज उसे एक झुका हुआ बूढ़ा आदमी नज़र आएगा जिसके बाल सफ़ेद हैं, आँखें धँसी हुई हैं और होंठ कटे हुए हैं। मुझे अपने कमरे की खिड़की से बाहर देखने या आईने में खुद को देखने से डर लगता है, क्योंकि हर जगह मुझे अपनी ही परछाई अनगिनत गुना बढ़ती हुई दिखाई देती है।

लेकिन, अपनी झुकी हुई परछाई को अपना जीवन समझाने के लिए, मुझे एक कहानी सुनानी ही पड़ेगी। उफ़! प्रेम, संभोग, विवाह और मृत्यु के बारे में कितनी कहानियाँ पहले से ही मौजूद हैं, जिनमें से एक भी सच नहीं है! मैं इन सुगठित कथानकों और शानदार लेखन से तंग आ चुका हूँ!

मैं अंगूरों के इस गुच्छे से रस निकालने की कोशिश करूँगा, लेकिन क्या उसमें सत्य का एक अंश भी होगा या नहीं, यह मुझे अभी तक नहीं पता। मुझे नहीं पता कि मैं इस समय कहाँ हूँ, मेरे सिर के ऊपर का आकाश और जिस ज़मीन पर मैं बैठा हूँ, वह निशापुर है, बल्ख* है या बनारस। मुझे दुनिया में किसी भी बात का यकीन नहीं है।

मैंने इतने विरोधाभासी दृश्य देखे हैं और इतने तरह के शब्द सुने हैं, मेरी आँखों ने विभिन्न वस्तुओं की घिसी-पिटी सतह को इतना देखा है – वह पतली, कठोर परत जिसके पीछे आत्मा छिपी होती है – कि अब मैं किसी बात पर विश्वास नहीं करता। इस क्षण मुझे ठोस, मूर्त वस्तुओं के अस्तित्व पर संदेह होता है, मुझे स्पष्ट, प्रत्यक्ष सत्यों पर संदेह होता है। यदि मैं अपने आँगन के कोने में रखे पत्थर के ओखली पर हाथ मारूँ और उससे पूछूँ, "क्या तुम वास्तविक और ठोस हो?" और ओखली उत्तर दे, "हाँ," तो मुझे नहीं पता कि मुझे उसकी बात माननी चाहिए या नहीं।

क्या मैं सृष्टि के बाकी हिस्सों से अलग एक प्राणी हूँ? मुझे नहीं पता। लेकिन जब मैंने कुछ देर पहले आईने में देखा तो मैंने खुद को पहचाना नहीं। नहीं, पुराना 'मैं' मर चुका है और गल चुका है, लेकिन नए 'मैं' और उसके बीच कोई बाधा, कोई खाई नहीं है।

मुझे अपनी कहानी सुनानी है, पर समझ नहीं आ रहा कि शुरुआत कहाँ से करूँ। जीवन तो बस एक कल्पना है, एक कहानी मात्र। मुझे अंगूरों के गुच्छे से रस निचोड़कर चम्मच-चम्मच करके इस बुढ़ी परछाई के सूखे गले में डालना है। मैं कहाँ से शुरू करूँ? इस समय मेरे दिमाग में जो भी विचार उमड़ रहे हैं, वे बस इसी क्षण के हैं और उन्हें घंटों, मिनटों और तारीखों का कोई आभास नहीं है। कल की कोई घटना मेरे लिए शायद उतनी महत्वपूर्ण या ताज़ा न हो, जितनी हज़ार साल पहले घटी कोई घटना।

शायद इसी वजह से कि जीवित लोगों की दुनिया से मुझे बांधने वाले सारे बंधन टूट चुके हैं, अतीत की यादें मेरी आँखों के सामने आकार लेने लगती हैं। अतीत, भविष्य, घंटा, दिन, महीना, साल – ये सब मेरे लिए एक समान हैं। बचपन और जवानी के विभिन्न चरण मेरे लिए निरर्थक शब्दों के सिवा कुछ नहीं। इनका अर्थ केवल आम लोगों के लिए है, भीड़ के लिए – हाँ, यही वह शब्द है जिसकी मुझे तलाश थी – भीड़, जिनका जीवन, साल की तरह, अपने निश्चित काल और ऋतुओं में सिमटा हुआ है और जीवन के समशीतोष्ण क्षेत्र में सिमटा हुआ है। लेकिन मेरा जीवन हमेशा से केवल एक ही ऋतु और एक ही अवस्था में बीता है। ऐसा लगता है मानो यह किसी ठंडे क्षेत्र और अनंत अंधकार में बीता हो, जबकि मेरे भीतर हर पल एक लौ जलती रही हो जो मुझे उसी तरह भस्म कर रही हो जैसे लौ मोमबत्ती को भस्म कर देती है।

मेरे कमरे की चारदीवारी के भीतर, मेरे जीवन और विचारों के चारों ओर मैंने जो किला खड़ा किया है, उसमें मेरा जीवन मोमबत्ती की तरह धीरे-धीरे क्षीण होता जा रहा है। नहीं, मैं गलत हूँ। यह उस हरे लट्ठे की तरह है जो अंगीठी के एक तरफ लुढ़क गया है और दूसरे लट्ठों की लपटों से झुलस कर काला पड़ गया है; यह न तो पूरी तरह जल गया है और न ही हरा-भरा रह पाया है; बल्कि दूसरे लट्ठों के धुएँ और भाप से घुटकर दम घुट गया है।

मेरा कमरा, बाकी कमरों की तरह, पकी हुई और धूप में सुखाई गई ईंटों से बना है और हज़ारों प्राचीन घरों के खंडहरों पर खड़ा है। इसकी दीवारें सफेदी से पुती हैं और इसके चारों ओर

नक्काशी है। यह बिल्कुल एक मकबरे जैसा है। मैं घंटों तक कमरे की छोटी-छोटी बातों में खोया रह सकता हूँ – उदाहरण के लिए, दीवार की दरार में बैठी एक छोटी मकड़ी। जब से मैं बिस्तर पर पड़ा हूँ, लोगों ने मुझ पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया है।

दीवार में एक घोड़े की नाल के आकार की कील है, जिस पर कभी झूला लगा हुआ था, जहाँ मैं और मेरी पत्नी सोया करते थे, और शायद तब से इस पर और भी बच्चों का भार पड़ा होगा। कील के ठीक नीचे प्लास्टर उखड़ कर गिर गया है, और उस जगह से कमरे में पहले रहे लोगों और चीजों की गंध आती है। हवा का झोंका या ठंडी हवा भी इन घनी, चिपचिपी, स्थिर गंधों को दूर नहीं कर पाई है: पसीने की गंध, बीते समय की बीमारियों की गंध, लोगों के मुँह की गंध, पैरों की गंध, पेशाब की तीखी गंध, बासी तेल की गंध, सड़ी हुई चटाई की गंध, जले हुए ऑमलेट की गंध, तले हुए प्याज की गंध, दवाओं की गंध, मालवा की गंध, गंदे नैपकिन की गंध, जवानी में कदम रख चुके लड़कों के कमरों में आने वाली गंध, सड़क से रिसकर आने वाली भाप और मरे हुए व मरणासन्न लोगों की गंध। ये सभी गंधें आज भी मौजूद हैं और अपनी विशिष्टता बरकरार रखे हुए हैं। इसके अलावा, अज्ञात स्रोतों से आने वाली कई अन्य गंधें भी वहां अपने निशान छोड़ गई हैं।

मेरे कमरे से लगा हुआ एक अंधेरा कोलाहल है। कमरे में दो खिड़कियाँ हैं जो बाहर भीड़-भाड़ वाली दुनिया की ओर खुलती हैं। एक खिड़की हमारे आँगन की ओर खुलती है, दूसरी सड़क की ओर। इस तरह, यह मुझे रे शहर से जोड़ती है, जिसे लोग "दुनिया की दुल्हन" कहते हैं, जहाँ हजारों घुमावदार गलियाँ, अनगिनत छोटे-छोटे घर, स्कूल और सराय हैं। दुनिया का सबसे महान शहर माना जाने वाला यह शहर मेरे कमरे के बाहर साँस ले रहा है और अपनी ज़िंदगी जी रहा है। जब मैं अपने इस छोटे से कमरे में आँखें बंद करता हूँ, तो शहर की धुंधली, अस्पष्ट परछाइयाँ (जिनके बारे में मेरा मन हर समय सचेत रहता है, चाहे होश में हो या न हो) ठोस रूप धारण कर लेती हैं और मेरे सामने मंडपों, मस्जिदों और बगीचों के रूप में उभर आती हैं।

ये दो खिड़कियाँ ही मुझे बाहरी दुनिया से जोड़ती हैं, उस भीड़-भाड़ वाली दुनिया से। लेकिन मेरे कमरे की दीवार पर एक दर्पण टंगा है जिसमें मैं अपना चेहरा देखता हूँ, और मेरे सीमित जीवन में वह दर्पण उस भीड़-भाड़ वाली दुनिया से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है जिसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है।

मेरी खिड़की से शहर के नज़ारे का मुख्य आकर्षण हमारे घर के ठीक सामने एक जर्जर सी छोटी सी कसाई की दुकान है। वहाँ दिन भर में सिर्फ़ दो भेड़ें ही बिकती हैं। जब भी मैं खिड़की से बाहर देखता हूँ, मुझे वह कसाई नज़र आता है। हर सुबह, दो दुबले-पतले, कमज़ोर से दिखने वाले घोड़ों को दुकान तक लाया जाता है। उन्हें गहरी, खोखली खांसी होती है और उनके कमज़ोर खुरों को देखकर ऐसा लगता है मानो किसी बर्बर कानून के तहत उनकी उंगलियाँ काट दी गई हों और ठूंठों को उबलते तेल में डुबो दिया गया हो। हर घोड़े की पीठ पर दो भेड़ों के शव लटके होते हैं। कसाई अपना चिकना हाथ अपनी मेहंदी लगी दाढ़ी पर रखता है और खरीदार की नज़र से शवों का जायज़ा लेने लगता है। वह उनमें से दो को चुनता है और अपने हाथ से उनकी पूंछों का वज़न महसूस करता है। आखिर में वह उन्हें घसीटकर दुकान के प्रवेश द्वार पर लगे हुक से लटका देता

है। घोड़े हांफते हुए चल पड़ते हैं। कसाई दो खून से लथपथ लाशों के पास खड़ा है, जिनके गले कटे हुए हैं और नीली खोपड़ियों से खून से सनी आँखें बाहर निकली हुई हैं। वह उन्हें थपथपाता है और उंगलियों से मांस को महसूस करता है। फिर वह हड्डी के हैंडल वाला एक लंबा चाकू लेता है और बड़ी सावधानी से उनके शरीर को काटता है, जिसके बाद वह मुस्कुराते हुए मांस अपने ग्राहकों को परोस देता है। इन सभी कामों से उसे कितना आनंद मिलता होगा! मुझे यकीन है कि इससे उसे बेहद खुशी, बल्कि आनंद मिलता है। हर सुबह इसी समय, हमारे इलाके को अपना घर बना चुका वह मोटी गर्दन वाला पीला कुत्ता कसाई की दुकान के बाहर होता है। अपना सिर एक तरफ झुकाए, वह अपनी मासूम आँखों से कसाई के हाथ को खेद भरी निगाहों से देखता है। वह कुत्ता भी समझता है। वह यह भी जानता है कि कसाई को अपने काम में आनंद आता है।

थोड़ी दूर एक मेहराब के नीचे एक अजीब बूढ़ा आदमी बैठा है, जिसके सामने कैनवास की चादर पर तरह-तरह की चीजें फैली हुई हैं। इनमें एक हंसिया, दो घोड़े की नाल, रंग-बिरंगे मोती, एक लंबी धार वाला चाकू, एक चूहेदानी, एक जंग लगा चिमटा, लिखने के सामान का एक हिस्सा, एक टूटी हुई कंघी, एक फावड़ा और एक चमकीला घड़ा शामिल है, जिस पर उसने एक गंदा रुमाल फेंक रखा है।

मैंने उसे दिनों, घंटों और महीनों से अपनी खिड़की के पीछे से देखा है। वह हमेशा एक गंदा दुपट्टा, एक शूस्टर चोगा और एक खुली कमीज पहने रहता है, जिसमें से उसकी छाती के सफेद बाल बाहर निकले रहते हैं। उसकी पलकें सूजी हुई हैं, जो किसी जिद्दी, दखल देने वाली बीमारी से गल रही हैं। उसने अपनी बांह पर एक ताबीज बांध रखा है और वह हमेशा एक ही मुद्रा में बैठता है। गुरुवार की शाम को वह कुरान जोर से पढ़ता है, और पढ़ते समय उसके पीले, टूटे हुए दांत दिखाई देते हैं। कोई सोच सकता है कि वह कुरान पढ़कर ही अपनी रोजी-रोटी कमाता होगा, क्योंकि मैंने कभी किसी को उससे कुछ खरीदते नहीं देखा। मुझे लगता है कि इस आदमी का चेहरा मेरे ज्यादातर बुरे सपनों में आता है। उस मुंडे हुए हरे रंग के सिर के अंदर, कढ़ाईदार पगड़ी के नीचे, उस झुके हुए माथे के पीछे, खरपतवार की तरह, कैसे घटिया और जिद्दी विचार पनप गए हैं? ऐसा लगता है कि बूढ़े आदमी के सामने पड़ा कैनवास का कागज, जिस पर तरह-तरह की चीजें बिखरी पड़ी हैं, बूढ़े आदमी के जीवन से ही एक अजीब सा जुड़ाव रखता है। कई बार मैंने मन बनाया है कि उसके पास जाकर उससे बात करूँ या उसके संग्रह से कुछ खरीदूँ, लेकिन हिम्मत नहीं जुटा पाया।

मेरी नर्स के अनुसार, वह बूढ़ा व्यक्ति जवानी में कुम्हार था। उस पेशे को छोड़ने के बाद उसने अपने पास केवल यही एक घड़ा रखा और अब वह फेरी लगाकर अपना जीवन यापन करता है।

ये मेरे बाहरी दुनिया से संपर्क के एकमात्र साधन थे। मेरी निजी दुनिया में बस मेरी नर्स और मेरी बदमिजाज पत्नी ही बची थीं। लेकिन नैनी उसकी भी नर्स थी; वह हम दोनों की नर्स थी। मेरी पत्नी और मैं न केवल करीबी रिश्तेदार थे, बल्कि नैनी ने ही हमें साथ-साथ पाला-पोसा था। उसकी माँ हर मायने में मेरी माँ भी थी, क्योंकि मैंने अपने माता-पिता को कभी नहीं देखा था, बल्कि उसका पालन-पोषण उसकी माँ ने किया था, जो एक लंबी, सफ़ेद बालों वाली महिला थी। मैं उससे उतना ही प्यार करता था जितना कि अपनी असली माँ से, और यही कारण था कि मैंने

उसकी बेटी से शादी की।

मैंने अपने माता-पिता के बारे में कई अलग-अलग बातें सुनी हैं। उनमें से केवल एक ही, जो नानी ने मुझे बताई, मुझे लगता है, सच हो सकती है। नानी ने मुझे यही बताया था:

मेरे पिता और मेरे चाचा जुड़वा थे। वे कद-काठी, चेहरे और स्वभाव में बिल्कुल एक जैसे थे, यहाँ तक कि उनकी आवाज़ भी एक जैसी थी। इसलिए उन्हें पहचानना आसान नहीं था। इसके अलावा, उनके बीच एक गहरा भावनात्मक बंधन या सहानुभूति थी, जिसके कारण, उदाहरण के लिए, यदि उनमें से एक बीमार पड़ जाता तो दूसरा भी बीमार पड़ जाता। आम बोलचाल में कहें तो, वे एक ही सेब के दो हिस्सों की तरह थे।

कुछ समय बाद दोनों ने व्यापार करने का निश्चय किया और बीस वर्ष की आयु में वे भारत चले गए, जहाँ उन्होंने रेशम, फूलों से सजे वस्त्र, सूती कपड़े, जुब्बा, शॉल, सुई, मिट्टी के बर्तन, मुल्तानी मिट्टी और कलम के कवर सहित विभिन्न प्रकार के रेय वेयर का व्यवसाय शुरू किया। मेरे पिता बनारस में बस गए और मेरे चाचा को भारत के अन्य शहरों में व्यापारिक यात्राओं पर भेजा करते थे। कुछ समय बाद, मेरे पिता को बुगम दासी नामक एक लड़की से प्रेम हो गया, जो एक लिंगम मंदिर में नर्तकी थी। विशाल लिंगम प्रतिमा के समक्ष अनुष्ठानिक नृत्य करने के अलावा, वह मंदिर की परिचारिका के रूप में भी कार्य करती थी। वह एक जोशीली, सांवली त्वचा वाली, नींबू के आकार के स्तनों वाली, बड़ी, तिरछी आँखों वाली और बीच में मिलती हुई पतली भौहों वाली लड़की थी। उसके माथे पर लाल रंग की एक लकीर थी।

इस क्षण मैं अपनी माँ, बुगम दासी की छवि देख सकता हूँ, जो रंगीन रेशम की सुनहरी कढ़ाई वाली साड़ी पहने हुए हैं और उनके सिर पर ब्रोकेड की पट्टी है, उनका सीना खुला है, उनके घने बाल, अनंत काल की काली रात के समान, उनके सिर के पीछे एक गाँठ में बंधे हैं, उनकी कलाई और टखनों में कंगन हैं और उनकी नाक में सोने की बाली है, उनकी बड़ी, गहरी, सुस्त, तिरछी आँखें और चमकीले सफेद दाँत हैं, और वह सितार, ढोल, वीणा, झांझ और तुरही की धुन पर धीमी, लयबद्ध गति से नृत्य कर रही हैं, एक कोमल, नीरस संगीत जो पगड़ी पहने नग्न पुरुषों द्वारा बजाया जाता है, एक रहस्यमय महत्व का संगीत, जिसमें भारत के पुरुषों के जादू-टोने के सभी रहस्य, किंवदंतियाँ, जुनून और दुख समाहित हैं; और, जैसे ही वह अपनी लयबद्ध गतिविधियों, अपने कामुक हाव-भाव, मंदिर नृत्य की पवित्र गतिविधियों का प्रदर्शन करती हैं, बुगम दासी एक फूल की पंखुड़ियों की तरह खिल उठती हैं। उसके कंधों और बाहों में एक सिहरन दौड़ती है, वह आगे झुकती है और फिर पीछे हट जाती है। हर हरकत का अपना एक सटीक अर्थ है और वह एक ऐसी भाषा बोलती है जो शब्दों में नहीं कही जा सकती। मेरे पिता पर इन सबका कितना गहरा असर हुआ होगा! सबसे बढ़कर, इस दृश्य की कामुकता और भी बढ़ गई थी जब उसके पसीने की तीखी, मिर्च जैसी गंध चंपक और चंदन के तेल की खुशबू के साथ मिल रही थी, ये खुशबूएँ विदेशी पेड़ों के सार से भरपूर थीं और चेतना की गहराइयों में अब तक सोई हुई भावनाओं को जगा रही थीं। मैं कल्पना करता हूँ कि ये खुशबूएँ दवाइयों के डिब्बे की गंध जैसी हैं, उन दवाइयों की गंध जैसी जो नर्सरी में रखी जाती थीं और जिनके बारे में कहा जाता था कि वे भारत से आती थीं - एक रहस्यमयी भूमि, प्राचीन सभ्यता के अज्ञात तेल। मुझे पूरा यकीन है कि

जो दवाइयाँ मैं लेता था, उनमें भी यही गंध होती थी।

इन सब बातों ने मेरे पिता के मन में धुंधली, मृत यादों को फिर से ताजा कर दिया। उन्हें बुगम दासी से इतना गहरा प्रेम हो गया कि उन्होंने उस नर्तकी के धर्म, लिंगम पंथ को अपना लिया।

कुछ समय बाद वह लड़की गर्भवती हो गई और उसे मंदिर की सेवा से मुक्त कर दिया गया। मेरे जन्म के कुछ समय बाद ही मेरे चाचा अपनी एक यात्रा से बनारस लौट आए। जाहिर है, महिलाओं के मामले में भी, बाकी सभी मामलों की तरह, उनकी प्रतिक्रियाएँ मेरे पिता जैसी ही थीं। उन्हें मेरी माँ से बेइंतहा प्रेम हो गया और अंत में उन्होंने अपनी इच्छा पूरी की, जो कि मेरे पिता से शारीरिक और मानसिक समानता के कारण उनके लिए मुश्किल नहीं था। सच्चाई का पता चलते ही मेरी माँ ने कहा कि जब तक वे दोनों "कोबरा परीक्षा" के लिए सहमत नहीं हो जाते, तब तक वह उन दोनों में से किसी से भी कोई संबंध नहीं रखेंगी। उस स्थिति में, वह उन दोनों में से जो भी जीवित बचेगा, उसकी पत्नी बनेंगी।

यह “परीक्षण” कुछ इस प्रकार था: मेरे पिता और मेरे चाचा को एक अंधेरे कमरे में बंद कर दिया जाता था, जो किसी कालकोठरी जैसा दिखता था और जिसमें एक कोबरा छोड़ा गया हो। उनमें से जिसे भी सांप काटता, वह स्वाभाविक रूप से चिल्ला उठता। तुरंत ही एक सपेरा कमरे का दरवाजा खोलकर दूसरे को सुरक्षित बाहर ले आता। बुगम दासी जीवित बचे व्यक्ति की होती।

इससे पहले कि उन दोनों को अंधेरे कमरे में बंद किया जाता, मेरे पिता ने बुगम दासी से पूछा कि क्या वह उनके सामने एक बार फिर पवित्र मंदिर नृत्य करेंगी। वह मान गईं और मशाल की रोशनी में, सपेरे की बांसुरी की धुन पर, उन्होंने अपने प्रभावशाली, लयबद्ध और सहज नृत्य से, कोबरा की तरह झुकते और मुड़ते हुए नृत्य किया। फिर मेरे पिता और चाचा को उस कमरे में सांप के साथ बंद कर दिया गया। भय की चीख के बजाय, सुनने वालों ने एक कराहट सुनी जो एक जंगली, रोंगटे खड़े कर देने वाली हंसी के साथ मिली हुई थी। जब दरवाजा खोला गया तो मेरे चाचा अंधेरे कमरे से बाहर निकले। उनका चेहरा जर्जर और बूढ़ा लग रहा था, और उनके बाल - कोबरा के शरीर के फर्श पर सरकने की आवाज, उसकी भयंकर फुफकार, उसकी चमकती आंखें, उसके जहरीले दांतों और चम्मच के आकार के उभार और छोटे से सिर वाले उसके घिनौने शरीर के विचार से उत्पन्न भय ने मेरे चाचा को कमरे से बाहर निकलते समय तक एक सफेद बालों वाले बूढ़े व्यक्ति में बदल दिया था।

अनुबंध की शर्तों के अनुसार, बुगम दासी अब से मेरे चाचा की थी। सबसे भयानक बात यह थी कि यह निश्चित नहीं था कि जीवित बचा व्यक्ति वास्तव में मेरे चाचा ही थे। उस "परीक्षण" ने उनका मानसिक संतुलन बिगाड़ दिया था और वे अपनी स्मृति पूरी तरह खो चुके थे। उन्होंने शिशु को पहचाना नहीं और इसी कारण उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि वह मेरे चाचा ही होंगे। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि इस कहानी का मेरे व्यक्तिगत इतिहास से कोई अजीब संबंध हो और वह रोंगटे खड़े कर देने वाली हंसी और "कोबरा द्वारा परीक्षण" का खौफ मुझ पर अपनी छाप छोड़ गया हो और किसी न किसी तरह मेरे भाग्य से जुड़ा हो?

उस समय से मैं महज़ एक घुसपैठिया, एक अतिरिक्त बोझ बन गया था। अंत में मेरे चाचा (या मेरे पिता, जो भी थे), बुगम दासी के साथ व्यापार के सिलसिले में रे शहर लौट गए। वे मुझे

अपने साथ ले गए और मुझे अपनी बहन, मेरी चाची के पास छोड़ दिया।

मेरी नर्स ने मुझे बताया कि मेरी माँ ने विदाई के समय मेरी चाची को मेरे लिए एक बोतल शराब दी थी। वह गहरे लाल रंग की शराब थी, और उसमें भारतीय सर्प कोबरा के विष का अंश मिला हुआ था। बुगम दासी जैसी स्त्री अपने बच्चे के लिए इससे अधिक उपयुक्त स्मृति चिन्ह क्या छोड़ सकती थी? गहरे लाल रंग की शराब, मृत्यु का अमृत जो शाश्वत शांति प्रदान करता है। शायद उन्होंने भी अंगूर के गुच्छे की तरह अपना जीवन त्याग दिया था और अब मुझे वह शराब दे रही थीं जो उससे निकली थी, वही विष जिसने मेरे पिता को मार डाला था। अब मैं समझती हूँ कि उन्होंने मुझे जो उपहार दिया वह कितना अनमोल था।

क्या मेरी माँ अभी भी जीवित हैं? शायद इस समय, जब मैं लिख रहा हूँ, वह एक साँप की तरह झुकती और मुड़ती हुई हैं, मानो उन्हें ही कोबरा ने काटा हो, भारत के किसी दूर शहर में खुले मैदान में मशाल की रोशनी में नाच रही हों, जबकि स्त्रियाँ, बच्चे और नग्न शरीर वाले पुरुष उनके चारों ओर खड़े हों और मेरे पिता (या मेरे चाचा), सफ़ेद बालों वाले और झुके हुए, घेरे के किनारे कहीं बैठे उन्हें देख रहे हों और कालकोठरी और क्रोधित कोबरा की फुफकार को याद कर रहे हों, जब वह आगे बढ़ रहा था, उसका सिर ऊँचा उठा हुआ था, उसकी गर्दन एक स्कूप की तरह फूली हुई थी और उसके फन के पीछे चश्मे के आकार की रेखाएँ लगातार फैलती और रंग में गहरी होती जा रही थीं।

खैर, जब मुझे मेरी आया की देखरेख में सौंपा गया था, तब मैं एक छोटा बच्चा ही था। मेरी आया मेरी चाची की बेटी, मेरी पत्नी, को भी दूध पिलाती थी। मैं अपनी चाची के परिवार में पला-बढ़ा, वह लंबी महिला जिसके कनपटी के आसपास सफेद बाल थे, और उसी घर में जहाँ उसकी बेटी, वह कुतिया रहती थी।

जब से मुझे याद है, मैं अपनी चाची को माँ की तरह मानता था और उनसे बहुत प्यार करता था। मैं उनसे इतना प्यार करता था कि बाद में मैंने उनकी बेटी, मेरी दत्तक बहन से शादी कर ली, सिर्फ इसलिए कि वह दिखने में उन्हीं की तरह थी।

या यूँ कहूँ कि मुझे उससे शादी करने के लिए मजबूर किया गया था। उसने मुझे सिर्फ़ एक बार अपने आप को सौंपा। मैं उसे कभी नहीं भूलूँगा। यह घटना उसकी मृत माँ के बिस्तर के पास घटी थी। देर रात, जब सब सो चुके थे, मैं अपनी नाइटशर्ट और अंडरवियर में उठा और उस मृत महिला के कमरे में गया, उसे आखिरी बार अलविदा कहने के लिए। उसके सिर के पास कपूर की दो मोमबत्तियाँ जल रही थीं। शैतान को उसके शरीर में प्रवेश करने से रोकने के लिए उसके पेट पर कुरान रखी हुई थी। मैंने उसके ऊपर से चादर हटाई और अपनी चाची को फिर से देखा, उनके गरिमामय, प्रसन्न चेहरे के साथ, जिससे मानो सांसारिक चिंताओं के सारे निशान मिट गए थे। उनके चेहरे पर ऐसा भाव था कि मैंने अनायास ही अपना सिर झुका लिया और साथ ही मुझे लगा कि मृत्यु एक सामान्य, स्वाभाविक चीज़ है। उनके होठों के कोने एक हल्की व्यंग्यात्मक मुस्कान में जमे हुए थे। मैं उनका हाथ चूमकर बाहर जाने ही वाला था कि, सिर घुमाकर मैंने चौंककर देखा कि वह कुतिया, जो अब मेरी पत्नी है, कमरे में आ गई थी। वहाँ अपनी मृत माँ की उपस्थिति में, उसने मुझे कसकर गले लगाया, मुझे कसकर पकड़ लिया और मेरे होठों पर लंबे समय तक और

भावुकता से चुंबन किया। मैं शर्म से ज़मीन में धंस सकता था, लेकिन मुझमें वह करने की हिम्मत नहीं थी जो मुझे करना चाहिए था। मृत महिला, जिसके दाँत दिखाई दे रहे थे, ऐसा लग रहा था मानो वह हमारा मज़ाक उड़ा रही हो - मुझे लगा कि उसके चेहरे पर पहले वाली शांत मुस्कान गायब हो गई थी। मैंने बेमन से उस लड़की को अपनी बाहों में भर लिया और उसके चुंबन का जवाब दिया, तभी अचानक अगले कमरे की ओर जाने वाले दरवाजे पर लगा पर्दा हट गया और मेरी चाची का पति, उस कुतिया का पिता, कमरे में आ गया। वह एक झुका हुआ बूढ़ा आदमी था, और उसने अपने गले में एक दुपट्टा लपेटा हुआ था।

वह एक खोखली, कर्कश, रोंगटे खड़े कर देने वाली हंसी हंस पड़ा, ऐसी हंसी जिससे रोंगटे खड़े हो जाएं। उसके कंधे कांप रहे थे। फिर भी उसने हमारी तरफ देखा तक नहीं। मैं शर्म से ज़मीन में धंस जाना चाहती थी। अगर मुझमें हिम्मत होती तो मैं उस बेजान चेहरे को एक थप्पड़ मार देती जो हमें तिरस्कार भरी निगाहों से घूर रहा था। मैं शर्म से चूर हो गई और कमरे से बेखबर भाग निकली। और इसके लिए मैं उस औरत की शुक्रगुजार थी! शायद उसने यह सब पहले से ही प्लान किया था ताकि मुझे ऐसी स्थिति में डाल दे जहां मुझे उससे शादी करने के लिए मजबूर होना पड़े।

और सच तो यह है कि हम सौतेले भाई-बहन थे, फिर भी मुझे उसकी इज्जत बचाने के लिए उससे शादी करनी पड़ी। वह कुंवारी नहीं थी, पर मुझे इस बात का पता नहीं था, और सच कहूँ तो मुझे यह जानने का कोई हक भी नहीं था; मुझे तो बाद में लोगों की बातों से ही पता चला। पहली रात जब हम शादी के कमरे में अकेले थे, तो मेरे बार-बार कहने और प्रार्थना करने के बावजूद उसने कपड़े उतारने से इनकार कर दिया और बस यही कहती रही, "माह का यह समय ठीक नहीं है।" उसने मुझे अपने पास भी नहीं आने दिया, बल्कि बत्ती बुझाकर कमरे के दूसरे कोने में लेट गई। वह काँप रही थी जैसे कोई तंबू काँप रहा हो। कोई भी सोच सकता था कि उसे किसी कालकोठरी में अजगर के साथ बंद कर दिया गया हो। शायद लोग मेरी बात पर यकीन न करें - और सच में यह बात यकीन से परे है - जब मैं कहूँ कि उसने मुझे एक बार भी होंठों पर चुंबन नहीं करने दिया।

अगली रात भी मैं पिछली रात की तरह ज़मीन पर सोया, और उसके बाद वाली रात भी। मुझमें कुछ और करने की हिम्मत ही नहीं हुई। इस तरह काफी समय बीत गया, जिसमें मैं अपनी पत्नी से कमरे के दूसरी तरफ ज़मीन पर सोता रहा। यकीन मानिए, कौन यकीन करेगा? दो महीने तक – नहीं, पूरे दो महीने और चार दिन तक – मैं उससे अलग ज़मीन पर सोया और उसके पास जाने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाया।

उसने अपनी पवित्रता का प्रतीक पहले से ही तैयार कर रखा था। मुझे नहीं पता – शायद उसने कपड़े पर तीतर का खून छिड़का था या शायद वह कपड़ा उसने अपनी पहली रात की शरारतों से बचाकर रखा था ताकि मुझे और भी बेवकूफ बना सके। उस समय सब मुझे बधाई दे रहे थे। वे एक-दूसरे को आँख मार रहे थे और शायद आपस में कह रहे थे, "लड़के ने कल रात किले पर धावा बोल दिया", जबकि मैंने जितना हो सके उतना अच्छा चेहरा बनाकर ऐसा दिखाया जैसे मुझे कुछ पता ही नहीं चला। वे मुझ पर, मेरी नासमझी पर हँस रहे थे। मैंने ठान लिया कि एक दिन मैं

पूरी कहानी लिख डालूँगा।

बाद में मुझे पता चला कि उसके कई प्रेमी थे। शायद वह मुझसे इसलिए नफरत करती थी क्योंकि एक उपदेशक ने हम पर अरबी में कुछ शब्द पढ़कर उसे मेरे अधीन कर दिया था; या शायद वह बस आज़ाद होना चाहती थी। आखिरकार, एक रात मैंने उसके साथ जबरदस्ती सोने का फैसला किया और मैंने अपना संकल्प पूरा किया। हाथापाई के बाद वह बिस्तर से उठी और मुझे छोड़कर चली गई, और मुझे बस यही तसल्ली थी कि मैं उसके बिस्तर पर आराम से सो सका, जो उसकी गर्माहट और खुशबू से भरा हुआ था। उस रात ही मुझे चैन की नींद आई। उसके बाद वह मुझसे अलग कमरे में सोने लगी।

जब मैं अंधेरा होने के बाद घर लौटता, तो वह अभी भी बाहर होती। या यूँ कहूँ कि मुझे पता ही नहीं होता कि वह घर लौटी है या नहीं, और मुझे जानने की परवाह भी नहीं थी, क्योंकि अकेलापन और मृत्यु ही मेरा भाग्य था। मैं हर कीमत पर उसके प्रेमियों से संपर्क स्थापित करना चाहता था – यह एक और बात है जो अविश्वसनीय लगेगी – और मैंने उन सभी लोगों को ढूँढ़ा जिनके बारे में मैंने सुना था कि वे उसे पसंद हैं। उनसे जान-पहचान बनाने के लिए मैंने हर तरह का अपमान सहा। मैंने उनकी चापलूसी की, उन्हें अपनी पत्नी से मिलने के लिए कहा, यहाँ तक कि उन्हें घर भी ले आया। और उसने कैसे-कैसे लोगों को चुना! एक आंत बेचने वाला, कानून का व्याख्याकार, पका हुआ मांस बेचने वाला, पुलिस अधीक्षक, एक संदिग्ध मुफ्ती, एक दार्शनिक – उनके नाम और पद अलग-अलग थे, लेकिन उनमें से कोई भी उबले हुए भेड़ के सिर बेचने वाले के सहायक से बेहतर नहीं था। और वह उन सभी को मुझसे ज़्यादा पसंद करती थी। अगर मैं उस घोर अपमान का वर्णन करूँ जिसके साथ मैं उसके और उनके सामने गिड़गिड़ाता और गिड़गिड़ाता था, तो कोई भी मुझ पर विश्वास नहीं करेगा। मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मुझे डर था कि मेरी पत्नी मुझे छोड़ देगी। मैं चाहता था कि मेरी पत्नी के प्रेमी मुझे शिष्टाचार, तहज़ीब और आकर्षण की कला सिखाएँ! लेकिन दलाल के रूप में मैं कामयाब नहीं हुआ और वे सब मूर्ख मेरे सामने ही हँस पड़े। आख़िर मैं उन घटिया लोगों से शिष्टाचार और तहज़ीब कैसे सीख सकता था? अब मुझे पता है कि वह उनसे इसलिए प्यार करती थी क्योंकि वे बेशर्म, मूर्ख और सड़े हुए थे। उसका प्यार गंदगी और मौत से जुड़ा हुआ था। क्या मैं सचमुच उसके साथ सोना चाहता था? क्या उसकी खूबसूरती ने मुझे उससे प्यार करने पर मजबूर किया था, या मेरे प्रति उसकी नफ़रत, या उसका सामान्य व्यवहार, या बचपन से उसकी माँ के लिए मेरे मन में जो गहरा स्नेह था, या ये सब कुछ मिला-जुला था? मुझे बस नहीं पता। एक बात मैं जानता हूँ: मेरी पत्नी, वह कुतिया, वह जादूगरनी, ने मेरी आत्मा में ऐसा ज़हर भर दिया था जिसने न केवल मुझे उसे चाहने पर मजबूर किया बल्कि मेरे शरीर के हर कण को उसके कणों की चाहत पैदा कर दी और वह अपनी चाहत को ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगा। मेरी दिली तमन्ना थी कि मैं उसके साथ किसी सुनसान द्वीप पर जाऊं, जहां हम दोनों के सिवा कोई न हो। मेरी इच्छा थी कि कोई भूकंप, भयंकर तूफान या बिजली गिरकर उस कमरे की दीवार के उस पार मौजूद सारी भीड़-भाड़ और चहल-पहल से भरी दुनिया को तबाह कर दे, और सिर्फ हम दोनों ही रह जाएं।

लेकिन तब भी क्या वह किसी और प्राणी को – किसी भारतीय सर्प या अजगर को – मुझसे

ज़्यादा पसंद नहीं करती? मैं उसके साथ एक रात बिताना चाहता था और उसकी बाहों में जकड़कर उसके साथ ही मरना चाहता था। मुझे लगता था कि यही मेरे जीवन की परम परिणति होगी।

जब मैं दर्द से तड़प रहा था, तब वह कुतिया मुझे तड़पाने में बेहद आनंद ले रही थी। अंत में मैंने अपने सारे शौक और गतिविधियाँ छोड़ दीं और एक जीवित लाश की तरह अपने कमरे में कैद हो गया। हमारे बीच के इस राज़ के बारे में किसी को पता नहीं था। यहाँ तक कि मेरी बूढ़ी नर्स, जो मेरी धीमी मौत की गवाह थी, भी मुझे उस कुतिया की वजह से ताने मारती थी! मेरे पीछे, मेरे आस-पास, लोग फुसफुसाते थे, "बेचारी औरत अपने उस पागल पति को कैसे बर्दाश्त कर रही है?" और वे सही थे, क्योंकि मेरी बेइज्जती हर हद पार कर चुकी थी।

मैं दिन-ब-दिन कमजोर होता जा रहा था। जब मैं आईने में खुद को देखता तो मेरे गाल कसाई की दुकानों के बाहर लटके मांस की तरह लाल हो जाते थे। मेरा शरीर गर्मी से तप रहा था और मेरी आँखों में उदासी और निराशा छाई रहती थी।

मुझे अपने रूप में आए बदलाव से खुशी हुई। मैंने अपनी आँखों पर मृत्यु की धूल बिखरी देखी थी, मैंने देख लिया था कि मुझे जाना ही होगा।

आखिरकार उन्होंने डॉक्टर को संदेश भेजा, वही आम डॉक्टर, वही पारिवारिक डॉक्टर जिसने खुद के शब्दों में कहा था कि "हम सबको पाला-पोसा है"। वह कढ़ाईदार पगड़ी पहने और तीन हाथ लंबी दाढ़ी के साथ कमरे में आया। उसका बड़ा दावा था कि उसने अपने समय में मेरे दादाजी को उनकी मर्दानगी वापस लाने के लिए दवाइयाँ दी थीं, मुझे भूरे रंग का पाउडर दिया था और मेरी चाची को जबरदस्ती कैसिया खिलाया था। वह मेरे बिस्तर के पास बैठ गया और मेरी नाड़ी जाँचने और मेरी जीभ देखने के बाद उसने अपनी पेशेवर सलाह दी: मुझे गधे के दूध और जौ के पानी का आहार लेना था और मेरे कमरे को दिन में दो बार मैस्टिक और आर्सेनिक से धुआँ करना था। उसने मेरी नर्स को जड़ी-बूटियों के अर्क और अजीबोगरीब तेलों से भरी कई लंबी-लंबी दवाइयाँ भी दीं - हिस्सॉप, जैतून का तेल, मुलेठी का अर्क, कपूर, मेडनहेयर, कैमोमाइल तेल, तेज पत्ता का तेल, अलसी, देवदार के पेड़ के मेवे और इसी तरह की बेकार चीजें।

मेरी हालत और बिगड़ती चली गई। सिर्फ़ मेरी बूढ़ी, सफ़ेद बालों वाली नर्स, जो उनकी भी नर्स थी, मेरी देखभाल करती थी। वह मुझे दवाइयाँ लाकर देती या मेरे बिस्तर के पास बैठकर मेरे माथे पर ठंडा पानी लगाती। वह मुझे बचपन की बातें सुनाती। उदाहरण के लिए, उसने बताया कि मेरी पत्नी को बचपन से ही अपने बाएँ हाथ के नाखून चबाने की आदत थी और कभी-कभी तो वह उन्हें जड़ तक कुतर देती थी। कभी-कभी वह मुझे कहानियाँ सुनाती और तब मुझे लगता कि मेरी ज़िंदगी उलटी दिशा में चली गई है और मैं फिर से बच्चा बन गया हूँ, क्योंकि वे कहानियाँ उन दिनों की मेरी यादों से गहराई से जुड़ी हुई थीं। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैं बहुत छोटा था और मैं और मेरी पत्नी एक ही बड़े, दोहरे पालने में साथ सोते थे, तब मेरी नर्स वही कहानियाँ सुनाया करती थी। उन कहानियों की कुछ बातें जो तब मुझे अविश्वसनीय लगती थीं, अब मुझे बिल्कुल स्वाभाविक और विश्वसनीय लगती हैं।

मेरी अस्वस्थ अवस्था ने मेरे भीतर एक नई दुनिया बना दी थी, आकृतियों, रंगों और इच्छाओं

की एक विचित्र, अस्पष्ट दुनिया, जिसकी कल्पना एक स्वस्थ व्यक्ति नहीं कर सकता था। इन परिस्थितियों में, मेरी नर्स की कहानियों में वर्णित भीड़भाड़ वाली घटनाएं मेरे मन में गूंज उठीं, जिससे मैं अवर्णनीय आनंद और बेचैनी से भर गया। मुझे लगा जैसे मैं फिर से बच्चा बन गया हूँ। इस समय जब मैं लिख रहा हूँ, मैं उन्हीं भावनाओं का अनुभव कर रहा हूँ। ये सभी भावनाएँ वर्तमान से संबंधित हैं। ये अतीत का हिस्सा नहीं हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि बीते युगों के मनुष्यों का व्यवहार, विचार, आकांक्षाएँ और रीति-रिवाज, जो ऐसी कहानियों के माध्यम से आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचते हैं, मानव जीवन के आवश्यक घटकों में से हैं। हज़ारों वर्षों से लोग वही शब्द दोहराते आ रहे हैं, वही यौन क्रिया करते आ रहे हैं, उन्हीं बचकानी चिंताओं में उलझे रहते हैं। क्या जीवन शुरू से अंत तक एक हास्यास्पद कहानी, एक अविश्वसनीय, मूर्खतापूर्ण गाथा नहीं है? क्या मैं अब अपनी ही एक काल्पनिक कहानी नहीं लिख रहा हूँ? कहानी तो केवल अधूरी आकांक्षाओं को व्यक्त करने का एक माध्यम है, उन आकांक्षाओं के लिए जिन्हें कहानीकार पिछली पीढ़ियों से विरासत में मिले सीमित आध्यात्मिक संसाधनों के आधार पर गढ़ता है।

काश, मैं उन दिनों की तरह चैन से सो पाता, जब मैं मासूम बच्चा था! तब मैं चैन से सोता था। अब जब मैं जागा तो मेरे गाल कसाई की दुकानों के सामने लटके मांस की तरह लाल थे, मेरा शरीर झुलस रहा था और मैं खांस रहा था - मेरी खांसी कितनी गहरी और भयानक थी! यह कल्पना करना असंभव था कि यह मेरे शरीर के किस कोने से आ रही थी। यह उन घोड़ों की खांसी जैसी थी जो हर सुबह भेड़ों के शवों को मेरी खिड़की के सामने वाली कसाई की दुकान तक लाते हैं।

मुझे अच्छी तरह याद है, कमरा बिल्कुल अंधेरा था। मैं कुछ मिनटों तक अर्धचेतना की अवस्था में लेटा रहा। सोने से पहले मैं अक्सर खुद से बातें करता था। उस समय मुझे ऐसा लग रहा था मानो मैं फिर से बच्चा बन गया हूँ और पालने में लेटा हूँ। मुझे महसूस हुआ कि कोई मेरे पास है। घर के सभी लोग काफी देर पहले सो चुके थे। भोर होने से ठीक पहले का समय था, वह समय जब, जैसा कि बीमार लोग जानते हैं, व्यक्ति का अस्तित्व संसार की सीमाओं से परे प्रतीत होता है। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, लेकिन मुझे कोई डर नहीं था। मेरी आँखें खुली थीं, लेकिन मैं किसी को देख नहीं पा रहा था, क्योंकि अँधेरा घना था। कुछ मिनट बीत गए। एक विचार, एक बीमार व्यक्ति का विचार, मेरे मन में आया। मैंने खुद से कहा, "शायद वह है!" उसी क्षण मैंने अपने जलते हुए माथे पर एक ठंडा हाथ महसूस किया।

मैं सिहर उठा। दो-तीन बार मुझे लगा कि कहीं ये तो एज़राइल का हाथ नहीं है।* फिर मैं सो गया। सुबह जब मैं उठा तो मेरी नर्स ने मुझसे कहा, “मेरी बेटी” – उसका मतलब मेरी पत्नी से था – “तुम्हारे पास आई और तुम्हारा सिर अपनी गोद में लेकर तुम्हें बच्चे की तरह झुलाने लगी।” ज़ाहिर है, उसके अंदर अचानक मातृत्व का भाव जाग उठा था। काश मैं उसी क्षण मर गया होता। शायद उसके गर्भ में पल रहे बच्चे की मृत्यु हो गई हो। क्या उसने बच्चे को जन्म दिया था? मुझे नहीं पता।

अपने इस कमरे में, जो कब्र की तरह धीरे-धीरे सिकुड़ता और अँधेरा होता जा रहा था, मैं

जागते-जागते दरवाजे की ओर देखता रहा, इस उम्मीद में कि मेरी पत्नी मेरे पास आएगी। पर वह कभी नहीं आई। क्या मेरी इस हालत के लिए वही ज़िम्मेदार नहीं थी? तीन साल से, या यूँ कहें कि दो साल और चार महीने से – हालाँकि, दिन और महीने क्या मायने रखते हैं? मेरे लिए उनका कोई मतलब नहीं; जो कब्र में पड़ा हो उसके लिए समय का कोई अर्थ नहीं – यह कमरा मेरे अस्तित्व की कब्र, मेरे मन की कब्र बन गया था। दूसरे लोगों के जीवन में भरी हुई सारी हलचल, शोर और दिखावा, वे आम लोग जो तन-मन से एक ही साँचे में ढले हुए थे, मेरे लिए पराये और अर्थहीन हो गए थे। जब से मैं बिस्तर पर पड़ा था, मैं एक अजीब, अकल्पनीय दुनिया में जी रहा था, जहाँ मुझे आम लोगों की दुनिया की कोई ज़रूरत नहीं थी। यह एक ऐसी दुनिया थी जो मेरे भीतर विद्यमान थी, अज्ञातों की दुनिया, और मुझे इसके हर कोने-कोने की खोजबीन करने की एक आंतरिक प्रेरणा महसूस होती थी।

रात के समय, जब मेरा अस्तित्व दो लोकों की सीमा पर मंडरा रहा होता था, गहरी, निर्मल नींद में डूबने से ठीक पहले, मैं सपने देखता था। एक ही पल में मैं एक ऐसा जीवन जीता था जो मेरे जागृत जीवन से बिल्कुल अलग था। मैं किसी दूर देश के एक अलग वातावरण में सांस लेता था। शायद मैं स्वयं से भागना चाहता था और अपनी नियति बदलना चाहता था। जब मैंने अपनी आँखें बंद कीं तो मेरी अपनी वास्तविक दुनिया मेरे सामने प्रकट हुई। जो छवियाँ मैंने देखीं, उनका अपना एक स्वतंत्र जीवन था। वे मेरी इच्छा से धुंधली हो जातीं और फिर से प्रकट हो जातीं और ऐसा लगता था कि मेरा उन पर कोई नियंत्रण नहीं था। हालाँकि, यह बात निश्चित नहीं है। जो दृश्य मेरी आँखों के सामने से गुजरे, वे कोई साधारण सपना नहीं थे, क्योंकि मैं अभी सोया नहीं था। मौन और शांति में मैंने विभिन्न छवियों को पहचाना और उनकी आपस में तुलना की। मुझे ऐसा लगा कि अब तक मैं स्वयं को नहीं जानता था और जिस दुनिया को मैंने अब तक समझा था, वह अपना सारा महत्व और वैधता खो चुकी थी और उसकी जगह रात के अंधेरे ने ले ली थी। क्योंकि मुझे रात को निहारना और उससे प्रेम करना नहीं सिखाया गया था।

मुझे यकीन नहीं है कि उस समय मेरे हाथों पर मेरा नियंत्रण था या नहीं। हालांकि, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि अगर एक बार मैं अपने हाथ को उसके हाल पर छोड़ दूं, तो वह किसी रहस्यमय प्रेरक शक्ति से प्रेरित होकर स्वतः ही काम करने लगेगा, बिना मेरे उस पर नियंत्रण या उसे नियंत्रित किए। और अगर मैंने लगातार अपने शरीर पर नज़र न रखी होती और उसे स्वचालित रूप से नियंत्रित न किया होता, तो वह ऐसे काम कर सकता था जिनकी मैंने ज़रा भी उम्मीद नहीं की थी।

एक अनुभूति जो मुझे लंबे समय से परिचित थी, वह यह थी: कि मैं जीते जी धीरे-धीरे विघटित हो रहा हूँ। मेरा हृदय न केवल मेरे शरीर से, बल्कि मेरे मन से भी हमेशा असामंजस्य में रहा है, और उनमें बिल्कुल भी सामंजस्य नहीं था। मैं हमेशा विघटन और धीरे-धीरे बिखरने की अवस्था में रहा हूँ। कभी-कभी मेरे मन में ऐसे विचार आते थे जो मुझे स्वयं अकल्पनीय लगते थे। कभी-कभी मुझे ऐसी दया का अनुभव होता था जिसके लिए मेरा विवेक मुझे धिक्कारता था। अक्सर किसी से बात करते या किसी काम में व्यस्त होते हुए, मैं किसी न किसी विषय पर बहस शुरू कर देता था जबकि मेरी सारी भावनाएँ कहीं और होती थीं और मैं कुछ और ही सोच रहा होता था

और साथ ही साथ खुद को कोस रहा होता था। मैं एक बिखरता हुआ, विघटित होता हुआ पिंड था। मुझे ऐसा लगता था कि मैं हमेशा से ऐसा ही रहा हूँ और हमेशा ऐसा ही रहूँगा, असंगत तत्वों का एक विचित्र मिश्रण...

एक विचार जो मुझे असहनीय पीड़ा देता था, वह यह था: यद्यपि मैं अपने आस-पास के सभी लोगों से बहुत दूर महसूस करता था, फिर भी बाहरी समानता के कारण मैं उनसे जुड़ा हुआ था, जो दूर और पास दोनों तरह की थी। इस तथ्य पर मेरा आश्चर्य इस ज्ञान से कम हो गया कि मेरी शारीरिक ज़रूरतें उनकी ज़रूरतों के समान थीं। सबसे अधिक पीड़ादायक समानता यह थी कि वे लोग भी मेरी पत्नी की ओर आकर्षित थे, ठीक मेरी तरह, और वह मुझसे ज़्यादा उनके प्रति आकर्षित थी। मुझे यकीन है कि हम दोनों में से किसी एक की बनावट में कुछ कमी थी।

मैं उसे "कुतिया" कहता हूँ क्योंकि कोई और नाम उस पर इतना सटीक नहीं बैठता। मैं उसे केवल "मेरी पत्नी" कहना पसंद नहीं करता, क्योंकि हमारे बीच पति-पत्नी का रिश्ता था ही नहीं और अगर मैं उसे ऐसा कहूँ तो मैं खुद से झूठ बोल रहा हूँगा। शुरुआत से ही मैंने उसे "कुतिया" कहा है, और इस शब्द में मेरे लिए एक अजीब सा आकर्षण रहा है। अगर मैंने उससे शादी की तो इसलिए क्योंकि उसने ही पहल की थी। उसने यह सब सोच-समझकर और धोखे से किया था। नहीं, उसके मन में मेरे लिए कोई दया नहीं थी। भला वह किसी के लिए दया कैसे महसूस कर सकती थी? एक कामुक प्राणी जिसे अपनी वासना को संतुष्ट करने के लिए एक पुरुष, शिष्टता दिखाने के लिए दूसरा और पीड़ा पहुँचाने की अपनी ज़रूरत को पूरा करने के लिए तीसरा चाहिए था। ऐसा नहीं है कि मुझे लगता है कि उसने खुद को इन्हीं तीन तक सीमित रखा, लेकिन फिर भी उसने मुझे ही यातना देने के लिए चुना। सच कहूँ तो, वह इससे बेहतर शिकार नहीं चुन सकती थी। जहाँ तक मेरी बात है, मैंने उससे शादी इसलिए की क्योंकि वह अपनी माँ जैसी दिखती थी और क्योंकि वह मुझसे थोड़ी-बहुत मिलती-जुलती थी। और इस समय तक मैं न केवल उससे प्यार करता था बल्कि मेरे शरीर का हर कण उसे पाने की चाह रखता था। और मेरे शरीर के किसी भी अन्य अंग से अधिक, मेरी कमर – क्योंकि मैं वास्तविक भावनाओं को “प्रेम”, “स्नेह” और इस तरह के धार्मिक शब्दों के काल्पनिक आवरण के पीछे छिपाने से इनकार करता हूँ: मुझे साहित्यिक हुज़वरेश* में कोई रुचि नहीं है। मुझे ऐसा लगा जैसे हम दोनों की कमर में एक प्रकार का विकिरण या प्रभामंडल स्पंदित हो रहा हो, जैसा कि पैगंबरों के सिर के चारों ओर चित्रित किया जाता है, और मेरा बीमार, रोगग्रस्त प्रभामंडल उसका प्रभामंडल खोज रहा था और अपनी पूरी शक्ति से उसकी ओर प्रयास कर रहा था।

जब मेरी हालत सुधरी तो मैंने कहीं दूर चले जाने का निश्चय किया, ऐसी जगह जहाँ लोग मुझे फिर कभी न ढूँढ़ सकें, ठीक वैसे ही जैसे कोई बीमार कुत्ता मरने से पहले ही छिप जाता है या जैसे पक्षी मरने का समय आने पर खुद को छिपा लेते हैं। एक सुबह मैं जल्दी उठा, कपड़े पहने, ऊपर की शेल्फ पर रखे दो केक उठाए और किसी का ध्यान खींचे बिना घर से भाग गया। मैं अपने ही दुख से भाग रहा था। मैं गलियों में बेतरतीब ढंग से चलता रहा, भीड़-भाड़ में बिना किसी उद्देश्य के भटकता रहा, जहाँ से लोग जल्दी-जल्दी गुजर रहे थे, उनके चेहरों पर लालच झलक रहा था, वे पैसे और यौन संतुष्टि की तलाश में थे। मुझे उन्हें देखने की कोई ज़रूरत नहीं थी

क्योंकि उनमें से हर एक आम आदमी जैसा ही था। उनमें से हर एक का बस एक मुँह था और उससे लटकती हुई आँतों का एक गुच्छा, और अंत में जननांग।

मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अचानक हल्का और फुर्तीला हो गया हूँ। मेरी टांगों की मांसपेशियां इतनी लचीली और फुर्तीली हो गई थीं, जिसकी मैंने पहले कभी कल्पना भी नहीं की थी। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं जीवन के सभी बंधनों से मुक्त हो गया हूँ और यही मेरी स्वाभाविक चाल है। बचपन में, जब भी मैं परेशानियों और जिम्मेदारियों के बोझ से मुक्त होता था, मैं इसी तरह चलता था।

सूरज आसमान में काफी ऊपर था और गर्मी असहनीय थी। मैं सुनसान सड़कों पर चल रहा था, जिनके किनारे राख जैसे भूरे रंग के अजीबोगरीब ज्यामितीय आकृतियों वाले घर बने हुए थे – घन, प्रिज्म, शंकु – जिनमें नीची, अंधेरी खिड़कियाँ थीं। ऐसा लगता था मानो ये खिड़कियाँ कभी खोली ही न गई हों, कि ये घर खाली, अस्थायी ढाँचे हैं और इनमें कभी कोई जीवित प्राणी नहीं रहा होगा।

सूरज, सुनहरी छुरी की तरह, दीवारों के किनारे की छाया को धीरे-धीरे कम कर रहा था। गलियाँ पुरानी, सफेदी की हुई दीवारों से घिरी हुई थीं। चारों ओर शांति और सन्नाटा छाया हुआ था, मानो चिलचिलाती गर्मी द्वारा थोपे गए शांति और मौन के पवित्र नियम का पालन कर रहे हों। ऐसा लग रहा था मानो हर जगह रहस्य छाया हुआ हो और मेरे फेफड़े मुश्किल से ही हवा में सांस ले पा रहे हों।

अचानक मुझे एहसास हुआ कि मैं शहर के द्वार के बाहर हूँ। सूरज, मानो हजारों मुँह से खून चूस रहा हो, मेरे शरीर से पसीना निकाल रहा था। तेज़ धूप में रेगिस्तानी पौधे हल्दी के धब्बों जैसे लग रहे थे। सूरज किसी बुखार से व्याकुल आँख की तरह था। वह आकाश की गहराइयों से अपनी जलती किरणें शांत, निर्जीव परिदृश्य पर बिखेर रहा था। ज़मीन और पौधों से एक अजीब सी गंध आ रही थी जिसने मुझे मेरे बचपन के कुछ पल याद दिला दिए। इसने न केवल मेरे जीवन के उस दौर की घटनाओं और शब्दों को याद दिलाया, बल्कि एक पल के लिए मुझे ऐसा लगा जैसे वह समय लौट आया हो और ये सब बातें कल ही घटी हों। मुझे एक सुखद चक्कर सा आया। ऐसा लगा जैसे मैं किसी अनंत दूर की दुनिया में फिर से जन्म ले चुका हूँ। इस अनुभूति में एक नशा सा था और यह किसी पुरानी मीठी शराब की तरह मेरे शरीर की हर नस और तंत्रिका को छू रही थी। मैंने काँटेदार झाड़ियों, पत्थरों, पेड़ों के ठूंठों और जंगली थाइम की छोटी झाड़ियों को पहचान लिया। मैंने घास की जानी-पहचानी गंध को भी पहचान लिया। मेरे जीवन के बीते दिन मुझे याद आ गए, लेकिन ये सारी यादें, किसी अजीब तरीके से, मुझसे बेहद दूर थीं और अपनी ही एक अलग दुनिया में जी रही थीं। मैं महज़ एक निष्क्रिय और दूर का साक्षी था और महसूस कर रहा था कि मेरा दिल अब खाली है और पौधों की खुशबू में वो जादू नहीं रहा जो उन दिनों हुआ करता था। सरू के पेड़ अब कम दूरी पर थे, पहाड़ियाँ और भी बंजर हो गई थीं। मैं जो तब था, अब उसका कोई अस्तित्व नहीं था। अगर मैं उसे याद करके उससे बात भी कर पाता, तो भी वो मेरी बात नहीं सुनता और अगर सुनता भी, तो समझ नहीं पाता। वो किसी ऐसे व्यक्ति जैसा था जिसे मैं कभी जानता था, लेकिन वो मेरा हिस्सा नहीं था।

दुनिया मुझे एक उजाड़, खाली घर जैसी लग रही थी और मेरा दिल भय से भर गया था, मानो अब मुझे नंगे पैर उस घर के हर कमरे को खोजना पड़े: मैं एक के बाद एक कमरे से गुजरता, लेकिन जब मैं आखिरी कमरे में पहुँचता और खुद को उस कुतिया के सामने पाता, तो मेरे पीछे दरवाजे अपने आप बंद हो जाते और केवल दीवारों की कांपती, धुंधली परछाइयाँ ही मेरे चारों ओर काले गुलामों की तरह पहरा दे रही होतीं।

मैं सूरन नदी के लगभग पास ही पहुँच गया था कि अचानक एक बंजर, पथरीली पहाड़ी की तलहटी में पहुँच गया। उसकी पतली, कठोर आकृतियाँ मुझे मेरी नर्स की याद दिला गईं; उनमें एक अवर्णनीय समानता थी। मैं पहाड़ी के किनारे-किनारे चला और चारों ओर पहाड़ियों से घिरे एक छोटे, हरे-भरे बाड़े में पहुँचा। समतल ज़मीन मॉर्निंग ग्लोरी की लताओं से ढकी हुई थी, और एक पहाड़ी पर ईंटों से बना एक भव्य किला खड़ा था।

मुझे अचानक एहसास हुआ कि मैं थक गया हूँ। मैं सूरान नदी तक गया और उसके किनारे एक पुराने सरू के पेड़ की छाँव में मुलायम रेत पर बैठ गया। वह एक शांत, एकांत जगह थी। मुझे लगा कि उससे पहले वहाँ कोई नहीं आया था। अचानक मैंने सरू के पेड़ों के पीछे से एक छोटी लड़की को निकलते देखा और वह महल की ओर चल पड़ी। उसने बहुत ही महीन, हल्के कपड़े की काली पोशाक पहनी हुई थी, जो शायद रेशम की थी। वह अपने बाएँ हाथ की एक उंगली का नाखून चबा रही थी और बेफिक्र, बेफिक्र अंदाज में आगे बढ़ रही थी। मुझे लगा कि मैंने उसे पहले भी देखा है और मैं जानता हूँ कि वह कौन है, लेकिन मैं निश्चित नहीं था। अचानक वह गायब हो गई। वह कहाँ गई, हमारे बीच की दूरी और सूरज की चकाचौंध के कारण मैं ठीक से देख नहीं पाया।

मैं एकदम सन्न रह गया, हिलने-डुलने में भी असमर्थ। मुझे पूरा यकीन था कि मैंने उसे अपनी आँखों से गुजरते हुए देखा था और फिर वह गायब हो गई। क्या वह सचमुच मौजूद थी या कोई भ्रम? क्या मैंने उसे सपने में देखा था या जागते हुए? उसका चेहरा याद करने की मेरी सारी कोशिशें व्यर्थ थीं। मेरी रीढ़ की हड्डी में एक अजीब सी सिहरन दौड़ गई। मुझे अचानक याद आया कि यह दिन का वह समय था जब पहाड़ी पर बने किले की परछाइयाँ फिर से जीवंत हो उठती हैं, और यह छोटी लड़की रेय के प्राचीन शहर की पुरानी निवासियों में से एक थी।

मेरी आँखों के सामने का नज़ारा अचानक मुझे जाना-पहचाना सा लगा। मुझे याद आया कि बचपन में एक बार नौरूज़ के तेरहवें दिन मैं अपनी सास और उस कुतिया के साथ यहाँ आई थी। उस दिन हम एक-दूसरे के पीछे दौड़ते हुए इन्हीं सरू के पेड़ों के दूसरी तरफ घंटों खेलते रहे। फिर बच्चों का एक और समूह हमारे साथ आ गया – वे कौन थे, मुझे ठीक से याद नहीं। हम सब साथ में लुका-छिपी खेलते रहे। एक बार जब मैं सूरन नदी के किनारे कुतिया के पीछे दौड़ रही थी, तो उसका पैर फिसल गया और वह पानी में गिर गई। बाकी बच्चों ने उसे बाहर निकाला और कपड़े बदलने के लिए सरू के पेड़ के पीछे ले गए। मैं भी उनके पीछे गई। उन्होंने उसके सामने एक औरत का नकाब टांग दिया, लेकिन मैंने चुपके से एक पेड़ के पीछे से झाँककर उसका पूरा शरीर देखा। वह मुस्कुरा रही थी और अपने बाएँ हाथ की तर्जनी उंगली का नाखून चबा रही थी। फिर उन्होंने उसे एक सफेद लबादे में लपेट दिया और उसकी महीन बुनाई वाली काली रेशमी पोशाक

को धूप में सूखने के लिए फैला दिया।

मैं पुराने सरू के पेड़ की तलहटी में फैली महीन रेत पर पूरी तरह लेट गया। पानी की कलकल ध्वनि मेरे कानों तक ऐसे पहुँच रही थी मानो कोई स्वप्नदृष्टा अस्पष्ट, रुक-रुक कर बुदबुदा रहा हो। मैंने अनायास ही अपने हाथ गर्म, नम रेत में डाल दिए। मैंने गर्म, नम रेत को अपनी मुट्ठियों में दबाया। ऐसा लगा जैसे किसी लड़की की त्वचा हो जो पानी में गिर गई हो और अपने कपड़े बदल रही हो।

मुझे नहीं पता कि मैंने इस तरह कितना समय बिताया। जब मैं उठी तो अपने आप चलने लगी। पूरा इलाका शांत और निर्मल था। मैं चलती रही, अपने आसपास की किसी भी बात से बेखबर। मेरे वश से परे कोई शक्ति मुझे आगे बढ़ने के लिए मजबूर कर रही थी। मेरा सारा ध्यान मेरे पैरों पर केंद्रित था। मैं सामान्य तरीके से नहीं चल रही थी, बल्कि उस काली पोशाक वाली लड़की की तरह धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी।

जब मुझे होश आया तो मैंने पाया कि मैं वापस शहर में आ गया हूँ और अपने ससुर के घर के सामने खड़ा हूँ। उनका छोटा बेटा, मेरा साला, बाहर पत्थर की बेंच पर बैठा था। वह और उसकी बहन एक ही सेब के दो हिस्सों की तरह थे। उसकी तिरछी तुर्कमान आँखें, उभरी हुई गाल की हड्डियाँ, पके हुए गेहूँ के रंग का गोरा रंग, आकर्षक नाक और एक मजबूत, पतला चेहरा था। बैठे-बैठे वह अपने बाएँ हाथ की तर्जनी उंगली होठों पर रखे हुए था। मैं अपने आप उसके पास गया, जेब में हाथ डाला, दो केक निकाले, उसे दिए और कहा, "ये मम्मी की तरफ से तुम्हारे लिए हैं" - असली माँ न होने के कारण वह मेरी पत्नी को "मम्मी" कहा करता था। उसने कुछ झिझक के साथ केक लिए और अपनी तुर्कमान आँखों में हैरानी का भाव लिए उन्हें देखा। मैं बेंच पर उसके बगल में बैठ गया। मैंने उसे अपनी गोद में बिठाया और उससे सट गया। उसका शरीर गर्म था और उसकी टांगों की पिंडलियाँ मुझे मेरी पत्नी की याद दिला रही थीं। उसका स्वभाव भी उसकी तरह ही सहज था। उसके होंठ उसके पिता जैसे थे, लेकिन पिता में जो बात मुझे घृणा दिलाती थी, वही मुझे उस लड़के में आकर्षक और मनमोहक लगी। उसके होंठ आधे खुले थे, मानो अभी-अभी किसी लंबे, भावुक चुंबन से अलग हुए हों। मैंने उसके आधे खुले होंठों पर चुंबन किया, जो बिल्कुल मेरी पत्नी के होंठों जैसे थे। उसके होंठों का स्वाद खीरे के कटे हुए सिरे जैसा था: तीखा और कड़वा। मैंने सोचा, उस कुतिया के होंठों का स्वाद भी ऐसा ही होगा।

उसी क्षण मेरी नज़र उसके पिता पर पड़ी, गले में दुपट्टा लपेटे झुके हुए बूढ़े व्यक्ति, दरवाज़े से बाहर आते हुए। वे मेरी ओर देखे बिना ही आगे बढ़ गए। वे बेतहाशा हंस रहे थे। उनकी हंसी इतनी भयानक थी कि रोंगटे खड़े हो जाते थे, और वे इतनी ज़ोर से हंस रहे थे कि उनके कंधे कांप रहे थे। मैं शर्म से ज़मीन में धंस जाना चाहता था। सूर्यास्त से कुछ ही पल पहले का समय था। मैं उठा, काश मैं किसी तरह खुद से बच पाता। बिना सोचे-समझे, मैं उस दिशा में चल पड़ा जो मेरे घर की ओर जाती थी। सड़क पर मुझे कुछ भी नहीं और कोई भी नहीं दिखाई दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी अनजान, अजनबी शहर में चल रहा हूँ। मेरे चारों ओर ज्यामितीय आकृतियों वाले अजीब से एकांत घर थे, जिनकी खिड़कियाँ वीरान और काली थीं। ऐसा लगता था मानो उनमें कभी कोई जीवित प्राणी नहीं रहा होगा। उनकी सफेद दीवारें एक फीकी चमक

बिखेर रही थीं। एक अजीब, अविश्वसनीय बात यह थी: जब भी मैं रुकता, चांदनी में मेरी परछाई दीवार पर लंबी और काली पड़ती, लेकिन उसका कोई सिर नहीं होता था। मैंने लोगों को यह कहते सुना था कि अगर कोई व्यक्ति दीवार पर बिना सिर वाली परछाई डालता है तो वह व्यक्ति साल खत्म होने से पहले ही मर जाएगा।

डर से कांपते हुए मैं अपने घर में घुस गया और खुद को अपने कमरे में बंद कर लिया। उसी समय मेरी नाक से खून बहने लगा। बहुत सारा खून बहने के बाद मैं बिस्तर पर गिर पड़ा। मेरी नर्स मुझे देखने आई।

सोने से पहले मैंने आईने में खुद को देखा। मेरा चेहरा बुरी तरह क्षतिग्रस्त, बेजान और धुंधला था, इतना धुंधला कि मैं खुद को पहचान नहीं पा रही थी। मैं बिस्तर पर लेट गई, रजाई ओढ़ ली, खुद को समेट लिया और आँखें बंद करके अपने विचारों में खो गई। मैं उन धागों से वाकिफ थी जिन्हें एक अंधकारमय, उदास, भयानक और सुखद नियति ने बुना था; मैं उन क्षेत्रों में भटक रही थी जहाँ जीवन और मृत्यु आपस में मिल जाते हैं और विकृत छवियाँ जन्म लेती हैं और प्राचीन, विलुप्त इच्छाएँ, अस्पष्ट, दबी हुई इच्छाएँ, फिर से जीवित हो उठती हैं और प्रतिशोध के लिए ज़ोर से चिल्लाती हैं। उस क्षण के लिए मैं प्रकृति और भौतिक जगत से अलग हो गई थी और शाश्वत प्रवाह में मिटने और विलीन होने के लिए तैयार थी। मैं बार-बार बुदबुदाई, "मृत्यु, मृत्यु... तुम कहाँ हो?" मृत्यु के विचार ने मुझे सुकून दिया और मैं सो गई।

नींद में मैंने सपना देखा। मैं मोहम्मदीय चौक में था। वहाँ एक लंबा फाँसी का तख़्ता लगा हुआ था और उस बूढ़े, खस्ताहाल आदमी का शव, जिसे मैं अपनी खिड़की से अक्सर देखता था, उसकी भुजा से लटका हुआ था। तख़्ते के नीचे कई शराबी पुलिसवाले शराब पी रहे थे। मेरी सास, बहुत उत्तेजित अवस्था में, ठीक वैसे ही भावों के साथ जैसे मेरी पत्नी के चेहरे पर तब होते हैं जब वह बहुत परेशान होती है – रंगहीन होंठ, घूरती हुई, जंगली आँखें – मुझे बांह पकड़कर भीड़ के बीच से घसीट रही थीं, लाल कपड़े पहने जल्लाद को इशारे कर चिल्ला रही थीं, “इसे भी फाँसी पर लटका दो!” मैं डर के मारे जाग गया। मेरा शरीर भट्टी की तरह तप रहा था, पसीने से तरबतर था और गाल जल रहे थे। उस बुरे सपने को दिमाग से निकालने के लिए मैं उठा, थोड़ा पानी पिया और सिर-चेहरा पोंछा। मैं वापस बिस्तर पर गया लेकिन नींद नहीं आई।

उस पारदर्शी अंधेरे में लेटे हुए मैं सबसे ऊपर वाले शेल्फ पर रखे पानी के जग को टकटकी लगाए देख रहा था। मुझे एक अजीब सा डर सता रहा था कि वह गिर जाएगा और मैंने ठान लिया था कि जब तक वह वहीं रखा रहेगा, मुझे नींद नहीं आएगी। मैं जग को सुरक्षित जगह पर रखने के इरादे से उठा, लेकिन किसी अनजानी प्रेरणा से, जिसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं था, मेरा हाथ जानबूझकर उसे धक्का दे गया जिससे वह गिर गया और टुकड़े-टुकड़े हो गया। आखिरकार मैं अपनी आँखें बंद कर पाया, लेकिन मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरी नर्स कमरे में आई है और मुझे देख रही है। मैंने रजाई के नीचे अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं, लेकिन वास्तव में कुछ भी असामान्य नहीं हुआ। अर्धचेतना की अवस्था में मैंने गली का दरवाजा खुलते सुना और अपनी नर्स के कदमों की आहट पहचानी, जो अपनी चप्पलें घिसटते हुए नाश्ते के लिए रोटी और पनीर खरीदने गई थी। तभी दूर से एक सड़क विक्रेता की आवाज आई, "अपने पित्त के लिए शहतूत!" नहीं, जीवन,

हमेशा की तरह थकाऊ, फिर से शुरू हो गया था। रोशनी तेज हो रही थी। जब मैंने अपनी आंखें खोलीं तो मेरी खिड़की के बाहर टैंक की सतह से परावर्तित सूर्य की रोशनी का एक धब्बा छत पर टिमटिमा रहा था।

मुझे ऐसा लगा जैसे रात का सपना धुंधला पड़ गया हो, ठीक वैसे ही जैसे बचपन में सालों पहले देखा था। मेरी नर्स मेरे लिए नाश्ता लेकर आई। उसका चेहरा किसी विकृत दर्पण में प्रतिबिंब जैसा था; वह इतना दुबला-पतला और मुरझाया हुआ था कि मानो उसका आकार अप्राकृतिक और हास्यास्पद हो गया हो। ऐसा लग रहा था मानो ठुड्डी पर कोई भारी वजन बांधकर उसे खींच दिया गया हो।

हालांकि नानी जानती थी कि नरगिले का धुआं मेरे लिए हानिकारक है, फिर भी जब वह मेरे कमरे में आती थी तो अपने साथ नरगिले जरूर लाती थी। असल बात यह है कि जब तक वह नरगिले नहीं पी लेती थी, तब तक उसे चैन नहीं आता था। अपने पारिवारिक मामलों, अपने बेटे और बहू के बारे में लगातार बातें करते हुए उसने मुझे भी अपनी निजी जिंदगी का हिस्सा बना लिया था। भले ही यह मूर्खतापूर्ण लगे, लेकिन कभी-कभी मैं अपनी नानी के परिवार के सदस्यों की बातों में खोया रहता था। पता नहीं क्यों, दूसरों की हर गतिविधि, हर खुशी मुझे उल्टी जैसा महसूस कराती थी। मुझे पता था कि मेरी जिंदगी खत्म हो चुकी है और धीरे-धीरे दर्दनाक तरीके से समाप्त हो रही है। भला मुझे उन मूर्खों, उन निकम्मों की जिंदगी से क्यों मतलब रखना चाहिए जो तंदुरुस्त थे, अच्छा खाते-पीते थे, अच्छी नींद लेते थे और शारीरिक संबंध बनाते थे, जिन्होंने मेरे जैसे कष्टों का एक अंश भी अनुभव नहीं किया था या हर पल मौत के साये को अपने चेहरे पर महसूस नहीं किया था?

दाई मुझे बच्चे की तरह मानती थी। वह मेरे मन के हर कोने में झाँकने की कोशिश करती थी। मैं अब भी अपनी पत्नी से शर्माता था। जब भी वह कमरे में आती, मैं बेसिन में थूके हुए बलगम को छुपा लेता; मैं अपने बाल और दाढ़ी संवार लेता और अपनी टोपी सिर पर ठीक से पहन लेता। लेकिन नर्स के साथ मुझे ज़रा भी शर्म नहीं आती थी। वह औरत, जो मुझसे इतनी अलग थी, मेरे जीवन में इतना बड़ा स्थान कैसे बना लेती थी? मुझे याद है कि सर्दियों में वे इसी कमरे में पानी की टंकी के ऊपर एक कुटिया* लगाते थे। मैं, मेरी नर्स और कुतिया कुटिया के चारों ओर सो जाते थे। जब मैं पारदर्शी अंधेरे में आँखें खोलता, तो मेरे सामने वाले दरवाजे पर लटके कढ़ाई वाले पर्दे पर बनी आकृति जीवंत हो उठती। वह कितना अजीब और बेचैन कर देने वाला पर्दा था! उस पर एक झुका हुआ बूढ़ा आदमी बना था, जो भारतीय फकीर जैसा दिखता था, सिर पर पगड़ी पहने। वह सरू के पेड़ के नीचे बैठा था और उसके हाथ में सितार जैसा कोई वाद्य यंत्र था। उसके सामने एक सुंदर युवती खड़ी थी, बिल्कुल वैसी ही जैसी मैंने भारतीय मंदिर की नर्तकी बुगम दासी की कल्पना की थी। उसके हाथ बंधे हुए थे और ऐसा लग रहा था मानो उसे उस बूढ़े आदमी के सामने नृत्य करने के लिए विवश किया गया हो। मैं मन ही मन सोचता था कि शायद इस बूढ़े आदमी को किसी कालकोठरी में कोबरा के साथ बंद कर दिया गया था और इसी अनुभव के कारण उसका शरीर झुक गया था और उसके बाल और दाढ़ी सफेद हो गए थे। वह सोने की कढ़ाई वाला भारतीय पर्दा था, जैसा मेरे पिता (या मेरे चाचा) ने विदेश से मंगवाया होगा। जब भी

मैं उस पर बने डिज़ाइन को देर तक देखता, तो डर जाता और आधी नींद में ही अपनी आया को जगा देता। वह, जिसकी सांसों की दुर्गंध और मोटे काले बाल मेरे चेहरे से टकराते थे, मुझे अपने पास कसकर पकड़ लेती।

जब मैं सुबह उठा तो वह मुझे बिल्कुल वैसी ही दिखी जैसी उन दिनों दिखती थी, सिवाय इसके कि उसके चेहरे की झुर्रियां गहरी और कठोर हो गई थीं।

मैं अक्सर वर्तमान को भुलाने के लिए, खुद से बचने के लिए अपने बचपन के दिनों को याद किया करती थी। मैं वैसा ही महसूस करने की कोशिश करती थी जैसा मैं बीमार पड़ने से पहले महसूस करती थी। तब मुझे ऐसा लगता था कि मैं अभी भी एक बच्ची हूँ और मेरे अंदर एक दूसरा रूप है जो उस बच्ची के लिए दुखी है जो मरने वाली है। संकट के क्षणों में, मेरी नर्स का शांत, पीला चेहरा, उसकी गहरी धँसी हुई, धुंधली, स्थिर आँखें, पतले नथुने और चौड़ा, हड्डीदार माथा, मेरे अंदर बचपन की भावनाओं को फिर से जगाने के लिए काफी था। शायद वह कोई रहस्यमयी विकिरण उत्सर्जित करती थी जिससे मुझे मन की शांति मिलती थी।

उसके माथे पर एक मांसल जन्मचिह्न था, जिस पर बाल उग रहे थे। मुझे याद नहीं कि मैंने आज से पहले इसे कभी देखा था। पहले जब मैं उसका चेहरा देखता था, तो इतनी बारीकी से नहीं देखता था।

हालांकि नानी का बाहरी रूप बदल गया था, लेकिन उनके विचार वही रहे जो हमेशा से थे। फर्क सिर्फ इतना था कि जीवन के प्रति उनका लगाव बढ़ गया था और वे मृत्यु से डरती हुई प्रतीत होती थीं, जिसमें वे मुझे शरद ऋतु की शुरुआत में घरों में शरण लेने वाली मक्खियों की याद दिलाती थीं। दूसरी ओर, मैं हर दिन और हर मिनट बदलता जा रहा था। मुझे ऐसा लगता था कि मेरे मामले में समय दूसरों की तुलना में हजारों गुना तेज़ी से बीत रहा है और मुझमें जो बदलाव मैं प्रतिदिन देखता था, वे सामान्यतः वर्षों का काम होने चाहिए थे, जबकि जीवन से मिलने वाली संतुष्टि इसके विपरीत शून्य की ओर बढ़ती जा रही थी और शायद शून्य से भी नीचे गिर रही थी। कुछ लोगों की मृत्यु की पीड़ा बीस वर्ष की आयु में ही शुरू हो जाती है, जबकि अन्य लोग बिल्कुल अंत में, शांत और शांतिपूर्ण ढंग से मरते हैं, जैसे कोई दीपक जिसका सारा तेल खत्म हो चुका हो।

दोपहर के समय जब मेरी नर्स मेरे लिए खाना लेकर आई, तो मैंने सूप का कटोरा उलट दिया और ज़ोर-ज़ोर से चीखने लगी। घर के सभी लोग दौड़कर मेरे कमरे में आए और दरवाज़े पर जमा हो गए। वह कुतिया भी उनके साथ आई, लेकिन थोड़ी देर में फिर चली गई। मैंने उसका पेट देखा। वह बड़ा और फूला हुआ था। नहीं, उसने अभी तक बच्चे को जन्म नहीं दिया था। कोई डॉक्टर को बुलाने गया। मुझे यह सोचकर खुशी हुई कि कम से कम मैंने उन मूर्खों को परेशान तो किया।

डॉक्टर आए, जिनकी दाढ़ी तीन हाथ जितनी लंबी थी, और उन्होंने मुझे अफीम लेने की सलाह दी। मेरे जीवन के कष्टों के लिए यह कितना अद्भुत इलाज था! जब भी मैं अफीम पीता, मेरे विचार भव्यता, सूक्ष्मता, जादू और उदात्तता से भर जाते और मैं साधारण दुनिया की सीमाओं से परे एक अलग ही दुनिया में चला जाता। मेरे विचार भौतिक वास्तविकता के बोझ से मुक्त होकर शांति

और मौन के आकाश की ओर उड़ान भरते। मुझे ऐसा लगता जैसे मैं किसी सुनहरे चमगादड़ के पंखों पर सवार होकर एक उज्ज्वल, खाली दुनिया में विचरण कर रहा हूँ, जहाँ मेरी प्रगति को रोकने वाली कोई बाधा नहीं है। यह अनुभूति इतनी गहरी और आनंददायक थी कि इससे मिलने वाला आनंद मृत्यु से भी अधिक प्रबल था।

जब मैं अंगीठी के पास से उठी तो घर के आंगन की ओर खुलने वाली खिड़की के पास गई। मेरी नर्स धूप में बैठकर कुछ सब्जियां साफ कर रही थी। मैंने उसे अपनी बहू से कहते सुना, "हम सबको उसके लिए बहुत दुख हो रहा है। काश भगवान उसे इस कष्ट से मुक्ति दिला दें।" तो जाहिर है, डॉक्टर ने उन्हें बता दिया था कि मैं ठीक नहीं होने वाली।

मुझे ज़रा भी हैरानी नहीं हुई। ये सब लोग कितने मूर्ख थे! जब एक घंटे बाद वो मेरे लिए दवा लेकर आई, तो उसकी आँखें रोने से लाल और सूजी हुई थीं। मुझे देखकर उसने ज़बरदस्ती मुस्कुराया। वे सब मेरे सामने नाटक करते थे, और कितनी बेढंगी तरह से करते थे! क्या उन्हें लगता था कि मैं खुद नहीं जानता? लेकिन आखिर इस औरत को मुझसे इतना लगाव क्यों था? उसे क्यों लगता था कि मेरे दुखों में उसका भी हिस्सा है? हुआ बस इतना था कि एक दिन कोई उसके पास आया और उसे पैसे दिए, और उसने अपने झुर्रीदार काले निप्पल, छोटी बाल्टियों जैसे, मेरे होंठों के बीच रख दिए – और काश कि वो घाव हो जाते! अब जब भी मैं उन्हें देखता हूँ, तो यह सोचकर उल्टी आने लगती है कि उस समय मैंने लालच से उनका जीवनदायिनी रस चूस लिया था, जब हमारे दोनों शरीरों की गर्माहट आपस में मिल रही थी। उसने बचपन में मुझे हर तरफ से छुआ था और इसी वजह से वो आज भी मेरे साथ उस खास बेबाकी से पेश आती है जो सिर्फ विधवाओं में ही पाई जाती है। सिर्फ इसलिए कि एक समय वह मुझे शौचालय के ऊपर बिठाकर रखती थी, इसका मतलब यह नहीं कि वह मुझे अभी भी बच्चा समझती थी। कौन जाने? शायद उसने मेरा इस्तेमाल वैसे ही किया हो जैसे औरतें अपनी गोद ली हुई बहनों का करती हैं...

आज भी जब भी वो मेरी मदद करती थी, वो कोई कसर नहीं छोड़ती थी, खासकर उन कामों में जो मैं खुद नहीं कर पाता था। अगर मेरी उस कमीनी पत्नी ने मुझमें ज़रा भी दिलचस्पी दिखाई होती, तो मैं कभी भी नैनी को उसके सामने अपने पास नहीं आने देता, क्योंकि मुझे लगता था कि मेरी पत्नी के विचार और कलात्मक समझ मेरी नर्स से कहीं ज़्यादा व्यापक और गहरी थी। या शायद मेरी ये शर्मिंदगी महज़ मेरे जुनून का नतीजा थी।

बहरहाल, मुझे अपनी नर्स से कोई झिझक नहीं थी, और वही मेरी देखभाल करती थी। शायद वह सोचती थी कि यह सब भाग्य का खेल है और उसकी किस्मत ने ही उसे यह ज़िम्मेदारी सौंपी है। खैर, उसने मेरी बीमारी का पूरा फायदा उठाया और अपने परिवार की सारी परेशानियाँ और खुशियाँ मुझसे बाँटीं, मुझे झगड़ों और मनमुटावों की जानकारी देती रही और कुल मिलाकर अपने सरल स्वभाव, चालाकी और लालच का परिचय देती रही। उसने मुझे बताया कि उसकी बहू उसके लिए कितनी मुसीबत थी और इस विषय पर इतनी भावुकता से बात की कि मानो वह बहू उसकी प्रतिद्वंद्वी पत्नी हो जिसने उसके बेटे का कुछ प्यार चुरा लिया हो। ज़ाहिर है, बहू सुंदर थी। मैंने उसे एक बार अपनी खिड़की से आँगन में देखा था। उसकी आँखें भूरी थीं, बाल सुनहरे थे और नाक छोटी और सीधी थी।

कभी-कभी मेरी नर्स पैगंबरों द्वारा किए गए चमत्कारों के बारे में बातें करती थी। उसका मकसद मुझे खुश करना था, लेकिन इसका असर सिर्फ इतना हुआ कि मुझे उसकी छोटी सोच और बेवकूफी पर जलन होने लगी। कभी-कभी वह गपशप भी सुनाती थी। उदाहरण के लिए, कुछ दिन पहले उसने मुझे बताया कि उसकी बेटी (मतलब वह कमीनी) ने बच्चे के लिए कपड़े बनाए हैं - उसके बच्चे के लिए। इसके बाद वह मुझे इस तरह दिलासा देने लगी जैसे उसे सब पता हो। कभी-कभी वह पड़ोसियों से मेरे लिए घरेलू नुस्खे लाती थी या मेरी समस्या के बारे में जादूगरों और ज्योतिषियों से सलाह लेती थी। साल के आखिरी बुधवार को वह अपने एक ज्योतिषी से मिलने गई और प्याज, चावल और बासी तेल से भरा कटोरा लेकर लौटी। उसने मुझे बताया कि उसने ज्योतिषी से यह बेकार की चीज़ इस उम्मीद में मांगी थी कि इससे मेरी तबीयत ठीक हो जाएगी।* अगले कुछ दिनों तक वह मुझे चुपके से थोड़ा-थोड़ा करके खाने में मिलाकर देती रही। उसने मुझे डॉक्टर द्वारा बताई गई तरह-तरह की दवाइयाँ भी नियमित अंतराल पर निगलने के लिए मजबूर किया: हिस्सॉप, मुलेठी का अर्क, कपूर, मेडनहेयर, कैमोमाइल, तेज पत्ता का तेल, अलसी, देवदार के पेड़ के मेवे, स्टार्च, भूरे रंग के पाउडर, और न जाने कितनी तरह की और बेकार चीजें।

कुछ दिन पहले वह मेरे लिए एक प्रार्थना पुस्तक लाई जिस पर आधा इंच धूल जमी थी। मुझे प्रार्थना पुस्तकों की ही नहीं, बल्कि आम लोगों के विचारों को व्यक्त करने वाले किसी भी प्रकार के साहित्य की कोई आवश्यकता नहीं थी। मुझे उनकी बकवास और झूठ की क्या ज़रूरत थी? क्या मैं स्वयं उन पिछली पीढ़ियों का परिणाम नहीं था जिन्होंने अपना अनुभव मुझे विरासत में दिया था? क्या अतीत मेरे भीतर विद्यमान नहीं था? जहाँ तक मस्जिदों की बात है, मुअज़्ज़िन की अज़ान, शरीर को धोने और मुँह को कुल्ला करने की रस्म, और सर्वशक्तिमान ईश्वर, सर्वशक्तिमान स्वामी, जिनके साथ अरबी भाषा के अलावा बात करना असंभव था, के सम्मान में ऊपर-नीचे झुकने की धार्मिक प्रथा - ये सब बातें मुझे बिल्कुल उदासीन कर देती थीं।

पहले, बीमार पड़ने से पहले के दिनों में, मैं कई बार मस्जिद गया था, लगभग हमेशा अनिच्छा से। उन मौकों पर मैंने अपने आस-पास के लोगों के साथ भावनात्मक जुड़ाव महसूस करने की कोशिश की थी। लेकिन मेरी नज़र दीवार पर लगी चमकदार, डिज़ाइनदार टाइलों पर टिक जाती और मैं एक सुखद स्वप्नलोक में खो जाता। इस तरह मैंने अनजाने में ही खुद को बचने का रास्ता

ढूंढ लिया। नमाज़ के दौरान मैं अपनी आँखें बंद कर लेता और अपना चेहरा हाथ से ढक लेता और अपनी बनाई इस कृत्रिम रात में मैं नमाज़ें ऐसे पढ़ता जैसे कोई स्वप्न में डूबा हुआ व्यक्ति अर्थहीन आवाज़ें निकाल रहा हो। शब्द दिल से नहीं निकले थे। मुझे सर्वशक्तिमान ईश्वर से बात करने की बजाय किसी मित्र या परिचित से बात करना ज़्यादा अच्छा लगता था। ईश्वर मेरे लिए बहुत बड़ा व्यक्ति था।

जब मैं अपने गर्म, नम बिस्तर पर लेटा था, तब इन सवालों में मेरी ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी और उस समय मुझे इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता था कि ईश्वर सचमुच मौजूद है या वह इस दुनिया के शक्तिशाली लोगों का ही एक रूप है, जिसे आध्यात्मिक मूल्यों की महिमा बढ़ाने और निम्न वर्ग के लोगों को आसानी से लूटने के लिए गढ़ा गया है, यानी सांसारिक चीज़ों का ही एक नमूना जिसे आकाश में स्थानांतरित कर दिया गया है। मैं बस इतना जानना चाहता था कि क्या मैं कल सुबह तक जीवित रह पाऊँगा या नहीं। मृत्यु के सामने मुझे लगा कि धर्म, आस्था, विश्वास सब कमज़ोर, बचकानी चीज़ें हैं, जिनके बारे में बस इतना ही कहा जा सकता है कि वे स्वस्थ और सफल लोगों के लिए एक तरह का मनोरंजन प्रदान करती हैं। मृत्यु की भयावह वास्तविकता और अपनी दयनीय स्थिति के सामने, न्याय के दिन और भविष्य के जीवन में मिलने वाले पुरस्कारों और दंडों के विषय में मुझे जो कुछ भी सिखाया गया था, वह सब एक नीरस धोखा लग रहा था, और मुझे सिखाई गई प्रार्थनाएँ मृत्यु के भय के विरुद्ध पूरी तरह से अप्रभावी थीं।

नहीं, मृत्यु का भय मुझे चैन से बैठने नहीं दे रहा था। जिन लोगों ने स्वयं पीड़ा का अनुभव नहीं किया है, वे मेरी बात नहीं समझेंगे जब मैं कहता हूँ कि जीवन से मेरा लगाव इतना प्रबल हो गया था कि थोड़े से सुख का क्षण भी मेरे लंबे समय तक चलने वाले धड़कन और पीड़ा की भरपाई कर देता था।

मैंने देखा कि दर्द और बीमारी मौजूद थे, लेकिन साथ ही साथ उनका कोई अर्थ और महत्व नहीं था। आम लोगों के बीच मैं एक अजीब, अनजान जाति का प्राणी बन गया था, इतना कि वे भूल गए थे कि मैं कभी उनकी दुनिया का हिस्सा था। मुझे यह भयानक अहसास हुआ कि मैं न तो पूरी तरह जीवित था और न ही पूरी तरह मृत। मैं एक जीवित लाश था, जीवित लोगों की दुनिया से कटा हुआ और साथ ही मृत्यु की शांति और विस्मृति से वंचित।

रात हो चुकी थी जब मैं अपने अफीम के अंगीठी के पास से उठा। मैंने खिड़की से बाहर देखा। बंद कसाई की दुकान के बगल में एक अकेला काला पेड़ दिखाई दे रहा था। परछाइयाँ एक काले पिंड में विलीन हो गई थीं। मुझे ऐसा लगा जैसे दुनिया में सब कुछ खोखला और अस्थायी है। घोर काला आकाश मुझे एक पुराने काले तम्बू की याद दिला रहा था जिसमें अनगिनत चमकते तारे छेदों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। देखते-देखते मुझे कहीं से मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनाई दी, हालाँकि यह नमाज़ का समय नहीं था। यह किसी औरत की चीख जैसी लग रही थी - शायद किसी कुतिया की - प्रसव पीड़ा से तड़प रही हो। चीख के साथ-साथ कुत्ते के भौंकने की आवाज़ भी आ रही थी। मैंने मन ही मन सोचा, "अगर यह सच है कि आकाश में हर किसी का अपना तारा होता है तो मेरा तारा दूर, अंधकारमय और अर्थहीन होगा। शायद मेरा कभी कोई तारा था ही नहीं।"

तभी सड़क से नशे में धुत पुलिसकर्मियों के एक समूह की आवाजें तेज हो उठीं। वे चलते हुए आपस में अश्लील मजाक कर रहे थे। फिर वे एक साथ गाने लगे:

चलो, शराब पीते हैं;
आइए रे राज्य की शराब पिएं।
अगर हम अभी नहीं पीते हैं, तो कब पिएं?

भय से मैं खिड़की से पीछे हट गई। उनकी आवाज़ें रात के सन्नाटे में अजीब सी गूंज रही थीं, धीरे-धीरे धीमी होती जा रही थीं। नहीं, वे मेरे लिए नहीं आ रहे थे, उन्हें पता नहीं था... सन्नाटा और अंधेरा फिर से दुनिया पर छा गया। मैंने अपना तेल का दीपक नहीं जलाया। अंधेरे में बैठना ज़्यादा सुखद था, वह घना तरल जो हर चीज़ और हर जगह व्याप्त है। मुझे अंधेरे की आदत हो गई थी। अंधेरे में ही मेरे खोए हुए विचार, मेरे भूले हुए डर, मेरे दिमाग के किसी अज्ञात कोने में छिपे भयानक, अविश्वसनीय विचार फिर से जीवित हो उठते थे, इधर-उधर घूमने लगते थे और मुझे घूरने लगते थे। मेरे कमरे के कोनों में, पर्दों के पीछे, दरवाज़े के पास, इन विचारों का, इन निराकार, भयावह आकृतियों का समूह जमा था।

वहाँ, पर्दे के पास, एक डरावनी आकृति बैठी थी। वह हिलती-डुलती नहीं थी, न उदास थी, न खुश। हर बार जब मैं अपने कमरे में लौटता, वह मेरी आँखों में टकटकी लगाए देखती रहती। उसका चेहरा मुझे जाना-पहचाना लगता था। मुझे ऐसा लगता था जैसे मैंने उस चेहरे को अपने बचपन में कहीं देखा हो। हाँ, यह नौरूज़ के तेरहवें दिन की बात है। मैं सूरन नदी के किनारे कुछ अन्य बच्चों के साथ लुका-छिपी खेल रहा था, तभी मेरी नज़र उस चेहरे पर पड़ी, जो कई साधारण चेहरों के बीच था, जो छोटे-छोटे प्यारे से शरीरों पर बने थे। इसने मुझे मेरे कमरे की खिड़की के सामने वाले कसाई की याद दिला दी। मुझे लगा कि इस आकृति का मेरे जीवन में अपना एक स्थान है और मैंने इसे पहले भी कई बार देखा है। शायद यह परछाई मेरे साथ ही पैदा हुई थी और मेरे सीमित जीवन में ही घूमती रही थी...

जैसे ही मैं दीपक जलाने के लिए उठी, वह आकृति धुंधली पड़ गई और गायब हो गई। मैं दर्पण के सामने खड़ी होकर अपने चेहरे को घूरने लगी। जो प्रतिबिंब मैंने देखा, वह मेरे लिए अपरिचित था। यह एक अजीब, डरावनी छवि थी। मेरा प्रतिबिंब मेरे वास्तविक स्वरूप से अधिक शक्तिशाली हो गया था और मैं दर्पण में एक छवि की तरह हो गई थी। मुझे लगा कि मैं अपने प्रतिबिंब के साथ एक ही कमरे में अकेली नहीं रह सकती। मुझे डर था कि अगर मैंने भागने की कोशिश की तो वह मेरे पीछे आ जाएगा। हम दो बिल्लियों की तरह आमने-सामने थे, लड़ाई के लिए तैयार। लेकिन मुझे पता था कि मैं अपनी हथेली के खोखले भाग से अपने चारों ओर पूर्ण अंधकार पैदा कर सकती हूँ, इसलिए मैंने अपना हाथ उठाया और अपनी आँखें ढँक लीं। हमेशा की तरह, भय की अनुभूति ने मुझमें एक अद्भुत, मदहोश कर देने वाला आनंद जगाया, जिससे मेरा सिर चकरा गया, मेरे घुटने काँपने लगे और मुझे मतली होने लगी। अचानक मुझे एहसास हुआ कि मैं अभी भी खड़ी हूँ। परिस्थितियाँ मुझे अजीब, यहाँ तक कि समझ से परे लगीं। यह कैसे हो सकता है

कि मैं अपने पैरों पर खड़ी हूँ? मुझे ऐसा लग रहा था कि अगर मैं अपना एक पैर हिलाऊँगी तो मेरा संतुलन बिगड़ जाएगा। मुझे एक अजीब सा चक्कर आने लगा। धरती और उस पर मौजूद हर चीज़ मुझसे अनंत दूरी पर चली गई। मेरी दुआ थी कि कोई भूकंप आ जाए या आसमान से बिजली गिरे, जिससे मुझे प्रकाश और शांति से भरे संसार में पुनर्जन्म मिल सके।

जब आखिरकार मैं बिस्तर पर वापस गई, तो मैंने खुद से कहा, "मृत्यु...मृत्यु..." मेरे होंठ बंद थे, फिर भी मुझे अपनी आवाज़ से डर लग रहा था। मैंने अपना पहले वाला साहस पूरी तरह खो दिया था। मैं उन मक्खियों जैसी हो गई थी जो पतझड़ की शुरुआत में घरों के अंदर जमा हो जाती हैं, पतली, अधमरी मक्खियाँ जो पहले तो अपने पंखों की भनभनाहट से डरती हैं और दीवार के किसी एक कोने से चिपकी रहती हैं जब तक कि उन्हें यह एहसास नहीं हो जाता कि वे जीवित हैं; फिर वे बेपरवाही से दरवाजों और दीवारों से टकराती हैं जब तक कि वे फर्श पर गिरकर मर नहीं जातीं।

जैसे ही मेरी आँखें बंद हुईं, मेरे चारों ओर एक धुंधली, अस्पष्ट दुनिया आकार लेने लगी। यह एक ऐसी दुनिया थी जिसका मैं अकेला निर्माता था और जो वास्तविकता के बारे में मेरी धारणा के साथ पूर्ण सामंजस्य में थी। किसी भी तरह से, यह मेरे जागृत जगत से कहीं अधिक वास्तविक और स्वाभाविक थी और मेरे विचारों के लिए कोई बाधा या अवरोध नहीं थी। इसमें समय और स्थान का कोई महत्व नहीं रह गया था। मेरी दमित वासनाएँ, मेरी गुप्त आवश्यकताएँ, जिन्होंने इस स्वप्न को जन्म दिया था, ने ऐसी आकृतियाँ और घटनाएँ उत्पन्न कीं जो अविश्वसनीय थीं, लेकिन मुझे स्वाभाविक प्रतीत हुईं। जागने के बाद कुछ क्षणों के लिए मुझे समय या स्थान का कोई बोध नहीं था और मुझे संदेह हुआ कि क्या मैं वास्तव में अस्तित्व में हूँ। ऐसा प्रतीत होता है कि मैंने स्वयं अपने सभी स्वप्नों का सृजन किया है और मैं लंबे समय से उनकी सही व्याख्या जानता हूँ।

जब मैं सोया तब तक रात का काफी हिस्सा बीत चुका था। अचानक मैंने खुद को एक अनजान कस्बे में बेफिक्र और आज़ाद घूमते हुए पाया, जहाँ अजीबोगरीब ज्यामितीय आकृतियों वाले घर बने हुए थे – प्रिज्म, शंकु, घन – जिनमें नीची, अंधेरी खिड़कियाँ और दरवाजे थे और दीवारें मॉर्निंग ग्लोरी की लताओं से ढकी हुई थीं। कस्बे के सभी निवासी किसी रहस्यमय मौत से मर चुके थे। उनमें से हर एक अपने कोट पर मुँह से निकले खून की दो बूँदें जमाए खड़ा था। जब मैंने उनमें से एक को छुआ तो उसका सिर लुढ़क कर ज़मीन पर गिर गया।

मैं एक कसाई की दुकान पर गई और वहाँ एक आदमी को देखा, जो हमारे घर के सामने वाले कबाड़ बेचने वाले जैसा था। उसके गले में दुपट्टा लिपटा हुआ था और हाथ में एक तेज़ धार वाला चाकू था। वह लाल आँखों से मुझे घूर रहा था, मानो पलकें काट दी गई हों। मैंने उसके हाथ से चाकू छीनने की कोशिश की। उसका सिर लुढ़क कर ज़मीन पर गिर गया। मैं डर के मारे भाग गई। जब मैं गलियों में भाग रही थी, तो हर कोई स्थिर खड़ा था। जब मैं अपने ससुर के घर पहुँची, तो मेरा देवर, उस कुतिया का छोटा भाई, बाहर पत्थर की बेंच पर बैठा था। मैंने अपनी जेब में हाथ डाला, दो केक निकाले और उन्हें उसके हाथ में देने की कोशिश की, लेकिन जैसे ही मैंने उसे छुआ, उसका सिर लुढ़क कर ज़मीन पर गिर गया। मैं ज़ोर से चीखी और जाग गई।

कमरा अभी भी आधा अंधेरा था। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे छत मेरे सिर पर गिर रही हो और दीवारें बहुत मोटी हो गई हों और मुझे कुचल देंगी। मेरी आँखें धुंधली हो गई थीं। मैं कुछ देर तक डर के मारे लेटा रहा, दीवारों के खंभों को बार-बार गिनता रहा। मैंने अभी आँखें बंद ही की थीं कि मुझे एक आवाज़ सुनाई दी। यह नैनी थी, जो कमरा साफ़ करने आई थी। उसने ऊपर की मंज़िल के एक कमरे में मेरे लिए नाश्ता लगा दिया था। मैं ऊपर गया और खिड़की के पास बैठ गया। ऊपर से मेरी खिड़की के सामने खड़ा बूढ़ा कबाड़ वाला आदमी दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन मुझे बाईं ओर कसाई दिखाई दे रहा था। उसकी हरकतें, जो मेरी खिड़की से देखने पर भारी, जानबूझकर और डरावनी लग रही थीं, अब मुझे बेबस, यहाँ तक कि हास्यास्पद लग रही थीं। मुझे लगा कि इस आदमी का कसाई होने का कोई काम ही नहीं है और वह सिर्फ़ एक नाटक कर रहा है। एक आदमी दो दुबले-पतले, काले घोड़ों को लेकर आया, जो गहरी, खोखली खाँसी कर रहे थे। उनमें से प्रत्येक की पीठ पर भेड़ों के दो शव लटके हुए थे। कसाई ने अपने चिकने हाथ से अपनी मूंछों को छुआ और खरीदार की नज़र से शवों का जायज़ा लिया। फिर, बड़ी मुश्किल से उसने उनमें से दो को उठाकर दुकान के प्रवेश द्वार पर लगे हुक से लटका दिया। मैंने उसे उनके पैरों को थपथपाते देखा। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि जब वह रात को अपनी पत्नी के शव को सहलाता होगा, तो वह भेड़ों के बारे में सोचता होगा और यह विचार करता होगा कि अगर वह अपनी पत्नी को मार डाले तो कितना पैसा कमा सकता है।

सफाई का काम खत्म होने के बाद मैं अपने कमरे में वापस गई और एक संकल्प लिया, एक भयानक संकल्प। मैं अपने कमरे से लगी छोटी सी कोठरी में गई और वहाँ रखे एक डिब्बे में रखी हड्डी के हैंडल वाली छुरी निकाली। मैंने उसकी धार को अपने कफ्तान के किनारे पर पोंछा और उसे तकिए के नीचे छिपा दिया। मैंने यह संकल्प बहुत पहले लिया था, लेकिन अभी-अभी कसाई की हरकतों में कुछ ऐसा था, जब वह भेड़ की टांगें काट रहा था, मांस तौल रहा था और फिर आत्मसंतुष्टि भरे भाव से चारों ओर देख रहा था, जिसने मुझे किसी तरह उसकी नकल करने के लिए प्रेरित किया। यह एक ऐसा सुख था जिसका अनुभव मुझे भी करना था। मेरी खिड़की से बादलों के बीच एकदम गहरा नीला आसमान दिखाई दे रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था कि उस आसमान तक पहुँचने के लिए मुझे एक बहुत लंबी सीढ़ी चढ़नी पड़ेगी। क्षितिज घने, पीले, जानलेवा बादलों से ढका हुआ था, जो पूरे शहर पर भारी पड़ रहे थे।

मौसम भयानक था, लेकिन साथ ही साथ सुहावना भी। पता नहीं क्यों, मैं ज़मीन पर बैठ गया। ऐसे मौसम में मुझे अक्सर मौत का ख्याल आता था। लेकिन अब, जब मौत, जिसका चेहरा खून से सना हुआ था, अपनी हड्डियों वाले हाथों से मेरा गला जकड़ रही थी, तब मैंने ठान लिया। मैंने ठान लिया कि उस कुतिया को अपने साथ ले जाऊँगा, ताकि मेरे जाने के बाद वो ये न कह सके, “भगवान उस पर दया करें, उसकी मुसीबतें खत्म हो गईं।”

मेरी खिड़की के सामने से एक जनाज़ा गुजरा। ताबूत काले कपड़े से ढका हुआ था और उस पर एक जलती हुई मोमबत्ती रखी थी। मेरे कानों में "ला इलाहा एल अल्लाह" की आवाज़ सुनाई दी। * सभी दुकानदार और राहगीर अपना-अपना काम छोड़कर ताबूत के पीछे सात कदम चलने लगे। कसाई भी बाहर आया, ताबूत के पीछे तय सात कदम चला और अपनी दुकान पर लौट गया।

लेकिन बूढ़ा फेरीवाला अपने सामान के पास अपनी जगह से हिला तक नहीं। अचानक सब कितने गंभीर हो गए! निस्संदेह उनके विचार अचानक मृत्यु और परलोक के विषय पर केंद्रित हो गए थे। जब मेरी नर्स मेरे लिए दवा लेकर आई, तो मैंने देखा कि वह सोच में डूबी हुई थी। वह एक बड़ी माला के मनकों को उंगलियों से गिन रही थी और कुछ बुदबुदा रही थी। फिर वह मेरे दरवाजे के बाहर खड़ी हुई, अपनी छाती पीटी और ज़ोर से अपनी प्रार्थनाएं पढ़ने लगी।

हे भगवान! हे भगवान!

किसी को भी लग सकता था कि जीवितों को क्षमा करना मेरा काम है! यह सब मसखरापन मुझे बिल्कुल उदासीन कर गया। वास्तव में, यह सोचकर मुझे एक तरह की संतुष्टि मिली कि कम से कम कुछ पलों के लिए ही सही, ये आम लोग भी कुछ वैसा ही अनुभव कर रहे थे जैसा मैं कर रहा था। क्या मेरा कमरा एक ताबूत नहीं था? यह पलंग जो हमेशा बिछा रहता था, मुझे सोने के लिए आमंत्रित करता था, क्या यह कब्र से भी ठंडा और अँधेरा नहीं था? मुझे कई बार यह ख्याल आया कि मैं एक ताबूत में लेटा हूँ। रात में मेरा कमरा सिकुड़ता हुआ और मेरे शरीर पर दबाव डालता हुआ प्रतीत होता था। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि कब्र में भी लोगों को यही अनुभूति होती हो? क्या मृत्यु के बाद हमें होने वाली संवेदनाओं के बारे में कुछ निश्चित रूप से पता है? यह सच है कि रक्त का संचार रुक जाता है और चौबीस घंटे बाद शरीर के कुछ हिस्से सड़ने लगते हैं। फिर भी, मृत्यु के बाद भी बाल और नाखून कुछ समय तक बढ़ते रहते हैं। क्या हृदय की धड़कन रुकते ही संवेदना और विचार भी समाप्त हो जाते हैं या वे छोटी रक्त वाहिकाओं में बचे हुए रक्त से पोषित होकर एक अस्पष्ट अस्तित्व बनाए रखते हैं? मृत्यु का विचार अपने आप में ही भयावह है, लेकिन मृत्यु का अहसास होना उससे भी कहीं अधिक बुरा होगा। कुछ वृद्धजन गहरी नींद में जाने वाले व्यक्ति की तरह या किसी जलते हुए दीपक की तरह होठों पर मुस्कान लिए मर जाते हैं। उस युवा, बलवान व्यक्ति की अनुभूति कैसी होगी जो अचानक मर जाता है और अपनी पूरी शक्ति से मृत्यु से संघर्ष करता रहता है?

मैंने कई बार मृत्यु और अपने शरीर के अंगों के विघटन के बारे में सोचा था, इसलिए अब यह विचार मुझे डराता नहीं था। इसके विपरीत, मैं सचमुच विस्मृति और अस्तित्वहीनता में विलीन होने की कामना करता था। मुझे केवल यही डर था कि मेरे शरीर के अणु बाद में आम लोगों के शरीरों का हिस्सा न बन जाएँ। यह विचार मेरे लिए असहनीय था। कई बार तो मेरी इच्छा होती थी कि मृत्यु के बाद मुझे बड़े-बड़े हाथ और लंबी, संवेदनशील उंगलियाँ मिल जाएँ: मैं अपने शरीर के सभी अणुओं को सावधानीपूर्वक इकट्ठा करके अपने हाथों में कसकर पकड़ लूँगा ताकि वे, मेरी संपत्ति, आम लोगों के शरीरों में न समा जाएँ।

कभी-कभी मुझे ऐसा लगता था कि जो दृश्य मुझे दिखाई देते हैं, वे उन सभी को दिखाई देते हैं जो मृत्यु के कगार पर होते हैं। मेरे भीतर सारी चिंता, भय, डर और जीने की इच्छा समाप्त हो गई थी और बचपन में मुझमें डाली गई धार्मिक मान्यताओं का त्याग करने से मुझे एक असाधारण आंतरिक शांति मिली थी। मृत्यु के बाद विस्मृति की संभावना से मुझे सुकून मिलता था। परलोक का विचार मुझे भयभीत और थका देता था। मैं कभी भी उस दुनिया में ढल नहीं पाया था जिसमें मैं अब जी रहा था। मेरे लिए दूसरी दुनिया किस काम की होगी? मुझे लगता था कि यह दुनिया

मेरे लिए नहीं बल्कि ढीठ, लालची, शेखी बघारने वाले, अंतरात्मा के सौदागर, आँखों और दिलों के भूखे लोगों के एक समूह के लिए बनी है - वास्तव में, उन लोगों के लिए जो इसकी ही छवि में बनाए गए हैं और जो धरती और आकाश के सर्वशक्तिमानों के सामने उसी तरह गिड़गिड़ाते हैं जैसे कसाई की दुकान के बाहर भूखा कुत्ता मांस का टुकड़ा पाने की उम्मीद में अपनी पूंछ हिलाता है। परलोक का विचार मुझे भयभीत और थका देता था। नहीं, मुझे इन घृणित चेहरों से भरी इन भयानक दुनियाओं को देखने की कोई इच्छा नहीं थी। क्या ईश्वर इतने नवधनी थे कि उन्होंने मुझे अपनी इन दुनियाओं को देखने के लिए मजबूर किया? मुझे अपने मन की बात कहनी चाहिए। अगर मुझे दूसरा जीवन जीना पड़े, तो मैं आशा करता हूँ कि मेरा मन और इंद्रियाँ सुन्न हो जाएँ। उस स्थिति में मैं प्रयास और थकान के साथ जी सकता हूँ। मैं अपना जीवन किसी लिंगम मंदिर के स्तंभों की छाया में बिताऊँगा। मैं किसी ऐसे कोने में जाकर बस जाऊँगा जहाँ सूरज की रोशनी मेरी आँखों तक न पहुँचे और मनुष्यों के शब्द और जीवन का शोर मेरे कानों को न चुभे।

मैं अपने भीतर की गहराइयों में इस कदर डूब गया जैसे कोई जानवर सर्दियों में गुफा में छिप जाता है। मैंने दूसरों की आवाज़ें अपने कानों से सुनीं; अपनी आवाज़ गले में गूँजी। मेरे चारों ओर फैली खामोशी अनंत काल की गहरी, घनी रात जैसी थी, उस घने, चिपचिपे, संक्रामक अंधकार की रात जैसी जो उस पल का इंतज़ार कर रही होती है जब वह वासना और द्वेष के सपनों से भरे शांत शहरों पर छा जाएगी। जिस गले से मैंने खुद को जोड़ लिया था, उसके नज़रिए से मैं एक पागल, अमूर्त गणितीय प्रदर्शन से ज़्यादा कुछ नहीं था। प्रजनन की क्रिया में जो दबाव दो लोगों को, जो अपनी खामोशी से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे हैं, एक साथ बाँधे रखता है, वह उसी पागलपन का नतीजा है जो हर इंसान में मौजूद होता है, और इस सोच के पछतावे से भरा होता है कि वह धीरे-धीरे मौत की खाई की ओर बढ़ रहा है...

केवल मृत्यु ही झूठ नहीं बोलती।

मृत्यु की उपस्थिति सभी अंधविश्वासों को नष्ट कर देती है। हम मृत्यु की संतान हैं और मृत्यु ही हमें जीवन के छल से मुक्ति दिलाती है। जीवन के बीचोंबीच वह हमें पुकारती है और अपने पास बुलाती है। जिस उम्र में हमने अभी तक मनुष्यों की भाषा नहीं सीखी है, अगर कभी हम अपने खेल में विराम लेते हैं तो वह मृत्यु की वाणी सुनने के लिए ही होता है... जीवन भर मृत्यु हमें बुलाती रहती है। क्या ऐसा सबके साथ अचानक, बिना किसी कारण के, नहीं हुआ है कि हम विचारों में डूब जाते हैं और उनमें इतने मग्न हो जाते हैं कि समय, स्थान और अपने मन की कार्यप्रणाली का होश खो बैठते हैं? ऐसे समय में मनुष्य को उस संसार को फिर से समझने और पहचानने के लिए प्रयास करना पड़ता है जिसमें वह रहता है। हम मृत्यु की वाणी सुन रहे होते हैं।

इस नम, पसीने से तर बिस्तर पर लेटे हुए, मेरी पलकें भारी होती जा रही थीं और मैं अस्तित्वहीनता और अनंत रात में खो जाने की इच्छा कर रहा था, तभी मुझे लगा कि मेरी खोई हुई यादें और भूले हुए डर फिर से जीवित हो रहे हैं: डर कि कहीं मेरे तकिए के पंख खंजर की धार में न बदल जाएं या मेरे कोट के बटन चक्की के पत्थरों जितने बड़े न हो जाएं; डर कि कहीं फर्श पर गिरे हुए ब्रेड के टुकड़े कांच के टुकड़ों की तरह बिखर न जाएं; आशंका कि कहीं सोते

समय दीपक का तेल छलक कर पूरे शहर में आग न लगा दे; चिंता कि कहीं कसाई की दुकान के बाहर कुत्ते के पंजे जमीन पर पड़ते ही घोड़ों के खुरों की तरह बजने न लगें; भय कि कहीं अपने सामान के पीछे बैठा बूढ़ा कबाड़ बेचने वाला जोर से हंसने न लगे और रुक न पाए; डर कि कहीं हमारे आंगन में बने तालाब के पास बने पाद स्नानघर में कीड़े भारतीय सांप न बन जाएं; डर कि कहीं मेरे बिस्तर की चादरें मेरे ऊपर एक कब्जेदार कब्र के पत्थर में न बदल जाएं और संगमरमर के दांत जाम न हो जाएं, जिससे मैं कभी बच न पाऊं; मुझे डर लगता है कि कहीं मैं अचानक बोलने की शक्ति न खो दूं और चाहे मैं कितनी भी कोशिश कर लूं, कोई मेरी मदद के लिए न आए...

मैं अपने बचपन के दिनों को याद करने की कोशिश करता था, लेकिन जब मैं ऐसा करने में सफल हो जाता था और उस समय को फिर से अनुभव करता था, तो वह वर्तमान की तरह ही निराशाजनक और दर्दनाक होता था।

अन्य चीजें जो चिंता और भय का कारण बनती थीं, वे थीं मेरी खांसी, जिसकी आवाज कसाई की दुकान के सामने दुबले-पतले काले घोड़ों जैसी लगती थी; मेरा थूकना, और यह डर कि कहीं बलगम में खून की एक लकीर न दिख जाए, वह हल्का गर्म, नमकीन तरल जो शरीर की गहराई से निकलता है, जीवन का रस, जिसे अंत में हमें उल्टी करके बाहर निकालना पड़ता है; और मृत्यु का निरंतर खतरा, जो मन की संरचना को हमेशा के लिए चकनाचूर कर देता है और आगे बढ़ जाता है।

जीवन जैसे-जैसे आगे बढ़ता है, वह शांत और तटस्थ भाव से हर व्यक्ति के मुखौटे के पीछे छिपी सच्चाई को उजागर करता है। ऐसा लगता है मानो हर किसी के कई चेहरे होते हैं। कुछ लोग हमेशा एक ही चेहरा इस्तेमाल करते हैं, और स्वाभाविक रूप से वह चेहरा मैला और झुर्रियों से भर जाता है। ये लोग मितव्ययी होते हैं। कुछ लोग अपने मुखौटों की देखभाल इस उम्मीद में करते हैं कि वे उन्हें अपनी आने वाली पीढ़ियों को सौंप सकें। कुछ लोग लगातार अपना चेहरा बदलते रहते हैं। लेकिन बुढ़ापे में पहुँचकर सभी को एक दिन यह एहसास होता है कि जो मुखौटा वे पहने हुए हैं, वह उनका आखिरी मुखौटा है और जल्द ही घिस जाएगा, और फिर, आखिरी मुखौटे के पीछे से उनका असली चेहरा सामने आ जाता है।

मेरे कमरे की दीवारों में कोई ऐसा विषैला वायरस रहा होगा जिसने मेरे सारे विचारों को दूषित कर दिया था। मुझे पूरा यकीन था कि मुझसे पहले कोई हत्यारा, कोई पागल, इस कमरे में रह चुका था। न सिर्फ कमरे की दीवारें, बल्कि खिड़की से दिखने वाला नज़ारा, कसाई, बूढ़ा कबाड़ वाला, मेरी नर्स, कुतिया और हर वो इंसान जिसे मैं देखता था, यहाँ तक कि वो कटोरा जिसमें मैं जौ का शोरबा पीता था और वो कपड़े जो मैंने पहने थे – इन सबने मिलकर मेरे दिमाग में ऐसे विचार पैदा करने की साजिश रची थी।

कुछ रात पहले जब मैंने स्नानघर के एक छोटे से कमरे में अपने कपड़े उतारे, तो मेरे विचारों ने एक नई दिशा ले ली। जैसे ही परिचारक ने मेरे सिर पर पानी डाला, मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे काले विचार धुल रहे हों। मैंने स्नानघर की भाप से भरी दीवार पर अपनी परछाई देखी। मैंने पाया कि मैं उतना ही कमजोर और दुबला था जितना दस साल पहले, जब मैं बच्चा था। मुझे अच्छी तरह याद

है कि तब भी मेरी परछाई स्नानघर की गीली दीवार पर ठीक इसी तरह पड़ी थी। मैंने अपने शरीर को देखा। मेरी जांघों, पिंडलियों और कमर में कुछ कामुकता और फिर भी निराशा थी। उनकी परछाई भी दस साल पहले से, जब मैं बच्चा था, तब से नहीं बदली थी। मुझे लगा कि मेरा पूरा जीवन स्नानघर की दीवार पर टिमटिमाती परछाइयों की तरह बिना किसी उद्देश्य या अर्थ के बीत गया है। दूसरे लोग विशाल, मजबूत और मोटी गर्दन वाले थे। निस्संदेह स्नानघर की भाप से भरी दीवार पर उनकी परछाई बड़ी और घनी थी और उनके जाने के बाद भी कुछ क्षणों के लिए अपना निशान छोड़ती थी, जबकि मेरी परछाई पल भर में मिट गई। स्नान के बाद जब मैंने कपड़े पहने तो मेरे हाव-भाव और विचार फिर से बदल गए। ऐसा लगा जैसे मैं किसी दूसरी दुनिया में प्रवेश कर गया हूँ, जैसे मेरा उस पुरानी दुनिया में पुनर्जन्म हुआ हो जिससे मुझे घृणा थी। खैर, मैं यह कह सकता हूँ कि मुझे एक नया जीवन मिल गया था, क्योंकि यह मेरे लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था कि मैं नमक के टुकड़े की तरह स्नान में घुल नहीं गया।

मेरा जीवन मुझे उतना ही विचित्र, उतना ही अस्वाभाविक, उतना ही रहस्यमय प्रतीत होता है, जितना कि उस कलम के डिब्बे पर बना चित्र, जिसका उपयोग मैं इस समय लिखते समय कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि इस कलम के डिब्बे के ढक्कन पर बना चित्र किसी सनकी कलाकार ने बनाया होगा। अक्सर जब मेरी नज़र इस चित्र पर पड़ती है, तो यह मुझे किसी न किसी तरह परिचित सा लगता है। शायद यही चित्र कारण है... शायद यही चित्र मुझे लिखने के लिए प्रेरित करता है। इसमें एक सरू का पेड़ है, जिसके नीचे एक झुका हुआ बूढ़ा व्यक्ति बैठा है, जो किसी भारतीय फकीर जैसा दिखता है। उसने एक लंबा लबादा ओढ़ा हुआ है और सिर पर पगड़ी बांधी हुई है। उसके बाएं हाथ की तर्जनी उंगली उसके होठों पर आश्चर्य के भाव से दबी हुई है। उसके सामने एक लंबी काली पोशाक पहने एक लड़की नाच रही है। उसकी हरकतें आम लोगों जैसी नहीं हैं - वह बुगम दासी हो सकती है। उसके हाथ में मॉर्निंग ग्लोरी का फूल है। उनके बीच एक छोटी सी धारा बह रही है।

मैं अपने अफीम के अंगीठी के पास बैठा था। मेरे सारे अंधकारमय विचार उस सूक्ष्म, दिव्य धुएँ में घुल गए थे। मेरा शरीर ध्यान में था, मेरा शरीर स्वप्न देख रहा था और अंतरिक्ष में विचरण कर रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वह निम्न वातावरण के बोझ और प्रदूषण से मुक्त होकर अजीब रंगों और आकृतियों की एक अज्ञात दुनिया में उड़ रहा हो। अफीम ने अपनी वनस्पति आत्मा, अपनी सुस्त, वनस्पति आत्मा, मेरे शरीर में समाहित कर दी थी, और मैं वनस्पति अस्तित्व की दुनिया में जी रहा था और चल रहा था। लेकिन जैसे ही, अपने कंधों पर लबादा ओढ़े, मैं चमड़े की चादर के पास, जिस पर मेरा अंगीठी रखा था, ऊंघने लगा, अचानक मुझे उस बूढ़े कबाड़ वाले का ख्याल आया। वह भी मेरी ही तरह अपने सामान के पास दुबक कर बैठा करता था। यह सोचकर मैं भयभीत हो गया। मैं उठा, लबादा उतार फेंका और दर्पण के सामने खड़ा हो गया। मेरे गाल कसाई की दुकानों के सामने लटके मांस के रंग की तरह लाल हो गए थे। मेरी दाढ़ी बिखरी हुई थी। फिर भी, जो प्रतिबिंब मैंने देखा, उसमें कुछ अलौकिक, कुछ आकर्षक था। आँखों में एक

बीमार बच्चे जैसी थकान और पीड़ा का भाव था। ऐसा लग रहा था मानो मेरे भीतर का सारा भारी, सांसारिक और मानवीय भाव पिघल गया हो। मुझे अपना चेहरा अच्छा लगा। मैंने अपने भीतर एक प्रकार की सुखदायक संतुष्टि का संचार किया। दर्पण में देखते हुए मैंने स्वयं से कहा, "तेरा दर्द इतना गहरा है कि वह तेरी आँखों की गहराई में बस गया है... और अगर तू रोएगा, तो आँसू तेरी आँखों की गहराई से निकलेंगे या बिल्कुल नहीं निकलेंगे।" फिर मैंने कहा, "तू मूर्ख है। क्यों न तू यहीं और अभी अपना अंत कर ले? तू किस बात का इंतज़ार कर रहा है? अब तुझे किस बात की उम्मीद है? क्या तू अलमारी में रखी शराब की बोतल भूल गया है? एक घूँट, और सब कुछ खत्म... मूर्ख!... तू मूर्ख है!... मैं तो हवा से बात कर रहा हूँ!"

मेरे मन में जो विचार आ रहे थे, वे आपस में असंबद्ध थे। मुझे अपनी आवाज़ गले में सुनाई दे रही थी, लेकिन मैं शब्दों का अर्थ नहीं समझ पा रहा था। मेरे दिमाग में आवाज़ें दूसरी आवाज़ों के साथ घुलमिल गई थीं। मेरी उंगलियां सामान्य से बड़ी लग रही थीं, जैसा कि बुखार होने पर हमेशा होता है। मेरी पलकें भारी लग रही थीं, मेरे होंठ मोटे हो गए थे। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो मेरी नर्स दरवाजे पर खड़ी थी। मैं ज़ोर से हंस पड़ा। मेरी नर्स का चेहरा भावहीन था। उसकी बेजान आंखें मुझ पर टिकी थीं, लेकिन उनमें आश्चर्य, झुंझलाहट या उदासी का कोई निशान नहीं था। आम तौर पर, साधारण मूर्खतापूर्ण व्यवहार ही हंसी का कारण बनता है, लेकिन मेरी यह हंसी एक गहरे कारण से थी। मेरे सामने जो घोर मूर्खता थी, वह मानव जाति की जीवन के मूल सिद्धांतों को सुलझाने में असमर्थता का हिस्सा थी, और जो चीज़ उसके लिए अभेद्य अंधकार में डूबी थी, वह स्वयं मृत्यु का संकेत थी।

उसने अंगीठी उठाई और धीरे-धीरे कमरे से बाहर चली गई। मैंने अपने माथे से पसीना पोंछा। मेरे हाथ सफेद धब्बों से ढके हुए थे। मैं दीवार से टिक गया, अपना सिर ईंटों पर दबाया और मुझे थोड़ा बेहतर महसूस होने लगा। थोड़ी देर बाद मैंने एक गाने के बोल गुनगुनाए जो मैंने कहीं सुना था।

चलो, शराब पीते हैं;
आइए रे राज्य की शराब पिएं।
अगर हम अभी नहीं पीते हैं, तो कब पिएं?

जब संकट आने वाला होता था, तो मुझे हमेशा उसका पूर्वाभास हो जाता था और मैं असाधारण बेचैनी और अवसाद से भर जाता था, मानो मेरे दिल पर कोई रस्सी कसकर बंधी हो। मेरा मिजाज तूफान आने से पहले के मौसम जैसा होता था। ऐसे समय में वास्तविक दुनिया मुझसे दूर हो जाती थी और मैं एक ऐसी उज्ज्वल दुनिया में खो जाता था जो धरती से असीम रूप से अलग होती थी।

तब मुझे खुद से और दूसरों से डर लगने लगा। मुझे लगता है मेरी यह हालत मेरी बीमारी की वजह से थी, जिसने मेरी मानसिक शक्ति को कमजोर कर दिया था। खिड़की से उस बूढ़े कबाड़ वाले और कसाई को देखकर मैं डर से कांप उठता था। उनके हाव-भाव और चेहरों में कुछ

डरावना सा था। मेरी नर्स ने मुझे एक भयानक बात बताई। उसने सभी पैगंबरों की कसम खाकर कहा कि उसने उस कबाड़ वाले को रात में मेरी पत्नी के कमरे में आते देखा था और दरवाजे के पीछे से उसने कुतिया को उससे कहते सुना था, "अपना दुपट्टा उतारो।" यह सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दो-तीन दिन पहले जब मैं चीख पड़ा और मेरी पत्नी आकर दरवाजे पर खड़ी हो गई, तो मैंने अपनी आँखों से देखा कि उसके होंठों पर उस बूढ़े आदमी के गंदे, पीले, सड़े हुए दांतों के निशान थे, जिनके बीच वह कुरान की अरबी आयतें पढ़ता था। और अब जब मैं इस बारे में सोचता हूँ, तो मुझे याद आता है कि शादी के बाद से यह आदमी हमारे घर के बाहर क्यों मंडरा रहा था? क्या वह उस कुतिया के प्रेमियों में से एक था? मुझे याद है कि उसी दिन मैं उस बूढ़े आदमी के पास गया, जो अपने सामान के पास बैठा था, और उससे पूछा कि वह अपने घड़े के कितने पैसे चाहता है। उसने अपने चेहरे को ढके हुए दुपट्टे की तहों के ऊपर से मेरी ओर देखा। कटे होंठ के नीचे से उसके दो सड़े हुए दांत निकले और वह ज़ोर से हंस पड़ा। उसकी हंसी कर्कश और खोखली थी, इतनी कि रोंगटे खड़े हो जाएं। उसने कहा, "क्या तुम आमतौर पर बिना देखे ही चीजें खरीद लेते हो? इस घड़े के बारे में सोचने की भी ज़रूरत नहीं है। इसे ले लो, नौजवान। उम्मीद है इससे तुम्हें सौभाग्य मिले।" मैंने अपनी जेब में हाथ डाला और दो दिरहम और चार पेशिज़* निकाले, जिन्हें मैंने घड़े के कोने पर रख दिया। वह फिर से ज़ोर से हंस पड़ा। उसकी हंसी कर्कश थी, इतनी कि रोंगटे खड़े हो जाएं। मैं शर्म से ज़मीन में धंस जाना चाहता था। मैंने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया और वापस घर चला गया।

उसके सामने रखी सभी वस्तुओं से एक जंग लगी गंध आ रही थी, मानो जीवन द्वारा ठुकराई गई गंदी और बेकार पड़ी वस्तुओं की हो। शायद उसका उद्देश्य लोगों को जीवन की इन त्यागी हुई वस्तुओं को दिखाना और उनकी ओर ध्यान आकर्षित करना था। आख़िरकार, क्या वह स्वयं बूढ़ा और त्यागा हुआ नहीं था? उसके संग्रह की सभी वस्तुएँ निर्जीव, गंदी और अनुपयोगी थीं। लेकिन उनमें कितना जीवंत जीवन था और उनके स्वरूपों में कितना महत्व छिपा था! इन निर्जीव वस्तुओं ने मेरे मन पर जीवित लोगों की तुलना में कहीं अधिक गहरा प्रभाव छोड़ा।

लेकिन नैनी ने मुझे उसके बारे में यह कहानी सुनाई थी और सबको बता दी थी... एक गंदे भिखारी के साथ! मेरी नर्स ने मुझे बताया कि मेरी पत्नी के बिस्तर में जूँ हो गए थे और वह नहाने गई थी। मैं सोचता हूँ कि स्नानघर की भाप से भरी दीवार पर उसकी परछाई कैसी दिखती होगी। निस्संदेह वह एक कामुक परछाई रही होगी, जिसमें भरपूर आत्मविश्वास था। सब बातों पर गौर करें तो, इस बार मेरी पत्नी की पुरुषों को चुनने की पसंद से मुझे कोई आपत्ति नहीं हुई। वह बूढ़ा, साधारण सा आदमी उन मर्दाना मर्दों की तरह नहीं था, जिन पर मूर्ख कामुक औरतें अक्सर फिदा हो जाती हैं। वह बूढ़ा, अपनी बीमारियों के साथ, अपने ऊपर जमे दुर्भाग्य के आवरण के साथ, और उससे निकलने वाली पीड़ा के साथ, शायद खुद को एहसास किए बिना ही, मानव जाति के उत्थान के लिए ईश्वर द्वारा आयोजित एक छोटी सी प्रदर्शनी जैसा था। जब वह अपने सामने ज़मीन पर बिखरे अपने गंदे सामानों के संग्रह के साथ वहाँ बैठा था, तो वह पूरी सृष्टि का एक नमूना और साक्षात रूप था।

हाँ, मैंने अपनी पत्नी के चेहरे पर उन दो गंदे, सड़े हुए दाँतों के निशान देखे थे जिनके बीच वह

कुरान की अरबी आयतें पढ़ा करता था। यही वह पत्नी थी जो मुझे अपने पास नहीं आने देती थी, जो मेरा तिरस्कार करती थी, और जिसे मैं हर बात के बावजूद प्यार करता था, इस तथ्य के बावजूद कि उसने मुझे कभी भी होठों पर चुंबन करने की अनुमति नहीं दी थी।

सूरज डूब रहा था। कहीं से ढोल की तीखी, दर्द भरी आवाज़ आई। यह विनती और प्रार्थना की आवाज़ थी, जिसने मेरे भीतर मेरे सभी पैतृक अंधविश्वासों और उनके साथ-साथ अंधेरे के डर को भी जगा दिया। वह संकट, जिसका मुझे पहले से ही आभास था और जिसकी मैं पल-पल प्रतीक्षा कर रहा था, मुझ पर आ पड़ा। मेरा पूरा शरीर जलती हुई गर्मी से भर गया और मुझे घुटन महसूस होने लगी। मैं अपने बिस्तर पर गिर पड़ा और आँखें बंद कर लीं। बुखार की हालत में मुझे ऐसा लगा जैसे सब कुछ फैल गया हो और उसकी रूपरेखा धुंधली हो गई हो। छत नीचे धंसने के बजाय ऊपर उठ गई थी। मुझे अपने कपड़ों के भार से घुटन महसूस हो रही थी। बिना किसी कारण के मैं उठा और फिर अपने बिस्तर पर बैठ गया, मन ही मन बुदबुदाते हुए, "अब हद हो गई है... यह असहनीय है..." फिर मैं अचानक रुक गया। थोड़ी देर बाद मैंने धीरे-धीरे और स्पष्ट रूप से, व्यंग्यात्मक स्वर में फिर से बोलना शुरू किया: "अब हद हो गई है..." मैं रुका और बोला, "मैं मूर्ख हूँ।" मैंने अपने बोले शब्दों के अर्थ पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। मैं महज़ हवा में अपनी आवाज़ की गूंज से अपना मनोरंजन कर रहा था। शायद मैं अपनी परछाई से बात कर रहा था ताकि अपना अकेलापन दूर कर सकूँ।

और फिर मैंने एक अविश्वसनीय दृश्य देखा। दरवाजा खुला और वह कुतिया कमरे में आ गई। तो फिर, वह कभी-कभी मेरे बारे में सोचती थी और इन सब के बावजूद भी मेरे पास उसके प्रति आभारी होने का कारण था। वह जानती थी कि मैं अभी भी जीवित हूँ, मैं कष्ट सह रहा हूँ, मैं धीरे-धीरे मर रहा हूँ। इन सब के बावजूद भी मेरे पास उसके प्रति आभारी होने का कारण था। मैं बस यही सोच रहा था कि क्या वह जानती है कि मैं उसकी वजह से मर रहा हूँ। अगर वह जानती तो मैं पूरी तरह से खुश होकर मरता। उस क्षण मैं धरती पर सबसे खुश इंसान था। कमरे में आते ही उस कुतिया ने मेरे सारे बुरे विचार दूर कर दिए थे। उससे, उसकी हरकतों से एक तरह की विकिरण निकल रही थी, जिससे मुझे राहत मिली। इस बार वह पिछली बार जब मैंने उसे देखा था, उससे बेहतर स्वास्थ्य में थी। वह गोल-मटोल और स्वस्थ दिख रही थी। उसने टस कपड़े का लबादा ओढ़ा हुआ था। उसकी भौहें संवारी हुई थीं और नीले रंग से रंगी हुई थीं। उसने तिल लगाया हुआ था और उसका चेहरा रूज, सेरुस और काजल से सजा हुआ था। एक शब्द में कहें तो, वह एकदम परिपूर्ण थी। वह जीवन से बेहद संतुष्ट प्रतीत हो रही थी। वह अनजाने में अपने बाएं हाथ की तर्जनी उंगली होठों पर रखे हुए थी। क्या यह वही सुंदर स्त्री थी, क्या यह वही दुबली-पतली, अलौकिक लड़की थी जिसने काले रंग की प्लीटेड ड्रेस पहनकर सूरन नदी के किनारे मेरे साथ लुका-छिपी खेली थी, वही बेफिक्र, मासूम, नाजुक लड़की जिसकी स्कर्ट के नीचे से झांकती एड़ियों ने मुझे इतना मोहित कर दिया था? इस क्षण तक, जब भी मैंने उसे देखा था, मैंने उसे उसके असली रूप में नहीं देखा था। अब ऐसा लग रहा था मानो मेरी आंखों से पर्दा हट गया हो। किसी कारणवश मुझे कसाई की दुकान के दरवाजे पर लटकी भेड़ का ख्याल आया। वह मेरे लिए कसाई के मांस के टुकड़े के समान हो गई थी। उसका पुराना आकर्षण गायब हो गया

था। वह एक सहज, ठोस महिला बन गई थी जिसके दिमाग में सामान्य, व्यावहारिक विचार भरे हुए थे - एक सच्ची महिला। मुझे डर के साथ एहसास हुआ कि मेरी पत्नी अब एक वयस्क बन चुकी है जबकि मैं अभी भी एक बच्चा ही हूं। मुझे वास्तव में उसकी उपस्थिति में, उसकी निगाहों के नीचे शर्म महसूस हुई। यह महिला जिसने मेरे अलावा हर किसी को अपना शरीर सौंप दिया, जबकि मैं उसके बचपन की काल्पनिक यादों से खुद को दिलासा देता रहा, जब उसका चेहरा सरल और मासूम था और उस पर एक स्वप्निल, क्षणभंगुर भाव था, यह महिला जिसके चेहरे पर अभी भी चौक में बैठे उस बूढ़े कबाड़ बेचने वाले के दांतों के निशान थे - नहीं, यह वह व्यक्ति नहीं थी जिसे मैं जानता था।

उसने व्यंग्य भरे लहजे में मुझसे पूछा, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?"

मैंने जवाब दिया, "क्या आप पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं हैं? क्या आप अपनी मर्जी से सब कुछ नहीं करते? मेरी सेहत से आपको क्या लेना-देना है?"

वह दरवाजा पटकते हुए कमरे से चली गई। उसने मेरी तरफ मुड़कर भी नहीं देखा। ऐसा लगता है जैसे मैं इस दुनिया के लोगों से, जीवित लोगों से बात करना भूल गया हूँ। वह स्त्री, जिसे मैं भावनाओं से रहित समझता था, मेरे व्यवहार से आहत हो गई! कई बार मेरा मन हुआ कि मैं उठकर उसके पास जाऊँ, उसके चरणों में गिरूँ, रोऊँ और उससे क्षमा माँगूँ। हाँ, रोऊँ; क्योंकि मुझे लगा कि अगर मैं रो सकूँ तो मुझे राहत मिल जाएगी। कुछ समय बीत गया; चाहे मिनटों में, घंटों में या सदियों में, मुझे नहीं पता। मैं पागलों जैसा हो गया था और मुझे अपने दर्द से एक अलग ही आनंद मिल रहा था। यह एक ऐसा आनंद था जो मानवीय अनुभव से परे था, एक ऐसा आनंद जिसे केवल मैं ही महसूस कर सकता था और जिसे स्वयं देवता भी, यदि वे अस्तित्व में होते, तो इस हद तक अनुभव नहीं कर सकते थे। उस क्षण मुझे अपनी श्रेष्ठता का एहसास हुआ। मैंने आम लोगों से, प्रकृति से और देवताओं से अपनी श्रेष्ठता महसूस की - उन देवताओं से, जो मानवीय वासनाओं की उपज हैं। मैं एक देवता बन गया था। मैं ईश्वर से भी महान था, और मैंने अपने भीतर शाश्वत, अनंत प्रवाह का अनुभव किया...

वह वापस आ गई। तो फिर वह उतनी क्रूर नहीं थी जितना मैंने सोचा था। मैं उठा, उसके वस्त्र के किनारे को चूमा और रोते-खांसते उसके पैरों पर गिर पड़ा। मैंने अपना चेहरा उसकी टांग से रगड़ा और कई बार उसे उसके असली नाम से पुकारा। मुझे लगा जैसे उसके असली नाम की ध्वनि में एक अजीब सी गूंज थी। और उसी क्षण मेरे दिल में, मेरे दिल की गहराई में, मैंने कहा, "कुतिया... कुतिया!" मैंने उसकी टांगों को चूमा; त्वचा खीरे के ठूंठ के सिरे जैसी थी, हल्की सी तीखी और कड़वी। मैं रोता रहा, रोता रहा। कितना समय बीत गया, यह मुझे नहीं पता। जब मुझे होश आया तो वह जा चुकी थी। हो सकता है कि वह समय, जिसमें मैंने मनुष्य के स्वभाव में निहित सभी सुखों, स्पर्शों और पीड़ाओं का अनुभव किया था, एक पल से अधिक नहीं बीता हो। मैं अकेला बैठा था, उसी मुद्रा में जैसे मैं अफीम का पाइप लेकर अंगीठी के पास बैठा करता था, धुएँ वाले तेल के दीपक के पास, जैसे कोई बूढ़ा कबाड़ बेचने वाला अपनी चीज़ों के पीछे बैठा हो। मैं अपनी जगह से हिला तक नहीं, बस दीपक के धुएँ को देखता रहा। लौ से निकले कालिख के कण मेरे हाथों और चेहरे पर काली बर्फ की तरह जम गए। मेरी आया मेरा खाना लेकर आई, जौ

के शोरबे का एक कटोरा और चिकने चिकन पुलाव की एक थाली। वह डर के मारे चीख पड़ी, थाली गिरा दी और कमरे से बाहर भाग गई। यह सोचकर मुझे अच्छा लगा कि कम से कम मैं उसे डरा तो पाया। मैं उठा, दीपक की बाती बुझाई और दर्पण के सामने खड़ा हो गया। मैंने कालिख के कणों को अपने चेहरे पर मल लिया। मैंने जो चेहरा देखा, वह कितना भयानक था! मैंने अपनी निचली पलकें नीचे खींचीं, फिर उन्हें छोड़ा, अपने होंठों के कोनों को खींचा, अपने गाल फुलाए, अपनी दाढ़ी के सिरे को ऊपर की ओर खींचा और उसे अगल-बगल घुमाकर खुद को देखकर मुंह बनाया। मेरे चेहरे में हास्यपूर्ण और भयानक भावों को प्रकट करने की स्वाभाविक प्रतिभा थी। मुझे लगता था कि इन्हीं भावों के कारण मैं अपने मन के भीतर छिपी हुई सभी विचित्र आकृतियों, सभी हास्यपूर्ण, भयानक, अविश्वसनीय छवियों को अपनी आँखों से देख पाता था। वे सभी मुझे परिचित लगती थीं, मैं उन्हें अपने भीतर महसूस करता था, और फिर भी साथ ही साथ वे मुझे हास्यास्पद भी लगती थीं। ये सभी मुंह बनाने वाले चेहरे मेरे भीतर मौजूद थे और मेरा हिस्सा थे: भयानक, अपराधी, हास्यास्पद मुखौटे जो मेरी उंगली के एक इशारे से बदल जाते थे। बूढ़ा कुरान पढ़ने वाला, कसाई, मेरी पत्नी - मैंने उन सभी को अपने भीतर देखा। वे मुझमें दर्पण की तरह प्रतिबिंबित हो रहे थे; उन सभी के रूप मेरे भीतर मौजूद थे लेकिन उनमें से कोई भी मेरा नहीं था। क्या मेरे चेहरे की बनावट और भाव मेरे पूर्वजों के प्रलोभनों, वासनाओं और निराशाओं की एक रहस्यमय श्रृंखला का परिणाम नहीं थे? और मैं, जो इस विरासत का संरक्षक था, क्या मैंने किसी पागलपन भरी, हास्यास्पद भावना के कारण, चाहे मुझे पसंद हो या न हो, चेहरे के इन भावों के भंडार को संरक्षित करना अपना कर्तव्य नहीं समझा? शायद मेरा चेहरा इस ज़िम्मेदारी से तभी मुक्त होगा और अपनी स्वाभाविक अभिव्यक्ति तभी धारण करेगा जब मेरी मृत्यु होगी... लेकिन तब भी क्या मेरे चेहरे पर एक व्यंग्यात्मक दृढ़ संकल्प से उकेरे गए भाव अपने निशान नहीं छोड़ेंगे, जो इतने गहरे अंकित होंगे कि मिटाए न जा सकें? खैर, अब मैं जानता था कि मेरे भीतर क्या संभावनाएं मौजूद हैं, मैं अपनी क्षमताओं को समझता था।

अचानक मैं ज़ोर से हंस पड़ी। यह एक कर्कश, खुरदुरा, भयानक हंसी थी जिससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए। क्योंकि मैं अपनी ही हंसी को पहचान नहीं पा रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे यह किसी और की हंसी हो। मुझे लगा जैसे यह मेरे गले की गहराई में गूंज रही हो और मैंने इसे अपने कानों की गहराई में सुना हो। उसी समय मुझे खांसी आने लगी। खून से सना बलगम का एक थक्का, मेरे अंदर का एक टुकड़ा, शीशे पर गिरा। मैंने उसे अपनी उंगली से शीशे पर पोंछ दिया। मैं मुड़ी और देखा कि नानी मुझे घूर रही हैं। वह भयभीत थीं। उनके हाथ में जौ के शोरबे का एक कटोरा था जो वह मेरे लिए लाई थीं, यह सोचकर कि शायद अब मैं अपना रात का खाना खा सकूं। मैंने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया और कोठरी के प्रवेश द्वार पर लगे पर्दे के पीछे भाग गई।

बाद में, जब मुझे नींद आने लगी, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा सिर एक जलते हुए घेरे में जकड़ा हुआ हो। चंदन के तेल की तीखी, उत्तेजक खुशबू, जिससे मैंने अपना दीपक भरा था, मेरी नाक में घुस गई। उसमें मेरी पत्नी के पैरों की गंध भी थी, और मुझे अपने मुँह में खीरे के ठूंठ के हल्के कड़वे स्वाद का एहसास हुआ। मैंने अपना हाथ अपने शरीर पर फेरा और मन ही मन उसकी तुलना - जांघों, पिंडलियों, बाहों और बाकी सब कुछ - अपनी पत्नी के शरीर से की। मैं उसकी

जांघों और नितंबों की रेखा को फिर से देख सकता था, उसके शरीर की गर्माहट महसूस कर सकता था। यह भ्रम मात्र एक मानसिक छवि से कहीं अधिक प्रबल था; इसमें एक शारीरिक आवश्यकता का बल था। मैं उसके शरीर को अपने शरीर के निकट महसूस करना चाहता था। एक छोटा सा इशारा, इच्छाशक्ति का एक छोटा सा प्रयास ही इस कामुक लालसा को दूर करने के लिए पर्याप्त होता। फिर मेरे सिर के चारों ओर का वह जलता हुआ घेरा इतना कस गया और इतना गर्म हो गया कि वह भयानक आकृतियों से भरे एक रहस्यमय सागर में गहराई तक डूब गया।

अभी अंधेरा ही था जब नशे में धुत पुलिसकर्मियों के एक समूह की आवाज़ों से मेरी नींद खुली, जो सड़क पर मार्च करते हुए आपस में अश्लील चुटकुले सुना रहे थे। वे एक साथ गा रहे थे:

चलो, शराब पीते हैं;
आइए रे राज्य की शराब पिएं।
अगर हम अभी नहीं पीते हैं, तो कब पिएं?

मुझे याद आया – नहीं, मुझे अचानक एक विचार आया: मेरे पास अलमारी में थोड़ी शराब रखी थी, एक बोतल जिसमें कोबरा का ज़हर मिला हुआ था। उस शराब का एक घूंट, और ज़िंदगी के सारे बुरे सपने ऐसे गायब हो जाते जैसे कभी थे ही नहीं... लेकिन उस कुतिया का क्या?... उस शब्द ने उसके लिए मेरी तड़प को और तेज़ कर दिया, उसे मेरे सामने जीवंतता और गर्माहट से भर दिया। मैं इससे बेहतर क्या कर सकता था कि उसे उस शराब का एक गिलास दूं और दूसरा खुद पी लूं? फिर हम एक ही झटके में एक साथ मर जाएंगे। प्यार क्या है? आम लोगों के लिए यह एक अश्लीलता है, एक कामुक, क्षणभंगुर चीज़ है। आम लोग अपना प्यार कामुक गीतों में, अश्लील शब्दों में और उन गंदी बातों में ज़ाहिर करते हैं जिन्हें वे नशे में हों या होश में, हमेशा दोहराते रहते हैं – "गधे के खुर को कीचड़ में धकेलना", "ज़मीन को ज़ोर से थपथपाना", वगैरह। उसके लिए प्यार का मतलब मेरे लिए कुछ अलग था। सच है, मैं उसे कई सालों से जानता था। उसकी विचित्र, तिरछी आंखें, छोटा, आधा खुला मुंह, कर्कश, कोमल आवाज - ये सभी चीजें दूर की, दर्दनाक यादों से भरी हुई थीं और इन सभी में मैं कुछ ऐसा खोज रहा था जिससे मुझे वंचित कर दिया गया था, कुछ ऐसा जो मेरे अस्तित्व से गहराई से जुड़ा हुआ था और जो मुझसे छीन लिया गया था।

क्या मैं हमेशा के लिए इस चीज़ से वंचित रह गया था? इस डर ने मेरे भीतर एक भयावह अनुभूति पैदा कर दी। दूसरे सुख का विचार, वह सुख जो मेरे निराशाजनक प्रेम की भरपाई कर सकता था, एक तरह का जुनून बन गया था। किसी कारणवश मेरे कमरे की खिड़की के सामने बैठे कसाई की छवि मेरे मन में कौंध गई। मुझे याद आया कि वह कैसे अपनी आस्तीनें चढ़ाता, पवित्र मंत्र "बेस्मेल्लाह"* बोलता और मांस काटने लगता। उसका भाव और हावभाव हमेशा मेरे मन में बसे रहते थे। अंत में मैंने भी एक निर्णय लिया, एक भयानक निर्णय। मैं बिस्तर से उठा, अपनी आस्तीनें चढ़ाईं और हड्डी के हैंडल वाला चाकू निकाला जिसे मैंने अपने तकिए के नीचे

छिपा रखा था। मैं झुका और अपने कंधों पर एक पीला लबादा डाला और अपने गले और चेहरे को एक दुपट्टे से ढक लिया। मुझे लगा कि ऐसा करते हुए मैंने एक ऐसी मानसिकता अपना ली जो कसाई और पुराने कबाड़ बीनने वाले के बीच की थी।

फिर मैं दबे पांव अपनी पत्नी के कमरे की ओर बढ़ा। जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा कि वहाँ घोर अंधेरा था। मैंने धीरे से दरवाजा खोला। वह मानो सपने देख रही थी। वह ज़ोर से और साफ़ आवाज़ में बोली, "अपना दुपट्टा उतार दो।" मैं उसके बिस्तर के पास गया और झुक गया, यहाँ तक कि मुझे उसकी गर्म, कोमल साँसें अपने चेहरे पर महसूस होने लगीं। उसकी साँसों में कितनी सुखद गर्माहट और जीवंतता थी! मुझे लगा कि अगर मैं कुछ देर के लिए इस गर्माहट में साँस ले पाता तो शायद फिर से जीवित हो उठता। मैंने तो बहुत समय से यही सोचा था कि दूसरों की साँसें भी मेरी साँसों की तरह ही जलती हुई गर्म होंगी। मैंने ध्यान से चारों ओर देखा कि कमरे में कोई और तो नहीं है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसका कोई प्रेमी वहाँ तो नहीं है। वह अकेली थी। मुझे एहसास हुआ कि लोग उसके बारे में जो कुछ भी कहते थे, वह सब सरासर झूठ था। मुझे कैसे पता चला कि वह अभी भी कुंवारी नहीं है? मुझे अपने सभी अनुचित संदेहों पर शर्म आ रही थी।

यह सनसनी मात्र एक मिनट तक ही रही। अचानक दरवाजे के बाहर से छींक की आवाज आई और मैंने एक दबी हुई, व्यंग्यात्मक हंसी सुनी, जो इतनी तीखी थी कि रोंगटे खड़े हो गए। उस आवाज ने मेरे शरीर की हर नस को सिकोड़ दिया। अगर मैंने छींक और हंसी न सुनी होती, अगर उस आदमी ने, चाहे वह कोई भी हो, मुझे सोचने पर मजबूर न किया होता,* तो मैं अपना फैसला पूरा कर लेता और उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देता। मैं मांस हमारे घर के सामने वाले कसाई को दे देता ताकि वह अपने ग्राहकों को बेच दे, और एक खास संकल्प को पूरा करते हुए, मैं खुद उसकी जांघ का एक टुकड़ा कुरान पढ़ने वाले बूढ़े आदमी को दे देता और अगले दिन उसके पास जाकर कहता, "क्या आपको पता है कि आपने कल रात जो मांस खाया था, वह कहां से आया था?" अगर वह न हंसा होता, तो मैं यह कर देता। मुझे यह सब अंधेरे में करना पड़ता, ताकि मुझे उस कुतिया की आंखों में न देखना पड़े। उसकी तिरस्कार भरी निगाहें मेरे लिए असहनीय होतीं। अंत में मैंने उसके बिस्तर से लटकते हुए कपड़े के एक टुकड़े को उठाया, जिसमें मेरा पैर फंस गया था, और कमरे से भाग गया। मैंने चाकू को छत पर फेंक दिया, क्योंकि उसी चाकू ने मुझे हत्या का विचार दिया था। मैंने उस चाकू को भी ठिकाने लगा दिया जो बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैंने कसाई के हाथ में देखा था।

जब मैं अपने कमरे में लौटा, तो तेल के दीपक की रोशनी में देखा कि जो कपड़ा मैं अपने साथ लाया था, वह उसकी नाइटड्रेस थी: एक मैली नाइटड्रेस जो उसके शरीर के संपर्क में रही थी; मुलायम, रेशमी नाइटड्रेस, भारतीय निर्मित। उसमें उसके शरीर और चंपक के इत्र की खुशबू थी, और उसमें अभी भी उसके शरीर की गर्माहट, उसकी कुछ झलक बाकी थी। मैंने उसे अपने चेहरे से लगाया और गहरी सांस ली। फिर मैं लेट गया, उसे अपने पैरों के बीच रखा और सो गया। उस रात जितनी गहरी नींद मुझे आई, उतनी गहरी नींद मुझे पहले कभी नहीं आई थी। सुबह-सुबह मेरी पत्नी के शोर से मेरी नींद खुल गई। वह अपनी नाइटड्रेस के गायब होने पर विलाप कर रही

थी और जोर-जोर से दोहरा रही थी, "एकदम नई नाइटड्रेस!" जबकि उसकी आस्तीन फटी हुई थी। मैं उसे किसी भी कीमत पर वापस नहीं देता। यकीनन मुझे अपनी पत्नी की पुरानी नाइटड्रेस रखने का पूरा हक था।

जब नानी मेरे लिए दूध, शहद और रोटी लेकर आई, तो मैंने देखा कि उसने नाश्ते के सामान के बगल में ट्रे पर हड्डी के हैंडल वाला चाकू रखा हुआ था। उसने कहा कि उसने इसे बूढ़े कबाड़ वाले के सामान में देखा था और उससे खरीद लिया था। फिर उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "उम्मीद है, यह कभी काम आएगा।" मैंने उसे उठाया और देखा। यह मेरा ही चाकू था। फिर नैनी ने चिड़चिड़े और नाराज़ लहजे में कहा, “ओह हाँ, मेरी बेटी” (उसका मतलब उस कमीनी से था) “आज सुबह कह रही थी कि मैंने रात में उसकी नाइटड्रेस चुरा ली। मैं तुम दोनों से जुड़ी किसी भी बात के लिए ज़िम्मेदार नहीं होना चाहती। खैर, कल उसे ब्लीडिंग शुरू हो गई... मुझे पता था कि ये बच्चा है... उसके अनुसार, वह स्नानघर में गर्भवती हुई थी।* मैं रात में उसके कमरे में उसका पेट सहलाने गई और मैंने देखा कि उसकी बाहें काली-नीली पड़ गई थीं। उसने मुझे अपनी बाहें दिखाते हुए कहा, ‘मैं अशुभ समय पर तहखाने में गई थी, और अच्छे लोगों ने मुझे बुरी तरह चुटकी काटी।’” उसने आगे कहा, “क्या आपको पता था कि आपकी पत्नी काफी समय से गर्भवती है?” मैं हँसा और बोला, “मुझे लगता है कि बच्चा कुरान पढ़ने वाले बूढ़े आदमी जैसा दिखेगा। मुझे लगता है कि उसने अपनी पहली छलांग तब लगाई होगी जब वह बूढ़े आदमी का चेहरा देख रही थी।”* नैनी ने मुझे गुस्से से देखा और कमरे से बाहर चली गई। ज़ाहिर है, उसे ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं थी। मैं जल्दी से उठा, कांपते हाथों से हड्डी के हैंडल वाला चाकू उठाया, उसे अलमारी में रखे डिब्बे में रख दिया और ढक्कन बंद कर दिया।

नहीं, यह तो बिल्कुल असंभव था कि बच्ची मेरे चेहरे को देखते ही उछल पड़ी हो। यह ज़रूर उस बूढ़े कबाड़ वाले आदमी का ही कमाल होगा।

दोपहर के समय मेरे कमरे का दरवाजा खुला और उसका छोटा भाई नाखून चबाता हुआ अंदर आया। उन्हें देखते ही पता चल जाता था कि वे भाई-बहन हैं। उनकी शक्ल बिल्कुल मिलती-जुलती थी। उसके होंठ भरे हुए, नम और कामुक थे, पलकें भारी और सुस्त थीं, आँखें तिरछी और जिज्ञासु थीं, गाल की हड्डियाँ उभरी हुई थीं, बाल खजूर के रंग के और बिखरे हुए थे, और रंग पके हुए गेहूँ जैसा था। वह कुतिया की छवि था और उसमें उसकी शैतानी प्रवृत्ति की झलक थी। उसका चेहरा उन भावहीन, आत्माहीन तुर्कमान चेहरों में से एक था जो जीवन से निरंतर संघर्ष कर रहे लोगों के लिए बिल्कुल उपयुक्त होते हैं, ऐसे लोग जो किसी भी काम को जायज़ मानते हैं अगर वह जीने में मदद करता है। प्रकृति ने कई पीढ़ियों से इस भाई-बहन को आकार दिया था। उनके पूर्वज धूप और बारिश में रहते हुए, अपने वातावरण से लगातार जूझते रहे थे, और उन्होंने न केवल उन्हें बदले हुए चेहरे और चरित्र दिए थे, बल्कि अपनी हठधर्मिता, कामुकता, लालच और भूख का एक हिस्सा भी उन्हें विरासत में दिया था। मुझे उसके होंठों का स्वाद याद आया, हल्का कड़वा, खीरे के ठूंठ के स्वाद जैसा।

जब वह कमरे में आया तो उसने अपनी अचरज भरी तुर्कमान आँखों से मेरी ओर देखा और बोला, "मम्मी ने बताया कि डॉक्टर ने कहा है कि तुम मरने वाली हो और यह हमारे लिए अच्छा

होगा। लोग मरते कैसे हैं?"

मैंने कहा, "उसे बता दो कि मैं बहुत पहले मर चुका हूँ।"

“मम्मी ने कहा, ‘अगर मेरा गर्भपात न हुआ होता तो यह पूरा घर हमारा होता।’”

मैं अनजाने में ही हंस पड़ा। मेरी हंसी खोखली और कर्कश थी, इतनी कर्कश कि रोंगटे खड़े हो गए। मुझे अपनी ही आवाज सुनाई नहीं दी। बच्चा डर के मारे कमरे से भाग गया।

तब मुझे समझ आया कि कसाई को अपनी हड्डी के हैंडल वाले चाकू की धार को भेड़ों की टांगों पर रगड़ने में इतना आनंद क्यों आता था। कच्चे मांस को काटने में उसे जो आनंद मिलता था, जिसमें जमा हुआ खून किसी टैंक की तलहटी में जमी गंदगी की तरह जम गया था, जबकि श्वास नलियों से पतला तरल पदार्थ जमीन पर टपक रहा था - दुकान के बाहर पीला कुत्ता, फर्श पर पड़ा कटा हुआ बैल का सिर, धुंधली निगाहों से घूरता हुआ, और भेड़ों के सिर जिनकी आंखों पर मौत की धूल जमी थी, उन्होंने भी यह सब देखा था, वे भी जानते थे कि कसाई कैसा महसूस कर रहा था।

अब मुझे समझ आ गया था कि मैं एक लघु देवता बन गया हूँ। मैंने मनुष्य की तुच्छ, छोटी-मोटी ज़रूरतों को पार कर लिया था और अपने भीतर अनंत काल का प्रवाह महसूस किया था। अनंत काल क्या है? मेरे लिए अनंत काल का अर्थ था सूरन नदी के किनारे उस कुतिया के साथ लुका-छिपी खेलना, एक पल के लिए अपनी आँखें बंद करना और अपना चेहरा उसके वस्त्र के आँचल में छिपा लेना।

अचानक मुझे एहसास हुआ कि मैं खुद से बात कर रहा हूँ, और वो भी एक अजीब तरीके से। मैं खुद से बात करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन मेरे होंठ इतने भारी हो गए थे कि उनमें जरा सी भी हरकत नहीं हो पा रही थी। फिर भी, भले ही मेरे होंठ हिल नहीं रहे थे और मुझे अपनी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी, मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मैं खुद से बात कर रहा हूँ।

इस कमरे में, जो कब्र की तरह धीरे-धीरे सिकुड़ता और अंधेरा होता जा रहा था, रात ने मुझे अपनी भयानक परछाइयों से घेर लिया था। धुएँ वाले तेल के दीपक की रोशनी में, भेड़ की खाल की जैकेट, लबादा और दुपट्टे में लिपटी मेरी परछाई दीवार पर बेजान पड़ी थी। दीवार पर मेरी परछाई मेरे असली शरीर से कहीं अधिक घनी और स्पष्ट थी। मेरी परछाई मुझसे भी अधिक वास्तविक हो गई थी। बूढ़ा कबाड़ वाला, कसाई, आया और कुतिया, मेरी पत्नी, सब मेरी ही परछाइयाँ थीं, जिनके बीच मैं कैद था। मैं एक चीखने वाले उल्लू जैसा हो गया था, लेकिन मेरी चीखें मेरे गले में अटक गईं और मैंने उन्हें खून के थक्कों के रूप में थूक दिया। शायद चीखने वाले उल्लू किसी ऐसी बीमारी से ग्रसित होते हैं जो उन्हें मेरी तरह सोचने पर मजबूर कर देती है। दीवार पर मेरी परछाई बिल्कुल एक उल्लू जैसी हो गई थी और आगे झुककर, मेरे लिखे हर शब्द को ध्यान से पढ़ रही थी। निस्संदेह वह पूरी तरह समझ गया था। केवल वही समझने में सक्षम था। जब मैंने तिरछी नजर से दीवार पर अपनी परछाई देखी तो मुझे डर लगा।

वह एक अंधेरी, खामोश रात थी, ठीक वैसी ही रात जिसने मेरे पूरे अस्तित्व को जकड़ लिया था, एक ऐसी रात जिसमें डरावनी आकृतियाँ दरवाज़े, दीवार और पर्दे से मुझे घूर रही थीं। कभी-कभी मेरा कमरा इतना तंग हो जाता था कि मुझे लगता था जैसे मैं किसी ताबूत में लेटा हूँ। मेरी

कनपटी जल रही थी। मेरे हाथ-पैर ज़रा भी हिल नहीं पा रहे थे। मेरे सीने पर एक भारी बोझ था, ठीक वैसे ही जैसे घोड़ों की पीठ पर लादे गए शवों का बोझ होता है जिन्हें कसाइयों के पास ले जाया जाता है।

मृत्यु मेरे कानों में अपना गीत गुनगुना रही थी, मानो कोई हकलाने वाला व्यक्ति हर शब्द को दोहरा रहा हो और एक पंक्ति समाप्त होने पर उसे फिर से शुरू करना पड़ रहा हो। उसका गीत मेरे शरीर में आरी की कर्कश आवाज की तरह समा गया। वह अपनी आवाज बुलंद करता और अचानक चुप हो जाता।

मेरी आँखें अभी बंद भी नहीं हुई थीं कि मेरे कमरे के बाहर सड़क पर नशे में धुत पुलिसकर्मियों का एक समूह आपस में अश्लील चुटकुले सुनाते हुए गुजरा। फिर वे सब एक साथ गाने लगे:

चलो, शराब पीते हैं;
आइए रे राज्य की शराब पिएं।
अगर हम अभी नहीं पीते हैं, तो कब पिएं?

मैंने मन ही मन कहा, "आखिरकार पुलिस मुझे पकड़ ही लेगी..." अचानक मुझे अपने भीतर एक अलौकिक शक्ति का अहसास हुआ। मेरा माथा ठंडा पड़ गया। मैं उठी, अपने कंधों पर एक पीला लबादा डाला और अपने गले में दुपट्टा दो-तीन बार लपेटा। मैं झुकी, अलमारी में गई और उस हड्डी के हैंडल वाले चाकू को निकाला जिसे मैंने डिब्बे में छिपा रखा था। फिर मैं दबे पांव उस कुतिया के कमरे की ओर बढ़ी। जब मैं दरवाजे पर पहुंची तो देखा कि कमरा पूरी तरह अंधेरा था। मैंने ध्यान से सुना और उसकी आवाज सुनी, "क्या तुम आ गई? अपना दुपट्टा उतार दो।" उसकी आवाज में एक मधुरता थी, जैसी उसके बचपन में थी। यह मुझे किसी सपने में सुलगते हुए व्यक्ति की बड़बड़ाहट की याद दिला रही थी। मैंने खुद भी पहले गहरी नींद में यह आवाज सुनी थी। क्या वह सपना देख रही थी? उसकी आवाज कर्कश और भारी थी। यह उस छोटी बच्ची की आवाज जैसी हो गई थी जो मेरे साथ सूरन नदी के किनारे लुका-छिपी खेलती थी। मैं वहीं खड़ी रह गई। फिर मैंने उसे दोबारा कहते सुना, "अंदर आओ। अपना स्कार्फ उतार दो।"

मैं दबे पांव अंधेरे कमरे में दाखिल हुआ। मैंने अपना लबादा, दुपट्टा और बाकी सारे कपड़े उतार दिए और उसके बिस्तर पर रेंगकर चला गया। पता नहीं क्यों, हड्डी के हैंडल वाला चाकू मेरे हाथ में ही था। मुझे ऐसा लगा जैसे उसके बिस्तर की गर्माहट ने मुझमें नई जान फूंक दी हो। मुझे सूरन नदी के किनारे लुका-छिपी खेली हुई वो पीली, दुबली-पतली, बड़ी-बड़ी अजीब सी तुर्कमान आँखों वाली लड़की याद आ गई। मैंने उसके कोमल, नम, गर्म शरीर को अपनी बाहों में भर लिया। बाहों में भर लिया? नहीं, मैं उस पर एक जंगली, भूखे जानवर की तरह टूट पड़ा और दिल ही दिल में उससे घृणा करने लगा। मेरे लिए प्यार और नफरत जुड़वाँ थे। उसका ताजा, चाँदनी में भीगा हुआ शरीर, मेरी पत्नी का शरीर, मुझे अपने भीतर ऐसे समेटे हुए था जैसे कोई कोबरा अपने शिकार को कुंडली मारकर जकड़ लेता है। उसके सीने की खुशबू से मेरा सिर चकरा गया, मेरी गर्दन को घेरे हुए उसकी बांह का मांस नरम और गर्म था। मेरी यही इच्छा थी कि मेरा जीवन उसी क्षण

समाप्त हो जाए, क्योंकि उसके प्रति मेरे मन में जो घृणा और द्वेष था, वह गायब हो गया था और मैंने अपने आँसू रोकने की कोशिश की।

उसके पैर किसी लता के पैरों की तरह मेरे पैरों में जकड़ गए और उसकी बाहों ने मेरी गर्दन को कसकर पकड़ रखा था। मैंने उस युवा शरीर की सुखद गर्माहट महसूस की। मेरे जलते हुए शरीर का हर कण उस गर्माहट को सोख रहा था। मुझे लगा कि मैं उसका शिकार हूँ और वह मुझे अपनी ओर खींच रही है। मैं मिले-जुले भय और आनंद से भर गया था। उसका मुँह खीरे के कटे हुए सिरे की तरह कड़वा था। उसके आलिंगन के सुखद दबाव में, मैं पसीने से तरबतर हो गया। मैं वासना से बेहाल था।

मैं अपने शरीर के वश में था, अपने भौतिक अस्तित्व के हर अणु के वश में था, और वे ज़ोर-ज़ोर से अपनी विजय का गीत गा रहे थे। इस असीम सागर में असहाय, हताश होकर, मैंने लहरों के तूफानी जुनून के सामने आत्मसमर्पण करते हुए अपना सिर झुका लिया। उसके चंपक की खुशबू से महकते बाल मेरे चेहरे से लिपट गए, और हमारे भीतर से पीड़ा और आनंद की एक चीख फूट पड़ी। अचानक मुझे महसूस हुआ कि वह मेरे होंठ को बेरहमी से काट रही है, इतनी बेरहमी से कि वह उसे चीर ही रही है। क्या वह कभी अपने नाखून भी इसी तरह काटती थी या उसे एहसास हो गया था कि मैं कटे होंठ वाला बूढ़ा आदमी नहीं हूँ? मैंने उससे खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन ज़रा भी हिल नहीं पाया। मेरे प्रयास व्यर्थ थे। हमारे शरीर के मांस एक-दूसरे से जुड़ गए थे।

मैंने मन ही मन सोचा कि वह पागल हो गई है। संघर्ष के दौरान, मैंने अनजाने में अपना हाथ झटका। मैंने महसूस किया कि मेरे हाथ में जो चाकू था, वह उसके मांस में कहीं धंस गया। एक गर्म तरल मेरे चेहरे पर उछल पड़ा। वह चीखी और मुझे छोड़ दिया। अपने हाथ में गर्म तरल को मुट्ठी में दबाए रखते हुए, मैंने चाकू फेंक दिया। मैंने अपना दूसरा हाथ उसके शरीर पर फेरा। वह बिल्कुल ठंडा था। वह मर चुकी थी। और फिर मुझे खांसी का दौरा पड़ा - लेकिन नहीं, यह खांसी नहीं थी, यह एक खोखली, कर्कश हंसी थी, ऐसी हंसी जिससे रोंगटे खड़े हो जाएं। डर के मारे मैंने अपना लबादा अपने कंधों पर डाला और जल्दी से अपने कमरे में वापस भागा। मैंने तेल के दीपक की रोशनी में अपना हाथ खोला: मेरी हथेली में उसकी आंख थी, और मैं खून से लथपथ था।

मैं जाकर आईने के सामने खड़ा हो गया। भय से कांपते हुए मैंने अपना चेहरा हाथों से ढक लिया। आईने में मैंने जो देखा, वह बिल्कुल उसी बूढ़े कबाड़ वाले आदमी की शक्ल थी, नहीं, हूबहू उसकी छवि थी। मेरे बाल और दाढ़ी पूरी तरह सफेद थे, जैसे किसी ऐसे आदमी के हों जो किसी कमरे में कोबरा के साथ बंद होने के बाद ज़िंदा बाहर निकला हो। मेरी पलकें गायब थीं, मेरी छाती पर सफेद बालों का एक गुच्छा उग आया था और एक नई आत्मा ने मेरे शरीर पर कब्ज़ा कर लिया था। मेरा दिमाग और मेरी इंद्रियां पहले से बिल्कुल अलग तरह से काम कर रही थीं। मेरे अंदर एक राक्षस जाग उठा था और मैं उससे बच नहीं पा रहा था। अपने हाथों को चेहरे पर रखे हुए ही मैं अनजाने में हंस पड़ा। यह पिछली हंसी से कहीं ज़्यादा ज़ोरदार थी और इसने मुझे सिर से पैर तक कंपा दिया। यह इतनी गहरी हंसी थी कि यह अंदाज़ा लगाना नामुमकिन था

कि यह शरीर के किस कोने से निकली थी, एक खोखली हंसी जो मेरे शरीर के किसी गहरे हिस्से से निकली थी और बस मेरे गले में गूंज रही थी। मैं एक बूढ़ा, इधर-उधर का काम करने वाला आदमी बन गया था।

5

मेरी बेचैनी की तीव्रता ने मानो मुझे एक लंबी, गहरी नींद से जगा दिया था। मैंने अपनी आँखें मलीं। मैं अपने कमरे में वापस आ गया था। चारों ओर हल्का अंधेरा था और बाहर खिड़कियों पर नम धुंध छाई हुई थी। दूर कहीं किसी मुर्गे ने बांग दी। मेरे बगल में रखे अंगीठी में कोयला जलकर राख हो चुका था, जिसे मैं एक ही साँस में उड़ा सकता था। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा मन कोयले की तरह खोखला और राख जैसा हो गया हो और एक ही साँस के भरोसे हो।

सबसे पहले मैंने रागेस का फूलदान ढूंढा, जो बूढ़े शववाहक ने मुझे कब्रिस्तान में दिया था, लेकिन वह गायब था। मैंने चारों ओर देखा और दरवाजे के पास एक झुकी हुई परछाई वाले व्यक्ति को देखा – नहीं, वह एक झुका हुआ बूढ़ा आदमी था जिसका चेहरा उसके गले में लिपटे दुपट्टे से आधा ढका हुआ था। उसने अपनी बगल में एक घड़े जैसी कोई चीज़ दबा रखी थी, जो एक गंदे रुमाल में लिपटी हुई थी। वह एक खोखली, कर्कश हंसी हंसा, ऐसी हंसी जिसे सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

जैसे ही मैंने हिलने की कोशिश की, वह दरवाजे से निकल गया। मैं जल्दी से उठा, उसके पीछे दौड़कर उससे रुमाल में लिपटा हुआ जार या जो भी था, छीनने के इरादे से, लेकिन वह काफी दूर जा चुका था। मैं अपने कमरे में वापस गया और खिड़की खोली। गली में मुझे अभी भी उस बूढ़े आदमी की झुकी हुई आकृति दिखाई दे रही थी। उसके कंधे हँसी से हिल रहे थे और उसने बंडल को अपनी बगल में दबा रखा था। वह पूरी ताकत से दौड़ रहा था और अंत में धुंध में गायब हो गया। मैंने खिड़की से मुंह फेर लिया और खुद को देखा। मेरे कपड़े फटे हुए थे और ऊपर से नीचे तक जमे हुए खून से सने हुए थे। दो मक्खियाँ मेरे चारों ओर मंडरा रही थीं और छोटे-छोटे सफेद कीड़े मेरे कोट पर रेंग रहे थे। और मेरी छाती पर मुझे एक औरत के मृत शरीर का भार महसूस हो रहा था...

हाजी मोराद

(बर्ड अलाइव से)

(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

हाजी मोराद झटपट अपनी दुकान के चबूतरे से नीचे कूद गए। उन्होंने अपनी कमीज़ की तहें समेटीं, अपनी चांदी की बेल्ट कसी और अपनी मेहंदी लगी दाढ़ी पर हाथ फेरा। उन्होंने अपने शागिर्द हसन को बुलाया और दोनों ने मिलकर दुकान बंद कर दी। फिर उन्होंने अपनी बड़ी जेब से चार रियाल निकाले और हसन को दे दिए। हसन ने उन्हें धन्यवाद दिया और सीटी बजाते हुए लंबे कदमों से भीड़ में गायब हो गया। हाजी ने अपने कंधों पर पीला लबादा डाला जो उन्होंने बगल में दबा रखा था, चारों ओर देखा और धीरे-धीरे चलने लगे। हर कदम पर उनके नए जूतों से चरमराहट की आवाज़ आ रही थी। चलते हुए, ज़्यादातर दुकानदारों ने उनका अभिवादन किया और विनम्रता से कहा, "नमस्ते हाजी। हाजी, आप कैसे हैं? हाजी, क्या हमें आपसे मिलने का मौका नहीं मिलेगा?..."

हाजी के कान इस तरह की बातों से भरे हुए थे, और वह "हाजी" शब्द को विशेष महत्व देता था। उसे अपने आप पर गर्व था और उसने उनकी शुभकामनाओं का जवाब एक शाही मुस्कान के साथ दिया।

यह शब्द उनके लिए एक उपाधि के समान था, हालांकि वे स्वयं जानते थे कि वे कभी मक्का नहीं गए थे। मक्का के सबसे करीब वे कर्बला* तक ही गए थे, जहाँ वे अपने पिता की मृत्यु के बाद एक बच्चे के रूप में गए थे। अपने पिता की वसीयत के अनुसार, उनकी माँ ने घर और अपनी सारी संपत्ति बेच दी, धन के बदले सोना लिया और पूरी तरह से धन-संपन्न होकर कर्बला चली गईं। एक-दो साल बाद पैसा खत्म हो गया और वे भिखारी बन गए। हाजी अकेले ही, हजारों कठिनाइयों का सामना करते हुए, हमादान में अपने चाचा के पास पहुँच गए। संयोगवश उनके चाचा की मृत्यु हो गई और उनका कोई अन्य उत्तराधिकारी न होने के कारण उनकी सारी संपत्ति हाजी को मिल गई। चूंकि उनके चाचा बाजार में "हाजी" के नाम से जाने जाते थे, इसलिए दुकान के साथ-साथ यह उपाधि भी उत्तराधिकारी को मिल गई। इस शहर में उनका कोई रिश्तेदार नहीं था। उन्होंने कर्बला में भिखारी बन चुकी अपनी माँ और बहन के बारे में दो-तीन बार पूछताछ की, लेकिन उनका कोई पता नहीं चला।

हाजी ने दो साल पहले शादी की थी, लेकिन उसका भाग्य उसके साथ अच्छा नहीं रहा। कुछ समय से उन दोनों के बीच लगातार झगड़े और कहा-सुनी होती रहती थी। हाजी अपनी पत्नी की ज़ुबान की मार को छोड़कर सब कुछ बर्दाश्त कर लेता था, और उसे डराने के लिए वह अक्सर उसे पीटता रहता था। कभी-कभी उसे पछतावा होता था, लेकिन फिर भी वे जल्द ही गले मिलकर सुलह कर लेते थे। हाजी को सबसे ज़्यादा परेशान करने वाली बात यह थी कि उनके अभी तक कोई बच्चे नहीं थे। कई बार उसके दोस्तों ने उसे दूसरी शादी करने की सलाह दी, लेकिन हाजी मूर्ख नहीं था और वह जानता था कि दूसरी शादी करने से उसकी मुश्किलें और बढ़ जाएँगी। उसने सलाह को अनसुना कर दिया। इसके अलावा, उसकी पत्नी अभी भी जवान और सुंदर थी, और कई सालों बाद वे एक-दूसरे के आदी हो गए थे और अच्छे-बुरे में, वे किसी तरह साथ-साथ जीवन गुज़ार रहे थे। और हाजी खुद भी अभी जवान था। अगर ईश्वर चाहता, तो उसे

संतान ज़रूर मिलती। इसीलिए हाजी अपनी पत्नी को तलाक देना नहीं चाहता था, लेकिन साथ ही वह अपनी इस आदत से छुटकारा नहीं पा सका: वह उसे पीटता रहता था और वह और भी जिद्दी होती जा रही थी। खासकर पिछली रात से उनके बीच तनाव और भी बढ़ गया था।

तरबूज के बीज मुंह में डालकर और छिलके मुंह में थूकते हुए वह बाजार से बाहर निकला। उसने बसंत की ताजी हवा में सांस ली और उसे याद आया कि अब उसे घर जाना है: पहले झगड़ा होगा, वह कुछ कहेगा और वह पलटकर जवाब देगी, और अंत में बात उसकी पिटाई तक पहुंच जाएगी। फिर वे रात का खाना खाएंगे और एक-दूसरे को घूरेंगे, और उसके बाद सो जाएंगे। गुरुवार की रात थी, और वह जानता था कि आज उसकी पत्नी ने सब्जी पुलाव बनाया होगा। ये विचार उसके मन में इधर-उधर देखते हुए घूम रहे थे। उसे अपनी पत्नी के शब्द याद आए, "चले जा तू नकली हाजी! अगर तू हाजी है, तो तेरी बहन और मां कर्बला के भिखारियों से भी बदतर क्यों हो गई हैं? और मैं! मैंने साहूकार मशहदी हुसैन को हाथ मांगने पर मना कर दिया था, सिर्फ तुझसे शादी करने के लिए, एक निकम्मे नकली हाजी से!" उसे ये याद आया और वह अपने होंठ चबाता रहा। उसके मन में यह विचार आया कि अगर उसने अपनी पत्नी को वहीं देख लिया तो वह उसका पेट काटकर टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

इस समय तक वह बायन ओल'नहरैन एवेन्यू पहुँच चुका था। उसने नदी के किनारे खिले हुए हरे-भरे विलो के पेड़ों को देखा। उसने सोचा कि कल, शुक्रवार को, सुबह अपने कुछ दोस्तों और उनके वाद्ययंत्रों के साथ मोराद बक घाटी जाना और वहाँ पूरा दिन बिताना अच्छा रहेगा। कम से कम उसे घर पर तो नहीं रहना पड़ेगा, जो उसके और उसकी पत्नी दोनों के लिए अप्रिय होता। वह अपने घर की ओर जाने वाली गली में पहुँचा। अचानक उसे लगा कि उसकी पत्नी उसके बगल से गुज़री और फिर सीधे उसके पास से निकल गई। वह उसके पास से गुज़र गई और उसने उस पर ध्यान नहीं दिया। हाँ, वह उसकी पत्नी ही थी। न केवल इसलिए कि अधिकांश पुरुषों की तरह हाजी ने अपनी पत्नी को उसके चादर के नीचे पहचान लिया, बल्कि इसलिए भी कि उसकी पत्नी की एक खास पहचान थी जिससे हाजी हज़ारों महिलाओं के बीच भी उसे आसानी से पहचान लेता था। यह उसकी पत्नी ही थी। वह उसके चादर की सफेद किनारी से यह जानता था। इसमें कोई शक नहीं था। लेकिन वह दिन के इस समय और हाजी से अनुमति लिए बिना फिर से घर से क्यों निकल गई? वह दुकान पर आकर यह बताने की ज़हमत भी नहीं उठाई कि उसे कुछ चाहिए। वह कहाँ जा रही थी? हाजी तेज़ी से चलने लगा और उसने देखा कि हाँ, यह निश्चित रूप से उसकी पत्नी ही थी। और अब भी वह घर की तरफ नहीं जा रही थी। अचानक उसे बहुत गुस्सा आया। वह खुद पर काबू नहीं रख सका। वह उसे पकड़कर गला घोंट देना चाहता था। अनजाने में ही उसने उसका नाम पुकारा, "शहरबानू!"

महिला ने अपना चेहरा फेर लिया और डर के मारे तेज़ी से चलने लगी। हाजी गुस्से से आग बबूला हो गया। उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वह क्रोध से जल रहा था। अब, उसकी पत्नी के बिना अनुमति के घर से चले जाने की बात को छोड़ दें तो, जब उसने उसे बुलाया तो उसने उसकी ओर ध्यान भी नहीं दिया! इस बात ने उसे बहुत आहत किया। वह फिर चिल्लाया।

"अरे! मेरी बात सुनो! दिन के इस समय तुम कहाँ जा रहे हो? रुको और मेरी बात सुनो!"

महिला रुकी और जोर से बोली:

"बेवकूफ, तुम्हें इससे क्या लेना-देना? गधे, तुम्हें पता भी है क्या बोल रहे हो? किसी और की पत्नी को क्यों परेशान कर रहे हो? अब मैं तुम्हें सबक सिखाऊंगा। मदद करो, मदद करो! देखो ये शराबी मुझसे क्या चाहता है। क्या तुम्हें लगता है कि शहर में कोई कानून नहीं है? मैं तुम्हें अभी पुलिस के हवाले कर दूंगा। पुलिस!"

प्रवेश द्वार एक-एक करके खुलने लगे। लोग उनके चारों ओर जमा हो गए और भीड़ लगातार बढ़ती गई। हाजी का चेहरा लाल हो गया। उनके माथे और गर्दन की नसें उभर आई थीं। वह बाज़ार में जाने-माने व्यक्ति थे। उन्हें देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी थी, और वह महिला, जिसने अपना चेहरा चादर से कसकर ढका हुआ था, चिल्ला रही थी, "पुलिस!"

हाजी की आँखों के सामने सब कुछ अँधेरा और धुंधला हो गया। फिर वह एक कदम पीछे हटा, और फिर आगे बढ़कर उसके ढके हुए चेहरे पर ज़ोर से थप्पड़ मारा और बोला, "अपनी आवाज़ मत बदलो। मुझे शुरू से ही पता था कि यह तुम ही हो। कल... कल मैं तुम्हें तलाक़ दे दूँगा। अब तुम बिना इजाज़त लिए घर से बाहर जाने लगी हो? क्या तुम मुझे बदनाम करना चाहती हो? बेशर्म औरत, अब इन लोगों के सामने मुझे और कुछ न कहने पर मजबूर करो। तुम सब गवाह बनो। मैं कल इस औरत को तलाक़ देने जा रहा हूँ – मुझे कुछ समय से इस पर शक था, लेकिन मैंने हमेशा खुद को रोका। मैं खुद को रोक रहा था, लेकिन अब मेरा सब्र टूट गया है। तुम सब गवाह बनो, मेरी पत्नी ने अपनी इज़्ज़त मिट्टी में मिला दी है। कल... तुम, कल!..."

लोगों की ओर मुंह करके खड़ी महिला बोली, "तुम कायर हो! कुछ बोलते क्यों नहीं? इस निकम्मे आदमी को सड़क के बीचोंबीच किसी और की पत्नी पर हाथ उठाने दिया? अगर साहूकार मशादी हुसैन यहाँ होता तो तुम सबको सबक सिखाता। अगर मैं सिर्फ एक दिन और ज़िंदा रही तो ऐसा बदला लूंगी कि एक कुत्ता भी बच जाएगा। क्या कोई नहीं है जो इस आदमी को कहे कि अपने काम से मतलब रखे? यह कौन होता है इंसानों से दोस्ती करने का? चले जाओ। बेहतर होगा कि तुम जान लो कि किससे पंगा ले रहे हो। अब मैं तुम्हें इसका पछतावा करवाऊंगी! पुलिस!..."

दो-तीन मध्यस्थ आए और हाजी को एक तरफ ले गए। इसी समय एक पुलिसकर्मी आ गया। लोग पीछे हट गए। हाजी और सफेद किनारी वाली चादर ओढ़े महिला, दो-तीन गवाहों और मध्यस्थों के साथ पुलिस मुख्यालय के लिए निकल पड़े। रास्ते में हर किसी ने पुलिसकर्मी को अपना पक्ष बताया। लोग यह देखने के लिए उनके पीछे-पीछे चल रहे थे कि मामला क्या अंजाम तक पहुँचेगा। पसीने से तरबतर हाजी लोगों के सामने पुलिसकर्मी के बगल में चल रहे थे, और अब उन्हें संदेह होने लगा। उन्होंने ध्यान से देखा और पाया कि महिला के बकल वाले जूते और मोज़े उनकी पत्नी से अलग थे। जो पहचान पत्र वह पुलिसकर्मी को दिखा रही थी, वह भी सही था। वह साहूकार मशहदी हुसैन की पत्नी थी, जिसे वह जानते थे। उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने गलती की है, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। अब उन्हें नहीं पता था कि आगे क्या होगा। जब वे पुलिस मुख्यालय पहुँचे तो लोग बाहर ही रुके रहे। पुलिसकर्मी ने हाजी और महिला को एक कमरे में बुलाया जहाँ दो अधिकारी एक मेज के पीछे बैठे थे। पुलिसकर्मी ने सलाम किया,

जो कुछ हुआ उसका वर्णन किया, फिर वहाँ से चला गया और कमरे के अंत में दरवाजे के पास खड़ा हो गया। मुखिया ने हाजी की ओर मुड़कर कहा:

"आपका क्या नाम है?"

“महाराज, मैं आपका सेवक हूँ। मेरा नाम हाजी मोराद है। बाज़ार में सब मुझे जानते हैं।”

"आपका पेशा क्या है?"

मैं चावल का व्यापारी हूँ। बाज़ार में मेरी एक दुकान है। आप जो कहेंगे मैं वही करूँगा।

"क्या यह सच है कि आपने इस महिला के साथ बदतमीजी की और उसे सड़क पर मारा?"

मैं क्या कहूँ? मुझे लगा कि वह मेरी पत्नी है।

"क्यों?"

उसकी चादर पर सफेद किनारी लगी हुई है।

“यह तो बहुत अजीब बात है। क्या आप अपनी पत्नी की आवाज नहीं पहचानते?”

हाजी ने आह भरी। “अरे, आपको पता नहीं मेरी पत्नी कितनी मुसीबत है। मेरी पत्नी सभी जानवरों की आवाज़ की नकल करती है। जब वह सार्वजनिक स्नानघरों से आती है तो दूसरी महिलाओं की आवाज़ में बात करती है। वह सबकी नकल करती है। मुझे लगा कि वह अपनी आवाज़ बदलकर मुझे धोखा देना चाहती है।”

“कितनी गुस्ताखी है!” महिला ने कहा। “अधिकारी जी, आप गवाह हैं। उसने मुझे सड़क पर, लाखों लोगों के सामने थप्पड़ मारा। अब अचानक वो चूहे की तरह डरपोक हो गया है! कितनी गुस्ताखी है! उसे लगता है कि शहर में कोई कानून नहीं है। अगर मशादी हुसैन को इसके बारे में पता चल जाए तो वो आपको आपकी करनी का फल देगा। उनकी पत्नी से निवेदन है, माननीय!”

अधिकारी ने कहा, “ठीक है महोदया। अब हमें आपकी आवश्यकता नहीं है। कृपया बाहर चली जाइए, हम श्री मोराद का हिसाब-किताब कर लेते हैं।”

हाजी ने कहा, “हे भगवान, मुझसे गलती हो गई, मुझे पता नहीं था। यह एक भूल थी। और मुझे अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करनी है।”

अधिकारी ने पुलिसकर्मी को लिखित में कुछ दिया। वह हाजी को दूसरी मेज पर ले गया। हाजी ने कांपते हाथों से जुर्माने के नोट गिने और उन्हें मेज पर रख दिया। फिर, पुलिसकर्मी के साथ, उसे पुलिस मुख्यालय के सामने बाहर ले जाया गया। लोग कतारों में खड़े थे और आपस में फुसफुसा रहे थे। उन्होंने हाजी के कंधों से उसका पीला लबादा उठाया और हाथ में चाबुक लिए एक आदमी आगे आया और उसके बगल में खड़ा हो गया। हाजी ने शर्म से अपना सिर झुका लिया और दर्शकों की भीड़ के सामने उसे पचास बार चाबुक मारा गया, लेकिन वह जरा भी नहीं हिला। जब यह सब खत्म हुआ तो उसने अपनी जेब से अपना बड़ा रेशमी रूमाल निकाला और अपने माथे से पसीना पोंछा। उसने अपना पीला लबादा उठाया और अपने कंधों पर डाल लिया। उसकी तहें जमीन पर घिसट रही थीं। सिर झुकाए वह घर के लिए चल पड़ा और अपने जूतों की चरमराहट को दबाने के लिए सावधानी से कदम रखने की कोशिश करने लगा। दो दिन बाद हाजी ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया।

खून की तीन बूँदें

(खून की तीन बूंदों से)
(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

कल ही तो मुझे दूसरे कमरे में ले जाया गया था। क्या सब कुछ वैसा ही है जैसा सुपरवाइज़र ने वादा किया था? कि मैं पूरी तरह ठीक हो जाऊँगी और अगले हफ्ते छुट्टी मिल जाएगी? क्या मैं सच में बीमार थी? एक साल हो गया। इतने समय में, चाहे मैंने उनसे कितनी ही मिन्नतें कीं कि मुझे कलम और कागज़ दे दें, उन्होंने कभी नहीं दिया। मैं हमेशा सोचती थी कि अगर मुझे कलम और कागज़ मिल जाए, तो मैं कितना कुछ लिखूँगी। लेकिन कल वे बिना मांगे ही मेरे लिए कलम और कागज़ ले आए। यही वो चीज़ थी जो मैं इतने लंबे समय से चाहती थी, जिसका मैं हमेशा से इंतज़ार कर रही थी। लेकिन क्या फ़ायदा? मैं कल से कुछ लिखने की बहुत कोशिश कर रही हूँ, लेकिन लिखने के लिए कुछ भी नहीं है। ऐसा लगता है जैसे किसी ने मेरा हाथ पकड़ रखा हो या जैसे मेरी बांह सुन्न हो गई हो। मैं कागज़ पर ध्यान केंद्रित कर रही हूँ और देखती हूँ कि मैंने उस पर जो बेतरतीब लिखावट छोड़ी है, उसमें से केवल एक ही चीज़ पढ़ी जा सकती है: "खून की तीन बूँदें"।

* * *

नीला आसमान; एक हरा-भरा छोटा सा बगीचा; पहाड़ी के ऊपर फूल खिल चुके हैं और एक हल्की हवा उनकी खुशबू मेरे कमरे में ला रही है। लेकिन इसका क्या फायदा? मुझे अब किसी चीज़ में आनंद नहीं मिलता। ये सब तो सिर्फ कवियों, बच्चों और उन लोगों के लिए ही अच्छा है जो जीवन भर बच्चे ही बने रहते हैं। मैंने इस जगह पर एक साल बिताया है। बिल्ली की फुफकार मुझे रात से सुबह तक जगाए रखती है। डरावनी फुफकार, दिल दहला देने वाली म्याऊं, मुझे हार मानने की कगार पर ले आई है। सुबह, जैसे ही मैंने आंखें खोलीं, मुझे एक ज़ोरदार इंजेक्शन लगा। मैंने यहां कितने लंबे दिन और डरावने घंटे बिताए हैं। गर्मियों में हम अपनी पीली कमीज़ और पीली पैंट पहनकर तहखाने में इकट्ठा होते हैं। सर्दियों में हम बगीचे के किनारे धूप सेंकते हुए बैठते हैं। इन अजीब और विचित्र लोगों के साथ रहते हुए मुझे एक साल हो गया है। हमारे बीच कोई समानता नहीं है। मैं उनसे उतना ही अलग हूं जितना धरती आसमान से। लेकिन उनकी कराहें, चुप्पी, अपमान, रोना और हँसी हमेशा के लिए मेरी नींद को बुरे सपने में बदल देंगे।

* * *

रात का खाना खाने में अभी एक घंटा बाकी है। ये एक छपा हुआ मेनू है: दही का सूप, चावल की खीर, चावल, रोटी और पनीर, बस इतना ही काफी है कि भूख से बेहाल हुए बिना हमारा पेट भर जाए। हसन की दिली तमन्ना है कि उसे एक बर्तन भर अंडे का सूप और चार रोटी के टुकड़े खाने को मिलें। जब उसे रिहा करने का समय आए, तो उसे कलम और कागज की जगह एक बर्तन भर अंडे का सूप देना चाहिए। अपने छोटे पैरों, बेवकूफी भरी हंसी, मोटी गर्दन, गंजे सिर और

खुरदुरे हाथों के साथ, जो मानो सीवर साफ करने के लिए बने हों, वो यहाँ के खुशनसीब लोगों में से एक है। अगर मुहम्मद अली, जो दोपहर के खाने और रात के खाने का मुआयना कर रहे हैं, न होते, तो हसन हम सबको मौत के घाट उतार देता। लेकिन मुहम्मद अली भी तो इसी दुनिया के आम लोगों में से एक हैं। इस जगह के बारे में चाहे जो भी कहा जाए, सच्चाई यही है कि ये आम लोगों की दुनिया से बिल्कुल अलग है। हमारे पास एक डॉक्टर है, कसम से, उसे कुछ भी नज़र नहीं आता। अगर मैं उसकी जगह होता, तो एक रात मैं सबके खाने में ज़हर मिला देता और उन्हें खिला देता। फिर सुबह मैं बगीचे में कमर पर हाथ रखकर खड़ा रहता और लाशों को बाहर ले जाते देखता। जब मुझे पहली बार यहाँ लाया गया था, तो मैं अपने खाने पर बहुत नज़र रखता था, इस डर से कि कहीं वे मुझे ज़हर न दे दें। मैं दोपहर का खाना या रात का खाना तब तक नहीं खाता था जब तक मुहम्मद अली उसे चख न लें। तभी मैं खाता था। रात को मैं डर के मारे अचानक जाग जाता था, यह सोचकर कि वे मुझे मारने आए हैं। अब वह सब कितना दूर और धुंधला सा लगता है। हमेशा वही लोग, वही खाना, वही कमरा जिसकी आधी दीवार नीली है।

दो महीने पहले की बात है, जब उन्होंने एक पागल को आंगन के आखिर में बनी उस जेल में डाल दिया था। उसने संगमरमर के टूटे टुकड़े से अपना पेट चीर डाला, अपनी आंतें बाहर निकाल लीं और उनसे खेलने लगा। उन्होंने कहा कि वह कसाई था - उसे पेट काटने की आदत थी। लेकिन दूसरे ने अपने ही नाखूनों से अपनी आंखें निकाल ली थीं। उन्होंने उसके हाथ पीछे बांध दिए। वह चीख रहा था और उसकी आंखों पर खून सूख चुका था। मुझे पता है कि यह सब सुपरवाइजर की गलती है।

यहां हर कोई ऐसा नहीं है। उनमें से कई ठीक होकर रिहा होने पर दुखी होंगे। उदाहरण के लिए, सोगरा सुल्तान, जो महिलाओं के विभाग में है। उसने दो-तीन बार भागने की कोशिश की, लेकिन उसे पकड़ लिया गया। वह बूढ़ी है, लेकिन दीवार से प्लास्टर खुरचकर अपने चेहरे पर पाउडर की तरह लगाती है। वह अपने गालों को गुलाबी दिखाने के लिए गेरानियम के फूलों का भी इस्तेमाल करती है। वह खुद को जवान समझती है। अगर वह ठीक होकर आईने में देखे तो उसे दिल का दौरा पड़ जाएगा। सबसे बुरा तो हमारा ताकी है, जो दुनिया को उलट-पुलट करना चाहता है। उसके अनुसार, महिलाएं पुरुषों के दुर्भाग्य का कारण हैं, और दुनिया को बेहतर बनाने के लिए सभी महिलाओं को मार देना चाहिए। उसे सोगरा सुल्तान से प्यार हो गया है।

यह सब हमारे सुपरवाइज़र की गलती है। वह इतना पागल है कि हम सब उसके सामने शर्मिंदा हो जाते हैं। अपनी बड़ी नाक और छोटी आँखों के साथ, किसी नशेड़ी की तरह, वह हमेशा बगीचे के निचले हिस्से में चीड़ के पेड़ के नीचे घूमता रहता है। कभी-कभी वह झुककर पेड़ के नीचे देखता है। उसे देखने वाला कोई भी सोचेगा कि बेचारा सीधा-सादा आदमी इन सारे पागलों के साथ कैसे फँस गया। लेकिन मैं उसे जानता हूँ। मुझे पता है कि पेड़ के नीचे, ज़मीन पर खून की तीन बूँदें गिरी हैं। उसने अपनी खिड़की के सामने एक पिंजरा लटका रखा है। पिंजरा खाली है क्योंकि बिल्ली ने उसकी चिड़िया को खा लिया है। इसलिए उसने पिंजरा लटका रखा है ताकि बिल्लियों को पिंजरे की ओर आकर्षित करके उन्हें मार डाले।

कल ही की बात है, उसने एक कैलिको बिल्ली का पीछा किया। जैसे ही जानवर खिड़की की

ओर पेड़ पर चढ़ा, उसने दरवाजे पर खड़े पहरेदार को बिल्ली को गोली मारने का आदेश दिया। खून की वो तीन बूँदें बिल्ली की हैं, लेकिन अगर कोई पूछता तो वो कहता कि वो सत्य के पक्षी की हैं।

यहां मौजूद सभी लोगों से ज़्यादा अजीब है मेरा दोस्त और पड़ोसी अब्बास। उसे यहां आए हुए अभी दो हफ्ते भी नहीं हुए हैं। वह मुझसे घुलमिल रहा है। वह खुद को कवि और पैगंबर समझता है। उसका कहना है कि हर पेशा, खासकर पैगंबर का पेशा, संयोग और भाग्य पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, ऊंचे माथे वाले लोग, चाहे उन्हें ज़्यादा ज्ञान न हो, भी कामयाब हो जाते हैं। वहीं, छोटे माथे वाले लोग, चाहे वे दुनिया के सबसे बुद्धिमान व्यक्ति ही क्यों न हों, अंत में उसी की तरह हो जाते हैं। अब्बास खुद को एक कुशल सितार वादक भी समझता है। उसने एक लकड़ी के तख्ते पर तार लगाकर खुद को यह यकीन दिलाया है कि उसने एक तार वाला वाद्य यंत्र बना लिया है। उसने एक कविता भी रची है जिसे वह मुझे दिन में आठ बार सुनाता है। मुझे लगता है कि उसी कविता के लिए उसे यहां भेजा गया है। उसने एक अनोखी गाथागीत भी रची है।

कितनी अफसोस की बात है कि एक बार फिर रात हो गई है।
सिर से पैर तक दुनिया अंधेरी है।
यह सबके लिए शांति का समय बन गया है।
मेरे सिवा, जिसकी निराशा और दुःख और भी बढ़ गए हैं।

संसार के स्वभाव में सुख नहीं है।
मृत्यु के सिवा मेरे दुःख का कोई इलाज नहीं है।
लेकिन उस कोने पर चीड़ के पेड़ के नीचे
खून की तीन बूँदें गिर पड़ी हैं।

कल हम बगीचे में टहल रहे थे। अब्बास वही कविता सुना रहा था। एक पुरुष, एक महिला और एक युवती उससे मिलने आए। अब तक वे पाँच बार आ चुके हैं। मैंने उन्हें पहले भी देखा था और मैं उन्हें जानता था। युवती फूलों का गुलदस्ता लाई थी। उसने मुझे देखकर मुस्कुराया। यह स्पष्ट था कि वह मुझे पसंद करती थी। असल में वह मेरे लिए ही आई थी। वैसे भी, अब्बास का चेचक के दागों वाला चेहरा आकर्षक नहीं है, लेकिन जब महिला डॉक्टर से बात कर रही थी, तो मैंने देखा कि अब्बास युवती को एक तरफ ले जाकर उसे चूम रहा था।

* * *

अब तक कोई मुझसे मिलने नहीं आया और न ही कोई मुझे फूल लाया। एक साल बीत गया है। आखिरी बार सियावोश मुझसे मिलने आया था। सियावोश मेरा सबसे अच्छा दोस्त था। हम पड़ोसी थे। हम हर दिन साथ में दारोल्फूनून* जाते और साथ में घर लौटते और अपना होमवर्क

डिस्कस करते। खाली समय में मैं सियावोश को सितार बजाना सिखाता था। सियावोश की चचेरी बहन और मेरी मंगेतर रोक्सारे भी अक्सर हमारे साथ आती थी। सियावोश रोक्सारे की बहन से शादी करना चाहता था, लेकिन शादी से एक महीने पहले वह अचानक बीमार पड़ गया। मैं दो-तीन बार उससे मिलने और उसका हालचाल पूछने गया, लेकिन सबने कहा कि डॉक्टर ने किसी को भी उससे बात करने से साफ मना किया है। मैंने कितना भी जोर दिया, उन्होंने वही जवाब दिया। इसलिए मैंने जोर देना बंद कर दिया।

मुझे वो दिन अच्छी तरह याद है। परीक्षा के अंतिम दिन नजदीक थे। एक शाम, मैं घर लौटा और मेज पर अपनी किताबें और कुछ नोटबुक रख दीं। कपड़े बदलने ही वाला था कि मुझे गोली चलने की आवाज सुनाई दी। आवाज इतनी पास से आई थी कि मैं डर गया क्योंकि हमारा घर एक खाई के पीछे था और मैंने सुना था कि हमारे आसपास चोरियां हुई थीं। मैंने दराज से रिवॉल्वर निकाली और आंगन में जाकर खड़ा हो गया, आवाज सुनने लगा। फिर मैं सीढ़ियों से छत पर गया, लेकिन मुझे कुछ नहीं दिखा। छत से नीचे आते समय, मैंने ऊपर से सियावोश के घर की ओर देखा। मैंने उसे कमीज और अंडरवियर पहने आंगन के बीच में खड़े देखा। मैंने हैरानी से कहा, "सियावोश, क्या तुम हो?" उसने मुझे पहचान लिया और कहा, "इधर आओ, कोई घर पर नहीं है।" उसने अपनी उंगली होठों पर रखी और सिर हिलाकर मुझे अपने पास आने का इशारा किया। मैं तेजी से नीचे गया और उसके घर का दरवाजा खटखटाया। उसने खुद मेरे लिए दरवाजा खोला। अपना सिर नीचे झुकाए और जमीन पर नजरें गड़ाए हुए उसने मुझसे पूछा, "तुम मुझसे मिलने क्यों नहीं आए?"

मैं दो-तीन बार आपका हालचाल जानने आया था, लेकिन उन्होंने कहा कि डॉक्टर इसकी अनुमति नहीं देंगे।

"वे सोचते हैं कि मैं बीमार हूँ, लेकिन वे गलत हैं।"

क्या आपने गोली चलने की आवाज सुनी?

उसने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि मेरा हाथ पकड़कर मुझे चीड़ के पेड़ के नीचे ले गया और किसी चीज़ की ओर इशारा किया। मैंने गौर से देखा। ज़मीन पर ताज़े खून की तीन बूँदें थीं।

फिर वह मुझे अपने कमरे में ले गया और सारे दरवाजे बंद कर दिए। मैं एक कुर्सी पर बैठ गया। उसने बत्ती जलाई और मेज के सामने मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। उसका कमरा सादा था। वह नीले रंग का था और बीच तक दीवारें गहरे रंग की थीं। कमरे के कोने में एक सितार रखा था। मेज पर कई किताबें और स्कूल की नोटबुक पड़ी थीं। थोड़ी देर बाद सियावोश ने दराज से एक रिवॉल्वर निकाली और मुझे दिखाई। वह मोती के हैंडल वाली पुरानी रिवॉल्वर थी। उसने उसे अपनी पतलून की जेब में रखा और बोला, “मेरे पास एक बिल्ली थी – उसका नाम कोक्वेट था। शायद आपने उसे देखा होगा। वह आम कैलिको बिल्लियों में से एक थी। उसकी दो बड़ी-बड़ी आँखें थीं, मानो उसने काला आईलाइनर लगाया हो। उसकी पीठ पर धब्बे ऐसे करीने से बने थे जैसे किसी ने भूरे रंग के सोख्ता कागज पर स्याही गिरा दी हो और फिर कागज को बीच से फाड़ दिया हो। हर दिन जब मैं स्कूल से घर लौटता, कोक्वेट दौड़कर मेरे पास आती और म्याऊं-म्याऊं करती। वह खुद को मुझसे रगड़ती और जब मैं बैठ जाता, तो वह मेरे सिर और कंधों पर चढ़

जाती, अपनी थूथन मेरे चेहरे पर रगड़ती और अपनी खुरदरी जीभ से मेरे माथे को चाटती, ज़िद करती कि मैं उसे चूमूँ। ऐसा लगता है जैसे मादा बिल्लियाँ नर बिल्लियों से ज़्यादा चालाक, दयालु और संवेदनशील होती हैं। मेरे अलावा, कोक्वेट रसोइए के साथ बहुत अच्छे से रहती थी क्योंकि वही खाने का इंचार्ज था। लेकिन वह मेरी दादी से दूर रहती थी, जो दबंग थीं, नियमित रूप से प्रार्थना करती थीं और बिल्ली के बालों से बचती थीं। कोक्वेट ने शायद मन ही मन सोचा होगा कि इंसान बिल्लियों से ज़्यादा समझदार होते हैं।" उन्होंने सारा स्वादिष्ट भोजन और गर्म, आरामदायक स्थान अपने लिए हथिया लिया था और इन विलासिताओं में हिस्सा पाने के लिए बिल्लियों को चापलूसी करनी पड़ती थी और लोगों की खूब खुशामद करनी पड़ती थी।

कोक्वेट की स्वाभाविक भावनाएँ तभी जागृत होतीं और सतह पर आतीं जब उसे किसी मुर्गे का खून से लथपथ सिर मिल जाता। तब वह बदल जाती, एक खूंखार जानवर में परिवर्तित हो जाती। उसकी आँखें बड़ी और चमकने लगतीं। उसके पंजे खोल से बाहर निकल आते और लंबी गुर्राहट के साथ वह अपने पास आने वाले किसी भी व्यक्ति को धमकाती। फिर, मानो वह खुद को धोखा दे रही हो, वह एक खेल खेलने लगती। अपनी कल्पना की पूरी शक्ति से उसने खुद को यह विश्वास दिला दिया था कि मुर्गे का सिर एक जीवित जानवर है, इसलिए वह अपने पंजे से सिर पर थपथपाती। उसके बाल खड़े हो जाते, वह छिप जाती, सतर्क हो जाती और फिर से हमला करती, बार-बार कूदने, हमला करने और पीछे हटने में अपनी प्रजाति का सारा कौशल और फुर्ती दिखाती। इस प्रदर्शन से थक जाने के बाद, वह लालच से खून से लथपथ सिर को खा जाती और उसके बाद कई मिनट तक उसके बाकी हिस्से की तलाश करती। और इस तरह, एक या दो घंटे के लिए, वह अपनी कृत्रिम सभ्यता को भूल जाती, किसी के पास नहीं जाती और न ही आकर्षक या चापलूसी करती।

"जिस समय कोक्वेट स्नेह दिखा रही थी, उस दौरान असल में वह निर्मम और क्रूर थी और अपने राज़ नहीं बताती थी। वह हमारे घर को अपनी निजी संपत्ति की तरह मानती थी और अगर कोई अजनबी बिल्ली घर में घुस जाती, खासकर अगर वह मादा होती, तो घंटों तक थूकने, कराहने और आक्रोश की आवाज़ें सुनाई देतीं।"

कोक्वेट दोपहर के भोजन के लिए तैयार होने पर जो आवाज़ निकालती थी, वह उसके नखरे दिखाने पर निकलने वाली आवाज़ से अलग थी। भूख लगने पर उसकी चीखें, लड़ाई के दौरान उसकी रोने की आवाज़ें और मदहोशी में उसकी कराह, सभी की अपनी अलग-अलग आवाज़ें थीं और वे एक-दूसरे से भिन्न थीं। और उनकी धुनें भी बदलती रहती थीं: पहले दिल दहला देने वाली चीखें, फिर द्वेष और प्रतिशोध की चीखें, और अंत में अपने साथी से मिलने की स्वाभाविक ज़रूरत से निकली एक दर्द भरी आह। कोक्वेट की आँखों के इशारे किसी भी चीज़ से ज़्यादा अर्थपूर्ण लगते थे और कभी-कभी वह इतनी मानवीय भावनाएँ दिखाती थी कि लोग खुद से पूछने पर मजबूर हो जाते थे: उस ऊनी सिर में, उन हरी रहस्यमयी आँखों के पीछे, कौन से विचार और भावनाएँ छिपी हैं?

“पिछली बसंत ऋतु में वह भयानक घटना घटी थी। आप जानते हैं कि बसंत आते ही सभी जानवर मदहोश हो जाते हैं और जोड़े बना लेते हैं। ऐसा लगता है मानो बसंत की हवा सभी

प्राणियों में बेतहाशा जुनून जगा देती है। पहली बार हमारी कोक्वेट प्रेम के जुनून में डूबी और पूरे शरीर में कंपकंपी के साथ वह उदासी से आहें भरती। नर बिल्लियों ने उसकी आहें सुनीं और चारों ओर से उसका स्वागत किया। लड़ाई-झगड़े के बाद, कोक्वेट ने अपने साथी के रूप में सबसे ताकतवर और सबसे तेज आवाज वाले को चुना। जानवरों के प्रेम-संबंध में उनकी विशेष गंध बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसीलिए बिगड़े हुए, पालतू और साफ-सुथरे नर बिल्लियां मादाओं को आकर्षित नहीं करतीं। इसके विपरीत, दीवारों पर रहने वाली बिल्लियां, चोरी करने वाली, दुबली-पतली, आवारा और भूखी बिल्लियां जिनकी त्वचा से उनकी प्रजाति की मूल गंध आती है, मादाओं को अधिक आकर्षित करती हैं। दिन के दौरान, लेकिन खासकर रात में, कोक्वेट और उसका साथी लंबी चीखों में अपना प्यार जताते। उसका कोमल शरीर मरोड़ता जबकि दूसरे का शरीर वे धनुष की तरह झुक जाते और खुशी से आहें भरते। यह सिलसिला भोर होने तक चलता रहा। फिर कोक्वेट बिखरे बालों, चोटिल और थकी हुई, लेकिन खुश होकर कमरे में आती।

"कोक्वेट के प्रेम प्रसंगों की वजह से मुझे रात को नींद नहीं आती थी। आखिरकार, मुझे बहुत गुस्सा आ गया। एक दिन मैं इसी खिड़की के सामने काम कर रहा था, तभी मैंने प्रेमी जोड़े को बगीचे में इतराते हुए देखा। जिस रिवॉल्वर को आप देख रहे हैं, उसी से मैंने दो-तीन कदम की दूरी से उन पर निशाना साधा। मैंने गोली चलाई और एक गोली उसके साथी को लगी। ऐसा लगा जैसे उसकी कमर टूट गई हो। उसने एक ज़ोरदार छलांग लगाई और बिना कोई आवाज़ या कराह किए गलियारे से भाग गया और बगीचे की दीवार के नीचे गिर पड़ा।"

"उस रास्ते पर खून के छींटे पड़े थे जिस पर वह चला था। कोक्वेट ने कुछ देर तक खोजा, आखिरकार उसे उसके पदचिह्न मिल गए। उसे उसके खून की गंध आई और वह सीधे उसके शव के पास चली गई। दो रात और दो दिन तक वह उसके शव के पास पहरा देती रही। कभी-कभी वह अपने पंजे से उसे छूती, मानो उससे कह रही हो, 'उठो, बसंत का आगमन हो गया है। प्रेम के समय में क्यों सो रहे हो? क्यों नहीं हिल रहे? उठो, उठो!' कोक्वेट को मृत्यु के बारे में कुछ नहीं पता था और न ही उसे यह पता था कि उसका प्रेमी मर चुका है।"

"उसके अगले दिन, कोक्वेट अपने साथी के शव के साथ गायब हो गई। मैंने हर जगह खोजा, हर किसी से उसके बारे में जानकारी मांगी। सब व्यर्थ था। क्या कोक्वेट रूठ गई थी? क्या वह मर गई थी? क्या वह अपने प्यार को खोजने गई थी? और शव का क्या हुआ?"

एक रात मैंने उसी नर बिल्ली की म्याऊं सुनी। वह सुबह तक रोता रहा। अगली रात भी ऐसा ही हुआ, लेकिन सुबह तक उसका रोना बंद हो गया था। तीसरी रात मैंने फिर से रिवाल्वर उठाई और अपनी खिड़की के सामने चीड़ के पेड़ पर अंधाधुंध गोली चला दी। अंधेरे में उसकी आँखों की चमक साफ दिखाई दे रही थी। उसने एक लंबी कराह भरी और चुप हो गया। सुबह मैंने देखा कि पेड़ के नीचे ज़मीन पर खून की तीन बूँदें गिरी थीं। उस रात के बाद से वह हर रात आता है और उसी आवाज़ में कराहता है। बाकी लोग गहरी नींद में सोते हैं और उन्हें सुनाई नहीं देता। मैं उनसे कुछ भी कहूँ, वे मुझ पर हँसते हैं, लेकिन मुझे पता है, मुझे पूरा यकीन है, कि यह उसी बिल्ली की आवाज़ है जिसे मैंने गोली मारी थी। उस रात के बाद से मैं सोया नहीं हूँ। मैं कहीं भी जाऊँ, किसी भी कमरे में सोऊँ, यह मनहूस बिल्ली अपनी डरावनी आवाज़ में कराहती है और अपने

साथी को पुकारती है।

आज जब घर में कोई नहीं था, मैं उसी जगह गया जहाँ बिल्ली हर रात बैठकर रोती है, और मैंने निशाना साधा, क्योंकि अंधेरे में उसकी आँखों की चमक से मैं जानता था कि वह कहाँ खड़ी है। जब बंदूक खाली हो गई, तो मैंने बिल्ली के कराहने की आवाज़ सुनी और ऊपर से खून की तीन बूँदें गिरीं। तुमने उन्हें अपनी आँखों से देखा, क्या तुम मेरे गवाह नहीं हो?

फिर दरवाजा खुला और रोक्सारे और उसकी मां कमरे में दाखिल हुईं। रोक्सारे के हाथ में फूलों का गुलदस्ता था। मैं खड़ा हुआ और मैंने उन्हें नमस्कार किया, लेकिन हंसते हुए सियावोश ने कहा, "बेशक आप श्री मिर्ज़ा अहमद खान को मुझसे बेहतर जानते हैं। परिचय की कोई ज़रूरत नहीं है। वह गवाही देते हैं कि उन्होंने अपनी आंखों से चीड़ के पेड़ की तलहटी में खून की तीन बूँदें देखी हैं।"

"हां, मैंने उन्हें देखा है।"

लेकिन सियावोश मेरी ओर बढ़ा और ज़ोर से हँसने लगा। उसने मेरी पतलून की जेब में हाथ डाला और रिवाल्वर निकाल ली। पिस्तौल को मेज पर रखते हुए उसने कहा, "तुम्हें पता है कि मिर्ज़ा अहमद खान न सिर्फ़ सितार बजाते और कविताएँ लिखते हैं, बल्कि एक कुशल शिकारी भी हैं। वे बहुत अच्छा निशाना लगाते हैं।" फिर उसने मुझे इशारा किया। मैं भी खड़ा हो गया और बोला, "जी हाँ, आज दोपहर मैं सियावोश से कुछ स्कूल के नोट्स लेने आया था। मजे के लिए हमने थोड़ी देर चीड़ के पेड़ पर निशाना लगाया, लेकिन खून की वो तीन बूँदें बिल्ली की नहीं, सत्य के पक्षी की हैं। तुम्हें पता है कि किंवदंती के अनुसार सत्य के पक्षी ने तीन दाने खा लिए जो कमज़ोर और बेसहारा के थे और हर रात वह तब तक रोता रहता है जब तक उसके गले से खून की तीन बूँदें न गिर जाएँ। या शायद, किसी बिल्ली ने पड़ोसी की चिड़िया को पकड़ लिया था और फिर पड़ोसी ने बिल्ली को गोली मार दी और घायल बिल्ली पेड़ के पास से गुज़र गई। अब रुको, मैं अपनी लिखी एक नई कविता सुनाने जा रहा हूँ।" मैंने सितार उठाया और गीत की तैयारी में उसे ट्यून किया, फिर मैंने यह कविता गाई:

"कितनी अफसोस की बात है कि एक बार फिर रात हो गई है।"
सिर से पैर तक दुनिया अंधेरी है।
यह सबके लिए शांति का समय बन गया है।
सिवाय मेरे, जिसकी निराशा और दुःख और भी बढ़ गए हैं।
संसार के स्वभाव में सुख जैसी कोई चीज नहीं है।
मृत्यु के सिवा मेरे दुःख का कोई इलाज नहीं है।
लेकिन उस कोने पर चीड़ के पेड़ के नीचे
जमीन पर खून की तीन बूँदें गिरी हैं।

इस समय रोक्सारे की माँ गुस्से में कमरे से बाहर चली गईं। रोक्सारे ने भौंहें चढ़ाकर कहा, "यह पागल है।" फिर उन्होंने सियावोश का हाथ पकड़ा और दोनों खूब हँसे और फिर दरवाज़े से बाहर

निकलकर मेरे सामने दरवाज़ा बंद कर दिया। खिड़की के पीछे से मैंने देखा कि आँगन में पहुँचकर उन्होंने लालटेन के नीचे एक-दूसरे को गले लगाया और चुंबन किया।

द लीगलाइज़र

(खून की तीन बूंदों से)

(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

सूर्यास्त में चार घंटे शेष थे और पहाड़ों के बीचोंबीच स्थित पास काले* सुनसान और शांत दिख रहा था। एक छोटे से कॉफीघर के सामने एक मेज पर दही, नींबू पानी और अलग-अलग रंगों के गिलास रखे हुए थे। एक जर्जर रिकॉर्ड प्लेयर और कुछ घिसे-पिटे रिकॉर्ड एक बेंच पर पड़े थे। कॉफीघर का मालिक, जिसने अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ा रखी थीं, पीतल के समोवर को हिलाकर चाय की पत्तियां बाहर फेंक रहा था, फिर तार के हैंडल लगे खाली पेट्रोल के ड्रम को उठाकर नदी की ओर चल पड़ा।

सूरज चमक रहा था। नीचे से पानी की एकरस ध्वनि सुनाई दे रही थी, नदी तल में पानी की परतें एक दूसरे पर गिर रही थीं, जिससे सब कुछ ताज़ा लग रहा था। कॉफी हाउस के सामने एक बेंच पर एक आदमी लेटा हुआ था, उसके चेहरे पर एक गीला कपड़ा था, उसके कपड़े के जूते बेंच के बगल में रखे थे। सामने वाली बेंच पर, शहतूत के पेड़ की छाया में, दो आदमी साथ बैठे थे। हालाँकि वे एक दूसरे को मुश्किल से जानते थे, फिर भी उन्होंने तुरंत दिल खोलकर बातें करना शुरू कर दिया था। वे अपनी बातचीत में इतने मग्न थे कि ऐसा लग रहा था जैसे वे एक दूसरे को सालों से जानते हों। मशादी शाहबाज़ दुबला-पतला था, उसकी घनी मूंछें थीं और भौंहें बीच में मिलती थीं। वह बेंच के किनारे पर उकड़ू बैठा था और मेहंदी लगे हाथ से इशारा करते हुए कह रहा था, “कल मैं अपने चचेरे भाई से मिलने मोरघ महले गया था; वहाँ उसका एक छोटा सा बगीचा है। वह बता रहा था कि पिछले साल उसने अपने खुबानी तीस तोमान में बेचे थे। इस साल वे पाले से खराब हो गए और सारे फल पेड़ से गिर गए। उसकी हालत बहुत खराब थी। और उसकी पत्नी रमज़ान से ही बिस्तर पर पड़ी है। उसके लिए यह बहुत महंगा साबित हुआ है।”

मिर्ज़ा यदेल्लाह ने अपना चश्मा ठीक किया, आराम से अपनी पाइप का कश लिया, अपनी सफ़ेद होती दाढ़ी पर हाथ फेरा और कहा, "हर चीज़ से सारी बरकत निकल गई है।"

शाहबाज़ ने सहमति में सिर हिलाया और कहा, “आप बिलकुल सही कह रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे दुनिया का अंत हो गया हो। रीति-रिवाज बदल गए हैं। ईश्वर सभी को सौभाग्य प्रदान करें – पच्चीस साल पहले मैं पवित्र नगर मशहद के पड़ोस में रहता था। तीन किलो मक्खन एक रियाल से भी कम में मिलता था, दस अंडे एक रियाल में। हम आदमी के बराबर ऊँची रोटियाँ खरीदते थे। पैसे की कमी से कौन परेशान होता था? मेरे पिता पर ईश्वर की कृपा हो – उन्होंने एक खच्चर खरीदा था, वे तेज़ और छोटे होते हैं, और हम उस पर साथ सवारी करते थे। मैं बीस साल का था। मैं अपने पड़ोस के बच्चों के साथ गली में कंचे खेलता था। अब सभी युवा आसानी से अपना उत्साह खो देते हैं। वे कच्चे अंगूर से पके हुए किशमिश बन जाते हैं। मुझे हमारे जवानी के दिन वापस चाहिए। जैसा कि उस व्यक्ति ने कहा था, ईश्वर उन पर कृपा करें:

मैं बूढ़ा हो सकता हूँ, मेरी ठुड्डी कांपती रहती है,
लेकिन मैं सौ नौजवानों के बराबर हूं।"

यादोल्लाह ने अपनी पाइप से एक कश लिया और कहा, "हर साल हमें पिछले साल पर पछतावा होता है।"

शाहबाज ने सिर हिलाया। "ईश्वर अपने प्राणियों को सुखद अंत प्रदान करे।"

यादोल्लाह ने गंभीर भाव अपना लिया। मैं आपको बताऊँ, एक ज़माना था जब हमारे घर में तीस लोगों का पेट भरना पड़ता था। अब तो रोज़ मुझे चाय-सब्ज़ी के लिए कुछ रियाल कहाँ से मिलेंगे, इसकी चिंता रहती है। दो साल पहले मेरे पास तीन शिक्षण कार्य थे, जिनसे मुझे महीने में आठ तोमान मिलते थे। परसों, ईद क़ोरबान* के दिन, मैं एक अमीर आदमी के घर गया जहाँ मैं पहले शिक्षक था। उन्होंने मुझे भेड़ को वध के लिए आशीर्वाद देने को कहा। निर्दयी कसाई ने बेचारे जानवर को उठाया और ज़मीन पर फेंक दिया। वह अपना चाकू तेज़ कर रहा था। जानवर छटपटाया और कसाई के पैरों के नीचे से खुद को खींच लिया। मुझे नहीं पता ज़मीन पर क्या था, लेकिन मैंने देखा कि जानवर की आँख फट गई थी और खून बह रहा था। मेरा दिल भी दुख से भर गया। मैंने सिरदर्द का बहाना बनाकर वहाँ से चला गया। पूरी रात मुझे भेड़ का सिर आँखों के सामने दिखाई देता रहा, वह खून से लथपथ था। तभी मेरे मुँह से अपशब्द निकल गए और मेरे मन में ईश्वरनिंदा के विचार आने लगे... ईश्वर मुझे गूंगा बना दे। ईश्वर की अच्छाई पर संदेह है, लेकिन ये असहाय जानवर... ये पाप है। हे प्रभु, हे ईश्वर, आप बेहतर जानते हैं। चाहे कुछ भी हो, मनुष्य पापी है।" वह कुछ पल सोच में डूबा बैठा रहा। फिर बोला, "हाँ, काश मैं अपने दिल की हर बात कह पाता: खैर, लेकिन सब कुछ कहा नहीं जा सकता, ईश्वर न करे। ईश्वर मुझे गूंगा बना दे।"

जैसे कि वह ऊब गया हो, शाहबाज ने कहा, "बस महत्वपूर्ण चीजों के बारे में सोचो।"

मिर्ज़ा यदोल्लाह ने उदासीनता भरे लहजे में जवाब दिया, "हाँ, हम क्या कर सकते हैं? दुनिया हमेशा से ऐसी ही है।"

"हमारा समय समाप्त हो गया है," शाहबाज़ ने कहा। "हमारा काम तमाम हो गया है। हम सिर्फ इसलिए ज़िंदा हैं क्योंकि हमारे पास कफ़न खरीदने के पैसे नहीं हैं। इस दुनिया में हमने क्या-क्या नहीं किया? एक समय तेहरान में मेरी एक किराने की दुकान थी। खर्चों के बाद मैं हर दिन छह रियाल बचा लेता था।"

मिर्ज़ा यदोल्लाह ने उनकी बात काटते हुए कहा, "आप किराने की दुकान चलाते थे? मुझे दुकानदारों का समूह पसंद नहीं है।"

"क्यों?"

"यह एक लंबी कहानी है। लेकिन पहले आप अपनी बात पूरी कर लीजिए।"

शाहबाज बोलता रहा। "हाँ, मेरी एक किराने की दुकान थी। सब ठीक चल रहा था। धीरे-धीरे मैं अपना जीवन संवार रहा था। संक्षेप में कहूँ तो, मेरी शादी एक झगड़ालू औरत से हुई। मेरी पत्नी ने मेरी जिंदगी बर्बाद कर दी, पाँच साल हो गए। वह एक साधारण औरत नहीं थी, बल्कि एक उग्र स्वभाव की औरत थी। शादी करने और घर बसाने के लिए मैंने कितनी मेहनत की थी: उसने मेरी सारी मेहनत बर्बाद कर दी। खैर, एक रात वह प्रवचन सुनकर लौटी। उसने ज़िद की कि उसे अपने पापों का बोझ हल्का करने के लिए तीर्थयात्रा पर जाना है। आप विश्वास नहीं करेंगे कि उसने मुझे

कितना परेशान किया... उस औरत के आगे झुकना मेरी कितनी बड़ी मूर्खता थी। खैर, इंसान भोला होता है। मैं मजबूत और निर्दयी था, लेकिन एक औरत मुझ पर भारी पड़ गई। भगवान न करे कि कोई औरत किसी पुरुष को परेशान करे। उसी रात उसने कहा, 'मुझे ये सब बातें समझ नहीं आतीं, लेकिन मैंने समझ लिया है। मुझे अपना दहेज वापस नहीं चाहिए, बस मुझे आज़ाद कर दो। मेरे पास एक कंगन और एक हार है, मैं उन्हें बेचकर चली जाऊँगी। मैंने ढूंढा... मुझे अपशगुन मिला और मुझे एक अच्छा अपशगुन मिल गया। या तो मुझे तलाक दे दो, नहीं तो मैं तुम्हारे बच्चे का गला यहीं दीये के पास घोंट दूंगी।' मैंने चाहे कुछ भी किया हो, क्या तुम्हें लगता है कि मैं उसके लायक था? दो हफ़्तों तक उसने मेरी तरफ देखा तक नहीं। उसने इतनी ज़िद की कि मैंने अपना सब कुछ बेच दिया, पैसे जमा किए और उसे दे दिए। वह मेरे दो साल के बेटे को लेकर गायब हो गई, जहाँ अरब लोग बांसुरी बजाते हैं। पाँच साल बीत गए हैं और मुझे नहीं पता कि उसके साथ क्या हुआ।

"ईश्वर करे कि वह अरबों की बुराई से सुरक्षित रहे।"

"हाँ, उन नंगे अज्ञानी अरबों के बीच, रेगिस्तान में, जलते सूरज में! ऐसा लगा जैसे वह पानी में बदल गई हो और धरती में समा गई हो। उसने मुझे एक चिट्ठी तक नहीं भेजी। वे लोग सही कहते हैं कि स्त्री एक ही पसली की बनी होती है।"

मिर्ज़ा यदोल्लाह ने कहा, "यह पुरुषों की गलती है, वे उन्हें इसी तरह पालते हैं और उन्हें सांसारिक और अनुभवी नहीं बनने देते।"

शाहबाज अपने ही शब्दों में खोया हुआ था। "मजेदार बात यह है कि वह औरत असल में भोली और सीधी-सादी थी। पता नहीं क्या हुआ कि अचानक वो इतनी उग्र हो गई। कभी-कभी, जब वो अकेली होती थी, तो रोने लगती थी। काश उसके आंसू उसके पहले पति के लिए होते—"

"क्या आपका मतलब है कि आप उसके दूसरे पति थे?" मिर्ज़ा यदोल्लाह ने पूछा।

"बिल्कुल," शाहबाज ने जवाब दिया। "अब मैं क्या कह रहा था? मैं भूल गया कि मैं क्या कह रहा था।"

आपने उनके पहले पति का जिक्र किया था।

"हाँ, पहले तो मुझे लगा कि वो अपने पहले पति के लिए रो रही है। खैर, मैंने चाहे कितनी भी नरमी से उसे समझाने की कोशिश की, ऐसा लगा जैसे मैं किसी दीवार से बात कर रही हूँ। ऐसा लगा जैसे मौत उसे अपने वश में कर ले। मुझे नहीं पता उसने मेरे बेटे के साथ क्या किया। क्या मैं कभी उसकी आँखों में फिर से देख पाऊँगी? एक बेटा जिसे भगवान ने मुझे इतनी प्रार्थनाओं और चढ़ावों के बाद दिया था।"

मिर्ज़ा यदोल्लाह ने कहा, "हर किसी में कोई न कोई दुर्भाग्य होता है। असल बात यह है कि लोगों को मानवीय होना चाहिए, शिक्षित होना चाहिए। जब तक वे खच्चरों की तरह व्यवहार करते रहेंगे, हम उन्हें चलाते रहेंगे। एक समय था जब मैं उपदेश मंच से कहता था कि जो कोई भी पवित्र तीर्थस्थलों की तीर्थयात्रा करेगा, उसे क्षमा कर दिया जाएगा और स्वर्ग में स्थान मिलेगा।"

शाहबाज ने कहा, "आप उपदेशक तो नहीं हैं ना?"

"यह बारह साल पहले की बात है। आप देख सकते हैं कि मैंने उपदेशक जैसे कपड़े नहीं पहने

हैं। अब मैं हर काम में हाथ आजमाता हूँ, लेकिन किसी एक काम में माहिर नहीं हूँ।"

"कैसे? मुझे समझ नहीं आ रहा।"

मिर्ज़ा यदोल्लाह ने अपनी जीभ से अपने होंठ गीले किए और उदास स्वर में कहा, "एक औरत ने मेरी जिंदगी भी बर्बाद कर दी।"

शाहबाज ने कहा, "अरे, ये औरतें!"

नहीं, इसका महिलाओं से कोई लेना-देना नहीं है। यह दुर्भाग्य मेरी अपनी गलती है। अगर आप तेहरान में होते, तो शायद आपने मेरे पिता का नाम सुना होता। मैं किसी गोभी के पत्ते के नीचे नहीं मिला था। मेरे पिता इतने पवित्र थे कि फ़रिश्ते भी उनकी आज्ञा मानते थे। हर कोई उनके गुणों की प्रशंसा करता रहता था। जब वे उपदेश देने के लिए मंच पर जाते, तो वहाँ सुई रखने की भी जगह नहीं होती थी। सभी बड़े लोग उनके आसपास घबराते थे। मैं दिखावा नहीं कर रहा हूँ। वे अब इस दुनिया में नहीं हैं, ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे। वे जो भी थे, उनकी प्रतिष्ठा ही उनकी पहचान थी। जैसा कि कवि कहते हैं:

भले ही आपके पिता एक विद्वान व्यक्ति थे,

इससे आपको कोई फर्क नहीं पड़ता – आपको अपनी क्षमता के अनुसार जो कर सकते हैं, वह करना चाहिए।

खैर, मेरे पिता की मृत्यु के बाद मैं उनका उत्तराधिकारी बना और मैंने अपनी परिस्थितियों का जायजा लिया। उन्होंने हमारे लिए एक घर और कुछ सामान छोड़ा था। मैं अभी भी धर्मशास्त्र का छात्र था और मुझे चार तोमान की मासिक पेंशन और पंद्रह किलोग्राम गेहूँ मिलता था। इसके अलावा, मुहर्रम और सफ़र के महीनों में हमारी आमदनी बहुत अच्छी रहती थी। हमारी रोटी-रोजी दोनों तरफ से भरी रहती थी। चूंकि यह सर्वविदित था कि मेरे पिता, अल्लाह उन्हें सलामत रखे, की साँस चमत्कार कर सकती है, इसलिए एक रात मुझे एक बीमार व्यक्ति के पास प्रार्थना करने के लिए ले जाया गया। मैंने वहाँ एक आठ-नौ साल की लड़की को घूमते हुए देखा। महोदय, पहली नज़र में ही मैं उसकी ओर आकर्षित हो गया। खैर, जवानी तो ऐसी ही होती है, अपने उतार-चढ़ावों के साथ।

"उससे पहले मेरी दो अस्थायी पत्नियाँ थीं, दोनों को मैंने तलाक दे दिया था, लेकिन यह कुछ और ही था। इसे समझने के लिए आपको मेरी जगह होना पड़ेगा। खैर, दो दिन बाद मैंने मेवों और सूखे मेवों से भरा एक रूमाल और तीन तोमान भेजे, और उससे शादी कर ली। रात में जब वे उसे लेकर आए, तो वह इतनी छोटी थी कि उसे गोद में उठाकर लाना पड़ा। मुझे खुद पर शर्म आ रही थी। मैं आपसे कुछ नहीं छिपाऊँगा। तीन दिनों तक, जब भी वह लड़की मुझे देखती, वह चिड़िया की तरह काँपती थी। अब, मैं केवल तीस साल का था, अपनी जवानी के चरम पर था। लेकिन उन सत्तर साल के आदमियों के बारे में क्या कहूँ, जो तरह-तरह की बीमारियों से ग्रसित होते हैं और नौ साल की लड़कियों से शादी कर लेते हैं।"

"एक बच्ची शादी के बारे में क्या समझती है? वह सोचती है कि शादी का मतलब बस चमकीले

शॉल ओढ़ना, नए कपड़े पहनना और पति द्वारा प्यार से थपथपाना और दुलारना है, बजाय इसके कि वह अपने पिता के घर में रहे जहाँ उसे मार-पीट और गालियाँ मिलती थीं। लेकिन उसे यह नहीं पता कि पति के घर में भी जीवन फूलों की सेज नहीं होता।"

"खैर, उसे काबू में करने में मुझे बहुत मशक्कत करनी पड़ी। वह मुझसे डरती थी। वह रोती थी। मैं उससे मिन्नतें करता था। मैं कहता था, 'भगवान के लिए, मुझे शर्मिंदा करना बंद करो। ठीक है, तुम कमरे के एक कोने में सो जाओ, मैं दूसरे कोने में सो जाता हूँ', क्योंकि मुझे उस पर तरस आता था। मैंने खुद को बहुत रोका कि उसे मजबूर न करूँ। इसके अलावा, मुझे काफी अनुभव था और मैं इंतजार कर सकता था। आखिरकार, उसने मेरी सलाह मान ली।"

"पहली रात मैंने उसे एक कहानी सुनाई। वह सो गई। दूसरी रात मैंने एक और कहानी शुरू की और उसका आधा हिस्सा अगली रात के लिए छोड़ दिया।"

"तीसरी रात मैंने कुछ नहीं कहा, जब तक कि आखिरकार उसने कहा, 'तुमने कहानी का वो हिस्सा सुना दिया है जहाँ बादशाह जमशेद शिकार पर गए थे। बाकी का हिस्सा क्यों नहीं सुनाते?' और मैं खुशी से झूम उठा। मैंने कहा, 'आज रात मुझे सिरदर्द है। मैं ज़ोर से नहीं बोल सकता। अगर तुम मुझे इजाज़त दो, तो मैं थोड़ा और पास आ जाऊँगा।' इस तरह मैं धीरे-धीरे पास जाता गया, जब तक कि वो मान नहीं गई।"

शाहबाज को हंसी आ गई। वह कुछ कहना चाहता था, लेकिन जब उसने मिर्जा यदुल्लाह का गंभीर चेहरा और चश्मे के पीछे उनकी आंखों में आंसू देखे, तो उसने खुद को रोक लिया।

मिर्ज़ा यदोल्लाह ने विशेष ज़ोर देते हुए कहा, "यह कहानी बारह साल पुरानी है, बारह साल! आप नहीं जानते कि वह कैसी महिला थीं, कितनी प्यारी, कितनी दयालु। वह मेरे सारे काम संभालती थीं। ओह, अब जब मुझे याद आता है... वह हर समय चादर ओढ़े रहती थीं। वह अपने छोटे हाथों से कपड़े धोती थीं, उन्हें रस्सी पर टांगती थीं, मेरी कमीज़ें और मोज़े सिलती थीं, खाना बनाती थीं, यहाँ तक कि मेरी बहन की भी मदद करती थीं। उनका व्यवहार कितना अच्छा था, वह कितनी दयालु थीं! उन्होंने सबको अपना दीवाना बना लिया था। वह कितनी बुद्धिमान थीं! मैंने उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाया। उन्होंने दो महीने में कुरान पढ़ना सीख लिया था। उन्होंने कविताएँ याद कर ली थीं। हम तीन साल साथ रहे, मेरे जीवन के सबसे अच्छे साल। किस्मत की बात है, उसी समय मैं एक खूबसूरत विधवा का वकील बन गया जो धनी भी थी: मैं उन पर बहुत मोहित हो गया, ठीक है, जब तक कि मुझे उनसे शादी करने का ख्याल नहीं आया। मुझे नहीं पता कि किस बदमाश ने मेरी पत्नी को यह खबर दी। महोदय, भगवान करे आपको कभी ऐसा दिन न देखना पड़े। यह महिला जो दिखने में इतनी भोली और नासमझ थी! मुझे नहीं पता था कि वह इतनी समझदार हो सकती हैं। ईर्ष्या। चाहे मैंने मीठी-मीठी बातों से उसे बहलाने की कितनी ही कोशिश की हो, क्या मैं उसके लायक था? विधवा पर मेरी फीस का कुछ हिस्सा बकाया होने के बावजूद, मैंने उससे शादी न करने का फैसला किया और हमारा रिश्ता खत्म हो गया। लेकिन आपको नहीं पता कि मेरी पत्नी ने एक महीने तक मेरे लिए कितनी मुसीबतें खड़ी कीं!

"शायद वह पागल हो गई थी, शायद उस पर जादू कर दिया गया था। वह पूरी तरह बदल गई थी। उसने कमर पर हाथ रखकर मुझसे ऐसी बातें कहीं जिनकी कोई कल्पना भी नहीं कर

सकता। उसने कहा, 'मैं आशा करती हूँ कि तुम अपने ही धोखे भरे पगड़ी से घुटकर मर जाओ। मैं तुम्हारे शव पर वो चश्मा देखना चाहती हूँ। पहले ही दिन से मुझे एहसास हो गया था कि तुम मेरे लायक नहीं हो। मेरे पिता की दलाल आत्मा जल उठे, जिन्होंने मुझे तुम्हें सौंप दिया। आँखें खोलते ही मैंने देखा कि एक दलाल मुझे गले लगा रहा है। तीन साल से मैं तुम्हारी भीख माँगती आ रही हूँ। क्या यही मेरा इनाम था? भगवान हमें ऐसे बेईमान लोगों से निपटने से बचाए। मैं कसम खाती हूँ कि दोबारा ऐसी गलती नहीं करूँगी। तुम मुझे मजबूर नहीं कर सकते। मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहती। मुझे अपना दहेज वापस नहीं चाहिए, बस मुझे जाने दो। मैं कसम खाती हूँ कि मैं जाऊँगी, मैं जाऊँगी और शरण लूँगी। अभी। अभी।"

"उसने इतना कुछ कह दिया कि आखिरकार मुझे बहुत गुस्सा आया। सब कुछ मेरी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। जब हम रात का खाना खा रहे थे, मैंने थालियाँ उठाईं और उन्हें आँगन में फेंक दिया। शाम हो चुकी थी। हम उठे और साथ में शेख मेहदी के पास गए और उनकी मौजूदगी में मैंने अपनी पत्नी को तीन बार तलाक दे दिया।* उन्होंने अपना सिर हिलाया। अगले दिन मुझे पछतावा हुआ, लेकिन पछतावा करने का क्या फायदा, जब उससे कोई फायदा नहीं होने वाला था और मेरी पत्नी मेरे लिए वर्जित थी? कई दिनों तक मैं पागलों की तरह गलियों और बाज़ार में भटकता रहा। मैं इतना परेशान था कि अगर कोई परिचित मुझसे मिलता, तो मैं उसका अभिवादन भी नहीं कर पाता।"

उसके बाद मैं कभी खुश नहीं रहा। मैं उसे एक पल के लिए भी नहीं भूल पाया। मैं न खा पाता था, न सो पाता था। घर में रहना मेरे लिए असहनीय था: दीवारें मुझे कोसती थीं। दो महीने तक मैं बीमार बिस्तर पर पड़ा रहा। बेहोशी की हालत में मैं लगातार उसका नाम पुकारता रहता था। जब मेरी तबीयत सुधरने लगी, तो मुझे एहसास हुआ कि अगर मेरी इच्छा होती तो मैं सौ लड़कियों के साथ रह सकता था। लेकिन वह कुछ और ही थी। आखिरकार मैंने ठान लिया कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं उससे दोबारा शादी करूंगा। वह समय समाप्त हो गया जब वह दोबारा शादी नहीं कर सकती थी। मैंने हर संभव कोशिश की, लेकिन मुझे लगा कि कोई फायदा नहीं है। मैंने अपना सब कुछ बेच दिया, यहाँ तक कि कबाड़ भी: मैंने अठारह तोमान जमा किए। मेरे पास कोई और चारा नहीं था सिवाय एक कानूनी सलाहकार ढूंढने के, कोई ऐसा जो मेरी पत्नी से शादी करे और फिर उसे तलाक दे दे, ताकि सौ दिन की प्रतीक्षा अवधि के बाद मैं उससे दोबारा शादी कर सकूं।

हमारे मोहल्ले में एक निकम्मा और मसखरा दुकानदार रहता था। सात कुत्ते भी उसका चेहरा चाट लें, तो भी वो साफ नहीं होता था। वो ऐसा आदमी था जो एक प्याज के लिए किसी का सिर काट सकता था। मैंने उससे बात की और तय किया कि वो रोबाबेह से शादी करेगा, फिर उसे तलाक दे देगा, और मैं सारे खर्चे और पाँच तोमान दूँगा। और वो मान गया। लोगों के बहकावे में नहीं आना चाहिए – उस कमीने, उस निकम्मे आदमी के झांसे में मत आना..."

शाहबाज का चेहरा पीला पड़ गया, उसने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया और बोला, "वह किराने की दुकान वाला था? उसका नाम क्या था? वह किस तरह की दुकान चलाता था? वह किस मोहल्ले का रहने वाला था? नहीं... नहीं... ऐसा कुछ हो ही नहीं सकता।"

लेकिन मिर्ज़ा यदोल्लाह अपनी बातों में इतने मग्न थे और अतीत की घटनाएँ उनके लिए इतनी जीवंत हो उठी थीं कि वे रुके ही नहीं।

"उस कमीने दुकानदार ने मेरी पत्नी से शादी कर ली। तुम्हें पता नहीं, मुझे कितना बुरा लगा। वो औरत जो तीन साल से मेरी थी। अगर किसी ने उसका नाम भी लिया होता तो मैं उसे टुकड़े-टुकड़े कर देता। सोचो ज़रा: अब, मेरी ही मदद से, उसे उस अनपढ़ दुकानदार की पत्नी बनना पड़ा। मैंने मन ही मन सोचा, 'शायद ये मेरी उन अस्थायी पत्नियों का बदला है, जो मेरे तलाक के समय रोई थीं।' खैर, अगली सुबह मैं दुकानदार के घर गया। उसने मुझे एक घंटे तक इंतज़ार करवाया, जो मुझे एक सदी जैसा लगा। जब वो आया तो मैंने उससे कहा, 'अपनी बात पर अड़े रहो, रोबाबेह को तलाक दे दो, और तुम्हें पाँच तोमान मिल जाएँगे।' मुझे आज भी उसका शैतानी चेहरा याद है। वो हँसा और बोला, 'वो मेरी पत्नी है, मैं उसके सिर का एक बाल भी हज़ार तोमान में नहीं बेचूँगा।' मेरी आँखें गुस्से से लाल हो उठीं!"

शाहबाज कांपते हुए बोला, "नहीं, ऐसा कुछ नहीं हो सकता। मुझे सच बताओ। हे भगवान!..."

मिर्ज़ा यदोल्लाह ने कहा, "अब समझ में आया कि मैं सही था? अब समझ में आया कि मुझे दुकानदारों से इतनी नफ़रत क्यों है? जब उसने कहा कि वह उसके सिर का एक बाल भी हज़ार तोमान के लिए नहीं देगा, तो मैं समझ गया कि वह ज़्यादा पैसे चाहता है। लेकिन मोलभाव करने का समय किसके पास था? मैं दुखी था। मैं भयभीत था। मैं इतना परेशान था, और ज़िंदगी से इतना तंग आ चुका था कि मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया। मैंने उसे ऐसी नज़र से देखा जो किसी भी श्राप से भी बदतर थी। वहाँ से मैं सीधे एक पुराने कपड़ों की दुकान पर गया। मैंने अपना चोगा और लबादा बेच दिया और एक बकरम का चोगा खरीदा। मैंने एक फेल्ट की टोपी पहनी, अपने जूते ठीक किए और निकल पड़ा। तब से मैं एक कस्बे से दूसरे कस्बे, एक गाँव से दूसरे गाँव भटकता रहा हूँ, एक बेसुध आवारा की तरह। बारह साल हो गए हैं। मैं अब एक जगह नहीं रह सकता। कभी मैं कहानी सुनाता हूँ, कभी शिक्षक। मैं लोगों के लिए पत्र लिखता हूँ, चाय की दुकानों में शाहनामा पढ़ता हूँ, मैं खेलता हूँ बांसुरी। मुझे दुनिया और उसके लोगों को देखना अच्छा लगता है। मैं अपना जीवन इसी तरह बिताना चाहता हूँ। इससे बहुत कुछ सीखने को मिलता है। खैर, हम बूढ़े हो चुके हैं। हम एक मरे हुए घोड़े को कोड़े मार रहे हैं। हमारा एक पैर इस दुनिया में है और एक अगली दुनिया में। यह बहुत दुख की बात है कि हम अपने अर्जित अनुभव का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। कवि ने कितनी अच्छी बात कही है:

एक बुद्धिमान और कुशल व्यक्ति
एक बार नहीं, बल्कि दो बार जीना चाहिए:
शुरुआत में अनुभव प्राप्त करने के लिए,
फिर अपनी ही सलाह का पालन करना।

इस समय तक मिर्ज़ा यदोल्लाह थक चुके थे। ऐसा लग रहा था मानो ज़्यादा सोचने और बोलने के कारण उनके जबड़े काम करना बंद कर चुके हों। उन्होंने हाथ बढ़ाकर अपनी पाइप उठाई और

पाइप की ओर देखते हुए पहाड़ के उस पार से आती धीमी, मंद धुन को सुनने लगे।

शाहबाज ने अपने हाथों से सिर उठाया। उसने आह भरी और कहा, "हर जोड़ी के काम को पूरा करने के लिए तीसरी क्रिया की आवश्यकता होती है!"

मिर्ज़ा यदोल्लाह भ्रमित थे और उन्होंने ध्यान नहीं दिया।

शाहबाज ने और जोर से कहा, "वह एक और अमीर आदमी को कंगाल और आवारा बना देगी।"

यादोल्लाह को होश आया और उसने कहा, "कौन?"

“वो कुतिया रोबाबेह।”

मिर्ज़ा यदोल्लाह की आँखें फटी रह गईं। हैरान होकर उन्होंने पूछा, "आपका क्या मतलब है?"

मशादी शाहबाज़ ने बनावटी हंसी हंसते हुए कहा, “यह सच है कि जीवन इंसान को बदल देता है। उसका चेहरा झुर्रियों से भर जाता है, बाल सफेद हो जाते हैं, दांत गिरने लगते हैं। उसकी आवाज़ बदल जाती है। आपने मुझे पहचाना नहीं और मैंने आपको नहीं पहचाना।”

मिर्ज़ा यदोल्लाह ने पूछा, "क्या?"

“क्या रोबाबेह के चेहरे पर चेचक का निशान नहीं था? क्या वह बहुत ज्यादा पलकें नहीं झपकाती थी?”

मिर्ज़ा यदोल्लाह चिढ़कर बोले, "तुम्हें किसने बताया?"

मशादी शाहबाज़ हँसते हुए बोले, “क्या आप वही शेख यदुल्लाह नहीं हैं, जो दिवंगत शेख रसूल के पुत्र हैं और सार्वजनिक स्नानघर वाली गली में रहते थे? आप हर सुबह मेरी दुकान के पास से गुज़रते थे। मैं ही वह वैधीकरणकर्ता हूँ, वही।”

मिराज यदोल्लाह ने गौर से देखा और कहा, “तुम ही हो जिसने पिछले बारह सालों से मेरी जिंदगी ऐसी बना रखी है? तुम ही हो शाहबाज किराना दुकानदार? एक ज़माना था जब अगर मैं तुम्हें इन पहाड़ों में पा लेता तो हम दोनों से लड़ पड़ते। अफसोस की बात है कि समय ने हम दोनों के हाथ बांध दिए हैं।” फिर वह मन ही मन बुदबुदाया, “बहुत खूब, रोबाबेह, तुमने मेरा बदला ले लिया। वह भी मेरी ही तरह भटक रहा है।” एक बार फिर वह चुप हो गया, उसके होंठों पर दर्द भरी मुस्कान थी।

उनके सामने वाली बेंच पर सो रहा व्यक्ति करवट बदला, उठ बैठा, जम्हाई ली और अपनी आंखें मलीं।

मशादी शाहबाज़ और मिर्ज़ा यदोल्लाह ने एक-दूसरे को दबे पांव देखा, उनकी नज़रें मिलने से उन्हें डर लग रहा था। दो कट्टर दुश्मन, जिनके प्रेम संघर्ष अब समाप्त हो चुके थे। अब उन्हें मृत्यु के बारे में सोचना चाहिए था।

कुछ देर की चुप्पी के बाद, शाहबाज ने कॉफी हाउस के ग्राहक की ओर मुड़कर कहा, "दश अकबर, हमारे लिए दो कप चाय लाओ।"

व्हर्लपूल

(खून की तीन बूंदों से)

(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

होमायून मन ही मन बुदबुदा रहा था, "क्या यह सच है?... क्या ऐसा हो सकता है? इतना जवान, लेकिन शाह अब्दोलअज़ीम कब्रिस्तान* में हज़ारों अन्य शवों के बीच ठंडी, नम ज़मीन में पड़ा हुआ... कफ़न उसके शरीर से चिपका हुआ है। क्या वह फिर कभी बसंत का आगमन, पतझड़ का अंत या आज जैसे घुटन भरे उदास दिन नहीं देख पाएगा... क्या उसकी आँखों की चमक और उसकी आवाज़ का मधुर स्वर पूरी तरह बुझ गया है?... वह जो हँसी से भरा रहता था और इतनी मनोरंजक बातें करता था?..."

आसमान बादलों से घिरा था और खिड़की पर भाप की एक पतली परत जमी हुई थी। खिड़की से बाहर देखने पर पड़ोसी का घर दिखाई दे रहा था। पड़ोसी की टिन की छत बर्फ की पतली परत से ढकी हुई थी। बर्फ के टुकड़े हवा में धीरे-धीरे और करीने से घूमते हुए छत के किनारे पर गिर रहे थे। चिमनी से काला धुआं निकल रहा था, जो धूसर आसमान में लहराता और घूमता हुआ धीरे-धीरे गायब हो रहा था।

होमायून अपनी युवा पत्नी और छोटी बेटी होमा के साथ गैस हीटर के सामने बैठे थे। वे पारिवारिक कक्ष में थे, लेकिन पहले की तरह, जब शुक्रवार को इस कमरे में हंसी-खुशी का माहौल रहता था, आज वे सब उदास और चुप थे। यहां तक कि उनकी छोटी बेटी, जो आमतौर पर माहौल को खुशनुमा बना देती थी, आज उदास और मायूस लग रही थी। उसने अपने पास प्लास्टर की एक गुड़िया रखी हुई थी - गुड़िया का चेहरा टूटा हुआ था - और बाहर घूर रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उसे भी कुछ गड़बड़ महसूस हो रही हो, और गड़बड़ यह थी कि प्यारे चाचा बहराम अपनी आदत के अनुसार उनसे मिलने नहीं आए थे। उसे यह भी लग रहा था कि उसके माता-पिता की उदासी उन्हीं की वजह से है: काले कपड़े, नींद की कमी से लाल आंखें और हवा में उड़ता सिगरेट का धुआं, ये सब इस संदेह को और पुख्ता कर रहे थे।

होमायून गैस हीटर की आग को घूर रहा था, लेकिन उसके विचार कहीं और थे। अपनी इच्छा के विरुद्ध, उसके विचार सर्दियों में उसके स्कूली दिनों में खो गए थे। आज जैसे दिन, जब बर्फ एक फुट ऊंची होती थी। जैसे ही छुट्टी की घंटी बजती, उसके और बहरम के सामने किसी का कोई बस नहीं चलता था। वे हमेशा एक ही खेल खेलते थे। वे बर्फ के गोले को ज़मीन पर तब तक लुढ़काते जब तक वह एक बड़ा ढेर न बन जाए। फिर बच्चे दो समूहों में बंट जाते और उस ढेर को बैरिकेड बनाकर बर्फ के गोले फेंकने का खेल शुरू कर देते। ठंड का एहसास किए बिना, ठंड से जलते लाल हाथों से वे एक-दूसरे पर बर्फ के गोले फेंकते। एक दिन जब वे इस खेल में मग्न थे, होमायून ने मुट्ठी भर बर्फीली बर्फ को इकट्ठा किया और बहरम पर फेंक दिया, जिससे उसके माथे पर चोट लग गई। सुपरवाइज़र आया और उसने उसके हाथ की हथेली पर कई कोड़े मारे। शायद तभी से बहरम के साथ उसकी दोस्ती शुरू हुई थी, और हाल तक जब भी वह बहरम के माथे पर उस निशान को देखता, तो उसे अपने हाथ की हथेली पर लगी वह मार याद आ जाती थी। अठारह वर्षों के अंतराल में उनकी आत्मा और विचार इतने करीब आ गए थे कि वे न केवल एक-

दूसरे को अपने बेहद निजी विचार और भावनाएं बताते थे, बल्कि एक-दूसरे के कई अनकहे आंतरिक विचारों को भी समझ लेते थे।

उन दोनों के विचार, पसंद और स्वभाव लगभग एक जैसे थे। अब तक उनके बीच कभी कोई मतभेद या छोटी-मोटी अनबन नहीं हुई थी। फिर परसों की सुबह, होमायून को दफ्तर में फोन आया कि बहराम मिर्ज़ा ने आत्महत्या कर ली है। उसी वक्त होमायून जल्दी से बहराम के पास गए। उन्होंने बहराम के चेहरे पर लिपटा सफेद कपड़ा धीरे से हटाया - वह खून से सना हुआ था। उनकी पलकें खून से लथपथ थीं, उनका दिमाग तकिये पर बिखरा हुआ था, कालीन पर खून के धब्बे थे और उनके रिश्तेदारों का रोना-धोना और व्यथा होमायून को ऐसा झकझोर रही थी मानो उन पर बिजली गिर पड़ी हो। बाद में, कदम-कदम चलते हुए वे सूर्यास्त तक ताबूत के साथ-साथ चलते रहे, जब उन्हें दफना दिया गया। उन्होंने फूलों का गुलदस्ता मंगवाया जो लाया गया। उन्होंने उसे कब्र पर रखा और आखिरी विदाई के बाद भारी मन से घर लौट आए। लेकिन उस दिन के बाद से उसे एक पल भी चैन नहीं मिला था, वह सो नहीं पा रहा था और उसकी कनपटी पर सफेद बाल उग आए थे। उसके सामने सिगरेट का एक पैकेट रखा था और वह लगातार सिगरेट पीता रहता था।

यह पहली बार था जब होमायून ने मृत्यु की समस्या पर गहराई से विचार किया था, लेकिन उनके विचार किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे। कोई भी राय या अनुमान उन्हें संतुष्ट नहीं कर सका।

वह पूरी तरह से स्तब्ध था और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। कभी-कभी वह पागलपन जैसी स्थिति में पहुँच जाता था। लाख कोशिश करने के बावजूद वह भूल नहीं पा रहा था। उनकी दोस्ती प्राथमिक विद्यालय में शुरू हुई थी और उनका जीवन लगभग पूरी तरह से एक-दूसरे से जुड़ा हुआ था। वे सुख-दुख में साथी थे, और जब भी वह बहराम की तस्वीर की ओर देखता, उसकी सारी पुरानी यादें ताज़ा हो जातीं और वह उसे देख लेता: सुनहरी मूंछें, नीली, चौड़ी आँखें, छोटा मुँह, पतली ठुड्डी, उसकी ज़ोरदार हँसी और गला साफ़ करने का तरीका, सब कुछ उसकी आँखों के सामने आ जाता। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि बहराम मर गया है, और वह भी इतनी अचानक! बहराम ने उसके लिए कितने बलिदान दिए थे, उन तीन सालों में जब वह ड्यूटी पर बाहर था और बहराम घर का सारा काम संभाल रहा था! होमायून की पत्नी बद्री के अनुसार, "उसने हमारे लिए सब कुछ किया। हमें किसी बात की चिंता नहीं करनी पड़ी।"

अब होमायून को जीवन का बोझ महसूस होने लगा था, और उसे बीते दिन याद आने लगे थे जब वे इसी कमरे में इतने आत्मीयता से इकट्ठा होते थे। वे बैकगैमोन खेलते थे और समय का बिल्कुल ध्यान नहीं रखते थे। लेकिन सबसे ज़्यादा उसे यह बात सता रही थी कि जब वे इतने करीब थे और एक-दूसरे से कुछ नहीं छिपाते थे, तो बहराम ने आत्महत्या करने का फैसला करने से पहले उससे सलाह क्यों नहीं ली? कारण क्या था? क्या वह पागल हो गया था या इसमें कोई पारिवारिक रहस्य शामिल था? वह लगातार खुद से यही सवाल पूछता रहता था। आखिरकार उसे एक विचार आया। उसने अपनी पत्नी बद्री के पास शरण ली और उससे पूछा, "क्या तुम्हें कोई शक है? क्या तुम्हें कोई अंदाज़ा है कि बहराम ने ऐसा क्यों किया?"

कढ़ाई में मग्न दिख रही बद्री ने अपना सिर उठाया और मानो उसे इस तरह के सवाल की

उम्मीद ही न हो, अनिच्छा से बोली, "मुझे कैसे पता चलेगा? क्या उसने तुम्हें नहीं बताया?"

"नहीं... इसीलिए तो मैंने पूछा था... मुझे भी इस बात पर हैरानी हुई... यात्रा से लौटने पर मुझे लगा कि वह बदल गया है। लेकिन उसने मुझसे कुछ नहीं कहा। मुझे लगा कि उसकी यह चिंता ऑफिस के काम की वजह से है... क्योंकि घर में बंद रहने से वह उदास हो जाता था, उसने मुझे कई बार बताया था... लेकिन उसने मुझसे कुछ नहीं छिपाया।"

भगवान उनकी आत्मा को शांति दे! वे कितने जीवंत और खुशमिजाज थे। यह उनके स्वभाव के विपरीत है।

"नहीं, वह ऐसा होने का नाटक करता था; कभी-कभी वह बदल जाता था और बिल्कुल अलग व्यवहार करता था... जब वह अकेला होता था... एक बार जब मैं उसके कमरे में दाखिल हुई और उसे पहचान नहीं पाई, तो उसने अपना सिर हाथों के बीच रखा हुआ था और सोच रहा था। जैसे ही उसने देखा कि मैं चौंक गई हूँ, वह हँस पड़ा और हमेशा की तरह मज़ाक करने लगा ताकि अपनी गलती छुपा सके। वह एक अच्छा अभिनेता था!"

"शायद कोई ऐसी बात थी जो वह तुम्हें बताने से डर रहा था, कहीं तुम्हें दुख न पहुँच जाए। शायद वह तुम्हारा ख्याल रख रहा था और तुम्हारे बारे में सोच रहा था। आखिर तुम्हारी पत्नी और बच्चा है, तो तुम्हें भी तो जीवन में आगे बढ़ना है। लेकिन वह..." उसने अर्थपूर्ण ढंग से सिर हिलाया, मानो उसकी आत्महत्या का कोई महत्व ही न हो। एक बार फिर सन्नाटे ने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया। होमायून को लगा कि उसकी पत्नी के शब्द सच्चे नहीं थे और उसने ये सब मजबूरी में कहा था। वही औरत जो आठ साल पहले उसकी पूजा करती थी, जिसके प्रेम के बारे में इतने कोमल विचार थे! उसे लगा जैसे उसकी आँखों से पर्दा हट गया हो। उसकी पत्नी के सांत्वना देने के प्रयास ने उसे उससे घृणा करने पर मजबूर कर दिया, खासकर बहराम की यादों के सामने। वह अपनी पत्नी से ऊब गया था। वह भौतिकवादी, बुद्धिमान और परिपक्व हो गई थी, और धन और सांसारिक जीवन के बारे में सोचने लगी थी और दुख और शोक को जगह नहीं देना चाहती थी। और उसने इसका कारण यह बताया कि बहराम की पत्नी और बच्चा नहीं था। कितना घटिया विचार! चूंकि उसने स्वयं को इस सामान्य सुख से वंचित रखा था, इसलिए उसकी मृत्यु पर शोक का कोई कारण नहीं था। क्या उसका बच्चा संसार में उसके मित्र से अधिक मूल्यवान था? बिलकुल नहीं! क्या बहराम शोक का पात्र नहीं था? क्या उसे संसार में उसके जैसा कोई और मिलेगा?

बहरम की मृत्यु हो जाए और ये नब्बे साल की बुढ़िया सैयद खानोम ज़िंदा रहे! वो आज बर्फ़ और ठंड में, पह चेनर* से डंडे के सहारे लंगड़ाते हुए बहरम के घर आई थी, ताकि अल्लाह का आशीर्वाद पाने के लिए बाँटा जाने वाला हलवा खा सके। यही अल्लाह की मर्ज़ी थी, और उसकी पत्नी की नज़र में ये स्वाभाविक था, और उसकी पत्नी बद्री भी एक दिन इस सैयद खानोम जैसी हो जाएगी। अभी भी बिना मेकअप के भी वो अलग दिखती है। उसका रूप बहुत बदल गया था। उसकी आवाज़ और आँखों के भाव बदल गए थे। सुबह जब वो काम पर जाता, वो सो रही होती। उसकी आँखों के चारों ओर झुर्रियाँ पड़ गई थीं और उनकी चमक फीकी पड़ गई थी। शायद उसकी पत्नी को भी उसके बारे में ऐसा ही लगता हो, कौन जाने? क्या वो खुद नहीं बदल गया

था? क्या वो वही पुराना दयालु, आज्ञाकारी और सुंदर होमायून था? क्या उसने अपनी पत्नी को धोखा नहीं दिया था? लेकिन ये विचार उसके मन में क्यों आया? क्या यह नींद की कमी के कारण था या अपने दोस्त की दर्दनाक यादों के कारण?

इसी समय दरवाजा खुला और एक नौकरानी, जिसने अपने चदोर का कोना अपने दांतों के बीच दबा रखा था, एक बड़ा सीलबंद पत्र लेकर आई, उसे होमायून को दिया और चली गई। होमायून ने लिफाफे पर बहराम की छोटी, अनियमित लिखावट पहचान ली, जल्दी से उसे खोला, एक पत्र निकाला और पढ़ा:

अब, मेहर 1311* के तेरहवें दिन सुबह 1:30 बजे, मैं, बहराम मिर्ज़ा अर्जनपुर, अपनी स्वतंत्र इच्छा और पसंद से, अपनी सभी संपत्ति मिस होमा महाफरीद को वसीयत कर रहा हूँ।

बहराम अर्जनपुर

आश्चर्यचकित होकर होमायून ने पत्र को दोबारा पढ़ा और फिर विस्मय की स्थिति में उसे अपने हाथ से फिसलने दिया।

बद्री, जो तिरछी नजरों से उसे देख रही थी, ने पूछा, "यह पत्र किसने भेजा है?"

बहराम।

वह क्या कहता है?

क्या आपको पता है कि उसने अपनी सारी संपत्ति होमा को दे दी है?

“कितना बढ़िया आदमी है!”

आश्चर्य और स्नेह से भरी इस अभिव्यक्ति ने बहराम को अपनी पत्नी से और भी अधिक घृणा करने पर मजबूर कर दिया। लेकिन अनजाने में ही उसकी नज़र बहराम की तस्वीर पर पड़ी। फिर उसने होमा की ओर देखा। अचानक उसके मन में कुछ ऐसा आया कि वह असहाय होकर कांपने लगा। मानो उसकी आँखों के सामने से एक और पर्दा गिर गया हो: इसमें कोई संदेह नहीं था कि उसकी बेटी बहराम से मिलती-जुलती थी। वह न तो बहराम जैसी दिखती थी और न ही अपनी माँ जैसी। दोनों में से किसी की भी नीली आँखें नहीं थीं। छोटा मुँह, पतली ठुड्डी, वास्तव में उसके चेहरे की हर एक विशेषता बहराम जैसी थी। होमयून समझ गया कि बहराम होमा से इतना प्रेम क्यों करता था और अपनी मृत्यु के बाद उसने अपनी सारी संपत्ति उसे क्यों दे दी थी! क्या यह बच्ची, जिससे वह इतना प्रेम करता था, बहराम और उसकी पत्नी के बीच घनिष्ठता का परिणाम थी? और क्या बहराम, एक ऐसा मित्र था जिसकी आत्मा उसी के समान थी और जिस पर उसे इतना विश्वास था? उसकी पत्नी सालों से उसकी जानकारी के बिना उसके साथ अंतरंग संबंध बनाए हुए थी और बहराम ने इतने समय तक उसे धोखा दिया, उसका मज़ाक उड़ाया और अब उसने यह वसीयत भी भेज दी, मरने के बाद यह अपमान। नहीं, वह यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकता था। ये विचार बिजली की तरह उसके दिमाग में कौंध गए। उसका सिर दुखने लगा, उसके गाल ठंडे पड़ गए, उसने बद्री पर गुस्से भरी नज़र डाली और कहा, "क्या कहते हो, बहराम ने ऐसा क्यों किया? क्या उसके भाई-बहन नहीं थे?"

“क्योंकि वह इस बच्चे से बहुत प्यार करता था। जब आप बंदरगाज़* में थे, होमा को खसरा हो गया था। दस दिन और दस रात तक वह आदमी इस बच्चे के बिस्तर के पास नर्स बनकर उसकी सेवा करता रहा। भगवान उसकी आत्मा को शांति दे!”

होमायून ने गुस्से से कहा, "नहीं, यह इतना आसान नहीं है..."

“यह इतना आसान क्यों नहीं है? हर कोई तुम्हारी तरह उदासीन नहीं होता, जो अपनी पत्नी और बच्चे को तीन साल के लिए छोड़कर चला गया। और जब तुम लौटे, तो खाली हाथ लौटे; मेरे लिए एक जोड़ी मोज़े तक नहीं लाए। लोग स्नेह देने के माध्यम से दिखाते हैं। उसके लिए, तुम्हारे बच्चे से प्यार करना, तुमसे प्यार करने के बराबर था। आखिर, वह होमा से प्यार तो नहीं करता था! और फिर क्या तुम्हें यह एहसास नहीं हुआ कि वह उसकी आँखों का तारा थी?...”

"नहीं, तुम मुझे सच नहीं बता रहे हो।"

“आप मुझसे क्या कहना चाहते हैं? मुझे समझ नहीं आ रहा।”

आप अज्ञानता का नाटक कर रहे हैं।

“मतलब क्या?... कोई और आत्महत्या कर लेता है, कोई और अपनी संपत्ति दान कर देता है और मुझे इसके लिए जिम्मेदार ठहराया जा रहा है?”

मुझे इतना तो पक्का पता है: तुम सब कुछ नहीं बता रहे हो।

“जानते हो क्या? मुझे इशारे और संकेत समझ नहीं आते। जाओ और इलाज करवाओ, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, तुम्हारा दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा है। मुझसे क्या चाहते हो?”

क्या आपको लगता है कि मुझे नहीं पता?

"अगर आपको पता है तो आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं?"

होमायून ने अधीरता से चिल्लाते हुए कहा, "बस बहुत हो गया। तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो!" फिर उसने बहराम की वसीयत उठाई, उसे मसलकर गैस हीटर में फेंक दिया, जहाँ वह भड़क उठी और राख हो गई।

बद्री ने हाथ में पकड़ा हुआ बैंगनी कपड़ा नीचे फेंक दिया, उठ खड़ी हुई और बोली, “तो तुम मुझसे द्वेष कर रहे हो, ठीक है, लेकिन तुम अपने बच्चे को थोड़ी छूट क्यों नहीं दे सकते?” होमायून उठा, मेज से टिक गया और व्यंग्य भरे लहजे में बोला, “मेरा बच्चा... मेरा बच्चा?... तो फिर वह बहरम जैसी क्यों दिखती है?” उसने अपनी कोहनी से उस जड़ाऊ फ्रेम पर प्रहार किया जिसमें बहरम की तस्वीर लगी थी और वह फर्श पर गिर गई।

अब तक रूठा बैठा बच्चा अचानक ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। बद्री, जिसका चेहरा पीला पड़ गया था, ने धमकी भरे लहजे में कहा, “तुम्हारा क्या मतलब है? तुम क्या कहना चाह रहे हो?”

“मैं कहना चाहती हूँ कि तुमने आठ साल तक मुझे धोखा दिया, मेरा मजाक उड़ाया। आठ साल तक तुम मेरे लिए एक कलंक रही हो, पत्नी नहीं...”

“मेरे लिए?... मेरी बेटी के लिए?”

होमायून ने गुस्से भरी हंसी के साथ तस्वीर दिखाते हुए हांफते हुए कहा, "हां, तुम्हारी बेटी... तुम्हारी बेटी... उसे गोद में उठाओ और देखो। मैं कहना चाहती हूं कि अब मेरी आंखें खुल गई हैं, मुझे समझ आ गया है कि उसने सब कुछ उसके नाम क्यों कर दिया, वह एक दयालु पिता था।

लेकिन तुम - आठ साल हो गए हैं..."

"मैं तुम्हारे घर में रही हूँ, मैंने हर तरह की कठिनाई झेली है, मैंने तुम्हारी मुसीबतों को सहन किया है, जब तुम यहाँ नहीं थे तो मैंने तीन साल तक तुम्हारे घर की देखभाल की है, फिर बाद में मुझे पता चला कि तुम बांदरगाज़ में एक रूसी वेश्या के प्यार में पड़ गए थे, और अब मुझे यह इनाम मिल रहा है। तुम्हें कोई बहाना नहीं मिल रहा, इसलिए तुम कहते हो कि मेरा बच्चा बहराम जैसा दिखता है। लेकिन मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती। मैं इस घर में एक मिनट भी नहीं रहूँगी। चलो, प्रिय... चलते हैं।"

होमा, पीली पड़ चुकी और डरी हुई, कांप रही थी और अपने पिता और माता के बीच इस अजीब और अप्रत्याशित झगड़े को देख रही थी। रोते हुए उसने अपनी माँ का आँगन पकड़ा और दोनों दरवाजे की ओर चल पड़ीं। दरवाजे के पास बद्री ने अपनी जेब से चाबी का गुच्छा निकाला और उसे ज़ोर से फेंका, जिससे वह होमायून के पैरों के सामने लुढ़क गया। होमा के रोने और हॉल में कदमों की आहट धीमी पड़ गई। दस मिनट बाद, बर्फ और ठंड में उन्हें ले जाती हुई एक ड्रोश्की (छोटी गाड़ी) के पहियों की आवाज़ सुनाई दी। होमायून अपनी जगह पर अचंभित और चक्कर खा रहा था। उसे अपना सिर उठाने में डर लग रहा था: वह विश्वास नहीं करना चाहता था कि ये घटनाएँ सच हैं। वह खुद से पूछ रहा था कि क्या वह पागल हो गया है या कोई बुरा सपना देख रहा है। खैर, जो बात स्पष्ट थी वह यह थी कि यह घर और यह जीवन उसके लिए असहनीय हो गया था, और उसकी बेटी होमा, जिसे वह बहुत प्यार करता था, अब वह उसे देख भी नहीं सकता था। वह उसे चूम नहीं सकता था, उसे सहला नहीं सकता था। उसकी सहेली की यादें धुंधली पड़ गई थीं। सबसे बुरी बात यह थी कि, उसकी जानकारी के बिना, आठ वर्षों से उसकी पत्नी उसके इकलौते दोस्त के साथ उसे धोखा दे रही थी और उसके परिवार के दिल को दूषित कर रही थी। यह सब उससे छिपा हुआ था, उसकी जानकारी के बिना! वे सभी बहुत अच्छे अभिनेता थे। केवल वही मूर्ख बना और उपहास का पात्र बना। अचानक वह अपने जीवन से पूरी तरह ऊब गया, हर चीज और हर किसी से उसका मोहभंग हो गया। वह असीम रूप से अकेला और पराया महसूस कर रहा था। उसके पास दूर के शहर या दक्षिण के किसी बंदरगाह पर किसी प्रशासनिक मिशन पर भेजे जाने और अपना शेष जीवन वहीं बिताने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, या फिर स्वयं को समाप्त कर लेना: ऐसी जगह जाना जहाँ वह किसी को न देखे, किसी की आवाज न सुने, किसी गड्ढे में सोए और फिर कभी न जागे। क्योंकि पहली बार उसे महसूस हुआ कि उसके और उसके आसपास के सभी लोगों के बीच एक भयानक भंवर मौजूद है जिसे उसने अब तक महसूस नहीं किया था।

उसने सिगरेट जलाई और कुछ कदम चला। एक बार फिर वह मेज से टिक गया। खिड़की के बाहर बर्फ के टुकड़े धीरे-धीरे, करीने से और बेपरवाही से टिन की छत के किनारे पर गिर रहे थे, मानो किसी रहस्यमयी संगीत की धुन पर नाच रहे हों। अनजाने में ही उसे वे खुशहाल और सुखद दिन याद आ गए जब वह अपने माता-पिता के साथ इराक में अपने गाँव जाया करता था। उन दिनों वह पेड़ों की छाँव में घास पर अकेला सोता था, ठीक उसी जगह जहाँ शिर अली पाइप पीते थे और अनाज पीसने की मशीन के पहिये पर बैठते थे। शिर अली की बेटी, जिसने लाल चादर

ओढ़ी हुई थी, वहाँ घंटों अपने पिता का इंतज़ार करती रहती थी। अनाज पीसने की मशीन अपनी दर्द भरी आवाज़ के साथ गेहूँ के सुनहरे डंठलों को कुचलती थी। लंबे सींगों और चौड़े माथे वाली गायें, जिनकी गर्दनें जुए से छिल गई थीं, रात होने तक गोल-गोल घूमती रहती थीं। अब उसकी हालत भी उन्हीं गायों जैसी थी। अब वह समझ गया था कि ये जानवर क्या महसूस करते थे। वह भी अपनी जिंदगी आँखें बंद करके, एक अंतहीन चक्र में, चक्की पर दौड़ते घोड़े की तरह, गेहूँ के डंठलों को कुचलती गायों की तरह गुजार चुका था। उसे वे नीरस घंटे याद थे जब वह छोटे से सीमा शुल्क कक्ष में डेस्क के पीछे बैठकर लगातार एक ही कागज़ों पर लिखता रहता था। कभी-कभी उसका सहकर्मी घड़ी देखकर जम्हाई लेता, लेकिन वह अपना काम जारी रखता, उन्हीं संख्याओं को उनके सही कॉलम में लिखता रहता। वह जाँचता, जोड़ता, नोटबुक को उलट-पलट कर देखता – लेकिन उस समय उसके पास खुश होने का कुछ कारण था। वह जानता था कि यद्यपि उसकी दृष्टि, उसकी सोच, उसकी जवानी और उसकी ताकत धीरे-धीरे कम हो रही थी, फिर भी उसके पास खुश रहने का कुछ कारण था। वह जानता था कि जब वह रात को घर लौटता और बहरम, उसकी बेटी और उसकी पत्नी को मुस्कुराते हुए देखता, तो उसकी सारी थकान गायब हो जाती। लेकिन अब वह उन तीनों से घृणा करता था। उन्हीं तीनों ने उसे इस हालत में पहुँचाया था।

जैसे उसने अचानक कोई फैसला लिया हो, वह अपनी डेस्क पर गया और बैठ गया। उसने एक दराज खोली और उसमें से एक छोटी पिस्तौल निकाली जिसे वह यात्रा के दौरान हमेशा अपने साथ रखता था। उसने उसे जांचा। गोलियां अपनी जगह पर थीं। उसने ठंडी काली नली के अंदर देखा और धीरे से पिस्तौल को अपनी कनपटी की ओर बढ़ाया, लेकिन फिर उसे बहराम का खून से सना चेहरा याद आ गया। अंत में उसने पिस्तौल को अपनी पतलून की जेब में रख लिया।

वह फिर उठा। हॉल में उसने अपना ओवरकोट और गैलोश पहने। उसने छाता भी उठाया और घर से निकल गया। गली सुनसान थी। बर्फ के टुकड़े धीरे-धीरे हवा में घूम रहे थे। वह बिना किसी झिझक के चल पड़ा, हालांकि उसे पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है। वह बस भागना चाहता था, अपने घर से, इन डरावनी घटनाओं से बहुत दूर जाना चाहता था।

वह एक ठंडी, सफेद और उदास सड़क पर निकला। गुजरती हुई गाड़ियों के पहियों ने सड़क के बीचोंबीच गहरी लकीरें बना दी थीं। वह लंबे-लंबे कदमों से चल रहा था। एक कार उसके पास से गुजरी और सड़क से बर्फ और कीचड़ के छींटे उसके सिर और चेहरे पर पड़े। वह रुका और अपने कपड़ों को देखने लगा। वे कीचड़ से भीगे हुए थे और मानो उन्हें तसल्ली दे रहे हों। चलते-चलते उसे माचिस बेचता एक छोटा लड़का मिला। उसने उसे आवाज़ दी। उसने माचिस की एक डिब्बी खरीदी, लेकिन जब उसने लड़के का चेहरा देखा तो पाया कि उसकी नीली आँखें, छोटे होंठ और सुनहरे बाल थे। उसे बहरम की याद आ गई, उसका शरीर काँप उठा और वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया। अचानक वह एक दुकान की खिड़की के सामने रुक गया। वह आगे बढ़ा और अपना माथा ठंडे शीशे पर टिका दिया। उसकी टोपी लगभग गिर ही गई। खिड़की के पीछे खिलौने रखे थे। उसने भाप साफ करने के लिए अपनी आस्तीन शीशे पर रगड़ी, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। लाल चेहरे और नीली आँखों वाली एक बड़ी गुड़िया उसके सामने मुस्कुराती खड़ी थी। वह

कुछ देर तक उसे देखता रहा। उसने सोचा कि अगर यह गुड़िया होमा की होती तो वह कितनी खुश होती। दुकानदार ने दरवाजा खोला। वह फिर से चलने लगा और दो और गलियों से गुजरा। रास्ते में एक मुर्गी बेचने वाला अपनी टोकरी के पास बैठा था। टोकरी में तीन मुर्गियाँ और एक मुर्गा रखा था, जिनके पैर आपस में बंधे हुए थे। ठंड से उनके लाल पैर काँप रहे थे। मुर्गी बेचने वाले के पास बर्फ पर खून की लाल बूँदें गिरी हुई थीं। थोड़ा आगे, एक घर के सामने दाद से पीड़ित एक लड़का बैठा था। लड़के की बाहें फटी हुई कमीज से बाहर निकली हुई थीं।

अपने आस-पास के वातावरण या रास्ते को पहचाने बिना ही उसने यह सब देखा। उसे गिरती बर्फ का एहसास नहीं हुआ, और उसने जो बंद छाता उठाया था, उसे उसने अपने हाथ में ही बंद रखा। वह एक और सुनसान गली में गया और एक घर की सीढ़ियों पर बैठ गया। बर्फ और तेज़ी से गिर रही थी। उसने अपना छाता खोला। गहरी थकान उस पर हावी हो गई थी। उसका सिर भारी लग रहा था। उसकी आँखें धीरे-धीरे बंद होने लगीं। आती-जाती आवाज़ों ने उसे होश में लाया। वह उठा। आसमान अंधेरा हो चुका था। उसे दिन भर की सारी घटनाएँ याद आ गईं: दाद से पीड़ित वह लड़का जिसे उसने एक घर के सामने देखा था और जिसकी फटी हुई कमीज़ के नीचे से उसकी बाहें दिख रही थीं, टोकरी में बंद मुर्गियों के लाल, गीले पैर जो ठंड से काँप रहे थे, और बर्फ पर गिरा खून। उसे थोड़ी भूख लगी थी। उसने एक बेकरी से मीठी रोटी खरीदी। वह चलते-चलते उसे खाता रहा और अनजाने में ही गली में एक परछाई की तरह घूमता रहा।

जब वह अपने घर में दाखिल हुआ, तो सुबह के दो बज रहे थे। वह आरामकुर्सी पर बैठ गया। एक घंटे बाद ठंड से उसकी नींद खुली, वह अपने कपड़ों में ही बिस्तर पर लेट गया और अपने सिर पर रजाई ओढ़ ली। उसने सपना देखा कि कहीं किसी कमरे में वही लड़का, जो माचिस बेचता था, काले कपड़े पहने एक मेज के पीछे बैठा है, जिस पर नीली मुस्कुराती आँखों वाली एक बड़ी गुड़िया रखी है, और उसके सामने तीन लोग सीने पर हाथ जोड़े खड़े हैं। उसकी बेटी होमा अंदर आई। उसके हाथ में एक मोमबत्ती थी। उसके पीछे एक आदमी अंदर आया जिसने अपने चेहरे पर सफेद और खून से सना हुआ नकाब पहन रखा था। वह आदमी आगे बढ़ा और होमा और लड़के का हाथ पकड़ लिया। जैसे ही होमायून दरवाजे से बाहर जाने वाला था, पर्दे के पीछे से दो हाथ निकले, जिन्होंने उसकी ओर पिस्तौलें तान रखी थीं। डरा हुआ होमायून सिरदर्द के साथ अचानक जाग गया।

दो सप्ताह तक उनका जीवन इसी तरह बीतता रहा। दिन में वे अपने कार्यालय जाते और देर रात ही सोने के लिए लौटते। कभी-कभी दोपहर में, बिना किसी कारण के, वे उस लड़कियों के स्कूल के पास से गुजरते जहाँ होमा पढ़ती थी। स्कूल के बाद वे दीवार के पीछे कोने में छिप जाते, इस डर से कि कहीं उनके ससुर के नौकर मशदी अली उन्हें देख न लें। वे एक-एक करके बच्चों को देखते, लेकिन उन्हें उनमें अपनी बेटी होमा नहीं दिखती, और जीवन इसी तरह चलता रहा जब तक कि उनका तबादला स्वीकार नहीं हो गया और उन्हें करमानशाह के सीमा शुल्क कार्यालय जाने का निर्देश नहीं मिल गया।

होमायून ने रवाना होने से एक दिन पहले सारी तैयारियां कर लीं। उसने यह भी सुनिश्चित किया कि बस गैरेज में खड़ी है और टिकट भी खरीद लिया। चूंकि उसके सूटकेस पैक नहीं थे, इसलिए

उसने गैरेज मालिक के कहने पर उसी दोपहर जाने के बजाय अगली सुबह करमानशाह के लिए रवाना होने की व्यवस्था की।

घर में प्रवेश करते ही वह सीधे पारिवारिक कक्ष में गया जहाँ उसकी मेज थी। कमरा अस्त-व्यस्त और गंदा था। गैस हीटर के सामने ठंडी राख गिरी हुई थी। कढ़ाईदार बैंगनी रेशम का टुकड़ा और बहरम की वसीयत का लिफाफा मेज पर रखा था। उसने लिफाफा उठाया और उसे बीच से फाड़ दिया, लेकिन तभी उसकी नज़र एक लिखित कागज़ के टुकड़े पर पड़ी जिसे उसने उस दिन जल्दबाजी में नज़रअंदाज़ कर दिया था। मेज पर रखे कागज़ के टुकड़ों को जोड़कर उसने पढ़ा:

शायद यह पत्र मेरी मृत्यु के बाद आप तक पहुंचेगा। मुझे पता है कि मेरे इस अचानक फैसले से आप चौंक जाएंगे, क्योंकि मैंने आपकी सलाह के बिना कुछ नहीं किया, लेकिन ताकि हमारे बीच कोई रहस्य न रहे, मैं यह स्वीकार करता हूं कि मैं आपकी पत्नी बद्री से प्यार करता था। मैंने चार साल तक अपने भीतर से संघर्ष किया। आखिरकार मैं जीत गया, और मैंने अपने भीतर जागृत हुए उस राक्षस को मार डाला, ताकि मैं आपको धोखा न दूं। मैं होमा को एक बेकार सा उपहार देता हूं, आशा है कि वह इसे स्वीकार करेगी!

सदैव आपका,

बहराम

कुछ देर तक होमायून कमरे में अचंभित होकर इधर-उधर देखता रहा। उसे अब कोई संदेह नहीं रहा कि होमा उसकी अपनी ही बच्ची है। क्या वह होमा को देखे बिना ही जा सकता था? उसने चिट्ठी को एक बार फिर पढ़ा, फिर तीसरी बार। उसने उसे अपनी जेब में रखा और घर से निकल गया। रास्ते में वह खिलौनों की दुकान में घुसा और बिना किसी झिझक के लाल चेहरे और नीली आँखों वाली बड़ी गुड़िया खरीद ली और अपने ससुर के घर की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने दरवाजा खटखटाया। होमायून को देखकर नौकर मशदी अली ने आँसुओं से भरी आँखों से कहा, "महोदय, क्या विपत्ति आ गई? होमा की पत्नी!"

"क्या हुआ है?"

"सर, आपको पता नहीं कि मिस होमा आपसे दूर रहकर कितनी बेचैन थीं। मैं उन्हें रोज़ स्कूल ले जाती थी। आज रविवार था। स्कूल से भागने के बाद से अब तक पाँच दिन हो चुके हैं। उन्होंने कहा था कि वह अपने प्यारे पिता से मिलने जा रही हैं। हम सब बहुत परेशान थे। लेकिन क्या मुहम्मद ने आपको नहीं बताया? हमने पुलिस को फोन किया, मैं दो बार आपके घर आई।"

"तुम क्या कह रहे हो? क्या हुआ है?"

"कुछ नहीं, महोदय, शाम के समय वे उसे घर लाए थे। वह रास्ता भटक गई थी। उसे भीषण ठंड से निमोनिया हो गया था। मरने से ठीक पहले तक वह लगातार आपको फोन करती रही। कल हम उसे शाह अब्दोलअज़ीम ले गए। हमने उसे बहराम मिर्ज़ा की कब्र के ठीक बगल में दफना दिया।"

होमायून मशदी अली को घूर रहा था। इसी समय गुड़िया का डिब्बा उसकी बाहों से गिर गया।

फिर एक पागल आदमी की तरह उसने अपने ओवरकोट का कॉलर ऊपर खींचा और लंबे-लंबे कदमों से गैराज की ओर चल पड़ा, क्योंकि उसने सूटकेस पैक करने का इरादा बदल दिया था और वह दोपहर की बस से जल्दी निकल सकता था।

अग्नि उपासक

(बर्ड अलाइव से)

(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

ईरान से अभी-अभी लौटे फ्लैंडन* पेरिस के एक गेस्टहाउस की तीसरी मंजिल पर स्थित एक कमरे में अपने एक पुराने दोस्त के सामने बैठे थे। दोस्तों के बीच एक छोटी सी मेज पर शराब की एक बोतल और दो गिलास रखे थे और नीचे कैफे में संगीत बज रहा था। बाहर अंधेरा था, बादल छाए हुए थे और हल्की बारिश हो रही थी। फ्लैंडन ने अपने हाथों से सिर उठाया, शराब का गिलास उठाया, उसे पी गए और अपने दोस्त की ओर मुड़ गए। "क्या तुम्हें पता है – एक समय ऐसा था जब मुझे लगा कि मैं उन खंडहरों, पहाड़ों और रेगिस्तानों के बीच खो गई हूँ। मैंने खुद से कहा, 'क्या ऐसा हो सकता है कि एक दिन मैं अपने देश लौटूँ? क्या मैं वही संगीत सुन पाऊँगी जो अभी बज रहा है?' मैं किसी दिन वापस लौटना चाहती थी। मैं ऐसे किसी पल की कामना करती थी जब हम अकेले हों और मैं तुमसे अपने दिल की बात कह सकूँ। लेकिन अब मैं तुम्हें कुछ अलग बताना चाहती हूँ, कुछ ऐसा जिस पर मुझे पता है कि तुम विश्वास नहीं करोगे: अब जब मैं वापस आ गई हूँ, तो मुझे पछतावा हो रहा है। तुम्हें पता है, मुझे अभी भी ईरान की बहुत याद आती है। ऐसा लगता है जैसे मैंने कुछ खो दिया हो!"

यह सुनकर उसका दोस्त, जिसका चेहरा लाल हो गया था और आँखें चौड़ी लेकिन भावहीन थीं, मज़ाक में मेज पर मुट्ठी पटकते हुए ज़ोर से हँस पड़ा। "यूजीन, मज़ाक करना बंद करो। मुझे पता था कि तुम चित्रकार थे, लेकिन मुझे नहीं पता था कि तुम कवि भी हो। तो क्या तुम हमसे ऊब गए हो? बताओ, तुम्हें वहाँ किसी से लगाव हो गया होगा। मैंने सुना है कि पूर्वी स्त्रियाँ सुंदर होती हैं।"

नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ।

"वैसे, कुछ दिन पहले मैं आपके भाई के साथ था और बातचीत का रुख आपकी तरफ़ मुड़ गया। वह ईरान से भेजी गई आपकी कुछ ताज़ा तस्वीरें लेकर आए थे और हमने उन्हें देखा। मुझे याद है कि वे सभी खंडहरों की तस्वीरें थीं... ओह हाँ, उन्होंने कहा कि उनमें से एक अग्नि पूजा का स्थान था। आपका मतलब है कि वे वहाँ अग्नि पूजा करते हैं? जिस देश में आप गए थे, उसके बारे में मुझे बस इतना ही पता है कि वहाँ अच्छे कालीन होते हैं: मुझे इसके अलावा कुछ नहीं पता। अब आप मुझे वह सब कुछ बताइए जो आपने देखा है। आप जानते हैं, हम पेरिसवासियों के लिए वहाँ की हर चीज़ नई है।"

फ्लैंडन एक पल चुप रहे, फिर बोले, "आपने मुझे एक बात याद दिला दी। एक दिन ईरान में कुछ ऐसा घटित हुआ जो मेरे लिए बहुत अजीब था। अब तक मैंने किसी को नहीं बताया, यहाँ तक कि अपने दोस्त कोस्टे को भी नहीं, जो उस समय मेरे साथ था। मुझे डर था कि वह मुझ पर हँसेगा। आप जानते हैं कि मैं किसी भी चीज़ में विश्वास नहीं करता। अपने पूरे जीवन में केवल एक बार मैंने सच्चे मन से, पूरे दिल और आत्मा से ईश्वर की आराधना की है। वह घटना ईरान में हुई थी, उसी अग्नि मंदिर के पास जिसकी तस्वीर आपने देखी थी। एक रात, जब मैं ईरान के दक्षिण में पर्सेपोलिस में खुदाई कर रहा था, मैं अकेला नागशे रोस्तम गया था। वहाँ प्राचीन फारसी राजाओं की कब्रें पहाड़ में खुदी हुई थीं। मुझे लगता है कि आपने वह तस्वीर देखी होगी।

यह पहाड़ में खुदी हुई एक क्रॉस जैसी आकृति है। इसके ऊपर राजा की एक तस्वीर है जो अग्नि मंदिर के सामने खड़ा है और उसका दाहिना हाथ आग की ओर उठा हुआ है। अग्नि मंदिर के ऊपर उनके देवता अहूरा मज़्दा की प्रतिमा है। मंदिर के नीचे पत्थर को बरामदे के रूप में तराशा गया है, और राजा की कब्र उसी बरामदे के भीतर स्थित है। पत्थर की बनी कब्रें। वहां ऐसी कई कब्रें देखी जा सकती हैं। उनके सामने विशाल अग्नि मंदिर है, जिसे ज़ोरोएस्टर का काबा कहा जाता है।

खैर, मुझे अच्छी तरह याद है कि शाम ढलने वाली थी। मैं इसी मंदिर को नापने में व्यस्त था। थकान और गर्मी से मैं लगभग थक चुका था। अचानक मैंने दो लोगों को अपनी ओर आते देखा, जिनके कपड़े आम फ़ारसी कपड़ों से अलग थे। जब वे पास आए, तो मैंने देखा कि वे दो बूढ़े आदमी थे। दो बूढ़े लेकिन मजबूत, जीवंत आदमी, जिनकी आँखें चमक रही थीं और चेहरे आकर्षक थे। मैंने उनसे कुछ सवाल पूछे और यह स्पष्ट हो गया कि वे यज़्द के व्यापारी थे जो उत्तरी ईरान से आए थे। उनका धर्म यज़्द के अधिकांश निवासियों जैसा ही था। दूसरे शब्दों में, वे ईरान के प्राचीन राजाओं की तरह अग्नि उपासक थे। वे जानबूझकर प्राचीन अग्नि मंदिर की तीर्थयात्रा करने के लिए आए थे। उनकी बातचीत अभी खत्म भी नहीं हुई थी कि वे लकड़ी के टुकड़े, टहनियाँ और सूखे पत्ते इकट्ठा करने लगे। उन्होंने उन्हें इकट्ठा किया और एक छोटी सी आग जलाई। मैं अचंभित होकर वहीं खड़ा रहा और उन्हें देखता रहा। उन्होंने सूखी लकड़ी में आग लगाई और प्रार्थना करने लगे और एक विशेष भाषा में कुछ बुदबुदाने लगे जिसे मैंने पहले कभी नहीं सुना था। शायद यह पारसी धर्मगुरुओं की भाषा थी। अवेस्ता; शायद यह वही भाषा थी जिसे चट्टानों पर कीलाकार लिपि में उकेरा गया था।

"इस समय, जब दो अग्नि उपासक अग्नि के सामने प्रार्थना करने में व्यस्त थे, मैंने अपना सिर उठाया। मैंने देखा कि पत्थर पर उकेरा गया दृश्य मेरे सामने के जीवंत दृश्य से हूबहू मिलता-जुलता था। मैं अपनी जगह पर जम गया। ऐसा लगा मानो दारियस की कब्र के ठीक ऊपर पत्थर पर बने ये लोग जीवित हो उठे हों और कई हज़ार वर्षों के बाद अपने देवता के अवतार की पूजा करने के लिए मेरे सामने आ गए हों: मैं यह देखकर चकित था कि इतने लंबे समय के बाद, मुसलमानों द्वारा इस धर्म को नष्ट करने और उखाड़ फेंकने के प्रयासों के बावजूद, इस प्राचीन धर्म के अभी भी अनुयायी हैं जो गुप्त रूप से, लेकिन खुलेआम, अग्नि के सामने लेट जाते हैं!"

"वे दोनों अग्नि उपासक चले गए और गायब हो गए। मैं अकेला रह गया, लेकिन छोटी सी आग अभी भी जल रही थी। मुझे नहीं पता यह कैसे हुआ – लेकिन मुझे लगा कि मैं किसी धार्मिक शक्ति और तनाव के दबाव में हूँ। वहाँ गहरा सन्नाटा छाया हुआ था। चंद्रमा पहाड़ की ओर से गंधक के एक धधकते गोले की तरह निकला था और उसकी हल्की रोशनी ने विशाल अग्नि मंदिर के शरीर को रोशन कर दिया था। ऐसा लग रहा था मानो समय दो-तीन हजार साल पीछे चला गया हो। मैं अपनी राष्ट्रीयता, व्यक्तित्व और परिवेश को भूल गया था। मैंने उस राख को देखा जिसके सामने वे दो रहस्यमय बूढ़े लोग पूजा और स्तुति में गिर पड़े थे। नीले रंग का धुआँ धीरे-धीरे उस स्थान से एक स्तंभ के आकार में उठ रहा था और हवा में चक्कर लगा रहा था। टूटे हुए पत्थरों की छाया, धुंधला क्षितिज, मेरे सिर के ऊपर चमकते और एक-दूसरे को टिमटिमाते तारे, इन रहस्यमय खंडहरों और प्राचीन अग्नि मंदिरों के बीच मैदान की शांति और वैभव का प्रदर्शन –

ऐसा लग रहा था मानो परिवेश, सभी मृतकों की आत्माएँ और उनके विचारों की शक्ति, जो समाधि और आकाश के ऊपर मंडरा रही थी।" टूटे हुए पत्थरों ने मुझे विवश या प्रेरित किया था, क्योंकि अब हालात मेरे हाथ में नहीं थे। मैं, जिसे किसी भी चीज़ में विश्वास नहीं था, नीले धुएँ से उठती राख के सामने अनायास ही घुटनों के बल गिर पड़ा और उसकी पूजा करने लगा: मुझे नहीं पता था कि क्या कहूँ, लेकिन मुझे कुछ भी बुदबुदाने की ज़रूरत नहीं थी। शायद एक मिनट से भी कम समय बीता होगा जब मैं होश में आया, लेकिन मैंने अहूरा मज़्दा के स्वरूप की पूजा की – शायद उसी तरह जैसे ईरान के प्राचीन राजा अग्नि की पूजा करते थे। उस क्षण मैं अग्नि उपासक बन गया था। अब, मेरे बारे में जो चाहो सोचो। शायद यह सिर्फ इसलिए था क्योंकि मनुष्य कमज़ोर है और सक्षम नहीं है..."

अब्जी खानोम

(बर्ड अलाइव से)

(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

अब्जी खानोम मारोख की बड़ी बहन थी, लेकिन परिवार को न जानने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह मानना मुश्किल होता कि वे बहनें हैं। अब्जी खानोम लंबी, दुबली-पतली, सांवली, मोटे होंठों वाली और काले घने बालों वाली थी। वह देखने में बिल्कुल बदसूरत थी। दूसरी ओर, मारोख छोटी, गोरी, छोटी नाक वाली और भूरे बालों वाली थी। उसकी आँखें मोहक थीं और जब भी वह हँसती, उसके गालों पर डिंपल पड़ जाते थे। व्यवहार और आदतों के मामले में भी वे एक-दूसरे से बहुत अलग थीं। बचपन से ही अब्जी खानोम चिड़चिड़ी और झगड़ालू थी और लोगों से उसका मेलजोल नहीं होता था। वह अपनी माँ से दो-तीन महीने तक रूठ कर बैठी रहती थी। इसके विपरीत, उसकी बहन समझदार और आकर्षक थी। वह हमेशा हंसमुख और हंसमुख रहती थी। उनके पड़ोसी नानेह हसन ने उसे "मिस फेवरेट" उपनाम दिया था। यहाँ तक कि उसके माता-पिता भी मारोख को ज़्यादा प्यार करते थे, क्योंकि वह सबसे छोटी थी और उनकी लाडली थी।

अबजी खानोम की माँ बचपन में उसे मारती-पीटती थी। वह उसे ताने मारती और खूब हंगामा करती, लेकिन पड़ोसियों और बाकी लोगों के सामने दिखावा करती कि उसे अबजी खानोम पर तरस आता है। वह हाथ जोड़कर कहती, “इस बदकिस्मती का क्या करूँ? ऐसी बदसूरत लड़की से कौन शादी करेगा? मुझे डर है कि वह घर पर ही पड़ी रहेगी। ऐसी लड़की जिसके पास न धन है, न सुंदरता, न कोई गुण। भला कौन इससे शादी करेगा?” अबजी खानोम के सामने इस तरह की बातें इतनी बार दोहराई गई थीं कि उसने भी शादी की उम्मीद छोड़ दी थी। वह अपना ज़्यादातर समय प्रार्थना करने और धार्मिक कर्तव्यों को पूरा करने में बिताती थी। उसने शादी की उम्मीद ही छोड़ दी थी, क्योंकि उसके लिए कोई पति नहीं मिला था। एक बार तो उन्होंने उसे बढ़ई का प्रशिक्षु कल्ब हुसैन को देने की बात कही, लेकिन उसने उसे नहीं चाहा। फिर भी, जब भी अब्जी खानोम लोगों से मिलतीं, तो उनसे कहतीं, “मुझे शादी का प्रस्ताव मिला था, लेकिन मैंने उसे ठुकरा दिया। आजकल के पति सब अनैतिक और शराबी होते हैं, जीने से बेहतर है मर जाना। मैं कभी शादी नहीं करूंगी।”

वह ऊपरी तौर पर तो ऐसा बोलती थी, पर यह स्पष्ट था कि दिल ही दिल में वह कलब हुसैन को पसंद करती थी और उनसे शादी करने के लिए बहुत उत्सुक थी। लेकिन पाँच साल की उम्र से ही उसे कहा जाता था कि वह बदसूरत है और कोई उससे शादी नहीं करेगा, और वह जानती थी कि इस दुनिया के सुखों में उसका कोई हिस्सा नहीं है, इसलिए वह कम से कम प्रार्थना और पूजा के बल पर परलोक का धन प्राप्त करना चाहती थी। इस तरह उसे अपने लिए तसल्ली मिल जाती थी। आखिर उसे इस क्षणभंगुर दुनिया के सुखों में हिस्सा न मिलने का अफसोस क्यों करना चाहिए? आखिर, शाश्वत लोक, परलोक, पूरी तरह से उसका होगा। तब सभी आकर्षक लोग, उसकी बहन और बाकी सभी, यही चाहेंगे कि वे उसकी जगह होते। जब मुहर्री और सफ़र* के महीने आते थे, तो अब्जी खानोम के लिए अपनी शान दिखाने का समय होता था। ऐसा कोई

प्रवचन नहीं होता था जिसमें वह भीड़ के आगे न होती। पैशन प्ले* में वह दोपहर से एक घंटा पहले ही अपनी जगह बना लेती थी। सभी उपदेशक उसे जानते थे और बड़ी उत्सुकता से चाहते थे कि अब्जी खानोम उनके मंचों के पास रहे ताकि उसकी कराहों और चीखों से भीड़ उत्तेजित हो जाए। उसने अधिकांश उपदेश याद कर रखे थे। उसने उपदेश इतनी बार सुने थे और उसे धार्मिक मामलों की इतनी जानकारी थी कि अधिकांश पड़ोसी उसके पास आकर अपनी गलतियों के बारे में पूछते थे। सुबह-सुबह घर को जगाने की ज़िम्मेदारी उसी की होती थी। सबसे पहले वह अपनी बहन के बिस्तर पर जाती और उसे लात मारते हुए कहती, "लगभग दोपहर हो गई है। तुम कब उठोगी और नमाज़ पढ़ोगी?" बेचारी लड़की उठती, नींद में ही हाथ-मुँह धोती और नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ी हो जाती। सुबह की अज़ान, मुर्गे की बांग, भोर की हवा, प्रार्थनाओं की गुनगुनाहट, अब्जी खानोम को एक विशेष अनुभूति, एक आध्यात्मिक अनुभूति देती थी और वह अपने अंतरात्मा के सामने गर्व महसूस करती थी। वह मन ही मन कहती, "अगर ईश्वर मुझे स्वर्ग में नहीं ले जाएगा तो किसे ले जाएगा?" दिन भर कुछ मामूली घरेलू काम और इधर-उधर की बातों में उलझने के बाद, वह अपने हाथ में एक लंबी माला उठाती, जिसका काला रंग बार-बार इस्तेमाल होने से पीला पड़ गया था, और उसके मनकों को जपती रहती। अब उसकी बस यही इच्छा थी कि किसी भी तरह वह कर्बला की तीर्थयात्रा पर जा सके और वहीं ठहर सके।

लेकिन उसकी बहन में कोई खास धार्मिक उत्साह नहीं था और वह घर के सारे काम करती थी। फिर जब वह पंद्रह साल की हुई तो नौकरानी का काम करने लगी। अब्जी खानोम बाईस साल की थी, लेकिन वह घर पर ही फंसी रहती थी और मन ही मन अपनी बहन से ईर्ष्या करती थी। डेढ़ साल तक जब मारोख नौकरानी का काम करने के लिए घर से दूर रही, तब तक अब्जी खानोम ने उससे मिलने की कोशिश भी नहीं की और न ही उसका हालचाल पूछा। जब मारोख हर दो हफ्ते में अपने परिवार से मिलने घर आती, तो अब्जी खानोम या तो किसी से झगड़ा करती या जाकर दो-तीन घंटे तक नमाज पढ़ती रहती। इसके अलावा, बाद में जब सब लोग साथ बैठे होते, तो वह अपनी बहन पर ताने मारती और उसे नमाज, उपवास, स्वच्छता और संशयवाद के बारे में उपदेश देने लगती। उदाहरण के लिए, वह कहती, "जब से ये आधुनिक, सजी-धजी औरतें आई हैं, रोटी महंगी हो गई है... जो अपना चेहरा नहीं ढकती, उसे नरक में बालों से लटका दिया जाएगा। जो किसी की पीठ पीछे बुराई करती है, उसका सिर पहाड़ जितना बड़ा और गर्दन बाल जितनी पतली हो जाएगी। नरक में इतने सांप हैं कि लोग अजगरों की शरण लेते हैं।" और वह इसी तरह बोलती रहती। मारोख को लगता था कि उसकी बहन उससे जलती है, लेकिन उसने ऐसा दिखाया जैसे उसे कुछ पता ही नहीं चला।

एक दिन शाम के समय, मारोख घर आई और कुछ देर अपनी माँ से चुपचाप बातें करती रही, फिर चली गई। अब्जी खानोम सामने वाले कमरे के प्रवेश द्वार पर जाकर बैठ गई और हुक्का पीने लगी, लेकिन ईर्ष्या के कारण उसने अपनी माँ से नहीं पूछा कि उसकी बहन किस बारे में बात कर रही थी और उसकी माँ ने भी इस बारे में कुछ नहीं कहा। शाम को जब उसके पिता, सफेदी से सजी अंडे के आकार की टोपी पहने, ईंटें बिछाने के बाद घर लौटे, तो उन्होंने कपड़े बदले, अपनी तंबाकू की थैली और हुक्का लिया और छत पर चले गए। अब्जी खानोम अपना काम वहीं

छोड़कर अपनी माँ के साथ गई और समोवर, एक बर्तन, एक तांबे का पात्र, चटनी और प्याज ले आई। वे एक कालीन पर अगल-बगल बैठ गईं। उसकी माँ ने बातचीत शुरू करते हुए कहा कि अब्बास, जो उसी घर में नौकर था जहाँ मारोख काम करती थी, ने उसे शादी का प्रस्ताव दिया है। आज सुबह जब घर खाली था, अब्बास की माँ उसका हाथ माँगने आई थी। वे अगले हफ्ते शादी के कागज़ात पर हस्ताक्षर करना चाहते थे। वे दुल्हन की माँ को उपहार के रूप में पच्चीस तोमान देंगे, तलाक होने की स्थिति में दुल्हन को तीस तोमान देंगे, साथ ही एक दर्पण, मोमबत्ती स्टैंड, कुरान, जूतों की एक जोड़ी, मिठाई, मेहंदी का एक थैला, एक टैफेटा स्कार्फ, कढ़ाईदार चिंट्ज़ पतलून... उसके पिता, किनारों से सिले हुए पंखे से खुद को हवा करते हुए, मुँह के कोने में चीनी का एक टुकड़ा चूसते हुए और चाय पीते हुए, सिर हिलाकर लापरवाही से बोले, "काफी है। बधाई हो। कोई आपत्ति नहीं है।" उन्होंने कोई आश्चर्य या खुशी नहीं दिखाई और न ही कोई राय व्यक्त की। ऐसा लग रहा था मानो वे अपनी पत्नी से डरे हुए हों। लेकिन अब्जी खानोम यह खबर सुनते ही क्रोधित हो गईं। वह बाकी की बातें नहीं सुन सकीं और नमाज़ के बहाने बिना सोचे-समझे उठ गईं और पाँच दरवाजों वाले मुख्य कमरे में नीचे चली गईं। उन्होंने अपने पास मौजूद छोटे से दर्पण में खुद को देखा। अपनी ही नज़रों में वह बूढ़ी और कमज़ोर लग रही थी, मानो इन कुछ मिनटों ने उसे कई साल बूढ़ा कर दिया हो। उसने अपनी भौहों के बीच की झुर्री को गौर से देखा। उसे एक सफ़ेद बाल दिखा। उसने दो उंगलियों से उसे खींचकर निकाला। कुछ देर तक रोशनी में उसे देखती रही। जहाँ से उसने बाल खींचा था, वहाँ उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ।

कई दिन बीत गए। घर में काफी हलचल मची हुई थी। वे बार-बार बाज़ार जाकर रेशम के दो वस्त्र, एक पानी का घड़ा, गिलास, कढ़ाई का सामान, गुलाब जल छिड़कने वाला यंत्र, पीने का बर्तन, एक टोपी, सौंदर्य प्रसाधनों का डिब्बा, आइब्रो पेंट, पीतल का समोवर, रंगीन पर्दे, लगभग हर वो चीज़ खरीद लाए जिसकी कल्पना की जा सकती थी। माँ अपनी बेटी के लिए बहुत कुछ चाहती थी, इसलिए घर में जो भी छोटी-मोटी चीज़ें उसके हाथ लगतीं, वो मारोख के दहेज के लिए अलग रख देती। यहाँ तक कि वो हाथ से बुनी हुई नमाज़ की चटाई भी, जिसके लिए अब्जी खानोम ने अपनी माँ से कई बार कहा था और जो माँ ने उसे नहीं दी थी, मारोख के लिए अलग रख दी। इन दिनों अब्जी खानोम चुपचाप और चिंतित होकर इन सब चीजों को देखती रही, मानो उसने कुछ देखा ही न हो। दो दिन तक उसने सिरदर्द का बहाना बनाया और आराम किया। उसकी माँ बार-बार उसे ताने मारती और कहती, “बहनचारे का महत्व कब है, अगर आज नहीं तो? मुझे पता है कि यह ईर्ष्या से उपजा है, और इससे कोई भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकता। इसके अलावा, कुरूपता और सुंदरता मेरे बस में नहीं हैं, यह ईश्वर का काम है। तुमने देखा ही था कि मैं तुम्हें कल्ब हुसैन को देना चाहती थी, लेकिन उन्हें तुम पसंद नहीं आईं। अब तुम बीमार होने का नाटक कर रही हो ताकि तुम्हें कुछ न करना पड़े। सुबह से शाम तक तुम धार्मिक होने का दिखावा करती हो, जबकि मुझे अपनी कमजोर आँखों से सिलाई करनी पड़ती है।”

ईर्ष्या से भरे क्रोध में डूबी अब्जी खानोम रजाई के नीचे से बोली, “बस करो, बस करो। वो तो मेरे पत्थर दिल को दागने की कोशिश कर रही है। कैसा दूल्हा ढूंढा है उसके लिए! कुत्ते को मारो, अब्बास जैसा कोई न कोई इस कस्बे में आ ही जाता है। मुझे ये कैसी ताना मार रही हो? सबको

पता है अब्बास कैसा आदमी है। अब मुझे ये बताने की ज़रूरत नहीं कि मारोख दो महीने की गर्भवती है। मैंने देखा था कि उसका पेट फूल गया है, लेकिन मैंने किसी को बताया नहीं। अब मैं उसे अपनी बहन नहीं मानती।"

उसकी माँ बहुत क्रोधित हो गई। "ईश्वर तुम्हें गूंगा बना दे। जाकर मर जाओ। मैं चाहती हूँ कि तुम मर जाओ, निर्लज्ज लड़की। जाकर दफ़ा हो जाओ। क्या तुम मेरी बेटी की प्रतिष्ठा धूमिल करना चाहती हो? मुझे पता है यह सिर्फ़ ईर्ष्या है। तुम मर रही हो क्योंकि इस चेहरे और शरीर के साथ कोई तुमसे शादी नहीं करेगा। अब दुख में आकर तुम अपनी ही बहन पर लांछन लगा रही हो। क्या तुमने नहीं कहा था कि ईश्वर ने अपने कुरान में लिखा है कि झूठा सबसे बड़ा पापी होता है? ईश्वर ने दूसरों पर दया की है कि तुम्हें सुंदर नहीं बनाया... हर दूसरे घंटे तुम प्रवचन सुनने जाने के बहाने घर से निकल जाती हो। तुम ही हो जो लोगों में अफवाहें फैलाती हो... जाओ, जाओ। यह सारी प्रार्थना और उपवास उन लोगों के लिए शैतान के श्राप के लायक नहीं है जो धोखेबाज़ हैं। तुम बस लोगों को बेवकूफ़ बना रही हो।"

अगले कई दिनों तक उनके बीच इसी तरह की बातें होती रहीं। मारोख इन झड़पों को अचंभित होकर देखता रहा और समारोह की रात आने तक कुछ नहीं बोला। सभी पड़ोसी और स्थानीय शिष्ट महिलाएं इकट्ठा हो गई थीं, उनकी आंखें और भौहें काली रंगी हुई थीं, चेहरे सफेद और गाल लाल थे। महिलाओं ने प्रिंटेड चादरें पहनी हुई थीं, सीधे बालों की लटें थीं और ढीली सूती पतलून पहनी हुई थी। उनमें नानेह हसन सबकी नजरों में थी। मुस्कुराते हुए और शरमाते हुए, उसने अपना सिर झुकाया हुआ था और ढोल बजा रही थी। वह जो मन में आता था गाती थी:

दोस्तों, आपको बहुत-बहुत बधाई हो। ईश्वर के आशीर्वाद से आपको बहुत-बहुत बधाई हो।
हम आए, हम फिर आए, हम दूल्हे के घर से आए –
हर कोई चांद की तरह सुंदर है, हर कोई राजा है, हर किसी की आंखें बादाम जैसी हैं।
दोस्तों, आपको बहुत-बहुत बधाई हो। ईश्वर के आशीर्वाद से आपको बहुत-बहुत बधाई हो।
हम आए, हम फिर आए, हम दुल्हन के घर से आए।
सब अंधे हैं, सब सुस्त हैं, सबकी आंखें खराब हैं।
ओह दोस्तों, बधाई हो। हम देवदूत और परी को लेने आए हैं। ईश्वर के आशीर्वाद से, बधाई हो।

वह यही बात बार-बार दोहराती रही। लोग आते-जाते रहे, फव्वारे के पास रखी ट्रे साफ करते रहे, उन्हें राख से रगड़ते रहे। सब्जी के शोरबे की खुशबू हवा में फैली हुई थी। किसी ने रसोई से बिल्ली को भगाया। किसी को आमलेट के लिए अंडे चाहिए थे। कई छोटे बच्चे एक-दूसरे का हाथ पकड़े बैठे-बैठे उठते रहे और कहते रहे, "छोटे स्नानघर में चींटियाँ हैं; बैठो और उठो।" उन्होंने किराए के समोवरों में पीतल की आग जलाई। अचानक उन्हें खबर मिली कि जिस घर में मारोख नौकरानी का काम करती थी, उसकी मालकिन अपनी बेटियों के साथ समारोह में आ रही है। दो मेजों पर मिठाई और फल सजाए गए और हर मेज पर दो कुर्सियाँ रखी गईं। मारोख के पिता

सोच में डूबे हुए इधर-उधर टहल रहे थे, यह सोचकर कि उनका खर्चा बहुत ज्यादा हो गया है। लेकिन मारोख की माँ जोर दे रही थी कि आने वाली रात के लिए कठपुतली शो होना चाहिए। इस सारी हलचल में अब्जी खानोम का कोई अता-पता नहीं था। वह दोपहर दो बजे से गायब थी। किसी को नहीं पता था कि वह कहाँ है। शायद वह प्रवचन सुनने गई थी।

मोमबत्तियाँ जल उठीं और रस्म पूरी हो गई, नानेह हसन को छोड़कर सब चले गए थे। उन्होंने मुख्य कमरे में एक-दूसरे के बगल में बैठे दूल्हा-दुल्हन का हाथ थाम लिया था। दरवाजे बंद हो गए। अब्जी खानोम घर में दाखिल हुईं। वह सीधे मुख्य कमरे के बगल वाले कमरे में गईं और अपना चादर उतारा। अंदर आते ही उन्होंने देखा कि मुख्य कमरे का पर्दा गिरा दिया गया है। जिज्ञासावश उन्होंने शीशे के पीछे से पर्दे का एक कोना उठाया। दीपक की रोशनी में उन्होंने अपनी बहन मारोख को देखा, जो मेकअप और रंगी हुई भौहों के साथ पहले से कहीं ज्यादा खूबसूरत लग रही थी, और लगभग बीस साल के दूल्हे के बगल में बैठी थी। वे मिठाइयों से सजी मेज के सामने बैठे थे। दूल्हे ने मारोख की कमर पर हाथ रखा और उसके कान में कुछ कहा। ऐसा लगा जैसे उन्होंने अब्जी खानोम को देख लिया हो या शायद उनकी बहन ने उन्हें पहचान लिया हो। अब्जी खानोम को चिढ़ाने के लिए वे हँसे और फिर एक-दूसरे को चूमा। आँगन के दूसरे छोर से नानेह हसन के ढोल की आवाज आई। वह गा रही थी, “ओ दोस्तों, बधाई हो...” अब्जी खानोम के मन में ईर्ष्या के साथ-साथ घृणा की भावना भी उमड़ पड़ी। उसने पर्दा गिरा दिया और दीवार के पास रखे तकिये के ढेर पर जाकर बैठ गई। अपना काला चादर खोले बिना ही उसने ठुड्डी हाथों पर टिका ली और कालीन पर बने फूलों के डिज़ाइन को घूरने लगी। उसने उन्हें गिना और वे उसे कुछ नया सा लगा; उसने उनके रंगों के पैटर्न पर ध्यान दिया। या तो उसे किसी के आने-जाने का पता नहीं चला, या उसने यह देखने के लिए अपना सिर नहीं उठाया कि कौन है। उसकी माँ उसके कमरे के दरवाजे पर आई और उससे बोली, “तुम रात का खाना क्यों नहीं खा रही हो? खुद को क्यों कष्ट दे रही हो? यहाँ क्यों बैठी हो? अपना काला चादर उतार दो। इसे अपशगुन की तरह क्यों पहने रखा है? आओ और अपनी बहन को चूमो। आओ और शीशे के पीछे से उन्हें देखो। दूल्हा-दुल्हन पूर्णिमा के चाँद की तरह लग रहे हैं। क्या तुम उनके लिए खुश नहीं हो? चलो, कुछ तो बोलो। हर कोई पूछ रहा था कि उसकी बहन कहाँ है। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ।”

अब्जी खानोम ने सिर्फ अपना सिर उठाया और कहा, "मैंने रात का खाना खा लिया है।"

* * *

आधी रात हो चुकी थी। हर कोई अपनी शादी की रात की यादों में खोया हुआ, सुखद सपने देखते हुए सो रहा था। अचानक, मानो कोई पानी में छटपटा रहा हो, पानी के छपछपाने की आवाज़ से सब चौंक गए। पहले तो उन्हें लगा कि कोई बिल्ली या बच्चा फव्वारे में गिर गया है। नंगे बदन उन्होंने बत्तियाँ जलाईं। उन्होंने हर जगह तलाशा, लेकिन कुछ भी असामान्य नहीं मिला। जब वे सोने के लिए वापस आए, तो नानेह हसन ने देखा कि अब्जी खानोम की चप्पलें पानी के

जलाशय के ढक्कन के पास गिरी हुई थीं। उन्होंने बत्ती आगे बढ़ाई और देखा कि अब्जी खानोम का शरीर पानी की सतह पर तैर रहा था। उनकी गुंथी हुई काली बालियाँ साँप की तरह उनके गले में लिपटी हुई थीं। उनके जंग लगे रंग के कपड़े उनके शरीर से चिपके हुए थे। उनका चेहरा वैभव और प्रकाश से दमक रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वह किसी ऐसी जगह चली गई हों जहाँ न कुरूपता थी, न सुंदरता, न विवाह, न अंत्येष्टि, न हँसी, न रोना, न सुख, न दुःख। वह स्वर्ग चली गई थीं।

आवारा कुत्ता

(द स्ट्रे डॉग से)

(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

वरमिन चौक में कई छोटी-छोटी दुकानें थीं – एक बेकरी, एक कसाई की दुकान, एक दवाखाना, दो कैफे और एक हेयरड्रेसर, ये सभी जीवन की बुनियादी जरूरतों को पूरा करती थीं। तेज धूप में चौक और उसके निवासी आधे झुलसे हुए और आधे भुनते हुए थे। वे शाम की पहली ठंडी हवा और रात के अंधेरे की प्रतीक्षा कर रहे थे। लोग, दुकानें, ट्रेन और जानवर सब थम चुके थे। गर्म मौसम उन पर भारी पड़ रहा था और गाड़ियों के आने-जाने से लगातार बढ़ती धूल की हल्की धुंध नीले आसमान के नीचे चमक रही थी।

चौक के एक तरफ एक पुराना सिकोमोर का पेड़ था जिसका तना खोखला और सड़ा हुआ था, लेकिन उसकी टेढ़ी-मेढ़ी, गठियाग्रस्त शाखाएँ बेताब हठपूर्वक फैली हुई थीं। उसकी धूल भरी पत्तियों की छाया में एक बड़ी, चौड़ी बेंच रखी थी जिस पर दो छोटे लड़के ऊँची आवाज़ में चावल की खीर और कद्दू के बीज बेच रहे थे। कैफे के सामने वाली खाई से गाढ़ा, कीचड़ भरा पानी बड़ी मुश्किल से बह रहा था।

वहाँ ध्यान खींचने वाली एकमात्र इमारत वरमिन की प्रसिद्ध मीनार थी, जिसका आधा टूटा हुआ बेलनाकार ढाँचा और शंकु के आकार का ऊपरी भाग दिखाई दे रहा था। यहाँ तक कि मीनार से गिरी ईंटों की दरार में घोंसला बनाने वाली गौरैया भी गर्मी के कारण शांत थीं और झपकी ले रही थीं। बीच-बीच में कुत्ते के कराहने की आवाज़ ही सन्नाटे को भंग कर रही थी।

वह कुत्ता स्कॉटलैंड का था, उसका थूथन धुएँ के रंग का धूसर था और पैरों पर काले धब्बे थे, ऐसा लगता था मानो वह किसी दलदल से भागा हो और कीचड़ से लथपथ हो गया हो। उसके कान लटके हुए थे, पूंछ घनी थी और उसके बाल उलझे हुए और गंदे थे। उसके ऊनी चेहरे में दो इंसानी आँखें चमक रही थीं। उसकी आँखों की गहराई में एक मानवीय आत्मा झलक रही थी। उसके जीवन पर छाए अंधकार में भी, उसकी आँखों में कुछ शाश्वत और चमकीला था, कुछ ऐसा जिसमें एक ऐसा संदेश छिपा था जिसे समझा नहीं जा सकता था। यह न तो चमक थी और न ही रंग: यह कुछ ऐसा था जिसे परिभाषित नहीं किया जा सकता था। उसकी आँखों में न केवल इंसानी आँखों से समानता थी, बल्कि एक तरह की समता भी दिखाई देती थी। दर्द, पीड़ा और आशा से भरी दो भूरी आँखें, ऐसी आँखें जो केवल एक भटकते कुत्ते के चेहरे पर ही देखी जा सकती हैं। लेकिन ऐसा लगता था मानो कोई उसकी दर्द भरी, विनती भरी निगाहों को देख या समझ नहीं पा रहा हो। बेकरी के सामने नौकर उसे पीटता था। कसाई की दुकान के सामने प्रशिक्षु उस पर पत्थर फेंकता था। अगर वह किसी गाड़ी की छाँव में पनाह लेता, तो ड्राइवर के जूते की ज़ोरदार लात उसका स्वागत करती। और जब बाकी सब उसे सताने से थक जाते, तो चावल की खीर बेचने वाला लड़का उसे सताने में खास मज़ा लेता। कुत्ते की हर कराह पर उसे पत्थर से पेट पर मारा जाता। लड़के की ज़ोरदार हँसी कुत्ते की कराहों से भी ऊपर उठ जाती, और वह कहता, "भगवान का शुक्र है।" ऐसा लगता था मानो बाकी सब उस लड़के का साथ दे रहे हों,

चालाकी और छुपके से उसे उकसा रहे हों और फिर ठहाकों से लोटपोट हो रहे हों। वे सब भगवान के नाम पर कुत्ते को मारते थे, क्योंकि उनके हिसाब से उस अपवित्र कुत्ते को चोट पहुँचाना स्वाभाविक था जिसे उनके धर्म ने शाप दिया था और जिसके बारे में उनका मानना था कि उसकी सत्तर जिंदगियाँ हैं।

अंततः, चावल की खीर बेचने वाले लड़के के उत्पीड़न ने जानवर को उस गली से भागने पर मजबूर कर दिया जो मीनार की ओर जाती थी। वह सचमुच भागा नहीं, बल्कि खाली पेट बड़ी मुश्किल से खुद को घसीटते हुए एक नाले में शरण ली। उसने अपना सिर अपने पंजों पर टिकाया, जीभ बाहर लटका ली और आधी नींद में, आधे जागते हुए, अपने सामने लहराते हरे-भरे खेत को देखने लगा। उसका शरीर थका हुआ था और उसकी नसें तनावग्रस्त थीं।

जलमार्ग की नम हवा में एक विशेष शांति ने उसे सिर से पैर तक घेर लिया। उसकी नाक में अधमरी घास, एक पुराने नम जूते की गंध, जीवित और मृत जानवरों की गंध ने दबी हुई यादों को जीवंत कर दिया।

जब भी वह हरे-भरे मैदान को ध्यान से देखता, उसकी सहज इच्छाएँ जागृत हो उठतीं और अतीत की यादें ताज़ा हो जातीं, लेकिन इस बार यह अनुभूति इतनी प्रबल थी कि ऐसा लगा मानो उसके कान के पास कोई आवाज़ उसे हिलने-डुलने, कूदने और उछलने के लिए विवश कर रही हो। उसे हरे-भरे मैदानों में दौड़ने और खेलने की तीव्र इच्छा हो रही थी।

यह उसकी जन्मजात भावना थी: उसके सभी पूर्वज स्कॉटलैंड के हरे-भरे खुले मैदानों में पले-बढ़े थे। लेकिन उसका शरीर इतना थका हुआ था कि वह जरा सा भी हिल-डुल नहीं पा रहा था। कमजोरी के साथ-साथ एक दर्दनाक अनुभूति उस पर हावी हो गई। कुछ भूली हुई भावनाएँ, खोई हुई भावनाएँ फिर से जागृत हो उठीं। एक समय था जब उस पर अनेक कर्तव्य और जिम्मेदारियाँ थीं। वह स्वयं को अपने स्वामी की पुकार का उत्तर देने, अपने घर से अजनबी लोगों और कुत्तों को भगाने, अपने स्वामी के बच्चे के साथ खेलने, परिचितों के साथ एक तरह से और अजनबियों के साथ अलग तरह से व्यवहार करने, समय पर भोजन करने और एक निश्चित समय पर दुलार पाने की अपेक्षा रखने के लिए बाध्य मानता था। लेकिन अब ये सभी बंधन टूट चुके थे।

उसका सारा ध्यान कूड़े के ढेर में डरते-डरते कांपते हुए थोड़ा सा खाना ढूंढने पर केंद्रित हो गया था, जबकि दिनभर उसे मार पड़ती रहती थी और वह चीखता रहता था – यही उसका एकमात्र बचाव का तरीका बन गया था। पहले वह साहसी, निडर, साफ-सुथरा और जीवन से भरपूर था, लेकिन अब वह डरपोक हो गया था, लोगों के बदले का शिकार। कोई भी आवाज़ या कोई भी हलचल उसे कांपने पर मजबूर कर देती थी। उसे अपनी आवाज़ से भी डर लगता था। वह कूड़े में रहने का आदी हो गया था। उसके शरीर में खुजली होती थी, लेकिन उसमें पिस्सू ढूंढने या खुद को चाटकर साफ करने की हिम्मत नहीं थी। उसे लगता था कि वह कूड़े का हिस्सा बन गया है, और उसके अंदर कुछ मर गया है, कुछ चला गया है।

इस नरक में फंसे हुए उसे दो सर्दियाँ बीत चुकी थीं। इस दौरान उसने न तो भरपेट भोजन किया था और न ही चैन की नींद ली थी। उसकी चमक और भावनाएँ दब चुकी थीं। किसी ने भी उसके सिर पर प्यार से हाथ नहीं रखा था। उनमें से कोई भी उसके स्वामी जैसा नहीं दिखता था - ऐसा

लगता था कि भावनाओं, स्वभाव और व्यवहार में उसका स्वामी इन सबसे बिल्कुल अलग था। ऐसा लगता था मानो जिन लोगों के साथ वह पहले रहा था, वे उसकी दुनिया के ज़्यादा करीब थे, उसके दर्द और भावनाओं को बेहतर समझते थे और उसकी रक्षा करते थे।

उसके नाक में उमड़ रही गंधों में से, सबसे ज़्यादा चक्कर आने वाली गंध उस लड़के की चावल की खीर की थी: वह सफ़ेद तरल पदार्थ जो उसकी माँ के दूध से इतना मिलता-जुलता था और जो उसके बचपन की यादें ताज़ा कर देता था। अचानक उसे सुन्नपन सा महसूस हुआ। उसे याद आया कि कैसे एक पिल्ला अपनी माँ के स्तन से वह गर्म, पौष्टिक तरल पीता था, जबकि उसकी माँ की गर्म, मज़बूत जीभ उसके शरीर को चाटकर साफ़ करती थी। अपनी माँ की गोद में, अपने भाई के पास, उसने जो तेज़ गंध साँस में ली थी, अपनी माँ और उसके दूध की तेज़, भारी गंध, उसकी नाक में फिर से ताज़ा हो गई।

जब उसका पेट भर गया, तो उसका शरीर गर्म और आरामदायक हो गया। उसकी नसों में एक तरल गर्माहट दौड़ गई, उसका सिर माँ की छाती से भारीपन से अलग हो गया, उसका शरीर सिर से पूंछ तक आनंद से कांप उठा, और फिर उसे गहरी नींद आ गई। इससे बड़ा आनंद और क्या हो सकता था? सहज रूप से अपने पंजों को माँ की छाती पर दबाना, और बिना किसी विशेष प्रयास के दूध निकल आना। उसके भाई का कोमल शरीर, उसकी माँ की आवाज़, यह सब आनंद से भरा था। उसे अपना पुराना लकड़ी का घर याद आया, वे खेल जो वह अपने भाई के साथ उस हरे-भरे बगीचे में खेला करता था।

वह अपने लटके हुए कानों को काटता, वे ज़मीन पर गिर जाते, फिर वह उठता और भागता; और बाद में उसे एक और साथी मिल गया, उसके मालिक का बेटा। वह बगीचे के अंत तक उसके पीछे दौड़ता, भौंकता, उसके कपड़े अपने दाँतों में दबा लेता। विशेष रूप से, वह अपने मालिक के दिए हुए दुलार और उनके हाथ से खाई हुई चीनी के टुकड़ों को कभी नहीं भूल सकता था। फिर भी, उसे अपने मालिक का बेटा ज़्यादा पसंद था, क्योंकि वे साथ खेलते थे और वह लड़का उसे कभी मारता नहीं था। बाद में, अचानक उसने अपनी माँ और भाई को खो दिया। केवल उसका मालिक, उसकी पत्नी, बेटा और एक बूढ़ा नौकर ही रह गए। वह उनकी गंधों को कितनी अच्छी तरह पहचानता था और दूर से ही उनके कदमों की आहट सुन लेता था। दोपहर और रात के खाने के समय वह मेज के चारों ओर घूमता और खाने को सूंघता, और कभी-कभी अपने पति की इच्छा के विरुद्ध भी मालिक की पत्नी उसे प्यार से थोड़ा सा खाना दे देती। फिर बूढ़ा नौकर "पैट... पैट..." कहते हुए आता और उसके कुत्ते के घर के बगल में रखी एक विशेष थाली में उसका खाना परोस देता।

पैट की बदकिस्मती उसकी प्राकृतिक ज़रूरतों के कारण हुई, क्योंकि उसका मालिक उसे मादा कुत्तों के पीछे जाने के लिए घर से बाहर नहीं निकलने देता था। संयोगवश, एक पतझड़ के दिन उसका मालिक और दो अन्य लोग, जो अक्सर उनके घर आते-जाते थे और जिन्हें पैट जानता था, कार में सवार हो गए। पैट अपने मालिक के साथ कई बार कार में सफर कर चुका था, लेकिन आज वह बेचैन था। कई घंटों की यात्रा के बाद, वे वरामिन चौक पर उतरे। उसका मालिक और दोनों अन्य लोग टावर के बगल वाली गली से गुज़रे, लेकिन अचानक उन्हें एक कुतिया की दुर्गंध

आई, वही खास गंध जिसकी पैट तलाश कर रहा था, और वह एकदम से बेकाबू हो गया। उसने अलग-अलग जगहों पर सूंघा और अंत में एक नाले से होते हुए एक बगीचे में घुस गया।

शाम ढलने के समय दो बार उसके मालिक की आवाज़ "पैट! पैट!" उसके कानों तक पहुँची। क्या यह सचमुच उसकी आवाज़ थी, या उसकी आवाज़ की गूँज पैट के कानों में गूँज रही थी?

हालांकि पैट पर उसके मालिक की आवाज़ का गहरा प्रभाव था, क्योंकि यह उसे उन सभी दायित्वों और कर्तव्यों की याद दिलाती थी जो उसके प्रति उसके थे, फिर भी बाहरी दुनिया से परे एक शक्ति उसे उस कुतिया के साथ रहने के लिए विवश कर रही थी। उसे ऐसा लग रहा था कि उसके कान इतने भारी और सुस्त हो गए हैं कि वह अपने से बाहर की आवाज़ें नहीं सुन पा रहा है। उसके भीतर तीव्र भावनाएँ जागृत हो गई थीं, और कुतिया की गंध इतनी तीव्र थी कि उसे चक्कर आने लगा था।

उसकी सारी मांसपेशियां, उसका पूरा शरीर और उसकी सारी इंद्रियां उसके नियंत्रण से बाहर हो गई थीं, इसलिए वे अब उसके वश में नहीं थीं। लेकिन कुछ ही देर में लोग लाठियों, फावड़ों और चिल्लाते हुए आए और उसे पानी के रास्ते से बाहर निकाल दिया।

चक्कर आ रहा था, सिर घूम रहा था और थका हुआ था, लेकिन हल्का और राहत महसूस कर रहा था। जैसे ही पैट को होश आया, वह अपने मालिक को ढूंढने निकल पड़ा। कई गलियों में उसकी हल्की सी गंध बाकी थी। उसने हर जगह ढूंढा, और बीच-बीच में अपने निशान छोड़ता गया। वह कस्बे के बाहर खंडहरों तक गया। फिर पैट लौट आया क्योंकि उसे एहसास हुआ कि उसका मालिक चौक पर वापस चला गया है, लेकिन वहां से उसकी हल्की सी गंध दूसरों में खो गई। क्या उसका मालिक उसे छोड़कर चला गया था? वह बेचैन और डरा हुआ था। पैट अपने मालिक, अपने भगवान के बिना कैसे जी सकता था? क्योंकि उसका मालिक उसके लिए भगवान के समान था। लेकिन साथ ही उसे यकीन था कि उसका मालिक उसे ढूंढने जरूर आएगा। डरा हुआ, वह सड़कों पर इधर-उधर दौड़ने लगा; उसकी कोशिशें बेकार गईं।

रात होते ही वह थका-हारा चौक पर लौट आया। उसके मालिक का कोई अता-पता नहीं था। उसने गाँव के कुछ और चक्कर लगाए, और अंत में उस नाले तक पहुँचा जो कुतिया के घर तक जाता था, लेकिन उसका प्रवेश द्वार पत्थरों से बंद था। पैट ने बड़े उत्साह से अपने पंजों से ज़मीन खोदी, इस उम्मीद में कि शायद वह बगीचे में प्रवेश कर सके, लेकिन यह नामुमकिन था। निराश होकर वह वहीं सो गया।

आधी रात को पैट अपनी ही कराहों की आवाज़ सुनकर अचानक जाग गया। डरा हुआ वह उठ खड़ा हुआ। वह असहाय और परेशान होकर गलियों में भटकता रहा। आखिरकार उसे बहुत भूख लगी। जब वह चौक पर लौटा, तो तरह-तरह के खाने की खुशबू उसकी नाक में पहुंची। बचे हुए मांस, ताज़ी रोटी और दही की महक आपस में मिल गई थी, लेकिन साथ ही उसे घुसपैठ करने का अपराधबोध भी हो रहा था। उसे अपने मालिक जैसे दिखने वाले इन लोगों से भीख मांगनी ही पड़ेगी, और अगर कोई दूसरा प्रतिद्वंद्वी उसे भगाने के लिए न आ जाए, तो धीरे-धीरे वह इस इलाके पर अपना अधिकार जमा सकता है। शायद इनमें से कोई जिसके पास खाना हो, उसकी देखभाल कर ले।

डर से कांपता हुआ, वह संभलकर बेकरी की ओर बढ़ा, जो अभी-अभी खुली थी और जहाँ से पकी हुई रोटी की तेज़ खुशबू हवा में फैल रही थी। बगल में रोटी दबाए एक आदमी ने उससे कहा, "आओ... आओ!" पैट के कानों में उसकी आवाज़ कितनी अजीब लगी! उस आदमी ने उसके सामने गर्म रोटी का एक टुकड़ा फेंक दिया। एक पल झिझकने के बाद, पैट ने रोटी खाई और अपनी पूंछ हिलाई। उस आदमी ने रोटी दुकान की बेंच पर रख दी। डरते-डरते और संभलते हुए, उसने पैट के सिर पर हाथ रखा। फिर, दोनों हाथों से उसने पैट का कॉलर खोल दिया। पैट को कितना आराम महसूस हुआ: मानो उसके कंधों से सारी ज़िम्मेदारियाँ, कर्तव्य और फर्ज़ उतर गए हों। लेकिन जब उसने फिर से अपनी पूंछ हिलाई और दुकानदार की ओर बढ़ा, तो उसे कमर में एक ज़ोरदार लात पड़ी और वह कराहते हुए पीछे हट गया। दुकानदार गया और उसने सावधानी से नाले के पानी में हाथ डाले। पैट ने दुकान के सामने लटकते हुए अपने कॉलर को पहचान लिया।

उस दिन के बाद से, लातों, पत्थरों और क्लब के सदस्यों द्वारा की गई पिटाई के अलावा, पैट को इन लोगों से कुछ भी नहीं मिला था। ऐसा लगता था मानो वे उसके कट्टर दुश्मन हों और उसे प्रताड़ित करने में आनंद लेते हों।

पैट को ऐसा लगा जैसे वह एक नई दुनिया में आ गया हो, जो उसकी नहीं थी और जहाँ कोई उसकी भावनाओं को नहीं समझता था। उसने पहले कुछ दिन बड़ी मुश्किल से गुज़ारे, लेकिन धीरे-धीरे वह अभ्यस्त हो गया। गली के दाहिनी ओर, जहाँ से वह मुड़ती थी, उसे कूड़ा फेंकने की जगह मिली। कूड़े में उसे कई स्वादिष्ट चीज़ें मिल जाती थीं, जैसे हड्डियाँ, चर्बी, चमड़ी, मछली के सिर और कई ऐसी चीज़ें जिन्हें वह पहचान नहीं पाता था। कूड़ा बीनने के बाद वह बाकी का दिन कसाई की दुकान और बेकरी के सामने बिताता था। उसकी नज़रें कसाई के हाथों पर टिकी रहती थीं, लेकिन उसे स्वादिष्ट टुकड़ों से ज़्यादा चोटें लगती थीं। आखिरकार उसने अपने नए जीवन को स्वीकार कर लिया। उसके बीते जीवन की बस कुछ धुंधली यादें और कुछ गंध ही बची थीं, और जब भी उसके लिए हालात बहुत मुश्किल होते, तो वह अपने इस खोए हुए स्वर्ग में कुछ सांत्वना और राहत पाता, और अनजाने में उस समय की यादें उसकी आँखों के सामने उभर आतीं।

लेकिन पैट को सबसे ज़्यादा तकलीफ़ देने वाली बात थी उसका प्यार-दुलार पाने की चाहत। वह उस बच्चे की तरह था जिसे हमेशा शाप दिया गया हो और बलि का बकरा बनाया गया हो, लेकिन जिसकी कोमल भावनाएँ अभी तक बुझी नहीं थीं। खासकर इस दर्द और पीड़ा से भरे नए जीवन में, उसे पहले से कहीं ज़्यादा प्यार और दुलार की ज़रूरत थी। उसकी आँखें इस प्यार-दुलार के लिए तड़पती थीं, और वह उस व्यक्ति के लिए अपनी जान देने को तैयार था जो उस पर दया करे या उसके सिर पर हाथ फेरे। उसे किसी के प्रति अपनी दयालुता दिखानी थी, किसी के लिए खुद को कुर्बान करना था, किसी को अपनी श्रद्धा और वफ़ादारी का एहसास कराना था, लेकिन ऐसा लगता था कि कोई भी उसका साथ नहीं देगा। हर आँख में उसे नफ़रत और बुराई के सिवा कुछ नहीं दिखता था। इन लोगों का ध्यान खींचने के लिए वह जो भी हरकत करता, ऐसा लगता था कि वह उनके गुस्से और क्रोध को और भी भड़का देती थी।

जब पैट जलमार्ग में झपकी ले रहा था, तो वह कराहता हुआ कई बार जागा, मानो उसे बुरे

सपने आ रहे हों। तभी उसे बहुत भूख लगी। उसे भुने हुए मांस की गंध आई। भूख ने उसे इतना सताया कि वह अपनी बेबसी और बाकी दर्द भूल गया। वह बड़ी मुश्किल से उठा और सावधानी से चौक की ओर चल पड़ा।

* * *

इसी समय, शोर और धूल के बीच, एक कार वरामिन चौक में दाखिल हुई। एक आदमी कार से उतरा, पैट की ओर बढ़ा और उसके सिर पर थपथपाया। यह आदमी उसका मालिक नहीं था। पैट धोखा नहीं खाया, क्योंकि वह अपने मालिक की गंध को अच्छी तरह पहचानता था। लेकिन कोई उसे सहलाने क्यों आया था? पैट ने अपनी पूंछ हिलाई और संदेह भरी निगाहों से उस आदमी को देखा। क्या उसे धोखा दिया गया था? लेकिन अब उसके गले में कोई पट्टा नहीं था जिसके लिए उसे थपथपाया जा सके। आदमी मुड़ा और उसे एक बार फिर थपथपाया। पैट उसके पीछे-पीछे गया, उसका आश्चर्य बढ़ता जा रहा था, क्योंकि वह आदमी एक दुकान के अंदर गया जिसे पैट अच्छी तरह जानता था, जहाँ से खाने की खुशबू आ रही थी। आदमी दीवार के पास एक बेंच पर बैठ गया। उसे गरमा गरम रोटी, दही, अंडे और अन्य चीजें परोसी गईं। उसने रोटी के टुकड़ों को दही में डुबोकर पैट के सामने फेंक दिया। पहले जल्दी से, फिर धीरे-धीरे, पैट ने रोटी खाई, उसकी भोली भूरी आँखें, जो थोड़ी नाखुशी से भरी थीं, कृतज्ञता से उस आदमी के चेहरे पर टिकी हुई थीं, उसकी पूंछ हिल रही थी। क्या वह जाग रहा था, या सपना देख रहा था? पैट ने बिना किसी रुकावट के भरपेट खाना खाया। क्या ऐसा हो सकता है कि उसे कोई नया मालिक मिल गया हो? भीषण गर्मी के बावजूद, वह आदमी उठा। वह उसी गली से होते हुए मीनार की ओर गया, वहाँ थोड़ी देर रुका, फिर घुमावदार गलियों से गुज़रा। पैट उसके पीछे-पीछे तब तक चलता रहा जब तक वह गाँव से बाहर नहीं निकल गया। वह आदमी उसी खंडहर में गया, जिसकी कई दीवारें थीं, जहाँ उसका मालिक गया था। शायद ये लोग भी अपनी मादाओं की गंध का पीछा करते हैं? पैट दीवार की छाँव में उसका इंतज़ार करता रहा। फिर वे दूसरे रास्ते से चौक पर लौट आए।

उस आदमी ने एक बार फिर पैट के सिर पर हाथ रखा और चौक के चारों ओर थोड़ी देर घूमने के बाद, वह उन कारों में से एक में बैठ गया जिन्हें पैट जानता था। पैट में उठने की हिम्मत नहीं हुई। वह कार के बगल में बैठा रहा और उस आदमी को देखता रहा।

अचानक धूल का गुबार उड़ाते हुए कार तेज़ी से आगे बढ़ी। बिना हिचकिचाए पैट कार के पीछे भागा। नहीं, इस बार वह उस आदमी को अपने से दूर नहीं जाने देना चाहता था। हांफते हुए और शरीर में हो रहे दर्द के बावजूद, वह उछल पड़ा और पूरी ताकत से कार के पीछे दौड़ा। कार गांव को पीछे छोड़ते हुए खेतों से गुज़र गई। पैट दो-तीन बार कार के पास पहुंचा, लेकिन फिर पीछे रह गया। उसने अपनी सारी ताकत इकट्ठा कर ली थी, और हताशा ने उसे जितनी तेज़ी से हो सके दौड़ने पर मजबूर कर दिया था। लेकिन कार उससे भी तेज़ चल रही थी। उससे गलती हो गई थी। वह न केवल कार तक नहीं पहुंच पाया, बल्कि कमज़ोर और टूट चुका था और अचानक उसे लगा कि उसकी मांसपेशियां उसके नियंत्रण से बाहर हो गई हैं। वह ज़रा सा भी हिल नहीं पा रहा था।

उसकी सारी कोशिशें बेकार हो गई थीं। उसे खुद भी नहीं पता था कि वह क्यों भागा था या कहां जा रहा था। वह एक बंद गली में आ गया था। वह हांफते हुए खड़ा रहा, उसकी जीभ बाहर लटक रही थी। उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया था। सिर झुकाए, वह बड़ी मुश्किल से सड़क से हटकर खेत के किनारे एक खाई में जा गिरा। वह गर्म, नम रेत पर लेट गया, और अपनी सहज प्रवृत्ति से, जो कभी धोखा नहीं देती थी, उसने महसूस किया कि वह अब इस जगह से हिल नहीं सकता। उसका सिर चकरा रहा था। उसके विचार और भावनाएँ धुंधली और अंधकारमय हो गई थीं। उसे पेट में तेज दर्द हो रहा था, और उसकी आँखें बीमारी से बेजान लग रही थीं। छटपटाते और मरोड़ते हुए, धीरे-धीरे उसके पैरों पर से उसका नियंत्रण छूटने लगा। उसके शरीर पर ठंडा पसीना आ गया। यह एक हल्की, मदहोश कर देने वाली ठंडक थी...

* * *

शाम ढलते ही तीन भूखे कौवे पैट के सिर के ऊपर से उड़ गए। उन्होंने दूर से ही उसकी गंध पहचान ली थी। उनमें से एक कौवा सावधानी से उसके पास उतरा और ध्यान से देखने लगा। जब उसे यकीन हो गया कि पैट अभी पूरी तरह मरा नहीं है, तो वह फिर उड़ गया। तीनों कौवे उसकी भूरी आँखें निकालने आए थे।

टूटा हुआ दर्पण

(खून की तीन बूंदों से)

(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

ओडेट वसंत ऋतु की शुरुआत में खिलने वाले फूलों की तरह ताज़गी से भरी थी, उसकी आंखें आकाश के रंग जैसी मोहक थीं और सुनहरे बाल हमेशा उसके गालों पर लहराते रहते थे। उसका चेहरा पीला और नाज़ुक था, वह घंटों अपनी खिड़की के सामने बैठी रहती थी। वह पैर मोड़कर बैठती, कोई उपन्यास पढ़ती, अपनी मोज़े सिलती या कढ़ाई करती। लेकिन जब वह वायलिन पर गैरिज़ारी वाल्ट्ज़ बजाती थी, तो मेरा दिल उसके वश में हो जाता था।

मेरे कमरे की खिड़की ओडेट के कमरे की खिड़की के ठीक सामने थी। मैं अपनी खिड़की से उसे कितने मिनट, कितने घंटे और शायद पूरे रविवार तक देखता रहता था: खासकर रात में जब वह अपनी मोज़े उतारकर बिस्तर पर लेट जाती थी।

इस तरह हमारे बीच एक रहस्यमय रिश्ता पनप गया था। अगर मैं उसे एक दिन भी न देखूँ, तो ऐसा लगता था जैसे मैंने कुछ खो दिया हो। कुछ दिन तो मैं उसे इतनी देर तक देखता रहता कि वह उठकर अपनी खिड़की बंद कर लेती। हम दो हफ़्तों से एक-दूसरे को देख रहे थे, लेकिन ओडेट की निगाहें ठंडी और उदासीन थीं। वह न मुस्कुराती, न ही अपने प्यार का कोई संकेत देती। उसका चेहरा गंभीर और संयमित रहता था।

पहली बार मेरी उससे आमना-सामना तब हुआ जब मैं एक सुबह अपने घर की गली के आखिर में स्थित कैफे में नाश्ता करने गया था। बाहर आते ही मैंने ओडेट को देखा। उसके हाथ में वायलिन का डिब्बा था और वह मेट्रो की ओर जा रही थी। मैंने उसे नमस्कार किया और वह मुस्कुराई। फिर मैंने उससे पूछा कि क्या मैं उसका वायलिन का डिब्बा उठा सकता हूँ। उसने सिर हिलाकर जवाब दिया और कहा, "धन्यवाद।" हमारी जान-पहचान इसी एक शब्द से शुरू हुई।

उस दिन से, जब भी हम खिड़कियाँ खोलते, हम दूर से ही इशारों और हाथ के संकेतों से एक-दूसरे से बात करते। लेकिन इसका नतीजा हमेशा यही होता कि हम लक्ज़मबर्ग गार्डन में जाकर मिलते। उसके बाद हम फिल्म देखने या थिएटर जाते, या किसी और तरह से कई घंटे साथ बिताते। ओडेट घर पर अकेली थी। उसके सौतेले पिता और माँ यात्रा पर गए हुए थे, और वह अपनी नौकरी के कारण पेरिस में ही रह गई थी।

वह बहुत कम बोलती थी। लेकिन उसका स्वभाव बच्चों जैसा था: वह ज़िद्दी और अड़ियल थी, और कभी-कभी मुझे उससे बहुत गुस्सा आता था। हम दो महीने से दोस्त थे। एक दिन हमने शाम को न्यूइली में शुक्रवार के बाज़ार जाने का फैसला किया। उस रात ओडेट ने अपनी नई नीली पोशाक पहनी थी और वह हमेशा से ज़्यादा खुश लग रही थी। जब हम रेस्टोरेंट से बाहर निकले, तो उसने मेट्रो में लूना पार्क के सामने उतरने तक पूरे रास्ते अपनी ज़िंदगी के बारे में बातें कीं।

भारी भीड़ आ-जा रही थी। सड़क पर तरह-तरह के मनोरंजन के साधन लगे हुए थे। कलाकार प्रदर्शन कर रहे थे। वहाँ शूटिंग गेम, लॉटरी गेम, मिठाई बेचने वाले, सर्कस, ट्रैक पर चलने वाली छोटी इलेक्ट्रिक कारें, अपने आप घूमने वाले गुब्बारे, झूले और तरह-तरह की प्रदर्शनियाँ थीं।

लड़कियों की चीखें, बातचीत, हँसी, फुसफुसाहट, मोटरों का शोर और तरह-तरह के संगीत की आवाज़ें आपस में गूँज रही थीं।

हमने कार की सवारी करने का फैसला किया। यह डिब्बों की एक कतार थी जो गोल-गोल घूमती थी और जब यह चलती थी, तो इसे एक कपड़े से ढक दिया जाता था, जिससे यह हरे रंग के कीड़े जैसी दिखती थी। जब हम चढ़ना चाहते थे, तो ओडेट ने अपने दस्ताने और पर्स मुझे दे दिए ताकि सवारी के दौरान वे गिर न जाएं। हम एक-दूसरे के बिल्कुल पास बैठ गए। सवारी शुरू हुई और हरा आवरण धीरे-धीरे ऊपर उठा और हमें पांच मिनट के लिए दर्शकों की नजरों से छिपा लिया।

जब पर्दा हटा, तो हमारे होंठ अब भी एक-दूसरे से सटे हुए थे। मैं ओडेट को चूम रहा था और वह भी खुद को रोक नहीं रही थी। फिर हम बाहर निकले और चलते-चलते उसने मुझे बताया कि वह शुक्रवार के बाज़ार में सिर्फ़ तीसरी बार आई है, क्योंकि उसकी माँ ने उसे मना किया था। हम कई और जगहों पर भी गए। आधी रात हो चुकी थी, जब थक-हार कर हम आखिरकार वापस लौटने लगे। लेकिन ओडेट जाना नहीं चाहती थी। वह हर दुकान पर रुकती और मुझे इंतज़ार करना पड़ता। दो-तीन बार मैंने उसका हाथ पकड़कर उसे ज़बरदस्ती अपने साथ लाया, जब तक कि वह जिलेट रेज़र ब्लेड बेचने वाले के स्टॉल के सामने नहीं रुक गई। वह भाषण दे रहा था और दिखा रहा था कि ये ब्लेड कितने अच्छे हैं और लोगों को खरीदने के लिए बुला रहा था। इस बार मुझे सच में बहुत गुस्सा आया। मैंने उसका हाथ ज़ोर से खींचा और कहा, "इसका औरतों से कोई लेना-देना नहीं है।" लेकिन उसने अपना हाथ छुड़ा लिया और कहा, "मुझे पता है। मैं फिर भी देखना चाहती हूँ।"

मैंने उसे जवाब दिए बिना मेट्रो की तरफ़ चल दिया। जब मैं घर पहुँचा, तो गली सुनसान थी और ओडेट की खिड़की पर अंधेरा था। मैं अपने कमरे में गया और बत्ती जला दी। मैंने खिड़की खोली और क्योंकि मुझे नींद नहीं आ रही थी, इसलिए थोड़ी देर पढ़ा। सुबह के एक बज रहे थे। मैं खिड़की बंद करके सोने ही वाला था कि मैंने देखा कि ओडेट आ गई थी और गली में अपनी खिड़की के नीचे स्ट्रीट लाइट के पास खड़ी थी। मुझे उसका यह व्यवहार देखकर हैरानी हुई। मैंने खिड़की ज़ोर से बंद कर दी। जैसे ही मैंने कपड़े उतारने शुरू किए, मुझे एहसास हुआ कि ओडेट का मोतियों वाला पर्स और उसके दस्ताने मेरी जेब में थे और मुझे पता था कि उसके पैसे और दरवाज़े की चाबी पर्स में ही हैं। मैंने उन्हें एक साथ बाँधा और खिड़की से बाहर फेंक दिया।

तीन सप्ताह बीत गए और इस पूरे समय मैंने उस पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। जब उसकी खिड़की खुलती, मैं अपनी बंद कर लेता। इसी बीच संयोगवश मुझे लंदन जाना पड़ा। इंग्लैंड जाने से एक दिन पहले, गली के अंत में मेरी मुलाकात ओडेट से हुई, जो हाथ में वायलिन का डिब्बा लिए मेट्रो की ओर जा रही थी। नमस्ते कहने और कुछ शिष्टाचार की बातें करने के बाद, मैंने उसे अपनी यात्रा के बारे में बताया और उस रात के अपने व्यवहार के लिए माफ़ी मांगी। ओडेट ने ठंडे लहजे में अपना मोतियों वाला पर्स खोला और मुझे बीच से टूटा हुआ एक छोटा सा दर्पण थमा दिया। उसने कहा, "यह उस रात हुआ था जब तुमने मेरा पर्स खिड़की से बाहर फेंक दिया था। तुम्हें पता है इससे बदकिस्मती आएगी।"

मैंने हंसते हुए जवाब दिया और उसे अंधविश्वासी कहा, और उससे वादा किया कि मैं जाने से पहले उससे फिर मिलूंगा, लेकिन दुर्भाग्य से मैं ऐसा नहीं कर सका।

लंदन में लगभग एक महीना बिताने के बाद मुझे ओडेट से यह पत्र मिला:

पेरिस, 21 सितंबर 1930

प्रिय जमशेद,

आप नहीं जानते कि मैं कितना अकेला हूँ। यह अकेलापन मुझे बहुत पीड़ा देता है। आज रात मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ, क्योंकि जब मैं आपको लिखता हूँ तो ऐसा लगता है जैसे मैं आपसे बात कर रहा हूँ। अगर मैं आपसे अनौपचारिक रूप से बात करूँ तो कृपया मुझे माफ कर दीजिएगा। काश आप जान पाते कि मैं कितना कष्ट सह रहा हूँ!

दिन कितने लंबे होते हैं – घड़ी की सुइयाँ इतनी धीमी चलती हैं कि समझ ही नहीं आता क्या करूँ। क्या आपको भी समय इतना धीमा लगता है? शायद वहाँ आपकी किसी लड़की से मुलाकात हुई हो, हालाँकि मुझे यकीन है कि आपका सिर हमेशा किताबों में ही डूबा रहता है, ठीक वैसे ही जैसे पेरिस में, उस छोटे से कमरे में, जो हमेशा मेरी आँखों के सामने रहता है। अब एक चीनी छात्र वहाँ रहने आ गया है, लेकिन मैंने अपनी खिड़की पर एक मोटा पर्दा टांग दिया है ताकि मैं बाहर न देख सकूँ, क्योंकि जिसे मैंने प्यार किया था, वह अब वहाँ नहीं है। यह ठीक उसी तरह है जैसे उस लोकगीत की पंक्ति है: "जो पक्षी दूसरे देश चला जाता है, वह वापस नहीं आता।"

कल हेलेन और मैं लक्ज़मबर्ग गार्डन में टहलने गए थे। जब हम उस पत्थर की बेंच पर पहुँचे, तो मुझे वो दिन याद आ गया जब हम उसी बेंच पर बैठे थे और तुमने अपने देश के बारे में बातें की थीं, और कैसे तुमने मुझसे सारे वादे किए थे और मैंने उन पर विश्वास किया था। और अब मैं अपने दोस्तों के बीच हंसी का पात्र बन गई हूँ, और लोग मेरे बारे में बातें करते हैं। मैं हमेशा तुम्हें याद करने के लिए गैरिज़ारी वाल्ट्ज़ बजाती हूँ। बोइस डी विन्सेनेस में ली गई हमारी तस्वीर मेरी मेज पर है। जब मैं तुम्हारी तस्वीर देखती हूँ तो मुझे तसल्ली मिलती है। मैं खुद से कहती हूँ, "नहीं, ये तस्वीर मुझे धोखा नहीं दे सकती!" लेकिन अफसोस, मुझे नहीं पता कि तुम भी मेरे जैसी ही भावनाएँ रखती हो या नहीं। लेकिन जिस रात मेरा आईना टूटा था, वही आईना जो तुमने मुझे खुद दिया था, तब से मेरा दिल मुझे किसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना की चेतावनी दे रहा है। जिस आखिरी दिन हम मिले थे, जब तुमने कहा था कि तुम इंग्लैंड जा रही हो, मेरे दिल ने मुझे बताया था कि तुम बहुत दूर जा रही हो और हम फिर कभी नहीं मिल पाएँगे। और जिस बात का मुझे डर था, वही हो गया। मैडम बर्ले ने पूछा, "तुम इतनी उदास क्यों हो?" और वह मुझे ब्रिटनी ले जाना चाहती थी, लेकिन मैं उसके साथ नहीं गई, क्योंकि मुझे पता था कि मेरी हालत और खराब हो जाएगी।

कोई बात नहीं – जो हो गया सो हो गया। अगर मेरी आवाज़ में गुस्सा आ रहा है, तो उसकी वजह है कि मैं उदास हूँ। कृपया मुझे माफ़ कर दीजिए, और अगर मैंने आपको परेशान किया है

तो उम्मीद है आप मुझे भूल जाएँगे। आप मेरे पत्रों को फाड़ देंगे ना, जिमी?

काश, तुम जानतीं कि इस समय मैं कितने दर्द और दुख में हूँ। मैं हर चीज़ से थक चुकी हूँ। मैं अपने रोज़मर्रा के काम से निराश हूँ, हालाँकि पहले ऐसा नहीं था। तुम्हें पता है, मैं अब और इंतज़ार नहीं कर सकती, चाहे इससे दूसरों को भी दुख हो। उनका सारा दुख मेरे दुख के बराबर नहीं है। मैंने रविवार को पेरिस छोड़ने का फैसला किया है। मैं साढ़े छह बजे वाली ट्रेन पकड़कर कैलिस जाऊँगी, वही आखिरी शहर जहाँ से तुम गुज़री थीं। फिर मैं समुद्र का नीला पानी देखूँगी। वह पानी सारी मुसीबतों को धो देता है। हर पल उसका रंग बदलता है, और वह अपनी उदास, मनमोहक आवाज़ से रेतीले किनारे को छूता है। उसमें झाग उठता है। रेत झाग को कुतर कर निगल जाती है और फिर वही लहरें मेरे आखिरी विचारों को अपने साथ ले जाएँगी, क्योंकि जब मौत किसी पर मुस्कुराती है, तो वह उसे अपनी मुस्कान से अपनी ओर खींच लेती है। शायद तुम कहोगी कि वह ऐसा नहीं कर सकती, लेकिन तुम देखोगी कि मैं झूठ नहीं बोल रही हूँ।

मेरी दूर से ली गई चुम्बनों को स्वीकार करो,

ओडेट लासौर

मैंने ओडेट को जवाब में दो पत्र भेजे, लेकिन उनमें से एक का कोई जवाब नहीं मिला और दूसरे पर "प्रेषक को वापस" की मुहर लगी हुई थी और वह मेरे पास वापस आ गया।

अगले साल जब मैं पेरिस लौटा, तो मैं जितनी जल्दी हो सके सेंट जैक्स गली में गया, जहाँ मेरा पुराना घर था। मेरे कमरे से एक चीनी छात्र गैरिज़ारी वाल्ट्ज़ की धुन सीटी बजा रहा था। लेकिन ओडेट के कमरे की खिड़की बंद थी, और सामने के दरवाजे पर एक कागज चिपका हुआ था जिस पर लिखा था "किराए पर उपलब्ध"।

दावूद कुबड़ा

(बर्ड अलाइव से)

(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

"नहीं, नहीं। मैं कभी इस रास्ते पर नहीं चलूँगा। मुझे इससे पूरी तरह मुंह मोड़ लेना चाहिए। यह दूसरों को खुशी देता है, जबकि मेरे लिए यह दर्द और यातना से भरा है। कभी नहीं, कभी नहीं..." दाऊद अपने आप से बातें कर रहा था, अपने हाथ में पकड़ी छोटी पीली छड़ी से ज़मीन पर मारते हुए, जिससे वह मुश्किल से संतुलन बनाए हुए चल रहा था। उसका बड़ा सिर उसके पतले कंधों के बीच, उभरी हुई छाती पर धंसा हुआ था। सामने से वह खोखला, भयानक और घृणित दिखता था: पतले मुरझाए होंठ, पतली मुड़ी हुई भौहें, झुकी हुई पलकें, पीला रंग, उभरे हुए हड्डीदार गाल। लेकिन जब कोई उसे दूर से देखता, तो उसकी कोट से ढकी हुई पीठ, उसके लंबे बेमेल हाथ, उसके सिर पर खींची हुई बड़ी टोपी, और विशेष रूप से ज़मीन पर छड़ी से ज़ोर से मारते हुए उसका गंभीर रवैया, उसे कहीं अधिक हास्यास्पद बना देता था।

पहलावी एवेन्यू के चौराहे से वह शहर से बाहर एक गली में मुड़ गया था और सरकारी गेट की ओर जा रहा था। शाम ढलने वाली थी और मौसम हल्का गर्म था। बाईं ओर, सूर्यास्त की धुंधली रोशनी में, मिट्टी से ढकी दीवारें और ईंट के खंभे खामोशी से आसमान की ओर सिर उठाए खड़े थे। दाईं ओर एक नाली थी जिसे अभी-अभी भरा गया था और उसके बगल में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर अधूरे बने ईंट के मकान दिखाई दे रहे थे। यहाँ काफी सन्नाटा था, और कभी-कभी कोई कार या ड्रोश्की (छोटी बस) गुजरती थी जिससे थोड़ी धूल उड़ जाती थी, हालांकि सड़क पर पानी छिड़का गया था। नाली के किनारे, गली के दोनों ओर पौधे लगाए गए थे।

वह सोच रहा था कि बचपन से लेकर अब तक वह हमेशा दूसरों के उपहास या दया का पात्र रहा है। उसे याद आया कि इतिहास की कक्षा में जब शिक्षक ने पहली बार कहा कि स्पार्टा के निवासी विकृत बच्चों को मार डालते थे, तो सभी छात्र मुड़कर उसकी ओर देखने लगे थे, और उसे अजीब सा लगा था। लेकिन अब वह चाहता था कि यह कानून दुनिया भर में लागू होता, या कम से कम अधिकांश स्थानों की तरह, सिफिलिस से पीड़ित लोगों को शादी करने से रोक दिया जाता, क्योंकि वह जानता था कि यह सब उसके पिता की गलती थी। उसके पिता की मृत्यु का दृश्य, पीला चेहरा, हड्डियों से भरे गाल, धंसी हुई नीली आँखें, आधा खुला मुँह, उसकी आँखों के सामने ठीक वैसे ही घूम रहा था जैसे उसने देखा था: उसका बूढ़ा सिफिलिस से पीड़ित पिता, जिसने एक युवा महिला से शादी की थी और जिसके सभी बच्चे या तो अंधे या लंगड़े पैदा हुए थे। उसका एक भाई जो बच गया था, वह गूंगा और मंदबुद्धि था और दो साल पहले मर गया था। वह मन ही मन कहता, "शायद वे भाग्यशाली थे!"

लेकिन वह जीवित रहा, स्वयं से और दूसरों से ऊब चुका था, और हर कोई उससे दूर रहता था। वह हमेशा के लिए एकांत जीवन जीने का आदी हो चुका था। बचपन से ही स्कूल में उसे खेलकूद, हंसी-मजाक, दौड़, गेंद के खेल, कूद-फांद, टैग और उन सभी चीजों से दूर रखा गया था जिनसे उसके सहपाठियों को खुशी मिलती थी। खेल के समय वह स्कूल के खेल के मैदान के

कोने में दुबक कर बैठ जाता, अपने चेहरे के सामने एक किताब रखता और उसके पीछे से बच्चों को छुपकर देखता रहता। लेकिन एक समय ऐसा भी आया जब उसने सचमुच मेहनत की, और वह कम से कम पढ़ाई के माध्यम से दूसरों से श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहता था। वह दिन-रात मेहनत करता था, और इसी वजह से एक-दो आलसी छात्र उससे दोस्ती कर बैठे, क्योंकि वे उसके अभ्यास और गणित के सवालों के हल की नकल करना चाहते थे। लेकिन वह जानता था कि उनकी दोस्ती दिखावटी थी और केवल उनके फायदे के लिए थी, क्योंकि उसने देखा कि छात्र हसन खान से दोस्ती करने की बहुत कोशिश करते थे, जो सुंदर, हट्टा-कट्टा और अच्छे कपड़े पहनता था। शिक्षकों में से केवल एक या दो लोगों ने ही दाऊद के प्रति कुछ सहानुभूति और ध्यान दिखाया, और यह उसके काम के कारण नहीं था, बल्कि इसलिए था क्योंकि उन्हें उस पर दया आती थी, क्योंकि अपने सभी परिश्रम और कठिनाइयों के बावजूद भी वह अपना काम पूरा नहीं कर सका था।

अब वह खाली हाथ रह गया था। हर कोई उससे दूर रहने लगा। उसके परिचित उसके साथ चलने में शर्म महसूस करते, औरतें कहतीं, "देखो, कुबड़ा!" इस बात ने उसे किसी भी चीज़ से ज़्यादा गुस्सा दिलाया।

कई साल पहले, उसने दो बार एक लड़की से शादी का प्रस्ताव रखा था। दोनों बार लड़कियों ने उसका मज़ाक उड़ाया था। संयोग से, उनमें से एक, ज़िबांदेह, यहीं पास के फिशरबाद में रहती थी। वे कई बार मिले थे और बातें भी की थीं। दोपहर में जब वह स्कूल से घर आता था, तो उससे मिलने यहाँ आता था। उसे बस इतना याद था कि उसके होंठ के पास एक तिल था। बाद में जब उसने अपनी चाची को ज़िबांदेह का प्रस्ताव रखने भेजा, तो उसी लड़की ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, "क्या मर्दों की कमी है कि मैं एक कुबड़ वाले की पत्नी बनूँ?" उसके माता-पिता ने उसे कितना भी पीटा हो, उसने प्रस्ताव नहीं माना। वह यही कहती रही, "क्या मर्दों की कमी है?" लेकिन दाऊद अब भी उससे प्यार करता था, और यही उसकी जवानी की सबसे अच्छी याद थी। आज भी, जानबूझकर या अनजाने में, वह अक्सर यहीं आता-जाता रहता है, और पुरानी यादें उसकी आँखों के सामने ताज़ा हो जाती हैं। वह हर चीज़ से निराश था। वह अक्सर अकेले ही सैर पर जाता था और भीड़ से दूर रहता था, क्योंकि उसे शक था कि जो भी उसके दोस्त से हंसता या धीरे से बात करता है, वह उसी के बारे में बात कर रहा होता है, उसी का मज़ाक उड़ा रहा होता है। अपनी भूरी, तीखी आँखों और उग्र स्वभाव के साथ वह बड़ी मुश्किल से अपनी गर्दन और शरीर के ऊपरी हिस्से को हिलाता और तिरस्कार भरी नज़रों से नीचे देखता रहता। जब वह बाहर निकलता, तो उसकी सारी इंद्रियाँ दूसरों पर केंद्रित हो जातीं, उसके चेहरे की सारी मांसपेशियाँ तन जातीं। वह जानना चाहता था कि दूसरे लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं।

वह धीरे-धीरे नाले के किनारे से गुजर रहा था और कभी-कभी अपनी छड़ी के सिरे से पानी को हिलाता था। उसके विचार उथल-पुथल भरे और व्याकुल थे। उसने एक लंबे बालों वाले सफेद कुत्ते को देखा, जिसने उसकी छड़ी के पत्थर से टकराने की आवाज सुनकर अपना सिर उठाया और उसे ऐसे देखा जैसे वह बीमार हो या मरने की कगार पर हो। वह अपनी जगह से हिल नहीं सका और एक बार फिर उसका सिर जमीन पर गिर गया। वह बड़ी मुश्किल से झुका। चांदनी में

उनकी आंखें मिलीं। उसके मन में एक अजीब सा विचार आया: उसे लगा कि यह पहली बार है जब उसने किसी की सरल और सच्ची नज़र देखी है और वे दोनों ही बदकिस्मत और अवांछित, ठुकराए हुए और बेकार, मानव समाज से निकाले हुए हैं। वह उस कुत्ते के पास बैठना चाहता था, जिसने अपने दुख को शहर से बाहर खींचकर लोगों की नजरों से छिपा रखा था, और उसे अपनी बाहों में भर लेना चाहता था, उसका सिर अपनी उभरी हुई छाती से लगाना चाहता था। लेकिन उसने सोचा कि अगर कोई यहां से गुजरे और देख ले, तो वह उसका और भी ज्यादा मजाक उड़ाएगा। शाम ढल रही थी। वह यूसुफ आबाद गेट से गुजरा। उसने दमकते चाँद के घेरे को देखा, जो इस उदास और कोमल शाम की शांति में आकाश के किनारे से निकला था। उसने अधबने मकानों, एक-दूसरे पर ढेर की गई ईंटों के ढेरों, शहर की सुस्त पृष्ठभूमि, मकानों की टिन की छतों और नीले रंग के पहाड़ को देखा। धुंधले भूरे पर्दे उसकी आँखों के सामने से गुजर रहे थे। पास या दूर कोई दिखाई नहीं दे रहा था। खाई के दूसरी ओर से गाने की धीमी, मंद आवाज आ रही थी। उसने बड़ी मुश्किल से अपना सिर उठाया। वह थका हुआ, बेहद उदास और दुखी था, और उसकी आँखें जल रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे उसका सिर उसके शरीर के लिए बहुत भारी हो। दाऊद ने अपनी छड़ी खाई के किनारे छोड़ दी और दूसरी तरफ चला गया। अनजाने में ही वह चट्टानों की ओर चला गया और सड़क के किनारे बैठ गया। अचानक उसे एहसास हुआ कि एक चादर ओढ़े औरत खाई के किनारे उसके पास बैठी है। उसकी धड़कन तेज हो गई। अचानक उस औरत ने अपना सिर घुमाया और मुस्कुराते हुए बोली, “हुशंग! तुम अब तक कहाँ थे?” दाऊद उस औरत के सहज लहजे से हैरान रह गया, इस बात से कि उसने उसे देखा और चौंकी नहीं। मानो उसे मानो दुनिया मिल गई हो। उसके सवाल से साफ था कि वह उससे बात करना चाहती थी, लेकिन रात के इस समय वह यहाँ क्या कर रही थी? क्या वह सभ्य थी? शायद वह प्यार में थी। उसने हिम्मत जुटाई और मन ही मन सोचा, जो भी हो, कम से कम मुझे बात करने के लिए कोई तो मिल गया, शायद वह मुझे दिलासा दे। मानो अपने शब्दों पर उसका कोई नियंत्रण न हो, उसने कहा, “मैडम, क्या आप अकेली हैं? मैं भी अकेला हूँ। मैं हमेशा अकेला रहता हूँ। मैं पूरी जिंदगी अकेला रहा हूँ।”

उनकी बात अभी पूरी भी नहीं हुई थी कि धूप का चश्मा पहने महिला ने अपना सिर फिर घुमाया और कहा, "तो आप कौन हैं? मुझे लगा कि आप हुशांग हैं। जब भी वह मुझसे मिलते हैं, मज़ाक करने की कोशिश करते हैं।"

दाऊद को आखिरी वाक्य पूरी तरह समझ नहीं आया और न ही उसे महिला का मतलब समझ आया। वैसे भी, उसे इसकी उम्मीद भी नहीं थी। काफी समय से किसी महिला ने उससे बात नहीं की थी। उसने देखा कि यह महिला सुंदर थी। उसके शरीर से ठंडा पसीना बहने लगा। बड़ी मुश्किल से उसने कहा, "नहीं महोदया, मैं हुशंग नहीं हूँ। मेरा नाम दाऊद है।"

महिला ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, “मैं तुम्हें देख नहीं पा रही हूँ – मेरी आँखों में दर्द हो रहा है। आह, दाऊद!... दाऊद, कूबड़ वाला...” उसने अपने होंठ दबाए। “मैं ज़िबांदेह हूँ। क्या तुम मुझे नहीं जानते?” उसके गालों पर बिखरे घुंघराले बाल हिले और दाऊद ने उसके होंठ के कोने पर काला तिल देखा। उसका सीना से गला तक काँप उठा। उसके माथे से पसीने की बूँदें बहने लगीं।

उसने चारों ओर देखा। वहाँ कोई नहीं था। गाने की आवाज़ पास आ गई थी। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। इतनी तेज़ी से धड़क रहा था कि वह साँस नहीं ले पा रहा था। बिना कुछ कहे, सिर से पैर तक काँपते हुए, वह उठ खड़ा हुआ। सिसकियों से उसका गला भर आया। उसने अपनी छड़ी उठाई। भारी कदमों से उठते-गिरते हुए वह उसी रास्ते वापस चला गया जिससे आया था और कर्कश आवाज़ में खुद से फुसफुसाया, "वह ज़िबांदेह थी! उसने मुझे नहीं देखा... शायद हुशंग उसका मंगेतर या पति था... कौन जानता है? नहीं... कभी नहीं... मुझे अपनी आँखें पूरी तरह बंद करनी होंगी!... नहीं, नहीं, मैं अब और नहीं कर सकता..."

वह घिसटते हुए उसी कुत्ते के पास पहुँचा जिसे उसने पहले देखा था, बैठ गया और उसका सिर अपनी उभरी हुई छाती से लगा लिया। लेकिन कुत्ता मर चुका था।

मेडेलीन

(बर्ड अलाइव से)

(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

परसों रात मैं वहीं उस छोटे से बैठक कक्ष में था। उसकी माँ और बहन भी वहीं थीं। माँ ने ग्रे रंग की पोशाक पहनी थी और बेटियों ने लाल रंग की। फर्नीचर भी लाल मखमल का था। मैं पियानो पर कोहनी टिकाकर उन्हें देख रहा था। रिकॉर्ड प्लेयर की आवाज़ के अलावा सन्नाटा छाया हुआ था, जिससे 'द वोल्गा बोटमैन' का मार्मिक और दुख भरा गीत बज रहा था। हवा ज़ोर से चल रही थी; बारिश की बूँदें खिड़की पर पड़ रही थीं। बारिश की बूँदें लगातार बज रही थीं और रिकॉर्ड की धुन में घुलमिल रही थीं। मेडेलिन मेरे सामने बैठी, सोच में डूबी और उदास, अपना सिर हाथ पर टिकाए सुन रही थी। मैंने चुपके से उसके भूरे, घुंघराले बालों, नंगी बाहों, चंचल, बचकानी गर्दन और चेहरे को देखा। उसका यह भाव मुझे बनावटी लगा। मुझे लगा कि उसे हमेशा दौड़ना, खेलना और मज़ाक करना चाहिए। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसके मन में भी विचार आते होंगे या उसके लिए उदास होना भी संभव है। मुझे उसका बचकाना और बेफिक्र रवैया अच्छा लगा।

यह तीसरी बार था जब मैं उससे मिली थी। पहली बार मेरी मुलाकात समुद्र किनारे हुई थी, लेकिन तब से वह बहुत बदल चुकी थी। वह और उसकी बहन स्विमिंग सूट पहने हुए थीं। वे बेफिक्र थीं, उनके चेहरे पर खुशी झलक रही थी। वह मासूम, चंचल और चमकती आंखों वाली थी। शाम ढलने वाली थी। समुद्र की लहरें, कैसीनो का संगीत - मुझे सब याद था। अब उन्होंने इस साल के फैशन में चल रहे लाल-बैंगनी रंग के कपड़े पहने हुए थे, जिनकी लंबी स्कर्ट उनके टखनों तक ढकी हुई थी। वे उम्रदराज, चिंतित और जीवन की समस्याओं में डूबी हुई लग रही थीं।

रिकॉर्ड बंद हो गया, दूर से आती हुई, घुटती हुई धुन रुक गई, जो समुद्र की लहरों जैसी लग रही थी। माहौल को खुशनुमा बनाने के लिए, उनकी माँ ने स्कूल और अपनी बेटियों की गतिविधियों के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि मेडेलीन कला में एक होशियार छात्रा है। उनकी बहन ने मुझे आँख मारी। मैंने मुस्कुराकर उनके सवालों के संक्षिप्त, औपचारिक जवाब दिए। लेकिन मेरे विचार कहीं और थे। मैं उनसे अपनी जान-पहचान की शुरुआत से समीक्षा कर रहा था। लगभग दो महीने पहले, बीते हुए गर्मी के अवकाश के दौरान, मैं अपने एक दोस्त के साथ समुद्र किनारे गया था। मौसम गर्म और भीड़भाड़ वाला था। हम ट्रौविल गए। रेलवे स्टेशन के सामने से हमने एक बस पकड़ी। समुद्र के किनारे जंगल से गुज़रते हुए, हमारी बस सैकड़ों कारों के बीच से गुज़री, हॉर्न की आवाज़ और हवा में फैली तेल और पेट्रोल की गंध के बीच। बस हिल रही थी। कभी-कभी पेड़ों के पीछे से समुद्र का नज़ारा दिखाई देता था।

आखिरकार हम विले रॉयल स्टेशन पर उतरे। हम पत्थर और मिट्टी की दीवारों से घिरी कई गलियों से गुज़रे। हम समुद्र के किनारे एक ऊँची जगह पर बने एक छोटे से गोल-मटोल समुद्र तट पर पहुँचे। समुद्र के सामने वाले छोटे से चौक में एक छोटा सा कैसिनो दिखाई दे रहा था। उसके चारों ओर, पहाड़ियों पर, घर और छोटे-छोटे विला बने हुए थे। नीचे, पानी के पास, रेत थी, और उसके आगे लहरें थीं। वहाँ छोटे बच्चे, अकेले या अपनी माताओं के साथ, गेंद खेल रहे थे या रेत

में खुदाई कर रहे थे। कुछ पुरुष और महिलाएं स्विमिंग सूट पहने तैर रहे थे या पानी में थोड़ी दूर जाकर वापस आ रहे थे। कुछ लोग रेत पर धूप सेंक रहे थे या लेटे हुए थे। बूढ़े लोग धारीदार छतरियों के नीचे आराम से अखबार पढ़ रहे थे और छुप-छुप कर महिलाओं को देख रहे थे। हम भी कैसिनो के सामने, पानी की ओर पीठ करके, समुद्र की दीवार के लंबे, चौड़े किनारे पर बैठ गए। सूरज डूबने वाला था। ज्वार आ रहा था, और लहरें किनारे से टकरा रही थीं। सूरज की किरणें लहरों पर त्रिकोणाकार रोशनी बिखेर रही थीं। एक बड़ा काला जहाज़ कोहरे को चीरता हुआ ले हावरे बंदरगाह की ओर जाता दिखाई दे रहा था। हवा थोड़ी ठंडी हो गई। पानी के पास खड़े लोग धीरे-धीरे आने लगे। इसी समय मेरा दोस्त उठा और हमारे पास आई दो लड़कियों से हाथ मिलाया। उसने मेरा उनसे परिचय कराया। वे आईं और समुद्र की दीवार के ऊँचे किनारे पर हमारे बगल में बैठ गईं। मेडेलीन, हाथ में एक बड़ी गेंद लिए, मेरे बगल में बैठ गई और ऐसे बातें करने लगी जैसे वह मुझे सालों से जानती हो। कभी-कभी वह उठकर अपने हाथों में गेंद से खेलती और फिर आकर मेरे बगल में बैठ जाती। मैं उसे चिढ़ाता, उससे गेंद छीन लेता और फिर उसे वापस दे देता और हमारे हाथ छू जाते। धीरे-धीरे हमने एक-दूसरे के हाथों को दबाया। उसके हाथों में एक कोमल गर्माहट थी। मैंने चुपके से उसकी छातियों, उसकी नंगी टांगों, उसके सिर और गर्दन को देखा। मैंने मन ही मन सोचा कि कितना अच्छा होगा अगर मैं अपना सिर उसकी छाती पर रखूँ और समुद्र के किनारे वहीं सो जाऊँ। सूरज डूब रहा था और हल्की चाँदनी से इस छोटे, सुनसान समुद्र तट पर एक आत्मीय, पारिवारिक माहौल छा गया था। अचानक कैसिनो से एक नाच की धुन सुनाई दी। मैडेलीन ने मेरा हाथ थामकर एक अमेरिकी नाच की धुन, 'मिसिसिपी' गाना शुरू कर दिया। मैंने उसका हाथ और कसकर पकड़ लिया। दूर से प्रकाशस्तंभ की रोशनी पानी पर अर्धवृत्ताकार प्रकाश डाल रही थी। लहरों के किनारे से टकराने की गर्जना सुनाई दे रही थी। लोगों की परछाइयाँ हमारे सामने से गुज़र रही थीं।

इसी समय, जब ये दृश्य मेरी आँखों के सामने से गुज़र रहे थे, उसकी माँ आकर पियानो पर बैठ गई। मैं एक तरफ हट गया। अचानक मैंने देखा कि मैडेलीन नींद में चलने वाले की तरह उठ खड़ी हुई। वह मेज पर बिखरे संगीत के पन्नों में से एक टुकड़ा ढूंढने गई, उसे उठाया और अपनी माँ के सामने रख दिया, और मुस्कुराते हुए मेरे पास आकर खड़ी हो गई। उसकी माँ ने पियानो बजाना शुरू किया। मैडेलीन धीरे-धीरे गाने लगी। यह वही नृत्य धुन थी जो मैंने विले रॉयल में सुनी थी - वही 'मिसिसिपी'।

दश अकोल

(खून की तीन बूंदों से)
(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

शिराज में हर कोई जानता था कि दैश अकोल और काका रोस्तम एक-दूसरे से नफ़रत करते थे। एक दिन दैश अकोल अपने पुराने अड्डे डोमिल चायघर में एक बेंच पर बैठा था। उसके बगल में लाल ढक्कन वाला एक बटेर का पिंजरा रखा था। वह अपनी उंगली से पानी के कटोरे में बर्फ का एक टुकड़ा घुमा रहा था। अचानक काका रोस्तम अंदर आए। उन्होंने दैश अकोल को तिरस्कार भरी नज़र से देखा और कमरबंद में हाथ डाले जाकर सामने वाली बेंच पर बैठ गए। फिर उन्होंने चायघर के लड़के से कहा, "बेटा, चाय लाओ।"

डैश ने लड़के को अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा, जिससे वह आशंकित हो गया और काका के आदेश को अनसुना कर दिया। लड़के ने पीतल के कटोरे से गंदे चाय के प्याले निकाले और उन्हें पानी से भरी बाल्टी में डुबो दिया। फिर उसने एक-एक करके उन्हें बहुत धीरे-धीरे सुखाया। तौलिये के प्यालों पर रगड़ने से एक कर्कश ध्वनि उत्पन्न हुई।

इस अपमान से काका रोस्तम बेहद क्रोधित हो गए। उन्होंने एक बार फिर चिल्लाकर कहा, “क्या तुम बहरे हो? मैं तुमसे बात कर रहा हूँ!”

लड़के ने अनिश्चित मुस्कान के साथ दैश अकोल की ओर देखा, और काका रोस्तम गुर्राते हुए बोला, "उनका शैतान भला करे। जो लोग खुद को इतना महान समझते हैं, वे आज रात आकर इसे साबित कर देंगे, अगर वे वाकई अच्छे हैं तो।"

डैश अकोल कटोरे में बर्फ घुमा रहा था और चालाकी से स्थिति पर नजर रख रहा था। उसने बेशर्मी से हंसते हुए अपनी मेहंदी लगी मूंछों के नीचे चमकते हुए मजबूत सफेद दांतों की कतार दिखाई और कहा, "कायर शेखी बघारते हैं, लेकिन जल्द ही पता चल जाएगा कि बेहतर आदमी कौन है।"

सब लोग हँसे। वे काका रोस्तम के हकलाने पर नहीं हँसे, क्योंकि वे जानते थे कि वह हकलाते हैं, बल्कि इसलिए हँसे क्योंकि दैश अकोल कस्बे में बहुत मशहूर था। कोई भी "बदमाश" ऐसा नहीं था जिसने उसके वार न खाए हों। जब भी वह नोल्ला अशक के घर में डबल-डिस्टिल्ड वोदका की एक बोतल पीता और फिर सारे दोज़क के कोने पर किसी से भी भिड़ जाता, तो वह काका रोस्तम के लिए काफी होता। काका रोस्तम से कहीं ज़्यादा ताकतवर लोग भी उससे लड़ने की हिम्मत नहीं करते थे। काका खुद जानते थे कि वह दैश अकोल का मुकाबला नहीं कर सकते, क्योंकि वह दो बार उसके हाथों घायल हो चुके थे, और तीन-चार बार दैश अकोल ने उन्हें काबू में करके उनकी छाती पर बैठ गया था। बदकिस्मती से, कुछ रात पहले, काका रोस्तम ने कोने को खाली देखा और शेखी बघारने लगे। दैश अकोल अचानक, बदला लेने वाले फरिश्ते की तरह, वहाँ पहुँच गया और उनके सिर पर गालियों की बौछार कर दी। डैश ने उससे कहा था, “काका, तुम डरपोक, लगता है तुमने बहुत ज़्यादा अफ़ीम पी ली है... इसने तुम्हें बुरी तरह मदहोश कर दिया है। जानते हो क्या, बेहतर होगा कि तुम यह घिनौना, नीच व्यवहार बंद कर दो। तुम गुंडे की तरह

बर्ताव कर रहे हो, और तुम्हें ज़रा भी शर्म नहीं है। यह तो एक तरह की भीख माँगने का धंधा है जिसे तुमने अपना पेशा बना लिया है, कसम से अगर तुम फिर से इस तरह नशे में धुत हुए तो मैं तुम्हारी मूंछें जला दूँगा। मैं तुम्हें बीच से फाड़ दूँगा।"

तब काका रोस्तम दुम दबाकर भाग गया। लेकिन उसके मन में दैश अकोल के प्रति द्वेष पनप गया और वह हमेशा बदला लेने का बहाना ढूंढता रहता था।

शिराज में सभी लोग दैश अकोल को पसंद करते थे, क्योंकि सारे दोज़क के कोने पर वह किसी भी आदमी को चुनौती दे देता था, लेकिन वह महिलाओं और बच्चों को परेशान नहीं करता था। इसके विपरीत, वह लोगों के प्रति दयालु था, और अगर कोई बदमाश किसी महिला को परेशान करता या किसी को धमकाता, तो वह दैश अकोल से बचकर नहीं निकल पाता। दैश अकोल अक्सर लोगों की मदद करता हुआ देखा जाता था। वह परोपकारी था, और अगर उसका मन करता तो वह लोगों का सामान उनके घर तक पहुँचा देता था। लेकिन वह किसी से भी पीछे नहीं रहना चाहता था, खासकर काका रोस्तम से, जो अफीम का सेवन करने वाला, पाखंडी और दखलंदाज़ था।

काका रोस्तम अपने प्रति दिखाए गए इस अपमान से क्रोधित होकर बैठे रहे। वे अपनी मूंछें चबा रहे थे और इतने गुस्से में थे कि अगर कोई उन्हें चाकू मार देता तो भी खून नहीं निकलता। कुछ मिनटों बाद, जब हंसी का शोर थम गया, तो चायघर के लड़के को छोड़कर सब शांत हो गए। बिना कॉलर वाली कमीज, नाइट कैप और काली ट्विल पैंट पहने हुए, लड़का अपने पेट पर हाथ रखे हुए था और हंसते-हंसते लोटपोट हो रहा था, मानो थक चुका हो। बाकी लोग भी उसकी हंसी पर हंस रहे थे। काका रोस्तम का आपा टूट गया। उन्होंने हाथ बढ़ाकर क्रिस्टल का चीनी का कटोरा उठाया और लड़के पर फेंक दिया। लेकिन चीनी का कटोरा समोवर से टकराया, जो चायदानी के साथ बेंच से लुढ़क कर फर्श पर गिर गया और कई कप टूट गए। फिर काका रोस्तम गुस्से से लाल चेहरे के साथ उठे और चायघर से बाहर चले गए।

चाय की दुकान के मालिक ने दुखी भाव से समोवर का निरीक्षण किया और कहा, "पौराणिक नायक रोस्तम के पास तो केवल एक ही कवच था। मेरे पास तो बस यह जर्जर समोवर है।" उसने यह बात उदास स्वर में कही, लेकिन रोस्तम का जिक्र होने के कारण लोग और भी जोर से हंसने लगे। गुस्से में आकर चाय की दुकान के मालिक ने लड़के पर हमला कर दिया, लेकिन दश अकोल ने मुस्कुराते हुए अपनी जेब से पैसों का थैला निकाला और उसे फेंक दिया।

चायघर के मालिक ने थैला उठाया, उसका वजन महसूस किया और मुस्कुराया।

इसी समय मखमली बनियान, ढीली पतलून और सिर पर फेल्ट की टोपी पहने एक आदमी चायघर में तेजी से घुस आया। उसने चारों ओर नजर डाली, दैश अकोल के पास गया, उन्हें प्रणाम किया और कहा, "हाजी समद का निधन हो गया है।"

दैश अकोल ने अपना सिर उठाया और कहा, "भगवान उसका भला करे!"

लेकिन क्या आपको नहीं पता कि उसने वसीयत छोड़ी है?

मैं मृतकों के पैसों से अपना जीवन यापन नहीं करता। जाकर किसी ऐसे व्यक्ति को बताइए जो ऐसा करता हो।

लेकिन उन्होंने आपको अपनी वसीयत का निष्पादक बनाया है।

जैसे इन शब्दों ने दैश अकोल की उदासीनता को जगा दिया हो, उसने एक बार फिर उस आदमी को ऊपर से नीचे तक देखा और अपने माथे पर हाथ फेरा। उसकी अंडाकार टोपी पीछे हटी हुई थी, जिससे उसका दो रंगों वाला माथा दिख रहा था, जिसका आधा हिस्सा धूप से भूरा हो गया था और आधा टोपी के नीचे होने के कारण सफेद ही रहा था। फिर उसने अपना सिर हिलाया, अपनी जड़ाऊ पाइप निकाली, धीरे-धीरे उसमें तंबाकू भरा, अंगूठे से थपथपाया, जलाया और कहा, "अब जब यह सब खत्म हो गया है, तो ईश्वर हाजी पर कृपा करें, लेकिन उसने जो किया वह अच्छा नहीं था। उसने मुझे मुसीबतों के सागर में धकेल दिया है। खैर, आप जाइए, मैं आपके बाद आता हूँ।"

अंदर आने वाला व्यक्ति हाजी समद का फोरमैन था। लंबे-लंबे कदम बढ़ाते हुए वह दरवाजे से बाहर चला गया। दैश अकोल सोच में डूबे हुए माथे पर शिकन डाले खड़े रहे। उन्होंने अपनी पाइप का कश लिया और विचारमग्न होकर कहा, मानो अचानक चायखाने के खुशनुमा माहौल पर काले बादल छा गए हों। दैश अकोल ने अपनी पाइप की राख झाड़ने के बाद उठकर लड़के को बटेर का पिंजरा दिया और चायखाने से बाहर चले गए।

जब दैश अकोल हाजी समद के आंगन में दाखिल हुए, तो कुरान का पाठ समाप्त हो चुका था। कुछ ही पाठक बचे थे और कुरान ढोने वाले कुछ लोग अपनी फीस को लेकर बड़बड़ा रहे थे। फव्वारे के पास कुछ मिनट इंतजार करने के बाद, उन्हें एक बड़े कमरे में ले जाया गया जिसकी खिड़कियाँ आंगन की ओर खुलती थीं। हाजी की पत्नी आईं और एक पर्दे के पीछे खड़ी हो गईं, और सामान्य अभिवादन और शिष्टाचार के बाद दैश अकोल गद्दे पर बैठ गए और बोले, "महोदया, अल्लाह आपको स्वस्थ रखे। अल्लाह आपके बच्चों पर कृपा करे।" महिला ने रुंधे हुए स्वर में कहा, "जिस रात हाजी बीमार पड़े, उस रात इमाम जुमेह को उनके बिस्तर के पास प्रार्थना करने के लिए बुलाया गया था, और सभी की उपस्थिति में हाजी ने आपको अपनी वसीयत का निष्पादक घोषित किया था। शायद आप हाजी को पहले से जानते थे?"

"हमारी मुलाकात पांच साल पहले काज़ेरून की यात्रा के दौरान हुई थी।"

"हाजी, अल्लाह उन पर रहम करे, हमेशा कहते थे कि अगर कोई एक सच्चा आदमी है, तो वह दैश अकोल ही हैं।"

"मैडम, मुझे अपनी स्वतंत्रता किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्यारी है, लेकिन अब जब मृतकों ने मुझे बाध्य कर दिया है, तो मैं इस प्रकाश की किरण की कसम खाता हूँ कि अगर मैं पहले नहीं मरा, तो मैं उन सिरफिरे लोगों को सबक सिखाऊँगा।"

फिर जैसे ही उसने अपना सिर उठाया, उसे दो पर्दों के बीच से एक दमकते चेहरे और मोहक काली आँखों वाली लड़की दिखाई दी। दोनों ने एक-दूसरे को पल भर के लिए भी नहीं देखा था कि लड़की, मानो शर्मिंदा होकर, पर्दा गिराकर पीछे हट गई। क्या वह सुंदर थी? शायद। खैर, उसकी मोहक आँखों ने अपना जादू कर दिया और दश अकोल उस पर मोहित हो गया। वह शर्म से लाल हो गया और अपना सिर झुका लिया।

वह हाजी समद की बेटी मरजान थी। वह प्रसिद्ध दैश अकोल को देखने के लिए उत्सुकतावश

आई थी, जो अब उसके संरक्षक थे।

अगले दिन दैश अकोल हाजी के कामों में जुट गए। पुराने सामान के एक विशेषज्ञ, मोहल्ले के दो आदमियों और एक सचिव की मदद से उन्होंने हर चीज़ का सावधानीपूर्वक हिसाब-किताब और सूची तैयार की। जो भी अतिरिक्त सामान था, उसे उन्होंने भंडारगृह में रख दिया और दरवाज़ा बंद कर दिया। जो भी चीज़ कुछ कमाई दे सकती थी, उसे उन्होंने बेच दिया। उन्होंने हाजी की ज़मीनों के दस्तावेज़ उन्हें पढ़कर सुनाए। उन्होंने हाजी का बकाया वसूल किया और उनके कर्ज़ चुका दिए। ये सभी काम दो दिन और दो रातों में पूरे हो गए। तीसरी रात, थके-हारे दैश अकोल घर लौटते समय सैयद हाजी क़रीब चौक के पास से गुज़र रहे थे। रास्ते में उनकी मुलाक़ात इमाम क़ोली चालेंगर से हुई, जिन्होंने कहा, "काका रोस्तम दो रातों से तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं। पिछली रात उन्होंने कहा था कि तुमने उन्हें अधर में छोड़ दिया है। उनका कहना है कि तुम्हें ऐशो-आराम का स्वाद चखने का चस्का लग गया है और तुम अपना वादा भूल गए हो।"

दैश अकोल को अच्छी तरह याद था कि तीन दिन पहले डोमाइल टीहाउस में काका रोस्तम ने उसे चुनौती दी थी, लेकिन चूंकि वह जानता था कि काका किस तरह का आदमी था और यह भी जानता था कि काका ने इमाम क़ोली के साथ मिलकर उसे अपमानित करने की साजिश रची थी, इसलिए उसने इस पर ध्यान नहीं दिया और अपने रास्ते पर चलता रहा। रास्ते भर उसकी सारी इंद्रियां मरजान पर टिकी रहीं। चाहे वह कितना भी चाहता कि उसका चेहरा उसकी आंखों के सामने से हट जाए, वह उसकी कल्पना में और भी स्पष्ट रूप से उभरता चला जाता।

दैश अकोल पैंतीस साल का एक लंबा-चौड़ा आदमी था, पर देखने में सुंदर नहीं था। उसे पहली बार देखकर किसी का भी मन उदास हो जाता, लेकिन अगर कोई उसके साथ बैठकर बातें करता या उसके जीवन की कहानियाँ सुनता, जो लोग अक्सर सुनाते रहते थे, तो वह मोहित हो जाता। अगर उसके चेहरे पर बाएँ से दाएँ तक फैले तलवार के निशानों को छोड़ दें, तो दैश अकोल का चेहरा भव्य और आकर्षक था: भूरी आँखें, घनी काली भौहें, चौड़े गाल, पतली नाक, काली दाढ़ी और मूंछें। लेकिन उसके निशानों ने सब कुछ बिगाड़ दिया था। उसके गालों और माथे पर तलवार के घावों के निशान थे जो ठीक से भरे नहीं थे, जिससे उसके चेहरे पर गहरी लकीरें बन गई थीं। सबसे बुरी बात यह थी कि उनमें से एक निशान ने उसकी बाईं आँख के कोने को नीचे खींच दिया था।

उनके पिता फ़ार्स प्रांत के बड़े ज़मींदारों में से एक थे। उनकी मृत्यु के बाद उनकी सारी संपत्ति उनके इकलौते बेटे को मिली। लेकिन दैश अकोल ने बेफिक्री से जीवन बिताया और पैसा बेहिसाब खर्च किया। उन्होंने धन-दौलत को अहमियत नहीं दी। उन्होंने अपना जीवन आज़ादी और उदारता से गुज़ारा। उनके जीवन में कोई बंधन नहीं थे और उन्होंने अपनी सारी संपत्ति गरीबों और ज़रूरतमंदों को दे दी। या तो वे वोदका पीते और सड़कों पर हंगामा करते, या फिर अपना समय अपने कुछ दोस्तों के साथ बिताते, जो उनके परजीवी बन चुके थे। उनकी सारी अच्छाइयाँ और बुराइयाँ इन्हीं गतिविधियों तक सीमित थीं, लेकिन जो बात हैरान करने वाली थी, वह यह कि प्रेम का विषय उनके जीवन में कभी आया ही नहीं। हालाँकि उनके दोस्तों ने कई बार उन्हें गपशप में आने के लिए उकसाया, लेकिन उन्होंने कभी बातचीत में हिस्सा नहीं लिया। लेकिन जिस दिन से

वे हाजी समद के वसीयतकर्ता बने और मरजान से मिले, उनका जीवन पूरी तरह बदल गया। एक ओर तो वे खुद को मृतक के प्रति कृतज्ञ और ज़िम्मेदारी के बोझ तले दबा हुआ महसूस करते थे; दूसरी ओर, वे मरजान पर मोहित हो चुके थे। लेकिन ज़िम्मेदारी का बोझ उन पर किसी भी चीज़ से ज़्यादा था। उसने अपनी सारी दौलत लुटा दी थी और लापरवाही से अपनी विरासत का कुछ हिस्सा भी बर्बाद कर दिया था। अब सुबह उठते ही वह सिर्फ हाजी की संपत्ति की आमदनी बढ़ाने के बारे में सोचता रहता था। उसने हाजी की पत्नी और बच्चों को एक छोटे घर में रहने को कहा। उसने उनका निजी घर किराए पर दे दिया। बच्चों के लिए एक शिक्षक नियुक्त किया। उसने उनकी संपत्ति का निवेश किया और सुबह से शाम तक हाजी के मामलों को सुलझाने में लगा रहता था।

इस समय से दैश अकोल ने रात में इधर-उधर घूमना और दूसरों को लड़ाई के लिए उकसाना पूरी तरह छोड़ दिया। उसने अपने दोस्तों में रुचि खो दी और उसका पुराना उत्साह भी खत्म हो गया। लेकिन उसके सभी प्रतिद्वंद्वी, हाजी की दौलत से वंचित महसूस कर रहे मुल्लाओं के उकसावे पर, अपने लिए थोड़ी जगह बना ली और दैश अकोल के बारे में व्यंग्य करने लगे। उसकी चर्चा चायखानों और अन्य सभा स्थलों में गूंजने लगी। पचेनार चायखाने में लोग अक्सर दैश अकोल के बारे में बात करते थे, जैसे, "दैश अकोल की बात करें तो - अब उसमें हिम्मत नहीं बची, उसकी जुबान जम गई है। वह गंदा कुत्ता। उन्होंने सच में उससे छुटकारा पा लिया। अब वह हाजी के दरवाजे के आसपास मंडराता रहता है। लगता है कुछ हड़पने की फिराक में है। अब जब वह सारे दोज़क के पास आता है तो दुम दबाकर चुपके से निकल जाता है।"

काका रोस्तम, मन में द्वेष लिए, हकलाते हुए बोले, “उ-उ-बु-हा ...

लोग अब दैश अकोल को महत्व नहीं देते थे और न ही उनका आदर करते थे। वह जहाँ भी जाते, लोग आपस में फुसफुसाते और उनका मज़ाक उड़ाते थे। दैश अकोल ये बातें इधर-उधर सुनते तो थे, पर उन्होंने न तो कुछ दिखाया और न ही ध्यान दिया, क्योंकि मरजान के लिए उनका प्रेम इतना प्रबल हो गया था और उन्हें इतना परेशान कर रहा था कि उनके मन में मरजान के सिवा कोई विचार ही नहीं था।

रात को वह अपनी बेचैनी में शराब पीता था और अपना मनोरंजन करने के लिए उसके पास एक तोता था। वह पिंजरे के सामने बैठकर तोते को अपनी शिकायतें सुनाता था। अगर दश अकोल मरजान का हाथ मांगता, तो उसकी माँ खुशी-खुशी मरजान को उससे दे देती। लेकिन दूसरी ओर, वह पत्नी और बच्चे के बंधन में नहीं बंधना चाहता था, वह आज़ाद रहना चाहता था, जैसा कि उसे पाला-पोसा गया था। इसके अलावा, उसे शक था कि अगर उसने उस लड़की से शादी कर ली जिसे उसकी देखरेख में रखा गया था, तो वह कुछ गलत कर रहा होगा। सबसे बुरी बात यह थी कि हर रात वह अपनी झुकी हुई आँख को देखता और कर्कश स्वर में ज़ोर से कहता, "शायद वह मुझे पसंद नहीं करती; शायद उसे कोई सुंदर जवान पति मिल जाए। नहीं, यह मर्दाना काम नहीं है... वह चौदह साल की है और मैं चालीस साल का... लेकिन मैं क्या करूँ? यह प्यार मुझे मार रहा है। मरजान... तुमने मुझे मार डाला... मैं किसे बताऊँ... मरजान... तुम्हें छोड़कर मैं

बर्बाद हो गया हूँ!"

उसकी आँखों में आँसू भर आए और वह लगातार वोदका के गिलास पीता रहा। फिर सिरदर्द के कारण वह अपनी कुर्सी पर ही सो गया।

लेकिन आधी रात को, जब शिराज शहर, अपनी घुमावदार गलियों, मनमोहक उद्यानों और बैंगनी शराब के साथ, सो जाता था; जब शांत, रहस्यमय तारे घोर अंधेरे आकाश में एक-दूसरे को झिलमिलाते थे; जब गुलाबी गालों वाली मरजान अपने बिस्तर पर धीरे-धीरे सांस ले रही होती थी और दिन भर की घटनाएं उसकी आंखों के सामने गुजर रही होती थीं, तब असली दैश अकोल, स्वाभाविक दैश अकोल, अपनी सभी भावनाओं, कल्पनाओं और इच्छाओं के साथ, बिना किसी झिझक के, उस खोल से बाहर आ जाता था जिसे समाज के शिष्टाचार और रीति-रिवाजों ने उसके चारों ओर बना रखा था। तब वह उन विचारों से बाहर आ जाता था जो उसे बचपन से सिखाए गए थे; और वह स्वतंत्र रूप से मरजान को गले लगाता था और उसकी धीमी धड़कन, उसके जोशीले होंठों और उसके कोमल शरीर को महसूस करता था, और उसके गालों को चूमता था। लेकिन जब वह जाग उठता तो खुद को कोसता, जीवन को कोसता, और पागलों की तरह अपने कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाता। वह मन ही मन बुदबुदाया, और अपने भीतर प्रेम के विचार को मिटाने के लिए, वह दिन के बाकी समय हाजी के कामों में व्यस्त रहेगा और उनकी देखभाल करेगा।

लेकिन एक महत्वपूर्ण घटना घटी, जो नहीं होनी चाहिए थी: मरजान के लिए एक दूल्हा मिल गया, और कैसा दूल्हा था! वह दैश अकोल से उम्र में बड़ा और दिखने में कम आकर्षक था। इस घटना पर दैश अकोल जरा भी विचलित नहीं हुआ। इसके विपरीत, अत्यंत संतुष्टि के साथ वह दहेज की तैयारी में जुट गया और उसने शादी की रात के लिए एक भव्य समारोह का आयोजन किया। उसने हाजी की पत्नी और बच्चों को उनके घर वापस ले जाकर खिड़कियाँ वाले बड़े कमरे को पुरुष मेहमानों के लिए आरक्षित कर दिया। शिराज के सभी महत्वपूर्ण व्यापारी और गणमान्य व्यक्ति समारोह में आमंत्रित थे।

उस दिन शाम पाँच बजे, जब मेहमान कमरे में कीमती कालीनों और गलीचों पर एक-दूसरे से सटकर बैठे थे और उनके सामने मिठाई और फलों से भरी बड़ी-बड़ी लकड़ी की थालियाँ रखी थीं, तभी दैश अकोल अपने पुराने खुरदुरे रूप और तौर-तरीकों के साथ दाखिल हुए, लेकिन उनके बिखरे बाल कंघी किए हुए थे और उन्होंने नए कपड़े पहने थे - एक धारीदार चोगा, तलवार की कमरबंद, एक कमरबंद, काली पतलून, कपड़े के जूते और एक टोपी। उनके पीछे तीन और लोग नोटबुक और पैड लिए दाखिल हुए। सभी मेहमानों ने उन्हें ऊपर से नीचे तक देखा। दैश अकोल लंबे कदमों से इमाम जुमेह के पास गए और बोले, “महोदय, हाजी, अल्लाह उन पर रहमत करे, ने अपनी वसीयत बनाई और मुझे सात साल तक मुसीबतों के सागर में धकेल दिया। उनका सबसे छोटा बेटा, जो पाँच साल का था, अब बारह साल का हो गया है। ये हाजी की संपत्ति का हिसाब-किताब है।” उन्होंने अपने बगल में खड़े तीन लोगों की ओर इशारा किया। आज तक जो भी खर्च हुआ है, जिसमें आज शाम का खर्च भी शामिल है, वह मैंने अपनी जेब से दिया है। अब से मैं अपने रास्ते जाऊंगा, और वे अपने रास्ते जाएंगे!

इस बिंदु पर पहुँचकर उसने अपनी सिसकी को दबा लिया। फिर बिना कुछ कहे या जवाब का

इंतज़ार किए, उसने अपना सिर झुकाया और आँसुओं से भरी आँखों से दरवाज़े से बाहर निकल गया। गली में पहुँचकर उसने राहत की साँस ली। उसे लगा कि वह आज़ाद हो गया है और ज़िम्मेदारी का बोझ उसके कंधों से उतर गया है, लेकिन उसका दिल टूट गया था। उसने लंबे, बेपरवाह कदम बढ़ाए। चलते-चलते उसने यहूदी वोदका बनाने वाले मुल्ला अशक़ का घर पहचान लिया। बिना किसी हिचकिचाहट के वह गीली सीढ़ियों से नीचे उतरा और एक पुराने, धुएँ से सने आँगन में प्रवेश किया, जो छोटे-छोटे गंदे कमरों से घिरा हुआ था, जिनकी खिड़कियाँ मधुमक्खी के छत्ते की तरह छेदों से भरी थीं और जिसका फव्वारा काई से ढका हुआ था। किण्वन, पंखों और पुराने तहखानों की गंध हवा में फैली हुई थी। दुबला-पतला, गंदी टोपी पहने, दाढ़ी वाला और लालची आँखों वाला मुल्ला अशक़ बनावटी हँसी हँसते हुए आगे आया।

दैश अकोल ने उदास स्वर में कहा, “तेरी मूंछों की कसम, मुझे एक बोतल बेहतरीन शराब दे दो जिससे मेरा गला तरोताज़ा हो जाए।” मुल्ला अशक़ ने सिर हिलाया, तहखाने की सीढ़ियों से नीचे गए और कुछ मिनट बाद एक बोतल लेकर ऊपर आए। दैश अकोल ने उनके हाथ से बोतल ले ली। उन्होंने बोतल का ऊपरी हिस्सा एक खंभे से टकराया। ढक्कन टूट गया और उन्होंने आधी बोतल खाली कर दी। उनकी आँखों में आँसू भर आए, उन्होंने खाँसी को दबाया और अपने हाथ के पिछले हिस्से से अपना मुँह पोंछा। मुल्ला अशक़ का बेटा, जो पीला, दुबला-पतला, गंदा बच्चा था, जिसका पेट फूला हुआ था, मुँह खुला था और ऊपरी होंठ पर नाक बह रही थी, दैश अकोल को देख रहा था। दैश अकोल ने आँगन में एक शेल्फ पर रखे नमकदान के ढक्कन के नीचे उंगली डाली और अपनी जीभ पर नमक लगाया।

मुल्ला अशक़ आगे आए, दैश अकोल के कंधे पर हाथ रखकर बोले, “यही तरीका है, दोस्त।” फिर उन्होंने दैश अकोल के कपड़ों को छूते हुए कहा, “ये क्या पहन रखा है? ये चोगा तो फैशन से बाहर हो गया है। जब भी आपको इसकी ज़रूरत न हो, मैं अच्छी कीमत दे दूंगा।”

दैश अकोल उदास होकर हँसा। उसने अपनी जेब से कुछ पैसे निकाले, मुल्ला अशक़ की हथेली में रखे और घर से निकल गया। शाम ढलने वाली थी। उसका शरीर गर्म था, उसके विचार व्याकुल थे और सिर में दर्द हो रहा था। दोपहर की बारिश से गलियाँ अभी भी नम थीं और मिट्टी की दीवारों और संतरे के फूलों की खुशबू हवा में घुली हुई थी। मरजान का चेहरा, उसके गुलाबी गाल, काली आँखें और लंबी पलकें, माथे पर घुंघराले बाल, धुंधले और रहस्यमय ढंग से दैश अकोल की आँखों के सामने आ गए। उसे अपना पिछला जीवन याद आया; यादें एक-एक करके उसके सामने से गुज़र गईं। उसे अपने दोस्तों के साथ सादी और बाबा कौही के मकबरों की सैर याद आई। कभी वह मुस्कुराता, कभी उसका चेहरा उतर जाता। एक बात जिसके बारे में वह निश्चित था, वह यह थी कि उसे अपने घर से डर लग रहा था - कि हालात उसके लिए असहनीय हो गए थे। ऐसा लग रहा था जैसे उसका दिल चीर दिया गया हो। वह बहुत दूर जाना चाहता था। उसने सोचा कि आज रात फिर वह शराब पिएगा और तोते को अपनी परेशानियाँ सुनाएगा! उसके लिए जीवन छोटा, निरर्थक और अर्थहीन हो गया था। इसी बीच उसे एक कविता याद आई। ऊब के मारे उसने उसे गुनगुनाया: "मुझे कैदियों की दावतों से ईर्ष्या होती है / जिनका भोजन जंजीरों की कड़ियां होती हैं।" उसे एक और कविता याद आई और उसने उसे थोड़ा ज़ोर से सुनाया।

हे ज्ञानियों, मेरा दिल पागल हो गया है।
वह पागल आदमी जंजीर से बंधा हुआ है।
मेरे हृदय को विवेक की जंजीर से बांध दो।
या फिर से उसका पागलपन भड़क उठेगा।

उन्होंने इस कविता को उदास और हताश स्वर में सुनाया, लेकिन मानो उनकी रुचि समाप्त हो गई हो, या वे किसी और बात के बारे में सोच रहे हों, वे चुप हो गए।

जब दैश अकोल सारे दोज़क पहुंचे तो अंधेरा हो चुका था। यह वही चौक था जहाँ पुराने दिनों में दैश अकोल हर किसी से भिड़ जाते थे और किसी की हिम्मत नहीं होती थी उनसे पंगा लेने की। अनजाने में ही वे एक घर के सामने पत्थर की बेंच पर बैठ गए। उन्होंने अपना पाइप निकाला, उसे भरा और धीरे-धीरे कश लगाने लगे। उन्हें लगा कि यह जगह पहले से कहीं ज़्यादा जर्जर हो गई है; लोग उन्हें अलग लग रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे वे खुद बदल गए थे और टूट चुके थे। उन्हें सब कुछ धुंधला दिखाई दे रहा था। उनके सिर में दर्द हो रहा था। अचानक एक काली परछाई उनकी ओर आती हुई दिखाई दी और पास आते हुए बोली, "य-य-अंधेरी रात भी जानती है कि कौन है ब-ब-बेहतर आदमी।"

दैश अकोल ने काका रोस्तम को पहचान लिया। वह खड़ा हुआ, कमर पर हाथ रखकर ज़मीन पर थूका और व्यंग्य से बोला, "तुम्हारे कायर बाप को धिक्कार है। तुम्हें लगता है तुम बेहतर आदमी हो? तुम्हें तो पेशाब करना भी नहीं आता।"

काका रोस्तम व्यंग्यात्मक ढंग से हँसे, पास आए और बोले, “का-का-का-बहुत दिनों से हमने आपको यहाँ नहीं देखा। आज रात हाजी के घर में शादी है। क्या उन्होंने आपको अंदर नहीं आने दिया—”

दैश अकोल ने बीच में ही टोकते हुए कहा, “ईश्वर को पता था कि वह क्या कर रहा है जब उसने तुम्हें आधी जीभ दी। मैं आज रात बाकी आधी जीभ भी ले लूंगा।” उसने अपनी तलवार निकाली। काका रोस्तम ने भी अपनी तलवार निकालने के लिए हाथ बढ़ाया। दैश अकोल ने अपनी तलवार ज़मीन में गाड़ दी, सीने पर हाथ बांधे और बोला, “अब मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ कि तुम इस तलवार को ज़मीन से बाहर निकाल कर दिखाओ।”

काका रोस्तम ने अचानक उस पर हमला कर दिया, लेकिन दश अकोल ने उसके हाथ के पिछले हिस्से पर इतनी ज़ोर से प्रहार किया कि तलवार उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरी। यह आवाज़ सुनकर कुछ राहगीर रुक कर देखने लगे, लेकिन किसी ने भी आगे आकर उन्हें अलग करने की हिम्मत नहीं की।

दैश अकोल ने मुस्कुराते हुए कहा, "उठो, इसे उठाओ, लेकिन इस बार इसे और कसकर पकड़ो, क्योंकि आज रात मैं अपना हिसाब चुकता करना चाहता हूँ!"

काका रोस्तम मुट्ठी भींचे हुए आगे बढ़े और दोनों आपस में भिड़ गए। आधे घंटे तक वे ज़मीन पर लोटते रहे, उनके चेहरे पसीने से तरबतर थे, लेकिन कोई भी एक-दूसरे पर हावी नहीं हो सका। संघर्ष के बीच में ही दैश अकोल का सिर पत्थरों से ज़ोर से टकराया। वह लगभग बेहोश हो

गया। काका रोस्तम को भी, अपने दिल में हत्या की भावना के बावजूद, लगा कि उसकी प्रतिरोधक क्षमता समाप्त हो गई है, लेकिन अचानक उसकी नज़र दैश अकोल की तलवार पर पड़ी, जो उसकी पहुँच में थी। उसने पूरी ताकत से तलवार को ज़मीन से निकाला और दैश अकोल के बगल में घुसा दिया। उसने इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि दोनों में से कोई भी हिल नहीं सका।

आस-पास खड़े लोग दौड़े और बड़ी मुश्किल से दैश अकोल को उठाया। खून की बूँदें ज़मीन पर गिर पड़ीं। उसने अपने ज़ख्म को पकड़ा, दीवार के सहारे कुछ कदम घिसटता हुआ गया और फिर ज़मीन पर गिर पड़ा। फिर उन्होंने उसे उठाया और उसके घर ले गए।

अगली सुबह, जैसे ही हाजी समद के घर दैश अकोल के घायल होने की खबर पहुँची, हाजी के सबसे बड़े बेटे वली खान उनसे मिलने गए। जब वे दैश अकोल के बिस्तर के पास पहुँचे, तो उन्होंने देखा कि वह बिस्तर पर बुरी तरह पीले पड़े हुए थे। उनके होठों से खून का झाग निकल रहा था और उनकी आँखें काली पड़ गई थीं। उन्हें साँस लेने में बहुत कठिनाई हो रही थी। बेहोशी की हालत में, दैश अकोल ने वली खान को पहचान लिया। रुंधी हुई, काँपती हुई आवाज़ में उन्होंने कहा, "पूरी दुनिया में... वह तोता... मेरा सब कुछ था... कृपया... कृपया... उसे दे दीजिए..."

वह फिर चुप हो गया। वली खान ने अपना रुमाल निकाला और अपनी आँखों से आँसू पोंछे। दश अकोल बेहोश हो गया और एक घंटे बाद उसकी मृत्यु हो गई।

शिराज में हर कोई उसके लिए रो रहा था।

उस दोपहर, मरजान ने तोते का पिंजरा अपने सामने रखा और तोते के रंगीन पंखों, उसकी नुकीली चोंच और उसकी गोल, बेजान आँखों को निहारने लगी। अचानक तोते ने कर्कश, खुरदरी आवाज़ में कहा, “मरजान... मरजान... तुमने मुझे मार डाला... मैं किसे बताऊँ... मरजान... तुमसे प्यार करना... मुझे बर्बाद कर दिया।”

मरजान की आंखों से आंसू बह रहे थे।

वह व्यक्ति जिसने अपनी भावनाओं का वध किया

(खून की तीन बूंदों से)
(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

ये जुनून अजगर के समान हैं।
शायद सो रहा हो, लेकिन कभी मारा नहीं गया।
उचित परिस्थितियों में,
वे फिर से उठ खड़े होंगे।
मौलवी*

हर सुबह, काले बटन वाली फ्रॉक, इस्त्री की हुई पतलून और चमकदार काले जूते पहने मिर्ज़ा हुसैनअली नियमित रूप से सर चेश्मे के पास की एक गली से निकलते हुए धीरे-धीरे चलते हुए दिखाई देते थे। वे सेपास-सेलर मस्जिद के सामने से गुजरते, सफ़ी अली शाह गली से होते हुए स्कूल जाते थे।

चलते समय उन्होंने इधर-उधर नहीं देखा। ऐसा लग रहा था मानो उनके विचार किसी खास चीज़ पर केंद्रित हों। उनका चेहरा निर्मल और गरिमामय था, छोटी-छोटी आँखें, उभरे हुए होंठ और भूरी मूंछें थीं। उनकी दाढ़ी हमेशा सलीके से कटी रहती थी। वे बहुत ही विनम्र और शांत स्वभाव के थे।

कभी-कभार सूर्यास्त के समय, शहर के द्वार के बाहर दूर से मिर्ज़ा हुसैन अली की दुबली-पतली आकृति दिखाई देती थी। वे बहुत धीरे-धीरे चलते थे, हाथ पीठ पीछे बांधे, सिर झुकाए, कमर झुकाए। कभी-कभी वे खड़े होकर कुछ देर तक अपने आप से कुछ बुदबुदाते रहते थे, मानो कुछ खोज रहे हों।

जिस विद्यालय में वे पढ़ाते थे, वहाँ के प्रधानाचार्य और बाकी शिक्षक उन्हें न तो पसंद करते थे और न ही नापसंद। शायद उन पर उनका कोई रहस्यमय प्रभाव था। शिक्षकों के विपरीत, छात्र उनसे संतुष्ट थे, क्योंकि उन्हें कभी क्रोधित होते या किसी को पीटते नहीं देखा गया था। वे बहुत शांत और संयमी थे, और छात्रों के प्रति उनका व्यवहार सुखद था। इसी कारण वे अधिकारहीन माने जाते थे, लेकिन इस प्रतिष्ठा के बावजूद, छात्र उनकी कक्षा में विनम्र रहते थे और उनसे आशंकित रहते थे। एकमात्र व्यक्ति जिसके साथ मिर्ज़ा हुसैनअली का सौहार्दपूर्ण संबंध था और जिसके साथ वे कभी-कभी चर्चा करते थे, वे थे अरबी के शिक्षक शेख अबेलफ़ज़ल, जो बहुत आडंबरपूर्ण थे। शेख अबेलफ़ज़ल हमेशा अपने द्वारा किए गए शारीरिक कष्टों और चमत्कारी कार्यों के बारे में बात करते रहते थे। वे लंबे समय से धार्मिक समाधि में थे, और कई वर्षों से उन्होंने बात नहीं की थी। वे स्वयं को दार्शनिक, अविसेना, मौलवी और गैलेन का उत्तराधिकारी मानते थे। लेकिन असल में वह उन स्वार्थी पाखंडी मुल्लाओं में से एक था जिन्हें अपना ज्ञान प्रदर्शित करना पसंद था। किसी भी बातचीत में वह तुरंत कोई कहावत या अरबी का कोई गूढ़ वाक्य बोल देता, या किसी कविता का हवाला देकर उसे सबूत बना देता, और फिर विजयी मुस्कान के साथ उपस्थित लोगों के चेहरों पर अपने शब्दों का असर देखने लगता। और यह

अजीब बात थी कि फारसी और इतिहास के शिक्षक, दिखने में आधुनिक और दिखावा रहित मिर्ज़ा हुसैनअली ने शेख अबेलफ़ज़ल को अपना मित्र चुना। कभी वह शेख को अपने घर ले जाता, और कभी खुद शेख के घर जाता।

मिर्ज़ा हुसैनअली एक प्रतिष्ठित परिवार से थे और ज्ञानवान एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। लोग इस बात से प्रभावित थे कि उन्होंने दारोल्फूनून से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी। दो-तीन वर्षों तक वे अपने पिता के साथ काम के सिलसिले में यात्रा करते रहे, लेकिन अंतिम यात्रा से लौटने के बाद वे तेहरान में ही बस गए और अध्यापन का पेशा चुना, ताकि यद्यपि वे जानते थे कि यह एक कठिन जिम्मेदारी है, फिर भी उन्हें अपनी रुचियों पर ध्यान देने का समय मिल सके।

बचपन से ही, जब एक मुल्ला उनके घर आकर उन्हें और उनके भाई को पढ़ाने लगे, मिर्ज़ा हुसैनअली ने सूफी साहित्य, कविता और दर्शन को सीखने में विशेष प्रतिभा दिखाई। उन्होंने सूफी शैली में कविताएँ भी लिखीं। उनके शिक्षक, शेख अब्दुल्ला, जो स्वयं को सूफी मानते थे, ने अपने शिष्य पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने उन्हें रहस्यवादी विचारों से अवगत कराया और रहस्यवादी अवस्था का वर्णन किया। उन्होंने विशेष रूप से उन्हें मंसूर हल्लाज के विशिष्ट स्थान के बारे में बताया, जिन्होंने अपनी वासनाओं को वश में करके स्वयं को इस मुकाम तक पहुँचाया कि फाँसी पर भी उन्होंने "मैं ईश्वर हूँ" कहना नहीं छोड़ा। यह कहानी युवा मिर्ज़ा हुसैनअली को बहुत काव्यात्मक लगी। और अंततः एक दिन शेख अब्दुल्ला ने उनसे कहा, "तुम्हारे भीतर जो स्वभाव मैं देखता हूँ, यदि तुम सत्य के मार्ग पर चलोगे, तो तुम श्रेष्ठता प्राप्त करोगे।" मिर्ज़ा हुसैनअली को यह विचार हमेशा याद रहा। यह उनके मन में गहराई से बैठ गया और वे हमेशा वैराग्य में स्वयं को समर्पित करने के लिए उपयुक्त समय की प्रतीक्षा करते रहे। बाद में उन्होंने और उनके भाई ने दारोल्फूनून स्कूल में दाखिला लिया। वहाँ भी मिर्ज़ा हुसैनअली ने अरबी और साहित्य में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। मिर्ज़ा के छोटे भाई की सोच उनसे अलग थी। वह उनका मज़ाक उड़ाते हुए कहते थे, "इन कल्पनाओं से तुम जीवन में पिछड़ जाओगे और अपनी जवानी व्यर्थ ही बर्बाद कर दोगे।" लेकिन मन ही मन मिर्ज़ा हुसैनअली अपने भाई की बातों पर हँसते थे; वे अपने भाई के विचारों को भौतिकवादी और संकीर्ण समझते थे, और अपने संकल्प में और भी दृढ़ हो गए। इसी मतभेद के कारण पिता की मृत्यु के बाद वे अलग हो गए।

मिर्ज़ा के संकल्प को और भी मज़बूत करने वाली एक बात यह थी कि हाल ही में करजान की यात्रा के दौरान उनकी मुलाकात एक दरवेश* से हुई, जिन्होंने बातचीत के दौरान उनके गुरु शेख अब्दुल्ला की बातों की पुष्टि की और वादा किया कि यदि वे रहस्यवाद को अपनाकर स्वयं को अनुशासित करेंगे, तो वे उच्च पद प्राप्त करेंगे। इस प्रकार, मिर्ज़ा हुसैनअली ने पाँच वर्षों तक एकांतवास का मार्ग चुना और परिवार और मित्रों से नाता तोड़ लिया। वे अकेले रहते थे और अध्यापन के बाद घर पर ही अपना मुख्य कार्य करते थे।

उनका घर छोटा और एकदम साफ-सुथरा था। उनके पास एक बूढ़ी नौकरानी और एक नौकर था। जैसे ही वे घर में दाखिल हुए, उन्होंने बड़ी सावधानी से अपने कपड़े उतारे, उन्हें टांगा, एक लंबा सा धूसर चोगा पहना और अपनी लाइब्रेरी में चले गए। उन्होंने घर का सबसे बड़ा कमरा अपनी लाइब्रेरी के लिए रखा था। खिड़की के पास एक कोने में एक सफेद गद्दा बिछा हुआ था।

उस पर दो तकिए रखे थे। उसके सामने एक छोटी सी मेज थी जिस पर कई किताबें, कागजों का ढेर, एक कलम और एक स्याही की दवात रखी थी। मेज पर रखी किताबों के पन्ने घिसे हुए थे। दीवार में बनी अलमारियों पर कई और किताबें रखी थीं।

इन पुस्तकों का विषय ज्ञानवाद, रहस्यवाद और प्राचीन दर्शन था। उनका एकमात्र मनोरंजन और आनंद इन पुस्तकों को पढ़ना था, और आधी रात तक, तेल के दीपक के नीचे मेज के पीछे बैठकर, वे इन्हें पढ़ते रहते थे। वे स्वयं इनका अर्थ निकालते और जो कुछ भी उन्हें कठिन या संदेहास्पद लगता, उसे लिख लेते और बाद में शेख अबेलफजल से चर्चा करते। ऐसा इसलिए नहीं था कि मिर्ज़ा हुसैन अली इनका अर्थ समझने में असमर्थ थे: बल्कि इसके विपरीत, वे आध्यात्मिक अवस्थाओं के कई चरणों को पार कर चुके थे और कुछ सूफी कविताओं के सूक्ष्म अर्थों और बारीकियों को शेख अबेलफजल से भी बेहतर समझ सकते थे। उन्होंने इन चीजों को आत्मसात कर लिया था, और अपने भीतर भौतिक जगत से परे एक संसार का निर्माण कर लिया था। यही अहंकार का कारण बन गया था, क्योंकि वे स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ मानते थे, और उन्हें अपनी इस श्रेष्ठता पर पूर्ण विश्वास था।

मिर्ज़ा हुसैनअली जानते थे कि संसार में एक रहस्य विद्यमान है जिसे महान सूफी ने खोज निकाला था, और उन्हें यह स्पष्ट था कि उस खोज को शुरू करने के लिए उन्हें एक गुरु, एक मार्गदर्शक की आवश्यकता होगी। शेख अब्दुल्ला ने उन्हें बताया था, और उन्होंने आगे पढ़ा था, कि "चूंकि आरंभ में साधक के विचार बिखरे होते हैं, इसलिए उसे अपने विचारों को एकत्रित करने के लिए गुरु पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।"

इस प्रकार, बहुत खोजबीन के बाद उन्हें शेख अबेलफजल मिले, यद्यपि वे मिर्ज़ा को पसंद नहीं थे और निर्णय सुनाने के अलावा उन्हें कुछ भी नहीं आता था। जब भी शेख को कोई कठिन बात समझ नहीं आती, वे कहते कि अभी समय नहीं है और वे बाद में समझा देंगे, मानो वे किसी बच्चे के साथ काम कर रहे हों। अंत में, शेख अबेलफजल ने मिर्ज़ा को केवल अपनी वासनाओं को नष्ट करने की सलाह दी। शेख इसे ही सब कुछ का आरंभ मानते थे। दूसरे शब्दों में, वैराग्य के माध्यम से इंद्रियों पर विजय प्राप्त की जा सकती है, और शेख ने वासनाओं को नष्ट करने के विषय में हदीसों से भरे विस्तृत व्याख्यान दिए। उन्होंने जो बातें कहीं उनमें से एक थी: "तुम्हारा सबसे बड़ा शत्रु तुम्हारे भीतर है।" दूसरी बात थी: "तुम्हारा संघर्ष तुम्हारी वासनाओं से है।" उन्होंने चादी का हवाला दिया, जिन्होंने कहा था: "जो अपनी वासनाओं को नष्ट करता है, वह धर्मयोद्धा है।" उन्होंने एक कविता भी उद्धृत की:

यदि स्वयं को नियंत्रित नहीं किया जा सकता
इसे किसी न किसी तरह नियंत्रित करना होगा;
अज्ञानता की घातक तलवार
संयम बनाए रखने के लिए इसे आवरण में रखना चाहिए।

उन्हें एक और चीज़ पसंद आई:

वासनाओं को बुझाना ही हमारा आनंद होना चाहिए।
उस लड़ाई को जीतना ही मनुष्य का सर्वोच्च सम्मान है।

शेख अबुलफजल ने जिन बातों का उपदेश दिया, उनमें से एक यह भी थी: "सत्य के साधक को धन, पद, वैभव, शक्ति और वैभव को तुच्छ समझना चाहिए, क्योंकि सबसे बड़ा धन और सुख वासनाओं पर विजय प्राप्त करना है।" उन्होंने मकतबी का हवाला देते हुए कहा:

स्वयं पर विजय प्राप्त करें।
और शाश्वत धन की प्राप्ति करें।

और उसने कहा, "हे मार्ग के मित्र, जान लो कि यदि तुम एक बार भी शारीरिक इंद्रियों द्वारा बहकाए गए, तो तुम मृत्यु की घाटी में चल चुके हो, जैसा कि सनाई कहता है:

अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखें
यदि तुम उन्हें अपना गुलाम बनाना चाहते हो।
उन्हें नियंत्रण दे दो और वे भेज देंगे
तुम्हारे जैसे हजारों लोग कब्र में चले गए।

और जैसा कि शेख सादी कहते हैं:

यदि आप किसी व्यक्ति को उसके लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता करते हैं
वह आपकी इच्छा पूरी करने में आपकी मदद करेगा।
उनकी भावनाएं अलग हैं: वे दुश्मन हैं, दोस्त नहीं।
मदद करने के बजाय, वे आप पर पूरी तरह से शासन करेंगे।

"और मार्ग के विद्वानों ने वासनाओं को एक दुष्ट कुत्ते के समान माना है जिसे आत्म-अनुशासन की जंजीर से बांधकर रखना चाहिए और जिसे मुक्त नहीं छोड़ना चाहिए। परन्तु शिष्य को अहंकारी नहीं होना चाहिए और अनभिज्ञों के सामने गुप्त रहस्य प्रकट नहीं करने चाहिए। उसे हर कठिनाई में गुरु से परामर्श लेना चाहिए। जैसा कि ख्वाजे हाफ़िज़, अल्लाह उन पर रहमत करे, कहते हैं:

किसी ने कहा, 'यह फांसी का तख्ता खड़ा किया गया था।'
"रहस्य बताने के लिए। अब बताने वाला मर चुका है।"

मिर्ज़ा हुसैन अली को वैराग्य और भारतीय दर्शन में हमेशा से विशेष रुचि थी, और वे अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए भारत जाना चाहते थे। वे भारतीय धार्मिक संप्रदायों के सदस्यों से मिलना और उनके रहस्यों को जानना चाहते थे। इसलिए, उन्हें अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने के सुझाव से कोई आश्चर्य नहीं हुआ। इसके विपरीत, उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार किया, और उसी दिन, जब वे घर लौटे, तो उन्होंने अपनी हस्तलिखित मसनवाई* की प्रति खोली और उसमें एक शगुन पाया। संयोगवश, ये पंक्तियाँ सामने आईं:

भावनाएं अपने वादे नहीं निभातीं
विश्वासघात करने के लिए उन्हें मृत्युदंड मिलना चाहिए।
उनकी भावनाएं और उनका उद्देश्य दोनों ही आधारभूत हैं।
और वे अपने औचित्य को साबित करने की पूरी कोशिश करते हैं।

इस समाज में भावनाएं अनुकूल हैं
जिस प्रकार शव कब्र में ठीक से समा जाता है।
ये भावनाएँ चतुर और बुद्धि से परिपूर्ण हो सकती हैं।
लेकिन सांसारिक दुनिया के लिए वे गुलामों के समान हैं।

क्योंकि किसी भी परलोक में उनकी कोई भूमिका नहीं होती,
उन्हें मरने के लिए छोड़ दो। लेकिन ईश्वर, जो घृणा नहीं कर सकता,
वह अपनी प्रेरणा से लोगों के दिलों को छू सकता है –
निर्जीव धूल से एक प्राणी का जन्म होगा।

इस शगुन के कारण ही मिर्ज़ा हुसैन अली ने अपने स्वाभाविक स्वभाव पर विजय पाने और वैराग्य में स्वयं को समर्पित करने का निश्चय किया। प्रारंभ में, सूफी ग्रंथों का गहन अध्ययन करने के साथ-साथ उन्होंने इस संघर्ष पर और अधिक बल दिया। 'सच्चे प्रकाश का ग्रंथ' में लिखा है:

हे स्वामी! कुछ समय के लिए स्वयं को अनुशासित करें।
और इस प्रयास में अपनी रुचियों को साकार करें।
जब तक आपके झूठे विचार दूर नहीं हो जाते और उनमें
यहीं से सच्चाई सामने आती है।

उन्होंने मीर होसैनी के कोंज़ेलोर रोमस में पढ़ा:

वासनाओं को नष्ट करो, और उनकी शक्ति टूट जाएगी।
जैसे आप किसी दुष्ट सांप को नष्ट करते हैं।

मारसाद ओल्ड बैड की किताब में लिखा था:

यह जान लो कि जब दीक्षा लेने वाला व्यक्ति तपस्या और हृदय शुद्धि के मार्ग पर संघर्ष शुरू करता है, तो उसे स्वर्ग के राज्य का मार्ग दिखाई देता है; और हर चरण में उसकी अवस्था के अनुरूप रहस्य उसके सामने प्रकट होते जाएंगे।

और उन्होंने नासिर खोसरो की कविता में पढ़ा:

तुम्हारे खजाने के ऊपर एक अजगर खड़ा है।
इसे खत्म करो, और देखो कि दुख आनंद में बदल जाता है।
उसे शांत करने के लिए, जैसा कि कायर कोशिश करता है,
इससे उस अनंत पुरस्कार पर दावा खो जाता है।

भय और आशा से भरे इन सभी धमकी भरे छंदों को लिखने में अनगिनत कलम घिस गए थे, और इन्हें पढ़कर मिर्ज़ा हुसैन अली के मन में कोई संदेह नहीं रह गया था कि लक्ष्य की ओर पहला कदम शैतानी और पशुवत वासनाओं का नाश करना है, वे वासनाएँ जो मानवता को सत्य तक पहुँचने से रोकती हैं। मिर्ज़ा हुसैन अली अपने इस जुनून को विचार और तर्क के साथ-साथ कठोरता और संघर्ष के द्वारा भी शुद्ध करना चाहते थे। लगभग एक सप्ताह बीत गया, लेकिन फिर वे निराश होने लगे। इस निराशा का कारण संदेह और शंका थी, विशेष रूप से हाफ़िज़ की इन कविताओं से जुड़ने के बाद।

ब्रह्मांड के रहस्य की खोज मत करो।
बल्कि संगीतकारों और शराब की कहानियां सुनाएं।
हमारे अस्तित्व की पहेली को सुलझाने के लिए
इसके लिए ऐसी बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती है जो किसी को नहीं मिल सकती।
हर सुखद स्वर का आनंद लें,
क्योंकि जीवन के गीत का अंत कोई नहीं जानता।

हालांकि मिर्ज़ा हुसैन अली जानते थे कि "शराब", "प्याला लाने वाला", "सराय", "शराब बेचने वाला" आदि जैसे शब्द रहस्यमय शब्दावली हैं, फिर भी, इस स्पष्टीकरण के बावजूद, खय्याम की कुछ चौपाइयाँ उनके लिए बहुत कठिन थीं और उन्हें उलझन में डाल देती थीं। उदाहरण के लिए:

हे हृदय, स्वर्ग और नरक को किसी ने नहीं देखा है।
वहां से कोई भी खबर देने के लिए नहीं लौटा है।
हमारी आशाएँ और भय व्यर्थ हैं, क्योंकि हमारे पास
शुरुआत करने के लिए नामों के अलावा और कुछ नहीं।

या फिर यह चौपाई:

खय्याम, अगर तुम शराब के नशे में चूर हो, तो खुश हो जाओ।
अपने चुने हुए प्रियजन से प्रसन्न रहें।
क्योंकि जीवन का अंत शून्यता है।
खुश रहो कि अंत ने अभी तक तुम्हारी आवाज को शांत नहीं किया है।

इन गुरुओं ने उसे सुख की ओर आमंत्रित किया, जबकि उसने स्वयं को सभी सुखों से वंचित कर लिया था। इस विचार ने उसके मन में अपने बीते जीवन के लिए गहरा पश्चाताप उत्पन्न किया – वह जीवन जिसमें उसने इतना कुछ त्याग दिया था और जिसे उसने स्वयं के लिए इतना कठिन बना लिया था। अब भी उसके दिन काल्पनिक विचारों की खोज में पीड़ादायक रूप से व्यतीत हो रहे थे! बारह वर्षों से वह स्वयं को दुख और पीड़ा दे रहा था। सुख, यौवन के

सुख में उसका कोई हिस्सा नहीं था, और अब भी वह खाली हाथ था। इस संदेह और झिझक ने उसके सभी विचारों को भयानक छायाओं में बदल दिया था जो हर जगह उसका पीछा करती थीं। विशेष रूप से रात में, जब वह ठंडे बिस्तर पर करवटें बदलता रहता था। अकेले में, चाहे वह आध्यात्मिक जगत के बारे में कितना भी सोचना चाहता हो, जैसे ही वह सो जाता और उसके विचार धुंधले पड़ जाते, सौ राक्षस उसे लुभाने लगते। कितनी बार वह भय से जाग उठता और अपने सिर और चेहरे पर ठंडा पानी डालता? अगले दिन वह कम खाता, और रात में पुआल पर सोता, क्योंकि शेख अबेलफजल हमेशा उसके लिए यह कविता सुनाते थे:

ये भावनाएँ प्रचंड क्रोध की तरह हैं, जिन्हें नियंत्रित करना कठिन है।
उन्हें जितना ज्यादा मिलता है, उतनी ही जोर से वे शिकायत करते हैं।

मिर्ज़ा हुसैनअली जानते थे कि अगर उनसे कोई चूक हुई तो उनकी सारी मेहनत व्यर्थ हो जाएगी। इसी कारण उन्होंने अपने शरीर को और भी कष्ट पहुँचाना शुरू कर दिया। लेकिन जितना अधिक उन्होंने खुद को अनुशासित किया, उतना ही अधिक कामवासना का राक्षस उन्हें सताने लगा, अंततः उन्होंने अपने इकलौते मित्र और गुरु शेख अबेलफ़ज़ल के पास जाने का फैसला किया, उनसे अपनी समस्याएँ बताईं और उनसे संपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त किया।

शाम ढलने ही वाली थी कि उसके मन में यह विचार आया। उसने कपड़े बदले, अपनी फ्रॉक के बटन बंद किए और सधे कदमों से शिक्षक के घर की ओर चल पड़ा। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि एक आदमी गुस्से में घर के सामने खड़ा है। वह चिल्ला रहा था, अपने बाल नोच रहा था और ज़ोर-ज़ोर से कह रहा था, “कल शेख को बता देना कि मैं उसे अदालत में ले जाऊँगा, उसे वहाँ मुझे जवाब देना होगा। उसने मेरी बेटी को नौकरानी बनाकर रखा और उसे बर्बाद कर दिया और उसका सारा पैसा ले लिया। या तो उसे उससे शादी करनी होगी, या मैं उसे टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। मेरा अपमान हुआ है...”

मिर्ज़ा हुसैनअली अब और बर्दाश्त नहीं कर सके। वे आगे बढ़े और धीरे से बोले, "महोदय, आपने गलती की है। यह शेख अबेलफ़ज़ल का घर है।"

“मैं उसी दुष्ट से बात कर रहा हूँ, उसी नास्तिक शेख से। मुझे पता है वो घर पर है, लेकिन छिपा हुआ है। अगर उसमें बाहर आने की हिम्मत हुई तो मैं उसके टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। कल उससे ज़रूर मिलूंगा।”

जब मिर्ज़ा हुसैनअली को मामला गंभीर लगा, तो वे धीरे-धीरे वहाँ से चले गए, लेकिन ये शब्द उन्हें जगाने के लिए काफी थे। क्या यह सच हो सकता है? क्या उन्होंने कोई गलती तो नहीं कर दी? शेख अबेलफ़ज़ल, जो उन्हें सबसे पहले वासनाओं को कुचलने की सलाह देते थे, क्या वे स्वयं इस प्रयास में सफल नहीं हुए थे? क्या वे भटक गए थे, या वे मिर्ज़ा को धोखा दे रहे थे? यह जानना उनके लिए बहुत ज़रूरी था। अगर यह सच था, तो क्या सभी सूफी ऐसे ही थे, जो ऐसी बातें कहते थे जिन पर वे खुद विश्वास नहीं करते थे? या यह केवल उनके गुरु की विशेषता थी, और क्या उन्हें पैगंबरों में कोई पाखंडी मिल गया था? अगर ऐसा था, तो क्या वे जाकर अपनी सारी आध्यात्मिक पीड़ाएँ और दुर्भाग्य बता सकते थे और फिर शेख कुछ अरबी वाक्य सुनाकर, उन्हें और कठोर निर्देश देकर, मन ही मन उन पर हँस सकते थे? नहीं, उन्हें आज रात ही इस मामले को सुलझाना था। कुछ देर तक वे खाली सड़कों पर बेचैनी से इधर-उधर घूमते रहे। फिर वे भीड़ में पहुँच गए। बिना कुछ सोचे-समझे, वह धीरे-धीरे उन्हीं लोगों के बीच चलने लगा जिन्हें वह

हीन और भौतिकवादी समझता था। भीतर ही भीतर उसने उनके भौतिकवादी, साधारण जीवन को महसूस किया और उनके बीच काफी देर तक चलने की इच्छा की, लेकिन मानो अचानक ही उसने कोई फैसला कर लिया हो, वह एक बार फिर शेख अबेलफजल के घर की ओर मुड़ गया। इस बार वहाँ कोई और नहीं था। उसने दरवाजा खटखटाया और दरवाजा खोलने वाली महिला को अपना नाम बताया। कुछ देर बाद उसने उसके लिए दरवाजा खोला। कमरे में प्रवेश करते ही उसने शेख अबेलफजल को तिरछी आँखों, चेचक के दागों से भरे चेहरे और बेर के जैम के रंग में रंगी दाढ़ी के साथ कालीन पर बैठे देखा। वह अपनी माला जप रहे थे और उनके पास कई किताबें खुली पड़ी थीं। मिर्ज़ा को देखते ही वह उछल पड़े, "या अल्लाह" कहा और गला साफ किया। उनके सामने एक खुला रुमाल था जिस पर बासी रोटी और एक प्याज रखा था। शेख ने मिर्ज़ा की ओर देखकर कहा, "अंदर आइए। आज शाम एक गरीब आदमी के साथ सादा भोजन कीजिए।"

“आपका बहुत-बहुत धन्यवाद... अगर मेरी वजह से कोई परेशानी हो रही हो तो क्षमा करें। मैं तो बस यहाँ से गुजर रहा था। मैं तो बस...”

"बिल्कुल नहीं, बकवास है। मेरा घर तुम्हारा ही है।"

मिर्ज़ा हुसैनअली कुछ कहना चाहते थे, लेकिन अचानक चीख-पुकार और शोरगुल की आवाज़ आई और एक बिल्ली अपने मुँह में पका हुआ तीतर लिए और एक चिल्लाती हुई औरत को अपनी पूंछ पर लिए कमरे में कूद पड़ी। मिर्ज़ा हुसैनअली यह सब देखते ही देखते शेख अब्लफ़ज़ल ने अचानक अपना लबादा उस पर फेंक दिया और केवल कमीज़ और अंडरवियर पहने हुए, कमरे के कोने से एक लाठी उठाकर पागलों की तरह बिल्ली के पीछे दौड़ पड़े। मिर्ज़ा हुसैनअली अपनी बात भूल गए और वहीं स्तब्ध खड़े रह गए। पंद्रह मिनट बाद, हाँफते और जलते हुए चेहरे के साथ, शेख अब्लफ़ज़ल कमरे में आए और बोले, "आप जानते हैं, धार्मिक कानून के अनुसार, यदि कोई बिल्ली सात सौ दीनार से अधिक का नुकसान करती है तो उसे मारना एक पवित्र कर्तव्य है।"

मिर्ज़ा हुसैनअली को अब ज़रा भी शक नहीं था कि यह एक बहुत ही साधारण आदमी था और बूढ़े आदमी का आरोप बिलकुल सच था। वह उठे और बोले, "आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें... आपकी अनुमति से मैं चलता हूँ।"

शेख अबेलफजल उसे दरवाजे तक छोड़ने गए। जब मिर्ज़ा गली में पहुँचा तो उसने राहत की साँस ली। अब उसके लिए सब कुछ सिद्ध हो गया था। वह शेख के असली चरित्र को पहचान गया और समझ गया कि यह सारा दिखावा, षड्यंत्र और छल उसी के लिए था। वह एक तीतर खाता, फिर लोगों को मूर्ख बनाने के लिए मेज पर सूखी रोटी और फफूंदी लगा पनीर या मुरझाया हुआ प्याज परोसता ताकि वह खुद को नेक साबित कर सके। उसने मिर्ज़ा को दिन में सिर्फ एक बादाम खाने का निर्देश दिया, जबकि उसने खुद नौकरानी को गर्भवती कर लिया और अत्तार की इस कविता को बड़े चाव से सुनाया:

हे पुत्र, जंगली जानवर की तरह खून मत बहाओ।
उस अनुपयुक्त भोजन से बचने की पूरी कोशिश करें।

एक निवाला या एक दाना पाकर ही संतुष्ट रहो।
उपवास के माध्यम से अपनी वासनाओं को जंजीरों में बांधकर रखें।
उपवास में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करें और खोजें
आप अपने जैसे लोगों से अलग पहचान हासिल करेंगे।
अपनी वासनाओं को भोजन से वंचित न रखें,
लेकिन वर्जित चीजों के बारे में सभी विचारों को त्याग दें।

अंधेरा छा चुका था। मिर्ज़ा हुसैनअली एक बार फिर लोगों की भीड़ में घुस गए। एक खोए हुए बच्चे की तरह वे धूल भरी, भीड़भाड़ वाली गलियों में बेतरतीब ढंग से भटक रहे थे। स्ट्रीटलाइट की रोशनी में उन्होंने चेहरों को देखा। सभी चेहरे उदास और मायूस थे। उनका सिर खाली सा लग रहा था, और दिल में असहनीय दबाव था। जिन लोगों को वे अब तक नीच, पेट और वासनाओं से बंधे, धन इकट्ठा करने वाले समझते थे, अब वे उन्हें अपने से कहीं अधिक बुद्धिमान और बेहतर समझते थे, और वे भी उनमें से एक बनना चाहते थे। लेकिन उन्होंने मन ही मन कहा, "कौन जाने?" शायद उनमें से कोई उनसे भी बदतर हालत में हो। क्या वे बाहरी दिखावे से अंदाजा लगा सकते हैं? क्या सड़क पर भीख मांगने वाला एक सिक्के से सबसे अमीर आदमी से ज्यादा खुश नहीं हो जाएगा? इस बीच, दुनिया का सारा पैसा भी मिर्ज़ा हुसैनअली के दर्द को कम नहीं कर सकता था। इस बार उनके सारे डरावने सपने, जो आमतौर पर उन्हें आते थे, और भी ज्यादा तीव्र और तेजी से आए। उन्हें लगा कि उनका जीवन व्यर्थ ही बीत गया है। तीस वर्षों की उन्मादी, उलझी हुई यादें उनके सामने से गुजर गईं। वह स्वयं को सबसे दुर्भाग्यशाली और निकम्मा प्राणी समझता था। उसके जीवन के क्षण उसे काले बादलों के पीछे से निकलते प्रतीत होते थे। कुछ क्षण अचानक चमक उठते, फिर गायब हो जाते। सब कुछ नीरस, थकाने वाला और हृदयविदारक था। कभी-कभी क्षणिक, व्यर्थ सुख बादल से बिजली की तरह चमकता हुआ दिखाई देता था। उसे सब कुछ तुच्छ और व्यर्थ लगता था: कितना व्यर्थ संघर्ष! कितनी बेतुकी खोज! वह स्वयं से बुदबुदाया और अपने होंठ काट लिए। उसकी जवानी एकांत और अंधकार में, बिना सुख, बिना खुशी, बिना प्रेम के, स्वयं से और दूसरों से ऊबकर बर्बाद हो गई थी। कितने लोग कभी-कभी खुद को उस पक्षी से भी अधिक खोया हुआ, बेघर महसूस करते हैं जो रात के अंधेरे में रोता है? वह अब किसी बात पर विश्वास नहीं कर सकता था। शेख अबेलफजल से उसकी मुलाकात ने उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी थी, क्योंकि इसने उसके सारे विचारों को उलट-पुलट कर दिया था। वह थका हुआ और प्यासा था, और उसके भीतर एक शैतान या अजगर जाग उठा था जो उसे लगातार घायल और विषैला कर रहा था। तभी एक कार उसके पास से गुजरी, और उसकी रोशनी में उसका क्रोधित चेहरा, कांपते होंठ और खुली, भावहीन आंखें भयावह रूप से चमक उठीं। वह आधे खुले मुंह से खालीपन में घूर रहा था, मानो किसी पहुंच से बाहर की चीज पर हंस रहा हो। उसे अपनी खोपड़ी के निचले हिस्से में दबाव महसूस हुआ जो उसके माथे और कनपटी तक फैल गया और उसकी भौहों के बीच झुर्रियां पड़ गईं।

मिर्ज़ा हुसैन अली ने असहनीय पीड़ा का अनुभव किया था। उन्होंने निराशा भरे क्षणों, कष्टों और दुर्भाग्य को जिया था, और वे एक ऐसे दार्शनिक दर्द को जानते थे जो आम लोगों को नहीं होता। लेकिन अब वे खुद को असीम रूप से खोया हुआ और अकेला महसूस कर रहे थे। उनके लिए जीवन एक मज़ाक और झूठ के सिवा कुछ नहीं रह गया था। वे मन ही मन कहते थे, "जीवन में मुझे क्या मिला? कुछ नहीं!"

एक कविता की इस पंक्ति ने उसे पागल कर दिया। बादलों के पीछे से हल्की चाँदनी चमक रही थी, लेकिन वह परछाई में ही आगे बढ़ रहा था। यह चाँद, जो पहले उसके लिए इतना मोहक और रहस्यमय था और जिसके साथ उसने शहर के द्वार के बाहर घंटों बिताए थे, अब एक ठंडी, निर्मम और अर्थहीन चमक जैसा लग रहा था। इससे उसे गुस्सा आ रहा था। उसे गर्म दिन, पढ़ाई के लंबे

घंटे याद आ गए। उसे अपना बचपन याद आ गया। जब उसकी उम्र के दूसरे लड़के मौज-मस्ती में व्यस्त थे, वह गर्मी के दिनों में पसीने से तरबतर होकर दूसरे छात्रों के साथ अरबी व्याकरण पढ़ता था। फिर वे अपने धर्मशास्त्र शिक्षक, शेख मोहम्मद ताकी के साथ चर्चा में भाग लेने जाते थे। पूरी तरह से कसी हुई पतलून पहने, सामने बर्फ के पानी का कटोरा रखे, वह उकड़ू बैठा रहता था और खुद को पंखा करता रहता था, और अगर वे किसी अरबी शब्द के एक स्वर में गलती कर देते, तो वह चिल्ला उठता था और उसकी गर्दन की नसें तन जाती थीं, मानो दुनिया खत्म हो रही हो।

अब सड़कें सुनसान थीं और दुकानें बंद थीं। जब वह अल्लाह-ओ-दुलेह गली में दाखिल हुआ तो संगीत की आवाज़ ने उसे जगा दिया। बिजली की रोशनी में एक नीले दरवाजे के ऊपर उसने "मैक्सिम" नाम पढ़ा। बिना झिझके उसने दरवाजे का पर्दा हटाया, अंदर गया और एक मेज पर बैठ गया।

चूंकि मिर्ज़ा हुसैनअली को बार में जाने की आदत नहीं थी, क्योंकि उन्होंने कभी ऐसी जगहों पर कदम नहीं रखा था, इसलिए वे अचरज से चारों ओर देखने लगे। सिगरेट का धुआं तले हुए मांस और पत्तागोभी की गंध के साथ घुलमिल रहा था। घनी मूंछों और ऊपर चढ़ी आस्तीनों वाला एक छोटा आदमी बार के पीछे अबैकस पर जोड़-घटाव कर रहा था। उसके बगल में बोतलों की एक कतार लगी थी। थोड़ी दूर पर, एक मोटी औरत पियानो बजा रही थी, जबकि उसके बगल में एक पतला आदमी वायलिन बजा रहा था। अजीब चेहरों वाले नशे में धुत ग्राहक, जिनमें से कुछ रूस और काकेशस से थे, मेजों पर बैठे थे। इसी बीच, विदेशी लहजे वाली एक खूबसूरत महिला उनकी मेज के पास आई और मुस्कुराते हुए बोली, "क्या आप मुझे एक गिलास वाइन पिलाएंगे, डार्लिंग?"

"निश्चित रूप से।"

बिना किसी झिझक के उस महिला ने वेटर को बुलाया और एक ऐसी शराब मंगाई जिसके बारे में उसने कभी सुना भी नहीं था। वेटर ने उनके सामने शराब की एक बोतल और दो गिलास रख दिए। महिला ने शराब डाली और उसे मिर्ज़ा हुसैनअली को दी। मिर्ज़ा हुसैनअली ने अनिच्छा से पहला गिलास पिया। उसका शरीर गर्म हो गया, उसके विचार उलझ गए। महिला उसे एक के बाद एक गिलास शराब पिलाती रही। वायलिन से एक उदास विलाप की आवाज़ आ रही थी। मिर्ज़ा हुसैनअली को अंदर से आज़ादी और एक अजीब सी खुशी महसूस हुई। उसे सूफी कविताओं में पढ़ी शराब की सारी प्रशंसा और महिमा याद आ गई। प्रकाश की निर्मम चमक में उसने अपने बगल में बैठी महिला की आँखों के चारों ओर झुर्रियाँ देखीं। अपने सारे संयम के बाद, अब उसकी किस्मत एक पीली, खट्टी शराब और एक सजी-धजी, थकी-हारी, खुरदुरे बालों वाली महिला के रूप में बदल गई थी। लेकिन उसे यही अच्छा लग रहा था। उसे लगा कि वह खुद को इतना नीचा करना चाहता है ताकि वह उस अस्तित्व को और भी बेहतर तरीके से नष्ट और बर्बाद कर सके जो इतने दर्द से गुज़रने के बाद बन गया था। वह सबसे शुद्ध, सबसे उज्ज्वल विचारों से सबसे गहरे आनंद में डूब जाना चाहता था। वह हंसी का पात्र बनना चाहता था, चाहता था कि लोग उसका उपहास करें। वह पागलपन के रास्ते से बचने का रास्ता खोजना चाहता था। इस घड़ी में वह जानता था कि वह हर तरह के पागलपन में सक्षम है। वह मन ही मन बुदबुदाया:

गरीबी के इस दौर में
आनंद लें, दावत करें और मौज-मस्ती करें।
अस्तित्व का दार्शनिक पत्थर
एक भिखारी को भी धनी बना सकता है।

उनके सामने बैठी रूसी महिला हँसी। शराब की प्रशंसा में सूफी कविता में मिर्ज़ा हुसैनअली ने जो कुछ पढ़ा था, वह सब उनकी आँखों के सामने आ गया। उन्होंने सब कुछ महसूस किया; वे अपने सामने बैठी महिला के चेहरे पर छिपे सभी रहस्यों और गुप्त बातों को पढ़ सकते थे। इस समय वे प्रसन्न थे, क्योंकि उन्होंने अपनी मनोकामना पूरी कर ली थी। शराब की हल्की धुंध में उन्होंने वह देखा जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी, जिसका शेख अबेलफजल सपना भी नहीं देख सकते थे, जिसकी अन्य लोग कल्पना भी नहीं कर सकते थे। रहस्यों से भरी एक दूसरी दुनिया उनके सामने प्रकट हुई। वे समझ गए कि जिन लोगों ने इस दुनिया को वर्जित किया था, उन्होंने अपने सभी शब्द, तुलनाएँ और संकेत इसी दुनिया से लिए थे।

जब मिर्ज़ा हुसैनअली बिल चुकाने के लिए उठे तो वे खड़े नहीं हो पा रहे थे। उन्होंने अपना बटुआ निकाला, महिला को दिया और उनका हाथ थामे वे मैक्सिम्स से बाहर निकल गए। दुपट्टे में, मिर्ज़ा हुसैनअली ने अपना सिर महिला की छाती पर रख दिया। उन्होंने उसके पाउडर की खुशबू महसूस की। दुनिया उनकी आँखों के सामने घूम रही थी। बत्तियाँ नाच रही थीं। महिला रूसी लहजे में एक उदास गीत गा रही थी।

ड्रॉश्की (एक प्रकार की गाड़ी) मिर्ज़ा हुसैनअली के घर पर रुकी। वह महिला के साथ घर में दाखिल हुआ, लेकिन वह उस पुआल के पलंग पर नहीं गया जहाँ वह आमतौर पर सोता था। वह उसे अपने पुस्तकालय में बिछे सफेद गद्दे पर ले गया।

दो दिन बीत गए और मिर्ज़ा हुसैनाली स्कूल में काम पर नहीं गए। तीसरे दिन अखबार में लिखा गया: "युवा और मेहनती शिक्षक श्री मिर्ज़ा हुसैनाली ने अज्ञात कारणों से आत्महत्या कर ली है।"

जिंदा दफन

(बर्ड अलाइव से)

(डेबोरा मिलर मोस्ताघेल द्वारा अनुवादित)

मेरी सांस फूल रही है, आंखों से आंसू बह रहे हैं, मुंह का स्वाद खट्टा है। मुझे चक्कर आ रहे हैं, दिल की धड़कन तेज है, मैं थकी हुई हूं, हारी हुई हूं, मेरा शरीर ढीला पड़ गया है। मैं अनजाने में बिस्तर पर गिर पड़ी हूं। मेरी बांहों में इंजेक्शन के निशान हैं। मेरे बिस्तर से पसीने और बुखार की गंध आ रही है। मैं बिस्तर के बगल में रखी छोटी मेज पर घड़ी देखती हूं। रविवार के दस बज रहे हैं। मैं कमरे की छत को देखती हूं, जिसके बीचोंबीच एक बल्ब लटका हुआ है। मैं कमरे में चारों ओर देखती हूं। वॉलपेपर पर गुलाबी और लाल फूलों का डिज़ाइन बना है। थोड़ी-थोड़ी दूरी पर दो काले पक्षी एक डाल पर आमने-सामने बैठे हैं। उनमें से एक ने अपनी चोंच खोल रखी है, मानो दूसरे से बात कर रहा हो। यह दृश्य मुझे क्रोधित कर रहा है, पता नहीं क्यों, लेकिन मैं जिधर भी मुड़ूं, यह दृश्य मेरी आंखों के सामने है। मेज बोतलों, बत्तियों और दवाइयों के डिब्बों से भरी है। जले हुए अल्कोहल की गंध, बीमार के कमरे की गंध, हवा में फैली हुई है। मैं उठकर खिड़की खोलना चाहता हूँ, लेकिन अत्यधिक आलस ने मुझे बिस्तर से जकड़ रखा है। सिगरेट पीना चाहता हूँ, पर कोई इच्छा नहीं है। दाढ़ी बढ़ाए हुए अभी दस मिनट भी नहीं हुए हैं। आते ही बिस्तर पर गिर पड़ा। जब मैंने आईने में देखा तो पाया कि मैं बहुत दुबला-पतला हो गया हूँ। चलने में भी मुझे कठिनाई हो रही है। कमरा अस्त-व्यस्त है। मैं अकेला हूँ।

मेरे दिमाग में हज़ारों तरह के आश्चर्यजनक विचार उमड़ते-घुमड़ते रहते हैं। मैं उन सभी को देखता हूँ। लेकिन छोटी से छोटी भावना या क्षणिक विचार को लिखने के लिए मुझे अपने पूरे जीवन का वर्णन करना होगा, और यह संभव नहीं है। ये चिंतन, ये भावनाएँ मेरे पूरे जीवन का परिणाम हैं, मेरी जीवनशैली का, मेरी विरासत में मिली सोच का, जो मैंने देखा, सुना, पढ़ा, महसूस किया या जिस पर विचार किया है, उसका। इन सभी चीजों ने मिलकर मेरे अतार्किक और हास्यास्पद अस्तित्व का निर्माण किया है।

मैं बिस्तर पर करवटें बदलती हूँ। अपनी यादों को आपस में उलझाती हूँ। परेशान और पागल कर देने वाले विचार मेरे दिमाग पर हावी हो जाते हैं। मेरा सिर दुखता है, धड़कता है। मेरी कनपटी गर्म हो जाती है। मैं करवटें बदलती रहती हूँ। मैं अपनी आँखों पर रजाई ओढ़ लेती हूँ। सोचती हूँ - मैं थक गई हूँ। काश मैं अपना सिर खोलकर अपने दिमाग के उस नरम, भूरे, उलझे हुए ढेर को निकाल कर फेंक देती, किसी कुत्ते को खिला देती।

कोई समझ नहीं सकता। कोई विश्वास नहीं करेगा। जो हर चीज़ में असफल हो जाता है, उससे लोग कहते हैं, "जाओ और सिर रखकर मर जाओ।" लेकिन जब मौत भी तुम्हें नहीं चाहती, जब मौत भी तुमसे मुंह मोड़ लेती है, वो मौत जो न तो आएगी और न ही आना चाहती है!..."

हर कोई मौत से डरता है, लेकिन मैं अपने निरंतर जीवन से डरता हूँ। यह कितना भयानक है जब मौत किसी को नहीं चाहती और ठुकरा देती है! केवल एक बात मुझे तसल्ली देती है। दो हफ्ते पहले, मैंने अखबार में पढ़ा कि ऑस्ट्रिया में एक व्यक्ति ने तेरह बार अलग-अलग तरीकों से आत्महत्या करने की कोशिश की और हर बार वह लगभग सफल हो गया: उसने फांसी लगाई और रस्सी टूट गई, उसने नदी में छलांग लगाई और लोगों ने उसे बाहर निकाल लिया, और इसी

तरह... अंत में, आखिरी बार, जब घर खाली था, उसने रसोई के चाकू से अपनी कलाई काट ली, और इस तेरहवीं बार में उसकी मौत हो गई!

इससे मुझे तसल्ली मिलती है!

नहीं, कोई भी आत्महत्या करने का फैसला नहीं करता। आत्महत्या कुछ लोगों के साथ होती है। यह उनके स्वभाव में ही निहित होती है, वे इससे बच नहीं सकते। भाग्य ही सब कुछ तय करता है, लेकिन साथ ही साथ यह मैं ही हूँ जिसने अपना भाग्य खुद बनाया है। अब मैं इससे बच नहीं सकता, लेकिन मैं खुद से भी नहीं बच सकता।

खैर, अब क्या किया जा सकता है? किस्मत मुझसे ज़्यादा ताकतवर है। मुझे कैसे-कैसे ख्याल आते हैं! बिस्तर पर लेटे-लेटे मेरी इच्छा होती कि काश मैं बच्चा होता। वही बूढ़ी आया, जो मुझे कहानियाँ सुनाती थी, बीच-बीच में रुक-रुक कर, मेरे सिरहाने बैठी होती। मैं ऐसे ही बिस्तर पर थका-हारा लेटा होता, और वो मुझे कहानियाँ सुनाती रहती और मेरी आँखें धीरे-धीरे बंद हो जातीं। अब जब मैं इसके बारे में सोचता हूँ, तो मेरे बचपन की कुछ घटनाएँ आसानी से याद आ जाती हैं। ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो। मैं देखता हूँ कि मैं अपने बचपन से ज़्यादा दूर नहीं हूँ। अब मुझे अपना पूरा अंधकारमय, नीच और बेकार जीवन दिखाई देता है। क्या मैं तब खुश था? नहीं, कितनी बड़ी गलती! सब कहते हैं कि बच्चे खुशकिस्मत होते हैं। नहीं, मुझे अच्छी तरह याद है। मैं तब और भी ज़्यादा संवेदनशील था। तब मैं ढोंगी और चालाक था। ऊपर से मैं हँसता या खेलता तो था, लेकिन अंदर ही अंदर, छोटी-सी चुभने वाली बात या छोटी-सी अप्रिय, बेकार घटना भी घंटों तक मेरे दिमाग में घूमती रहती और मैं अंदर ही अंदर घुटता रहता। मुझ जैसे स्वभाव वाले को तो कभी ज़िंदा नहीं रहना चाहिए। सच्चाई तो उन लोगों के साथ है जो कहते हैं कि स्वर्ग और नरक व्यक्ति के भीतर ही होते हैं। कुछ लोग जन्म से ही भाग्यशाली होते हैं और कुछ दुर्भाग्यशाली।

मैं बिस्तर पर लेटे-लेटे उस लाल पेंसिल के टुकड़े को देख रहा हूँ जिससे मैं ये नोट्स बना रहा हूँ। इसी पेंसिल से मैंने मिलने की जगह और उस लड़की के लिए नोट लिखा था जिससे मेरी अभी-अभी जान-पहचान हुई थी। हम दो-तीन बार साथ में सिनेमा देखने गए थे। आखिरी बार एक बोलती फिल्म थी, मूक फिल्म नहीं। कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, शिकागो के एक मशहूर गायक ने 'वेयर इज़ माई सिल्विया?' गाया। मुझे इतना आनंद आया कि मैंने आँखें बंद कर लीं। मुझे अभी भी उनकी दमदार और मनमोहक आवाज़ सुनाई देती है। पूरा थिएटर उस आवाज़ से गूंज उठा। मुझे लगा मानो उन्हें कभी मरना ही नहीं चाहिए। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि एक दिन यह आवाज़ खामोश हो जाएगी। उनकी उदास आवाज़ ने मुझे दुखी कर दिया, भले ही मैं उसका आनंद ले रहा था। संगीत ऊँचा-नीचा बज रहा था। वायलिन के तारों से निकलने वाली कंपकंपी और विलाप की आवाज़ से ऐसा लग रहा था मानो धनुष मेरी नसों पर चल रहा हो। मेरा पूरा शरीर संगीत से सराबोर था; इसने मुझे कंपकंपा दिया और कल्पना के पथ पर ले गया। अंधेरे में मैंने उसके स्तनों को सहलाया। उसकी आँखें भारी हो गईं। मुझे अजीब सा लगा। मुझे याद है, वह एक उदास और मार्मिक अवस्था थी जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। मैंने उसके नम, ताज़े होंठों को चूमा। वह शरमा रही थी। हमने एक-दूसरे को गले लगाया। मैं फिल्म पर ध्यान नहीं

दे रहा था। मैं उसके हाथों से खेल रहा था और वह मुझसे लिपट रही थी। अब ऐसा लगता है जैसे यह एक सपना था। हमारे बिछड़ने के बाद नौ दिन बीत चुके हैं। हमने तय किया था कि अगले दिन मैं उसे अपने कमरे में ले आऊँगा। उसका घर मोंटपार्नास कब्रिस्तान के पास था। उस दिन मैं उसे लेने गया। मैं कोने पर मेट्रो से उतरा। ठंडी हवा चल रही थी और आसमान में बादल छाए हुए थे। मुझे नहीं पता क्या हुआ, लेकिन मैंने अपना इरादा बदल दिया। ऐसा नहीं था कि वह आकर्षक नहीं थी, या मैं उसे पसंद नहीं करता था, लेकिन किसी शक्ति ने मुझे रोक रखा था। नहीं, मैं उसे अब और नहीं देखना चाहता था। मैं जीवन से सारे बंधन तोड़ना चाहता था। बिना सोचे समझे मैं कब्रिस्तान में चला गया। प्रवेश द्वार पर चौकीदार ने खुद को गहरे नीले रंग के लबादे में लपेट रखा था। वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था। मैं धीरे-धीरे टहल रही थी, कब्रों को, उनके ऊपर बने क्रॉस को, कब्रों के पास या ऊपर लगे कृत्रिम फूलों और घास को निहार रही थी। मैंने कुछ मृतकों के नाम पढ़े। मुझे अफसोस हुआ कि मैं उनकी जगह नहीं थी। मैंने मन ही मन सोचा कि ये सभी लोग कितने भाग्यशाली थे!... मुझे उन मृतकों से ईर्ष्या हो रही थी जिनके शरीर जमीन के नीचे गल चुके थे। ईर्ष्या की ऐसी तीव्र भावना पहले कभी मुझमें नहीं उठी थी। मुझे ऐसा लग रहा था कि मृत्यु एक सुख और आशीर्वाद है जो आसानी से नहीं मिलता। मुझे ठीक से नहीं पता कि कितना समय बीत गया। मैं स्तब्ध होकर देखती रही। मैं उस लड़की को पूरी तरह भूल चुकी थी। मुझे ठंड नहीं लग रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे मृत लोग जीवितों से अधिक मेरे करीब हों। मैं उन्हें बेहतर समझ पा रही थी। मैं वापस मुड़ गई। नहीं, मैं उस लड़की को अब और नहीं देखना चाहती थी। मैं सब कुछ भुला देना चाहती थी। मैं हार मानकर मर जाना चाहती थी। कैसे बेतुके विचार मेरे मन में आते हैं! शायद मैं बकवास कर रही हूँ।

कई दिनों से मैं ताश के पत्तों से अपना भविष्य बता रहा था। पता नहीं कैसे मुझे अंधविश्वास पर विश्वास हो गया, लेकिन मैं भविष्य बताने को गंभीरता से ले रहा था। दूसरे शब्दों में कहूँ तो मेरे पास करने के लिए और कुछ नहीं था; मैं कुछ और कर ही नहीं सकता था। मैं अपने भविष्य के साथ जुआ खेलना चाहता था। मैंने खुद को खत्म करने की इच्छा की। ताश के पत्तों ने मुझे बताया कि मेरी इच्छा पूरी होगी। एक दिन मुझे एहसास हुआ कि मैं साढ़े तीन घंटे से बिना रुके ताश के पत्तों से अपना भविष्य बता रहा था। पहले मैंने पत्तों को फेंटा, फिर एक पत्ता मेज पर सीधा रखा और बाकी पाँच पत्ते एक पंक्ति में उल्टे रखे, फिर दूसरे उल्टे पत्ते पर एक पत्ता रखा, और इसी तरह करता रहा। मैंने यह खेल बचपन में सीखा था और मैं इससे अपना समय बिता रहा था।

लगभग एक सप्ताह पहले मैं एक कैफे में बैठा था। मेरे सामने दो लोग बैकगैमोन खेल रहे थे। उनमें से एक, जिसका चेहरा लाल था, सिर मुंडा हुआ था, लटकती मूंछों के नीचे से सिगरेट निकली हुई थी, मंदबुद्धि भाव से सुन रहा था। दूसरे ने कहा, "मैंने जुए में कभी नहीं जीता। मैं दस में से नौ बार हार जाता हूँ।" मैंने उन्हें भावहीनता से देखा। मैं क्या कहना चाहता था? पता नहीं। खैर, मैं सड़कों पर निकल गया, मशीनी चाल से चलता रहा। कई बार मेरे मन में आया कि आँखें बंद करके किसी कार के सामने चल दूँ, उसके पहिए मेरे ऊपर से गुजर जाएँ, लेकिन यह मरने का एक कठिन तरीका था। फिर भी, मैं कैसे आश्वस्त हो सकता था? शायद मैं जीवित रहूँ। यही

विचार मुझे पागल कर देता है। इसी तरह सोचते हुए मैं चौराहों और भीड़-भाड़ वाली जगहों से गुजरा। इस भागदौड़, कारों के खुरों की गड़गड़ाहट, गाड़ियों और हॉर्नों की आवाज, इस शोर और हलचल के बीच, मैं अकेला था। लाखों लोगों के बीच, ऐसा लग रहा था मानो मैं टूटी हुई नाव में बैठकर सागर के बीचोंबीच खो गया हूँ। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे मुझे समाज से बेइज्जत करके निकाल दिया गया हो। मुझे समझ आ गया था कि मैं इस जीवन के लिए नहीं बना हूँ। मैं खुद से बातें करता हुआ, नीरसता से चलता रहा। मैं रुककर दुकानों की खिड़कियों में लगी पेंटिंग्स को देखता। कुछ देर तक उन्हें निहारता रहता। मुझे इस बात का अफसोस था कि मैं चित्रकार क्यों नहीं बना। यही एक काम था जो मुझे पसंद था और जिससे मुझे खुशी मिलती थी। मैं सोचता था कि शायद पेंटिंग में ही मुझे थोड़ी तसल्ली मिल सकती है। एक डाकिया मेरे पास से गुजरा और चश्मे के पीछे से एक चिट्ठी पर लिखे पते को देख रहा था। इससे मुझे क्या याद आया? पता नहीं। शायद मुझे ईरान के डाकियों की याद आ गई, वो डाकिया जो हमारे घर आता था।

यह पिछली रात की बात है। मैंने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं, लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही थी। बिखरे हुए विचार, रोमांचक दृश्य मेरी आँखों के सामने आ रहे थे। वे सपने नहीं थे क्योंकि मैं अभी तक सोया नहीं था। वे बुरे सपने थे। मैं न तो सोया हुआ था और न ही जागा हुआ, फिर भी मैं उन्हें देख रहा था। मेरा शरीर थका हुआ, हारा हुआ, बीमार और भारी था। मेरे सिर में दर्द हो रहा था। ये डरावने बुरे सपने मेरी आँखों के सामने से बार-बार गुजर रहे थे। मेरे शरीर से पसीना टपक रहा था। मैंने हवा में कागज का एक पैकेट खुलते देखा। वह एक-एक करके नीचे गिर रहा था। सैनिकों का एक समूह गुजरा, उनके चेहरे दिखाई नहीं दे रहे थे। अंधेरी, भयानक रात डरावनी और क्रोधित आकृतियों से भरी हुई थी। जब मैं अपनी आँखें बंद करके खुद को मौत के हवाले करना चाहता था, तब ये चौंकाने वाली छवियां प्रकट होती थीं। एक ज्वालामुखी का गोला अपने चारों ओर घूम रहा था, एक लाश नदी पर तैर रही थी, हर दिशा से आँखें मुझे घूर रही थीं। अब मुझे वे पागल, क्रोधित आकृतियाँ अच्छी तरह याद हैं जो मेरी ओर झुंड बनाकर आ रही थीं। खून से लथपथ चेहरे वाला एक बूढ़ा आदमी एक खंभे से बंधा हुआ था। वह मुझे देख रहा था, हंस रहा था; उसके दांत चमक रहे थे। एक चमगादड़ अपने ठंडे पंखों से मेरे चेहरे पर प्रहार कर रहा था। मैं एक पतली रस्सी पर चल रहा था। नीचे एक भंवर था। मैं फिसल रहा था। मैं चीखना चाहता था। किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। एक बर्फीला हाथ मेरा गला दबा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे मेरा दिल रुक जाएगा। रात के अंधेरे से आती कराहें, वो भयावह कराहें, परछाइयों से रहित चेहरे - ये सब चीजें अपने आप प्रकट और गायब हो रही थीं। मैं उनके सामने क्या कर सकता था? वे एक ही समय में बहुत पास और बहुत दूर थे। मैं उनका सपना नहीं देख रहा था क्योंकि मैं अभी सोया नहीं था।

* * *

पता नहीं मैंने सबको बेवकूफ बनाया है या मैं खुद बेवकूफ बन गई हूँ, पर एक बात मुझे पागल

कर रही है। मैं हँसी रोक नहीं पा रही। कभी-कभी हँसी से मेरा गला बैठ जाता है। अभी तक किसी को समझ नहीं आया कि मुझे क्या हुआ है। सब बेवकूफ बन गए हैं! एक हफ्ता हो गया है कि मैं बीमार होने का नाटक कर रही हूँ, या यूँ कह रही हूँ कि मुझे कोई अजीब बीमारी हो गई है। यूँ ही मैंने सिगरेट उठाई और जला ली। मैं सिगरेट क्यों पीती हूँ? मुझे खुद नहीं पता। मैं सिगरेट को अपने बाएं हाथ की दो उंगलियों के बीच पकड़ती हूँ। उसे होठों तक ले जाती हूँ। धुआँ हवा में उड़ाती हूँ। ये भी एक बीमारी है!

अब जब मैं इसके बारे में सोचती हूँ तो मेरा शरीर काँप उठता है। यह कोई मज़ाक नहीं था – एक हफ़्ते तक मैंने खुद को तरह-तरह से तड़पाया। मैं बीमार पड़ना चाहती थी। कई दिनों से ठंड थी। पहले मैंने जाकर अपने ऊपर ठंडा पानी डाल लिया। मैंने बाथरूम की खिड़कियाँ खुली छोड़ दीं। अब जब मैं इसके बारे में सोचती हूँ तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मैं हाँफ रही थी, मेरी पीठ और छाती में दर्द हो रहा था, मैंने खुद से कहा कि अब सब खत्म हो गया। अगले दिन मेरी छाती में बहुत दर्द होगा, और मैं बिस्तर पर पड़ी रहूँगी। मैं दर्द को और बढ़ाऊँगी और फिर खुद को खत्म कर लूँगी। अगली सुबह जब मैं उठी तो मुझे सर्दी का ज़रा सा भी निशान नहीं मिला। मैंने फिर से अपने कपड़े उतार दिए। जब अँधेरा हो गया तो मैंने दरवाज़ा बंद कर दिया, लाइट बंद कर दी, खिड़की खोल दी और चुभती ठंड में बैठ गई। तेज़ हवा चल रही थी। मैं बुरी तरह काँप रही थी। मुझे अपने दाँत किटकिटाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मैंने बाहर देखा। जो लोग आ-जा रहे थे, उनकी काली परछाइयाँ, जो गाड़ियाँ गुज़र रही थीं, सब इमारत की छठी मंज़िल से छोटे-छोटे दिखाई दे रहे थे। मैंने अपना नंगा शरीर ठंड के हवाले कर दिया था और मैं तड़प रहा था। इसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि मैं पागल हो गया हूँ। मैं खुद पर हँसा। मैं ज़िंदगी पर हँसा। मैं जानता था कि दुनिया के इस विशाल रंगमंच में हर कोई अपनी मृत्यु तक एक खास तरह की भूमिका निभाता है। मैंने यह भूमिका इसलिए निभाई थी क्योंकि मुझे लगा था कि मुझे जल्दी ही मंच से उतार दिया जाएगा। मेरे होंठ सूख गए थे। ठंड मेरे शरीर को जला रही थी। मैंने खुद को तब तक गर्म किया जब तक कि मैं पसीने से तरबतर नहीं हो गया, फिर अचानक मैंने अपने सारे कपड़े उतार दिए। पूरी रात मैं बिस्तर पर लेटा रहा और काँपता रहा। मुझे बिल्कुल नींद नहीं आई। मुझे हल्की सी सर्दी हो गई थी, लेकिन जैसे ही मैंने झपकी ली, बीमारी पूरी तरह से ठीक हो गई। मैंने देखा कि इससे भी कोई फायदा नहीं हुआ। तीन दिनों तक मैंने कुछ नहीं खाया और हर रात मैं अपने कपड़े उतारकर खिड़की के सामने बैठ जाता था। मैं खुद को थकाता था। एक रात मैं खाली पेट पेरिस की गलियों में दौड़ता रहा। मैं थक गया और एक संकरी गली में ठंडी, गीली सीढ़ियों पर जाकर बैठ गया। आधी रात हो चुकी थी। एक शराबी मज़दूर लड़खड़ाता हुआ वहाँ से गुजरा। धुंधली, रहस्यमयी रोशनी में मैंने एक पुरुष और एक महिला को बातें करते हुए आते-जाते देखा। फिर मैं उठा और चलने लगा। बेघर लोग सड़क किनारे की बेंचों पर सो रहे थे।

आखिरकार कमजोरी के मारे मैं बिस्तर पर पड़ गया, लेकिन मैं बीमार नहीं था। मेरे दोस्त मुझसे मिलने आए। मैंने उनके सामने कांपने का नाटक किया और इतनी अच्छी तरह से बीमार होने का अभिनय किया कि उन्हें मुझ पर तरस आ गया। उन्हें लगा कि मैं कल मर जाऊंगा। मैंने कहा कि मेरी धड़कन बहुत तेज़ चल रही है। जब वे कमरे से चले गए तो मैंने उनका मज़ाक उड़ाया। मैंने

मन ही मन कहा कि दुनिया में सिर्फ एक ही चीज़ है जो मैं अच्छे से कर सकता हूँ। मुझे अभिनेता बनना चाहिए था!

मैंने डॉक्टरों को भी वही चाल कैसे चली जो मैंने अपने दोस्तों को चली थी? सभी को यकीन हो गया कि मैं सचमुच बीमार हूँ। वे जो भी पूछते, मैं कहता, "मेरी धड़कन तेज़ हो गई है", क्योंकि अचानक मौत का कारण केवल दिल का दौरा ही हो सकता है; वरना, सीने में मामूली दर्द जानलेवा कैसे हो सकता है?

यह एक चमत्कार था। जब मैं इसके बारे में सोचती हूँ, तो एक अजीब सी अनुभूति होती है। मैं सात दिनों से खुद को यातना दे रही थी। अगर दोस्तों के कहने पर मैं एक कप चाय पी लेती, तो शायद मैं ठीक हो जाती। यह डरावना था। बीमारी पूरी तरह से ठीक हो जाती। मुझे चाय के साथ रोटी खाने की कितनी तीव्र इच्छा होती थी, लेकिन मैंने नहीं खाई। हर रात मैं खुद से कहती कि आखिरकार मैं बिस्तर पर पड़ गई हूँ। कल मैं उठ नहीं पाऊँगी। मैं गई और अफीम से भरी हुई कैप्सूल ले आई। मैंने उन्हें अपने बिस्तर के बगल वाली छोटी मेज के दराज में रख दिया ताकि जब बीमारी मुझे पूरी तरह से जकड़ ले और मैं हिल भी न सकूँ, तो मैं उन्हें निकालकर निगल सकूँ। दुर्भाग्य से बीमारी आई ही नहीं और आना भी नहीं चाहती थी। एक बार जब मुझे अपने एक दोस्त के सामने चाय के साथ रोटी का एक टुकड़ा खाना पड़ा, तो मुझे लगा कि मैं ठीक हूँ, बिल्कुल ठीक हूँ। मुझे खुद से डर लगने लगा, मेरी सहनशक्ति ने मुझे डरा दिया। यह भयानक है। यह अविश्वसनीय है। जब मैं यह लिख रहा हूँ, तब मैं पूरी तरह होश में हूँ। मैं बकवास नहीं कर रहा हूँ। मुझे सब कुछ अच्छी तरह याद है।

मुझमें ये कौन सी ताकत आ गई थी? मैंने देखा कि मेरी कोई भी योजना नाकाम रही। मुझे सचमुच बीमार होना ही था। हाँ, मेरे बैग में वो जानलेवा ज़हर है, एक तेज़ ज़हर। मुझे वो बरसात का दिन याद आया जब मैंने झूठ, बहाने और हज़ारों मुश्किलों से उसे खरीदा था, खुद को फोटोग्राफर बताकर। मैंने झूठा नाम और पता दिया था। पोटेशियम साइनाइड, जिसके बारे में मैंने एक मेडिकल किताब में पढ़ा था और जिसके लक्षण मुझे पता थे: ऐंठन, सांस लेने में तकलीफ, खाली पेट लेने पर असहनीय दर्द। बीस ग्राम लेने से तुरंत या दो मिनट के अंदर मौत हो जाती है। ताकि हवा में खराब न हो, मैंने उसे चॉकलेट के रैपर में लपेटा, उस पर मोम की एक परत चढ़ाई और एक ढक्कन वाली क्रिस्टल की बोतल में रख दिया। सौ ग्राम था, और मैंने उसे अपने पास एक कीमती गहने की तरह रखा था। लेकिन सौभाग्य से मुझे उससे भी बेहतर चीज़ मिल गई - तस्करी किया हुआ अफीम, और वो भी पेरिस में! जिस अफीम की मुझे इतने लंबे समय से तलाश थी, वो मुझे अचानक मिल गया। मैंने पढ़ा था कि अफीम से मरना साइनाइड से मरने की तुलना में बेहतर और अधिक स्वास्थ्यवर्धक होता है। अब मैं खुद को बहुत बीमार करना चाहता था और फिर अफीम लेना चाहता था।

मैंने पोटेशियम साइनाइड का रैपर खोला। मैंने अंडे के आकार की गोली में से लगभग दो ग्राम निकाला और उसे एक खाली कैप्सूल में डाल दिया। मैंने उसे गोंद से सील कर दिया और निगल लिया। आधा घंटा बीत गया। मुझे कुछ महसूस नहीं हुआ। कैप्सूल की सतह, जो ज़हर के संपर्क में आई थी, नमकीन लग रही थी। मैंने फिर से साइनाइड निकाला। इस बार मैंने लगभग पाँच

ग्राम निकाला और कैप्सूल निगल लिया। मैं जाकर बिस्तर पर लेट गया। मैं ऐसे लेट गया जैसे मैं फिर कभी उठ ही नहीं पाऊंगा!

यह सोच किसी को भी पागल कर सकती है। नहीं, मुझे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। जानलेवा ज़हर का मुझ पर कोई असर नहीं हुआ! मैं अभी भी ज़िंदा हूँ, और ज़हर मेरे बैग में पड़ा है। बिस्तर पर मेरी साँसें मुश्किल से चल रही हैं, लेकिन यह दवा का असर नहीं है। मैं अजेय हो गया हूँ, पौराणिक कथाओं के लोगों की तरह अजेय। यह अविश्वसनीय है, लेकिन मुझे जाना ही होगा। यह व्यर्थ है। मैं खुद को ठुकराया हुआ, बेकार, किसी काम का नहीं महसूस कर रहा हूँ। मुझे जल्द से जल्द सब कुछ खत्म करके चले जाना चाहिए। इस बार यह कोई मज़ाक नहीं है। जितना ज़्यादा मैं सोचता हूँ, उतना ही मुझे लगता है कि मुझे ज़िंदगी से कोई नहीं बांध सकता, कुछ भी नहीं और कोई भी नहीं...

मुझे याद है, परसों की बात है। मैं पागलों की तरह अपने कमरे में इधर-उधर घूम रहा था, एक कोने से दूसरे कोने तक। दीवार पर टंगे कपड़े, सिंक, अलमारी में लगा शीशा, दीवार पर लगी तस्वीर, बिस्तर, कमरे के बीचोंबीच रखी मेज, उस पर बिखरी किताबें, कुर्सियाँ, अलमारी के नीचे रखे जूते, कमरे के कोने में रखे सूटकेस, ये सब लगातार मेरी आँखों के सामने से गुजर रहे थे। लेकिन मैं उन्हें देख नहीं पा रहा था, या शायद मेरा ध्यान कहीं और था। मैं क्या सोच रहा था? पता नहीं – मैं बिना किसी मकसद के इधर-उधर घूम रहा था। अचानक मुझे होश आया। मैंने कहीं और भी इस तरह की बेचैनी देखी थी और मेरा ध्यान उस पर गया था। मुझे याद नहीं कहाँ, फिर मुझे याद आया। मैंने पहली बार जंगली जानवरों को बर्लिन के चिड़ियाघर में देखा था। पिंजरे में जागते हुए जानवर ठीक इसी तरह चल रहे थे, बिलकुल ऐसे ही। मैं भी उन जानवरों जैसा हो गया था। शायद मैं उनकी तरह ही सोच भी रहा था। अंदर से मुझे लग रहा था कि मैं उन्हीं जैसा हूँ। बस एक मशीन की तरह गोल-गोल घूमना। जब मैं दीवार से टकराया तो मुझे स्वाभाविक रूप से लगा कि यह एक बाधा है, और मैं मुड़ गया। वे जानवर भी ऐसा ही करते हैं...

मुझे नहीं पता मैं क्या लिख रहा हूँ। घड़ी की टिक-टिक मेरे कानों में गूंज रही है। मेरा मन कर रहा है कि उसे उठाकर खिड़की से बाहर फेंक दूं। यह डरावनी आवाज़ मेरे दिमाग में हथौड़े से समय बीतने का एहसास करा रही है!

एक हफ्ते से मैं मौत के लिए खुद को तैयार कर रही थी। मैंने अपने सारे कागज़ात और लिखी हुई चीज़ें नष्ट कर दीं। मैंने अपने गंदे कपड़े फेंक दिए ताकि जब मेरी चीज़ों की जाँच हो तो कुछ भी गंदा न मिले। मैंने नए अंडरवियर पहन लिए जो मैंने खरीदे थे, ताकि जब मुझे बिस्तर से उठाया जाए और डॉक्टर मेरी जाँच करने आए तो मैं ठीक-ठाक दिखूँ। मैंने इत्र की एक बोतल उठाई और बिस्तर पर छिड़क दी ताकि अच्छी खुशबू आए। लेकिन चूंकि मेरे ये सारे काम दूसरों जैसे नहीं थे, इसलिए इस बार भी मुझे यकीन नहीं था। मुझे अपने अड़ियल स्वभाव से डर लग रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे ये विशिष्टता और श्रेष्ठता आसानी से नहीं मिलती। मैं जानती थी कि कोई भी मुफ्त में नहीं मरता...

मैंने अपने रिश्तेदारों की तस्वीरें निकालीं और उन्हें देखा। हर तस्वीर मेरे सामने इस तरह प्रकट हुई जैसे उसमें मेरे अपने विचार झलक रहे हों। मुझे वे पसंद भी आईं और नापसंद भी। मैं उन्हें

देखना भी चाहता था और नहीं भी। नहीं, वे यादें मेरी आँखों के सामने बहुत तेज़ थीं। मैंने तस्वीरें फाड़ दीं; मुझे किसी चीज़ से लगाव नहीं था। मैंने खुद का आकलन किया और पाया कि मैं दयालु इंसान नहीं था। मैं कठोर, रूखा और थका हुआ पैदा हुआ था। शायद मैं हमेशा से ऐसा नहीं था, लेकिन जीवन और समय के बीतने ने मुझे ऐसा बना दिया है। मुझे मृत्यु का भय नहीं है। इसके विपरीत, मुझमें एक बीमारी, एक विशेष पागलपन पैदा हो गया था, जिससे मैं मृत्यु के आकर्षण में खिंचा चला जाता था। यह भी हाल की बात नहीं है। मुझे पाँच-छह साल पुरानी एक कहानी याद आई। तेहरान में एक सुबह मैं शाह आबाद एवेन्यू में एक दवा विक्रेता से अफीम खरीदने गया। मैंने उसके सामने तीन तोमान रखे और कहा, "दो रियाल अफीम।"

मेहंदी से रंगी दाढ़ी और सिर पर टोपी पहने, पवित्र शब्द बोलते हुए, उसने मेरी ओर चतुराई से देखा, मानो वह कोई चेहरा विशेषज्ञ हो या मेरे विचारों को पढ़ सकता हो, और कहा, "हमारे पास बदलाव नहीं है।"

मैंने उसे देने के लिए दो रियाल का सिक्का निकाला। उसने कहा, "नहीं, हम इसे बिल्कुल नहीं बेचते।" मैंने पूछा क्यों, तो उसने कहा, "तुम जवान और नासमझ हो। कहीं अचानक तुम अफीम खाने का फैसला न कर लो, भगवान न करे।" मैंने ज़िद नहीं की।

नहीं, कोई भी आत्महत्या करने का फैसला नहीं करता। आत्महत्या कुछ लोगों में होती है। यह उनके स्वभाव में ही निहित होती है। हाँ, हर किसी का भाग्य उसके माथे पर लिखा होता है; कुछ लोग आत्महत्या करने की प्रवृत्ति के साथ पैदा होते हैं। मैंने हमेशा जीवन, दुनिया और उसके लोगों का उपहास किया; सब कुछ एक खेल, एक अपमान, कुछ खोखला और अर्थहीन सा लगता था। मैं बिना सपने देखे सोना चाहता था और फिर कभी जागना नहीं चाहता था। लेकिन चूंकि लोग आत्महत्या को एक अजीब बात मानते हैं, इसलिए मैं खुद को बीमार करना चाहता था, थका हुआ और कमजोर होना चाहता था, और जब सब लोग सोचें कि मैं सचमुच बीमार हूँ, तो अफीम खा लेना चाहता था, ताकि लोग कहें, "वह बीमार पड़ गया और मर गया।"

* * *

मैं बिस्तर पर लेटे-लेटे लिख रहा हूँ। दोपहर के तीन बज रहे हैं। दो लोग मुझसे मिलने आए थे। वे अभी-अभी चले गए। मैं अकेला हूँ। मेरा सिर घूम रहा है, शरीर आराम से और शांत है। पेट में दूध और चाय का एक गिलास है। मेरा शरीर ढीला, कमज़ोर और बुखार से ग्रस्त है। मुझे एक प्यारी धुन याद आई जो मैंने एक बार रिकॉर्ड पर सुनी थी। मैं उसे सीटी बजाकर गाना चाहता हूँ, लेकिन गा नहीं सकता। काश मैं वह रिकॉर्ड फिर से सुन पाता। इस समय मुझे न तो जीवन पसंद है और न ही नापसंद। मैं जीवित हूँ, लेकिन बिना इच्छाशक्ति या आकांक्षा के; कोई सर्वोच्च शक्ति मुझे जकड़े हुए है। मैं जीवन की जेल में लोहे की जंजीरों से जकड़ा हुआ हूँ। अगर मैं मर गया तो वे मुझे पेरिस की मस्जिद ले जाएँगे। मैं उन लानत अरबों के हाथों में पड़ जाऊँगा और फिर से मर जाऊँगा। मैं उनसे तंग आ चुका हूँ। वैसे भी, इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। अगर मरने के बाद वे मुझे नाले में फेंक दें तो भी मेरे लिए वही होगा, मैं चैन से सो जाऊँगा। केवल मेरा परिवार

रोएगा और विलाप करेगा। वे मेरी तस्वीर लाएँगे, मेरी प्रशंसा करेंगे, वही सब घिसी-पिटी बातें। यह सब मुझे मूर्खतापूर्ण और व्यर्थ लगता है। शायद कुछ लोग मेरी प्रशंसा करेंगे, कुछ आलोचना करेंगे, लेकिन अंततः मुझे भुला दिया जाएगा। मैं मूलतः स्वार्थी और आकर्षणहीन हूँ।

जितना ज़्यादा मैं इसके बारे में सोचता हूँ, उतना ही मुझे लगता है कि इस जीवन को जीना व्यर्थ है। मैं समाज के शरीर में एक कीटाणु हूँ, एक हानिकारक प्राणी, दूसरों पर बोझ। कभी-कभी मेरा पागलपन फिर से फूट पड़ता है। मैं दूर जाना चाहता हूँ, बहुत दूर, ऐसी जगह जहाँ मैं खुद को भूल सकूँ, बहुत दूर, जैसे साइबेरिया, लकड़ी के घरों में, चीड़ के पेड़ों के नीचे, धूसर आसमान में, बर्फ़ में, ढेर सारी बर्फ़ में, मुजिकों के बीच, जाकर अपना जीवन फिर से शुरू करना चाहता हूँ। या, जैसे भारत, चमकते सूरज के नीचे, घने जंगलों में, अजनबी लोगों के बीच; ऐसी जगह जहाँ मुझे कोई न जानता हो, कोई मेरी भाषा न जानता हो। मैं अपने भीतर सब कुछ महसूस करना चाहता हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि मैं इसके लिए नहीं बना हूँ। नहीं, मैं आलसी और निकम्मा हूँ। मेरा जन्म गलती से हुआ है। मैं अछूत हूँ, दर-दर भटकता रहता हूँ। मैंने अपनी सारी योजनाओं, प्रेम, आनंद से आँखें मूंद ली हैं। मैंने सब कुछ त्याग दिया है। अब से मुझे मृतकों में गिना जा सकता है।

कभी-कभी मैं बड़े-बड़े सपने देखता हूँ, खुद को हर काम और हर चीज़ के लायक समझता हूँ। मैं खुद से कहता हूँ, "हाँ, महान काम वही लोग कर सकते हैं जिन्होंने ज़िंदगी से नाता तोड़ लिया हो और हर चीज़ से निराश हो चुके हों।" फिर मैं खुद से कहता हूँ, "क्या फ़ायदा? इससे क्या मकसद पूरा होगा? पागलपन, सब कुछ पागलपन है। नहीं, खुद को खत्म कर लो और अपनी लाश को सड़ने के लिए छोड़ दो। दफ़ा हो जाओ, तुम ज़िंदगी के लिए नहीं बने हो। दार्शनिक बातें छोड़ो, तुम्हारे अस्तित्व का कोई मूल्य नहीं है, तुम कुछ नहीं कर सकते।" लेकिन मुझे नहीं पता मौत क्यों आनाकानी कर रही थी। वो क्यों नहीं आई? मैं अपने सपने में कामयाब क्यों नहीं हुआ और आराम क्यों नहीं पा सका? मैंने एक हफ़्ते तक खुद को तड़पाया और यही नतीजा मिला! ज़हर का मुझ पर कोई असर नहीं हुआ। यकीन नहीं होता; मैं विश्वास नहीं कर सकता। मैंने खाना नहीं खाया, मैंने निमोनिया होने की कोशिश की, मैंने सिरका पिया। हर रात मुझे लगता था कि मुझे टीबी हो गया है, लेकिन सुबह जब मैं उठता था तो मेरी सेहत पिछले दिन से बेहतर होती थी। मैं ये बात किसे बताऊँ? मुझे बुखार तक नहीं आया। मैंने न तो सपने देखे हैं और न ही कोई नशीली दवा ली है। मुझे सब कुछ अच्छे से याद है। नहीं, यह अविश्वसनीय है।

अब जब मैंने ये सब लिख लिया है, तो मुझे थोड़ा अच्छा लग रहा है। इससे मुझे तसल्ली मिली है। ऐसा लग रहा है जैसे मेरे कंधों से एक भारी बोझ उतर गया हो। काश सब कुछ लिखा जा सकता! काश मैं दूसरों को अपने विचार समझा पाता। नहीं, कुछ भावनाएँ होती हैं, कुछ बातें होती हैं, जिन्हें दूसरों तक पहुँचाया नहीं जा सकता, जिन्हें बताया नहीं जा सकता; लोग मज़ाक उड़ाएँगे। हर कोई दूसरों को अपने मूल्यों के आधार पर परखता है। भाषा, मनुष्य की ही तरह, अपूर्ण और अक्षम है।

मैं अजेय हूँ। ज़हर का मुझ पर कोई असर नहीं हुआ। मैंने अफ़ीम भी खाई, कोई असर नहीं हुआ। हाँ, मैं अजेय हो गया हूँ। कोई और ज़हर मुझ पर असर नहीं करेगा। आख़िरकार मुझे

एहसास हुआ कि मेरा सारा जीवन व्यर्थ गया। परसों की रात – मैंने तय किया कि इससे पहले कि यह मज़ाक संदेह पैदा करे, मैं इसे खत्म कर दूँगा। मैं गया और छोटी मेज़ की दराज़ से अफ़ीम की गोलियाँ निकालीं। तीन थीं, लगभग एक साधारण अफ़ीम की स्टिक के बराबर। मैंने उन्हें उठाया। सात बज रहे थे। मैंने नीचे से चाय माँगी। वे चाय लाए और मैंने उसे पी लिया। आठ बज गए, कोई मुझसे मिलने नहीं आया। मैंने अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया। मैं गया और दीवार पर लगी तस्वीर के सामने खड़ा हो गया। मैंने उसे देखा। पता नहीं क्या हुआ, लेकिन मेरी नज़रों में वह एक अजनबी था। मैंने खुद से कहा, "इस व्यक्ति का मुझसे क्या रिश्ता है?" लेकिन मैं उस चेहरे को जानता हूँ। मैंने उसे कई बार देखा है। फिर मैं वापस आ गया। मुझे न तो उन्माद महसूस हुआ, न डर, न खुशी। मैंने जो कुछ किया था, जो कुछ करना चाहता था, सब कुछ मुझे व्यर्थ और खोखला लग रहा था। जीवन बिल्कुल बेतुका लग रहा था। मैंने कमरे में चारों ओर देखा। सब कुछ अपनी जगह पर था। मैं अलमारी के शीशे के सामने गया और अपना लाल चेहरा देखा। मैंने अपनी आँखें आधी बंद कर लीं, मुँह थोड़ा सा खोला और अपना सिर एक मरे हुए आदमी की तरह झुका लिया। मैंने मन ही मन कहा, "कल सुबह मैं ऐसा ही दिखूंगा। पहले तो, चाहे कितना भी दरवाजा खटखटाएँ, कोई जवाब नहीं देगा। दोपहर तक वे सोचेंगे कि मैं सो रहा हूँ। फिर वे ताला तोड़कर कमरे में घुसेंगे और मुझे इस हालत में देखेंगे।" ये सारे विचार बिजली की तरह मेरे दिमाग में कौंध गए। मैंने पानी का गिलास उठाया। शांत भाव से मैंने खुद को समझाया कि यह एस्पिरिन है और पहला कैप्सूल निगल लिया। दूसरा और तीसरा भी मैंने जल्दी-जल्दी एक के बाद एक निगल लिया। मुझे अपने अंदर हल्की सी कंपकंपी महसूस हुई। मेरे मुँह से अफीम की गंध आ रही थी। मेरा दिल थोड़ा तेज धड़क रहा था। मैंने आधी जली सिगरेट ऐशट्रे में फेंक दी। मैंने अपनी जेब से एक सुगंधित वेफर निकाला और उसे चूसा। मैंने एक बार फिर आईने में खुद को देखा। मैंने कमरे में चारों ओर देखा – सब कुछ अपनी जगह पर था। मैंने खुद से कहा कि अब सब कुछ खत्म हो गया है। कल तो प्लेटो भी मुझे दोबारा ज़िंदा नहीं कर पाएगा। मैंने बिस्तर के पास कुर्सी पर कपड़े ठीक किए। मैंने अपने ऊपर रजाई ओढ़ ली। उसमें इत्र की खुशबू समाई हुई थी। मैंने लाइट बंद कर दी और कमरा अंधेरा हो गया। खिड़की से आती हल्की रोशनी से दीवार का कुछ हिस्सा और बिस्तर का निचला हिस्सा थोड़ा रोशन था। मेरे पास करने को कुछ नहीं था। अच्छा हो या बुरा, मैं ही इस स्थिति तक पहुँचा था। मैं लेट गया। मैं करवट बदला। मुझे डर था कि कोई आकर मुझे देख न ले और मुझसे कुछ माँगने लगे। हालाँकि, मैंने सबको बता दिया था कि मुझे कई रातों से नींद नहीं आ रही है, ताकि वे मुझे अकेला छोड़ दें। उस समय मैं बहुत उत्सुक था, मानो कोई महत्वपूर्ण घटना घटी हो या मैं किसी रोमांचक यात्रा पर जाने वाला हूँ। मैं मृत्यु को अच्छी तरह महसूस करना चाहता था। मैंने अपनी सारी इंद्रियों को एकाग्र कर लिया था, फिर भी मैं बाहर की आवाज़ों पर ध्यान दे रहा था। जैसे ही किसी के कदमों की आहट सुनाई देती, मेरा दिल बैठ जाता। मैंने अपनी पलकें कसकर बंद कर लीं। लगभग दस मिनट बीत गए। कुछ नहीं हुआ। गोलियों का असर शुरू होने तक मैं तरह-तरह के विचारों में खोया रहा, लेकिन मुझे अपने इस फैसले पर न तो पछतावा था और न ही डर। पहले मेरा शरीर भारी हो गया। मुझे थकान महसूस हुई। यह एहसास पेट में ज़्यादा था, जैसे खाना ठीक से पचा न हो। फिर यह

एहसास सीने तक और फिर सिर तक पहुँच गया। मैंने अपने हाथ हिलाए। मुझे प्यास लगने लगी। मेरा मुँह सूख गया था। मुझे निगलने में कठिनाई हो रही थी। मेरी धड़कन धीमी हो गई। कुछ समय बीत गया। मुझे महसूस हुआ कि मेरे शरीर से, खासकर उंगलियों के सिरों, नाक की नोक आदि से गर्म, सुखद हवा निकल रही है... उसी समय मुझे पता चला कि मैं खुद को मारना चाहता हूँ। मुझे एहसास हुआ कि यह खबर कुछ लोगों को अप्रिय लगेगी। सब कुछ अद्भुत लग रहा था। यह सब मुझे बचकाना, बेतुका और हास्यास्पद लग रहा था। मैंने मन ही मन सोचा कि अब मैं आराम से हूँ और आसानी से मर जाऊँगा। दूसरों के दुखी होने या न होने, रोने या न रोने से क्या फर्क पड़ता है? मेरी दिली इच्छा थी कि ऐसा हो जाए और मुझे डर था कि कहीं मैं हिल न जाऊँ या इस तरह सोच न लूँ कि अफीम का असर रुक जाए। मेरा एकमात्र डर यही था कि इतनी सारी परेशानियों के बाद भी मैं ज़िंदा रहूँ। मुझे डर था कि मरना मुश्किल होगा और निराशा में मैं चीख पड़ूँ या किसी से मदद माँगूँ। लेकिन मैंने खुद से कहा कि चाहे कितनी भी मुश्किल हो, अफीम नींद ला देती है और कुछ महसूस नहीं होता। नींद – मैं सो जाऊँगा और अपनी जगह से हिल भी नहीं पाऊँगा, कुछ बोल भी नहीं पाऊँगा, और दरवाज़ा अंदर से बंद होगा!

हाँ, मुझे अच्छी तरह याद है। ये विचार मेरे मन में आए। मैंने घड़ी की एकरस आवाज़ सुनी। मैंने गेस्टहाउस में चल रहे लोगों के कदमों की आहट सुनी। ऐसा लगा जैसे मेरी सुनने की शक्ति तेज़ हो गई हो। मुझे लगा जैसे मेरा शरीर हवा में उड़ रहा हो। मेरा मुँह सूख गया था। मुझे हल्का सिरदर्द था। मैं लगभग बेहोश हो गया था। मेरी आँखें आधी खुली थीं। मेरी साँसें कभी तेज़, कभी धीमी हो रही थीं। मेरी त्वचा के हर रोम से एक सुखद गर्मी निकल रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे मैं भी उसी के पीछे जा रहा हूँ। मैं चाहता था कि उसकी तीव्रता और बढ़ जाए। मैं एक अवर्णनीय आनंद में डूब गया था। मैं जो चाहता था, सोच रहा था। अगर मैं हिलता-डुलता तो मुझे लगता कि यह गर्मी के प्रवाह में बाधा बन जाएगी। मैं जितना आराम से लेटता, उतना ही अच्छा लगता। मैंने अपना दाहिना हाथ अपने नीचे से निकाला। मैं करवट बदलकर पीठ के बल लेट गया। यह थोड़ा असहज था। मैं वापस उसी स्थिति में आ गया, और अफीम का असर और बढ़ गया। मैं मृत्यु को पूरी तरह महसूस करना चाहता था। मेरी भावनाएँ प्रबल और तीव्र हो गई थीं। मुझे आश्चर्य हुआ कि मुझे नींद नहीं आई। ऐसा लग रहा था मानो मेरा सारा अस्तित्व खुशी-खुशी और शांति से मेरे शरीर से निकल रहा हो। मेरा दिल धीरे-धीरे धड़क रहा था। मैं धीरे-धीरे सांस ले रहा था। मुझे लगता है दो-तीन घंटे बीत गए। इसी समय किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। मुझे एहसास हुआ कि यह मेरा पड़ोसी है, लेकिन मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया और मैं अपनी जगह से हिलना भी नहीं चाहता था। मैंने अपनी आँखें खोलीं और फिर बंद कर लीं। मुझे उसके दरवाजे के खुलने की आवाज सुनाई दी। उसने अपने हाथ धोए और खुद ही सीटी बजाई। मैंने सब कुछ सुना। मैंने खुश और सुखद विचारों में खोने की कोशिश की। मैं बीते साल के बारे में सोच रहा था। वह दिन जब मैं नाव में बैठा था और वे लोग वाद्य यंत्र बजा रहे थे। समुद्र की लहरें, नाव का हिलना, मेरे सामने बैठी वह सुंदर लड़की: मैं अपने विचारों में डूब गया था। मैं उनके पीछे भाग रहा था, मानो मेरे पंख हों और मैं अंतरिक्ष में उड़ रहा हूँ। मैं इतना हल्का और फुर्तीला हो गया था कि इसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। अफीम के सुखद प्रभाव में होने का अंतर उतना ही बड़ा होता है जितना

कि सामान्य रूप से देखी गई रोशनी और झूमर या क्रिस्टल प्रिज्म से छनकर देखी गई रोशनी में, जो उसे अलग-अलग रंगों में विभाजित कर देता है। इस अवस्था में, मन में आने वाले कोई भी सरल, खोखले विचार अपने आप में आकर्षक और चकाचौंध भरे हो जाते हैं। कोई भी क्षणिक और खोखला विचार मोहक और शानदार प्रतीत होता है। यदि कोई दृश्य या नजारा मन में आता है, तो वह असीम रूप से विशाल हो जाता है, अंतरिक्ष विस्तृत हो जाता है, समय का बोध नहीं होता।

उस समय मुझे बहुत खुशी महसूस हो रही थी। मेरी इंद्रियाँ व्याकुल थीं। लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं सो नहीं रहा हूँ। अफीम के सुख और परमानंद की जो आखिरी अनुभूति मुझे याद है, वह यह है कि मेरे पैर ठंडे और सुन्न हो गए थे, मेरा शरीर गतिहीन हो गया था। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं बह रहा हूँ, बहुत दूर जा रहा हूँ। लेकिन जैसे ही उसका असर कम हुआ, एक असीम दुःख ने मुझे जकड़ लिया। मुझे महसूस हुआ कि मेरी इंद्रियाँ वापस लौट रही हैं। यह बहुत कठिन और अप्रिय था। मुझे ठंड लग रही थी। आधे घंटे से अधिक समय तक मैं बुरी तरह काँपता रहा। मुझे अपने दाँत किटकिटाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। फिर बुखार आया, तेज बुखार, और मेरे शरीर से पसीना बह रहा था। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, मेरी साँसें कठिन हो गई थीं। मेरे मन में पहला विचार यही आया कि मेरा सारा काम व्यर्थ हो गया है, और चीजें वैसी नहीं हुईं जैसी होनी चाहिए थीं। मैं अपनी व्यर्थ सहनशक्ति पर आश्चर्यचकित था। मुझे एहसास हुआ कि एक काली शक्ति और एक अकथनीय दुर्भाग्य मुझसे लड़ रहे हैं।

बड़ी मुश्किल से मैं बिस्तर पर थोड़ा उठकर बैठ पाई। मैंने लाइट का स्विच दबाया। उजाला हो गया। पता नहीं क्यों मेरा हाथ बेडसाइड टेबल पर रखे छोटे से शीशे की तरफ चला गया। मैंने देखा कि मेरा चेहरा सूजा हुआ था और पीला पड़ गया था। मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मैंने खुद से कहा कि कम से कम मेरा दिल तो टूट गया। मैंने लाइट बंद की और वापस बिस्तर पर लेट गई।

नहीं, मेरा दिल खराब नहीं हुआ था। आज तो बेहतर है। खराब चीज़ के कोई खरीदार नहीं होते। डॉक्टर मुझे देखने आए। उन्होंने मेरे दिल की धड़कन सुनी, मेरी नाड़ी देखी, मेरी जीभ देखी, मेरा तापमान लिया, वही सब जो डॉक्टर हर जगह मरीज़ को देखते ही करते हैं। उन्होंने मुझे बेकिंग पाउडर और कुनैन का मिश्रण दिया। उन्हें मेरी तकलीफ बिल्कुल समझ नहीं आई! मेरी तकलीफ कोई समझ ही नहीं सकता! ये दवाइयाँ तो मज़ाक हैं। मेज पर सात-आठ तरह की दवाइयाँ कतारों में रखी थीं। मैं मन ही मन हंस रहा था। ये कैसा तमाशा है!

घड़ी की टिक-टिक मेरे कानों के पास लगातार सुनाई दे रही है। बाहर से गाड़ियों और साइकिलों के हॉर्न की आवाज़ें, ट्रेनों की गड़गड़ाहट आ रही है। मैं वॉलपेपर को, गहरे बैंगनी पत्तों और सफेद फूलों को देख रहा हूँ। डालियों पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर दो काले पक्षी आमने-सामने बैठे हैं। मेरा दिमाग खाली है, पेट मरोड़ रहा है, शरीर टूटा हुआ है। अलमारी के ऊपर फेंके गए अखबार अजीबोगरीब जगहों पर पड़े हैं। जब मैं देखता हूँ तो अचानक ऐसा लगता है जैसे सब कुछ मेरे लिए अजनबी हो गया है। मैं खुद को भी अजनबी समझने लगा हूँ। मैं सोचता हूँ कि मैं अभी तक ज़िंदा क्यों हूँ? मैं साँस क्यों लेता हूँ? मुझे भूख क्यों लगती है? मैं खाना क्यों खाता हूँ? मैं चलता

क्यों हूँ? मैं यहाँ क्यों हूँ? ये लोग कौन हैं जिन्हें मैं देख रहा हूँ, और वे मुझसे क्या चाहते हैं?...

अब मैं खुद को अच्छी तरह जानता हूँ, जैसा मैं हूँ, न ज़्यादा न कम। मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं थककर बिस्तर पर गिर पड़ा हूँ। मेरे विचार घंटों तक घूमते रहते हैं। मैं उनके इस निराशाजनक चक्र में ऊब गया हूँ। मेरा अपना अस्तित्व ही मुझे अचंभित करता है। अपने अस्तित्व को महसूस करना कितना कड़वा और डरावना होता है! जब मैं आईने में देखता हूँ तो खुद पर हँसता हूँ। मुझे अपना चेहरा इतना अनजान, अजीब और हास्यास्पद लगता है...

यह विचार मेरे मन में कई बार आया है: मैं अजेय हो गया हूँ। किंवदंतियों में वर्णित अजेयता मेरी कहानी है। यह एक चमत्कार था। अब मैं हर तरह के अंधविश्वासों और बकवासों पर विश्वास करता हूँ। मेरे सामने अजूबे विचार आते हैं। यह एक चमत्कार था। अब मैं जानता हूँ कि अपनी असीम क्रूरता में, ईश्वर या किसी अन्य धूर्त ने दो प्रकार के प्राणी बनाए हैं: भाग्यशाली और दुर्भाग्यशाली। वह पहले समूह का समर्थन करता है, जबकि दूसरे समूह को अपने ही हाथों से अत्याचार और उत्पीड़न बढ़ाने के लिए मजबूर करता है। अब मुझे विश्वास है कि एक नीच, क्रूर शक्ति, दुर्भाग्य का दूत, कुछ लोगों के साथ है।

* * *

आखिरकार मुझे अकेला छोड़ दिया गया है। डॉक्टर अभी-अभी गए हैं। मैंने कागज़ और पेंसिल उठा ली है। मैं लिखना चाहती हूँ। पता नहीं क्या लिखूँ। या तो मेरे पास लिखने को कुछ नहीं है या मैं लिख नहीं पा रही क्योंकि बहुत कुछ है। यही अपने आप में एक दुर्भाग्य है। मुझे नहीं पता। मैं रो नहीं सकती। शायद अगर मैं रो पाती तो मुझे थोड़ा सुकून मिलता! मैं नहीं रो सकती। मैं पागल जैसी दिख रही हूँ। मैंने आईने में देखा कि मेरे बाल बिखरे हुए हैं। मेरी आँखें खुली और खाली हैं। मुझे लगता है कि मेरा चेहरा ऐसा बिल्कुल नहीं दिखना चाहिए था। बहुत से लोगों के चेहरे उनके विचारों से मेल नहीं खाते। यह बात मुझे बहुत परेशान करती है। मैं बस इतना जानती हूँ कि मैं खुद से नफरत करती हूँ। मैं खाती हूँ और खुद से नफरत करती हूँ, चलती हूँ और खुद से नफरत करती हूँ, सोचती हूँ और खुद से नफरत करती हूँ। कितनी ज़िद्दी! कितना डरावना! नहीं, यह कोई अलौकिक शक्ति थी, कोई घिनौनी बीमारी। अब मैं इस तरह की बातों पर विश्वास करने लगी हूँ। अब मुझ पर किसी चीज़ का कोई असर नहीं होगा। मैंने साइनाइड लिया और उसका मुझ पर कोई असर नहीं हुआ, मैंने अफीम खाई और मैं अभी भी ज़िंदा हूँ! अगर कोई अजगर मुझे काट ले, तो अजगर मर जाएगा! नहीं, कोई इस पर विश्वास नहीं करेगा। क्या ये ज़हर खराब हो गए थे? क्या मात्रा पर्याप्त नहीं थी? क्या यह सामान्य खुराक से ज़्यादा थी? क्या मैंने चिकित्सा पुस्तक में मात्रा देखकर गलती कर दी थी? या क्या मेरा हाथ ज़हर को विषनाशक में बदल देता है? मुझे नहीं पता। ये विचार मेरे मन में सैकड़ों बार आ चुके हैं। इनमें कुछ भी नया नहीं है। मुझे याद है मैंने सुना है कि जब बिच्छू आग के घेरे में घिर जाता है तो वह खुद को ही डंक मार लेता है – क्या मेरे चारों ओर आग का घेरा नहीं है?

मेरी खिड़की के बाहर, टिन की छत के काले किनारे पर, जहाँ बारिश का पानी जमा है, दो

गौरैया बैठी हैं। उनमें से एक अपनी चोंच पानी में डालती है, फिर अपना सिर उठाती है। दूसरी उसके बगल में दुबकी हुई खुद को चोंच मार रही है। मैं बस थोड़ा सा हिला। दोनों चहचहाईं और एक साथ उड़ गईं। मौसम बादलों से घिरा है। कभी-कभी बादलों के पीछे से हल्का सूरज दिखाई देता है। सामने की ऊंची इमारतें कालिख से ढकी हुई हैं, इस भारी बारिश के दबाव में काली और उदास लग रही हैं। शहर की दूर से आती घुटन भरी आवाज़ सुनाई दे रही है।

मेरी मेज की दराज में वे मनहूस पत्ते पड़े हैं जिनसे मैं अपना भविष्य बताती थी, वे झूठे पत्ते जिन्होंने मुझे धोखा दिया। सबसे मजेदार बात तो यह है कि मैं आज भी उन्हीं पत्तों से अपना भविष्य बताती हूँ!

अब क्या किया जा सकता है? भाग्य मुझसे कहीं अधिक शक्तिशाली है।

अच्छा होता अगर जीवन के अनुभवों से इंसान का पुनर्जन्म हो पाता और वह नए सिरे से जीवन शुरू कर पाता। लेकिन कैसा जीवन? क्या यह मेरे हाथ में है? इसका क्या फायदा? एक अंधी और डरावनी शक्ति हम पर राज करती है। कुछ लोग ऐसे हैं जिनका भाग्य किसी अशुभ तारे के प्रभाव में है। वे इस बोझ तले दबकर टूट जाते हैं, और वे टूटना ही चाहते हैं...

अब मुझमें न कोई इच्छा बची है, न कोई द्वेष। मेरे भीतर जो भी मानवीयता थी, वह सब खो गई है। मैंने उसे खो जाने दिया। जीवन में या तो कोई देवदूत बनता है, या कोई इंसान, या फिर कोई जानवर। मैं इनमें से कुछ भी नहीं बना। मेरा जीवन हमेशा के लिए खो गया। मैं स्वार्थी, अनाड़ी और दुखी पैदा हुआ था। अब मेरे लिए पीछे मुड़कर कोई दूसरा रास्ता अपनाना असंभव है। मैं अब इन व्यर्थ की परछाइयों का पीछा नहीं कर सकता, जीवन से जूझते हुए, तुम्हारे पास क्या ठोस तर्क और बुद्धि है? मैं अब न तो क्षमा करना चाहता हूँ, न क्षमा पाना चाहता हूँ, न ही बाईं ओर जाना चाहता हूँ, न दाईं ओर। मैं भविष्य से आँखें बंद करके अतीत को भूल जाना चाहता हूँ।

नहीं, मैं अपने भाग्य से भाग नहीं सकता। क्या ये पागल विचार, ये भावनाएँ, ये क्षणिक कल्पनाएँ जो मेरे मन में आती हैं, सच नहीं हैं? वैसे भी, ये मेरे तार्किक विचारों से कहीं अधिक स्वाभाविक और कम बनावटी लगती हैं। मैं मानता हूँ कि मैं स्वतंत्र हूँ, फिर भी मैं अपने भाग्य का विरोध नहीं कर सकता। मेरी लगाम मेरे भाग्य के हाथों में है, भाग्य ही मुझे एक तरफ से दूसरी तरफ खींचता है। जीवन की नीचता, उसकी धूर्तता, जिससे लड़ा नहीं जा सकता। मूर्ख जीवन।

अब मैं न जी रहा हूँ, न सो रहा हूँ। न कुछ मुझे प्रसन्न करता है, न कुछ मुझे परेशान करता है। मैं मृत्यु से परिचित हो चुका हूँ, इसकी आदत पड़ चुकी है। यह मेरी एकमात्र मित्र है। यही एकमात्र चीज़ है जो मुझे हिम्मत देती है। मुझे मोंटपार्नास कब्रिस्तान याद आता है। अब मुझे मृतकों से कोई ईर्ष्या नहीं है। मैं अब उनके संसार का हिस्सा हूँ। मैं भी उनके साथ हूँ। मैं जीवित ही दफ़न हो चुका हूँ...

मैं थक गया हूँ। मैंने ये क्या बकवास लिख दी है? मैं खुद से कहता हूँ, "जाओ, पागल, कागज़ और पेंसिल फेंक दो, फेंक दो। बहुत हो गया बकवास। चुप हो जाओ। इसे फाड़ दो, कहीं ये कचरा किसी के हाथ न पड़ जाए। वे मुझे कैसे आंकेंगे? लेकिन मुझे शर्म नहीं आएगी, मेरे लिए कुछ भी मायने नहीं रखता। मैं दुनिया और उसमें मौजूद हर चीज़ पर हंसता हूँ। चाहे वे मेरे बारे में कितना भी कठोर फैसला सुनाएँ, उन्हें नहीं पता कि मैंने खुद को उससे भी ज़्यादा बुरी तरह से

आंका है। वे मुझ पर हंसेंगे; उन्हें नहीं पता कि मैं उन पर ज़्यादा हंसता हूँ। मैं खुद से और इस बकवास को पढ़ने वाले हर किसी से तंग आ चुका हूँ।”

ये नोट और ताश के पत्तों का एक पैकेट उसकी दराज में थे। वह खुद बिस्तर पर लेटा हुआ था। वह सांस लेना भूल गया था।

पेरिस, एस्फैंड **11, 1308**
(3 मार्च **1928)**

स्वीकृतियाँ

प्रकाशक नुशिन अरबाबजादा को उनके व्यापक संपादकीय कार्य के लिए और होमा कातौजियान को प्रस्तावना लिखने के लिए धन्यवाद देना चाहता है।

नोट्स

पृष्ठ 7, नौरूज़: ईरान का राष्ट्रीय त्योहार। यह 21 मार्च को शुरू होता है और तेरह दिनों तक चलता है। नौरूज़ के अंतिम दिन देश में पिकनिक मनाने की परंपरा है।

पृष्ठ 24, शाह अब्दोलअज़ीम: तेहरान से कुछ मील दक्षिण में स्थित रेय के खंडहरों के बीच एक मस्जिद और कब्रिस्तान। रेय (यूनानियों का रागेस) कम से कम आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व से एक महत्वपूर्ण केंद्र था और तेरहवीं शताब्दी ईस्वी में चंगेज खान द्वारा इसके विनाश तक ईरान के महान शहरों में से एक बना रहा।

पृष्ठ 27, क्रान्स… अब्बासी: क्रमशः पाँच पेंस और एक पेंस मूल्य के सिक्के।

पृष्ठ 37, बिस्तर बिछाया हुआ: प्राचीन फारस में पलंगों का उपयोग नहीं किया जाता था। बिस्तर का रोल (गद्दा, चादर, तकिए और रजाई) दिन के समय समेट कर रखा जाता था और रात में फर्श पर बिछा दिया जाता था।

पृष्ठ 38, कर्बला: शिया शहीद हुसैन का दफन स्थान, इराक का कर्बला शहर मुसलमानों के पवित्र शहरों में से एक है, जहां तीर्थयात्राएं की जाती हैं। कर्बला की थोड़ी सी मिट्टी को जिस जल में भिगोया गया था, उसका उपयोग औषधि के रूप में किया जाता था।

पृष्ठ 39, निशापुर… बल्ख: उमर खय्याम की एक चौपाई की स्मृति:

> क्योंकि जीवन बीतता रहता है, चाहे मीठा हो या कड़वा।
> क्योंकि आत्मा को होठों से होकर गुजरना ही पड़ता है, चाहे निशापुर में हो या बल्ख में।
> शराब पियो, क्योंकि तुम्हारे और मेरे जाने के बाद कई महीने बीत जाएंगे।
> पुराने से नए की ओर, नए से पुराने की ओर परिवर्तन होगा।

पृष्ठ 55, एज्राइल: मृत्यु का दूत।

पृष्ठ 58, हुज़वरेश: पहलवी लेखन की एक परंपरा जिसके द्वारा लेखक एक फारसी शब्द के स्थान पर एक अरामी शब्द का प्रयोग करता था।

पृष्ठ 67, कोर्सी: एक स्टूल जिसके नीचे जलती हुई अंगीठी रखी होती है और जिसके ऊपर कंबल बिछाए जाते हैं। लोग अपने शरीर के निचले हिस्से को कंबल के नीचे रखकर लेटते हैं।

पृष्ठ 71, भीख मांगना... बेहतर होना: नौरूज़ से पहले आखिरी बुधवार को लोगों का रिवाज है कि वे भेष बदलकर भीख मांगने जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस अवसर पर प्राप्त दान सौभाग्य लाता है।

पृष्ठ 78, ला इलाहा एल अल्लाह: "अल्लाह के सिवा कोई ईश्वर नहीं है", मुस्लिम आस्था की

घोषणा का हिस्सा।
पृष्ठ 87, दिरहेम… पेशिज़: मध्यकालीन सिक्के, जो मोटे तौर पर आधुनिक क्रान और अब्बासी के अनुरूप हैं।
पृष्ठ 95, बिस्मिल्लाह: "ईश्वर के नाम पर"। यह वह सूत्र है जिसका उच्चारण मुसलमान किसी भी महत्वपूर्ण कार्य की शुरुआत में करते हैं।
पृष्ठ 96, छींक... विराम: एक फ़ारसी अंधविश्वास के अनुसार, यदि उपस्थित किसी व्यक्ति को छींक आ जाए, तो कोई भी कार्य जो करने वाला हो, उसे स्थगित कर देना चाहिए।
पृष्ठ 97, स्नानागार में गर्भवती होना: यह आम धारणा थी कि महिलाएं सार्वजनिक स्नानागारों का उपयोग करके गर्भवती हो सकती हैं, जहां पुरुष भी (अलग-अलग समय पर) आते-जाते थे। इस धारणा का उपयोग उन गर्भधारणों की व्याख्या प्रदान करने के लिए किया जा सकता था जिनका अन्यथा कोई स्पष्टीकरण नहीं होता।
पृष्ठ 97, पहली छलांग… बूढ़े आदमी का चेहरा: एक और लोकप्रिय मान्यता यह थी कि बच्चा उस व्यक्ति जैसा दिखेगा जिसे माँ गर्भ में पहली बार हिलने-डुलने पर देख रही होगी।
पृष्ठ 105, कर्बला: पृष्ठ 39 पर टिप्पणी देखें।
पृष्ठ 116, दारोलफोनून: तेहरान में एक स्कूल का नाम।
पृष्ठ 124, पास काले: तेहरान के उत्तर में एक गाँव।
पृष्ठ 126, ऐद क़ोरबान: मुस्लिम धर्म में बलिदान का दिन।
पृष्ठ 132, मैंने अपनी पत्नी को तीन बार तलाक दिया: इस्लामी कानून के अनुसार, तलाक तब प्रभावी होता है जब पति पत्नी से कहता है, "मैं तुम्हें तलाक देता हूँ"। इस बिंदु पर, यदि पति चाहे तो पुनर्विवाह कर सकता है। हालाँकि, यदि पति पत्नी से कहता है, "मैं तुम्हें तलाक देता हूँ, मैं तुम्हें तलाक देता हूँ, मैं तुम्हें तलाक देता हूँ", तो वे तब तक पुनर्विवाह नहीं कर सकते जब तक कि पत्नी पहले किसी और से विवाह करके उससे तलाक न ले ले। इस व्यक्ति को तलाक का कानूनी सूत्रधार कहा जाता है।
पृष्ठ 135, शाह अब्दोलअज़ीम कब्रिस्तान: दक्षिणी तेहरान में स्थित एक कब्रिस्तान जिसमें एक पवित्र व्यक्ति शाह अब्दोलअज़ीम की कब्र है।
पी। 140, पाह चेनार: तेहरान के बाहर एक गाँव।
पृष्ठ 141, मेहर 1311 का तेरहवाँ दिन: दी गई तिथि मुस्लिम सौर पंचांग के अनुसार है। 1311 हिजरी 1932 ईस्वी के बराबर है।
पृष्ठ 142, बंदरगाज़: कैस्पियन सागर पर स्थित एक ईरानी बंदरगाह।
पृष्ठ 150, फ्लैंडन: हेदयाट कहते हैं, “ई. फ्लैंडन और पी. कोस्टे दो प्रसिद्ध ईरानविज्ञानी थे, जिन्होंने नब्बे वर्ष पूर्व प्राचीन ईरान पर महत्वपूर्ण शोध किया था। यह अंश फ्लैंडन के नोट्स से लिया गया है।” उन्होंने 1851 में 'वॉयज ऑन पर्स' प्रकाशित की थी।
पृष्ठ 156, मुहर्री और सफ़र: मुस्लिम धर्म की शिया शाखा में पवित्र हस्तियों की मृत्यु पर शोक के महीने।
पृष्ठ 156, भावुक नाटक: मुस्लिम धार्मिक हस्तियों की शहादत का पुनर्मंचन करने वाले नाटक।

पृष्ठ 196, इमाम: मुस्लिम धर्म में कुछ धार्मिक नेताओं को दी जाने वाली उपाधि।

पृष्ठ 206, मौलवी: तेरहवीं शताब्दी के फारसी कवि और दार्शनिक।

पृष्ठ 206, सर चेस्मे: तेहरान का एक चौक।

पृष्ठ 209, दरवेश: एक घुमंतू उपदेशक या पवित्र व्यक्ति।

पृष्ठ 210, हदीस: पैगंबर मोहम्मद और उनके साथियों के प्रसारित कार्यों और कथनों का संग्रह।

पृष्ठ 212, मसनवाई: मौलवी द्वारा रचित एक प्रसिद्ध काव्य संग्रह।